R Baghel PhD - Raipur Univ_c

चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के आत्मविश्वास एवं शिक्षक प्रभावशीलता का अध्ययन

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

को

शिक्षा विषय में

डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी की उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबंध

2015

निर्देशिका

डॉ. (श्रीमती) शोभा पुरकर
विभागाध्यक्ष, (शिक्षा संकाय)
कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
भिलाई नगर (छ.ग.)

शोधार्थी

राधेश्याम बघेल
एम.ए. (हिन्दी, समाजशास्त्र) एम. एड.
सेवा निवृत्त सहायक प्राध्यापक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण
परिषद, शंकर नगर, रायपुर (छ.ग.)

शोध केन्द्र
कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सेक्टर–7, भिलाई नगर, (छत्तीसगढ)

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

प्रिय साधन भैय्या
को
सप्रेम भेंट, मेरी अपनी
स्थिति-गति के साथ।

[signature]
(आर. एस. बघेल)
28.04.2017

The extraordinary knowledge and talent possessed by Mr. Radheshyam is aptly demonstrated and described in this research work. I wish him all the very best in his future endeavour.

Prof. S. C. Panigrahi
18/07/2016
09427015175

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के आत्मविश्वास एवं शिक्षक प्रभावशीलता का अध्ययन

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

को

शिक्षा विषय में

डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी की उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबंध

2015

निर्देशिका

डॉ. (श्रीमती) शोभा पुरकर
विभागाध्यक्ष, (शिक्षा संकाय)
कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
भिलाई नगर (छ.ग.)

शोधार्थी

राधेश्याम बघेल
एम.ए. (हिन्दी, समाजशास्त्र) एम. एड.
सेवा निवृत्त सहायक प्राध्यापक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण
परिषद, शंकर नगर, रायपुर (छ.ग.)

शोध केन्द्र

कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सेक्टर–7, भिलाई नगर, (छत्तीसगढ़)

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

APPENDIX-3

DECLARATION BY CANDIDATE

(Clause 14b of the Ordinance-45)

I declare that the thesis entitled चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के आत्मविश्वास एवं शिक्षक प्रभावशीलता का अध्ययन is my own work conducted under the supervision of **Dr. (Smt.) Shobha Purkar**, Head Of Department (Education) Supervisor/Co-supervisor) at Kalyan P.G. College, Bhilai Nagar .... (Centre) Kalyan P.G. College, Bhilai Nagar (C.G.) approved by the Research Degree Committee. I have put in more than 200 days of attendance with the supervisor at the center.

I further declare that to the best of my knowledge the thesis does not contain any part of any work, which has been submitted for the award of any degree either in this University or in any other University/Deemed university without proper citation.

S. Purkar 8.4.2015

Signature of the Supervisor

Dr. (Smt.) Shobha Purkar
H.O.D.,P.G. Deptt. of Education
Kalyan P.G. College, Bhilai Nagar (C.G.)

8.4.2015

Signature of the Candidate
Radhe Shyam Baghel

Signature of the Chairman, DRC

PRINCIPAL
Kalyan Post Graduate College
Bhilai Nagar (C.G.)

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel PhD - Raipur Uni-c

APPENDIX-4

CERTIFICATE BY THE SUPERVISOR

(Clause 14c of the Ordinance-45)

This is to certify that the work entitled चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के आत्मविश्वास एवं शिक्षक प्रभावशीलता का अध्ययन is a piece of Research Work done by **Radhe Shyam Baghel**, Retired Asstt, Professor, State Council of Educational Research and Training, Raipur (C.G.) under my guidance and supervision for the Degree of **Doctor of Philosophy of Education, Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur Chhattisgarh, India.** That the candidate has put in an attendance of more than 200 days with me.

To the best of my knowledge and belief this thesis

1. Embodies the work of the candidate himself.
2. Has duly been completed.
3. Fulfills the requirements of the Ordinance relating to the Ph.D. Degree of the University,

   And
4. Is up to the standard both in respect of contents and language for being referred to the examiner.

S. Purkar 8.4.2015

Signature of The Supervisor

Dr. (Smt.) Shobha Purkar
H.O.D., P.G. Deptt. of Education
Kalyan P.G. College, Bhilai Nagar (C.G.)

Forwarded

Signature of the Chairman, DRC

PRINCIPAL
Kalyan Post Graduate College
Bhilai Nagar (C.G.)

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

APPENDIX-5

Copy Right Transfer Approval Form

(Clause 14e of the Ordinance-45)

Name of Candidate	:	**Radhe Shyam Baghel**
Department	:	Retired Asstt, Professor, State Council of Educational Research and Training, Raipur (C.G.)
Degree	:	M.A. (Hindi, Sociology), M.Ed
University	:	Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur (C.G.)
Supervisor	:	Dr. (Smt.) Shobha Purkar, Head Of Department (Education), Kalyan P.G. College, Bhilai Nagar (C.G.)
Thesis Title	:	चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के आत्मविश्वास एवं शिक्षक प्रभावशीलता का अध्ययन
Year of Award	:	

Agreement

1. I hereby declare that, if appropriate, I have obtained and attached hereto a written permission/statement from the owner(s) of each third party copyrighted matter to be included in my thesis/dissertation, allowing distribution as specified below.
2. I hereby grant to the university and its agents the non-exclusive license to archive and make accessible, under the condition specified below, my thesis/dissertation, in whole or in part in all forms of media, now or hereafter known. I retain all other ownership rights to the copyright of the thesis/dissertation. I and my Supervisor also retain the right to use in future works (such as articles or books) all or part of this thesis, dissertation, or project report.

Condition :

1. Release the entire work for access worldwide.

13.4.2015 — S. Purkar 8.4.2015

Signature of the Candidate

Radhe Shyam Baghel

Place : Bhilai

Date :

Signature and Seal of Supervisor

Dr. (Smt.) Shobha Purkar

Dr. (Smt.) Shobha Purkar
H.O.D., P.G. Dept. of Education
Kalyan P.G. College, Bhilai Nagar (C.G.)

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

S. No. 596 Book No 24

Pt. Ravishankar Shukla University,
RAIPUR-492010 (C. G.)

Ph.D. COURSE WORK CERTIFICATE

Ref. - Ph. D. CW/Apr. 2012 ROLL No. 021

Certified that Ku /Smt-/Shri Radhe Shyam Baghel

Father's/Husband's name late Shri Raghunath Prasad

Mother's name Late Smt. Sahin Bai Baghel.

has completed the Course Work in the academic session 2011 - 12 in subject Education on Research Methodology, Quantitative Methods and Computer Applications. The candidate has also presented the review of published research in the relevant field as per the provisions laid down in the Ordinance 45 of Pt. Ravishankar Shukla University Raipur.

On Successful Completion of the Course Work this certificate of Qualification is awarded to the Candidate on 27. 04. 2012

In - Charge
Ph. D. Course work Exam
Head
S.O.S.in Physical Education
Pt. Ravishankar Shukla University
Raipur (C.G.) 492010
(Seal)

Deputy Registrar (Acad.)
Registrar
Pt. Ravishankar Shukla University
Raipur (C. G.) 492010

OFFICE OF THE PRINCIPAL
KALYAN P.G. COLLEGE, BHILAINAGAR (C.G)

No.K.M./2014/ 1599 **Date- 30.12.2014**

Pre-Ph.D Submission Presentation
(Clause 13a of the Ordinance-45)

CERTIFICATE

This is to certify that **Shri Radheshyam Baghel** a bonafide research scholar of Kalyan Post Graduate College, Bhilainagar (C.G) has satisfactorily completed the Pre-Ph.D Presentation requirement, which is a part of his Ph.D programme.

Signature of Chairman, DRC

PRINCIPAL
Kalyan Post Graduate College
Bhilai Nagar (C.G.)

My doc>cert.

प्राक्कथन

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

एक मंदिर बनाने के काम में तीन मजदूर पत्थर तोड़ने का कार्य कर रहे थे। पास से गुजरते एक यात्री ने पूछा "तुम क्या कर रहे हो ? उस मजदूर ने जवाब दिया "मैं पत्थर तोड़ रहा हूँ..देख रहे हो न।

दूसरे मजदूर से वही प्रश्न उस यात्री ने पूछा। मैं रोजी रोटी कमा रहा हूँ, उत्तर था उसका।

तीसरे मजदूर ने बड़ी संजीदगी से कहा उस यात्री को–"बाबा मैं भगवान के लिये मंदिर बना रहा हूँ।

शिक्षा जगत के आधार स्तम्भ शिक्षकों की अभिवृति से कितना गहरा साम्य बोध है। आखिर कितने शिक्षक तन्मयता से ज्ञान मंदिर के निर्माण में रत् रहते है ? मजदूर की वह खुशी–खुशी अपने कार्य में तल्लीन रहने की भावनायें कहाँ व क्यों चुक जाती है ? सामान्यतः शिक्षकों के व्यवहारों से यही परिलक्षित होता है, मानो रोजी रोटी के लिये ही वह कार्य कर रहे हैं। कार्य के मंदिर निर्माण स्वरूप का लोपन कैसे हो जाता है ? जिससे स्वकर्म की भावना बाधित हो जाती है ? काम आरोपित क्यों लगने लगता है ? स्वप्रेरित क्यों नहीं ? आरोपित भावना की विकास कि प्रक्रिया के मूल में कहीं शिक्षकों में स्वयं को ही न समझ पाने की भूल तो नहीं है ?

स्वयं में विश्वास के साथ प्रभाव पूर्ण तरीके से कार्य को संपन्न करने वाला शिक्षक संवर्द्धन की प्रक्रिया में, क्यों जीना व कैसे जीना जैसे जीवन के दो बुनियादी प्रश्न संभवतः अनुत्तरित ही रह जाते हैं। वह भी ऐसी स्थिति में जबकि शिक्षा मानवीय संस्कार में परिवर्तन लाने का सबसे सशक्त माध्यम के रूप में सार्वकालिक व सार्वभौमिक तौर पर चिन्हांकित हैं। शिक्षा की यही विशेषता न केवल शिक्षा जगत में ही, बल्कि मानवीय जीवन को प्रभावित करने वाली विभिन्न सेवाओं में, नित्य नूतन शिक्षण–प्रशिक्षण में आवश्यक नहीं है ?

मैं स्वयं एक शिक्षक हुँ। मेरे सम्मुख कुछ ऐसे ही वैचारिक झंझावत् सदैव उपस्थित होते रहे। संयोग से राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद में अपनी शासकीय सेवा के अंतर्गत जीवन विद्या या कहें चेतना विकास मूल्य शिक्षा से परिचित होने का अवसर शिविरों के माध्यम से मिला। इन शिविरों में पारंपरिक तौर पर प्रचलित एवं प्रस्तावित वैकल्पिक शिक्षा के उद्देश्य व स्वरूप पर होने वाले वैचारिक चिंतन लगभग सभी शिविरार्थियों को झकझोर कर रख देता है। शिक्षक, शिक्षा व शिक्षा व्यवस्था के नाम पर विद्यालय में, से, के लिए आखिर मिल क्या रहा है ? और होना क्या चाहिये ? मानवीय आचरण से क्या मिलता है ? अमानवीय कृत्य हमें क्या बना देता है ? शिक्षित शिक्षक मिलेगें पर समझदार शिक्षित शिक्षक का अभाव क्यों ? शिक्षित होना समझदार होने का परिचायक क्यों नहीं हो पा रहा है ? क्योंकि बिना समझदारी इमानदारी आती या होती नहीं, बिना इमानदारी के जिम्मेदारी हुआ या बना नहीं जा सकता और जिम्मेदारी के अभाव में भागीदारी में त्रुटि की संभावना होती है, या बन ही जाती है। शिक्षक एवं उनके शिक्षकीय दायित्व पर वर्तमान प्रश्नचिन्हों के विलोपन का आश्वासन जीवन विद्या के शिविरों में चेतना विकास मूल्य शिक्षा के स्वरूप से परिचित हुआ। अन्य शिविरार्थी शिक्षक भी हुऐ होंगे, यह उत्सुकता शोध अध्ययन का कारण बना।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

शिक्षकों में चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन के प्रयास में संभव हैं अनेकों त्रुटियाँ पाई जाये, कुछ पक्ष अछूते रह गए हों, विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्षों व सुझावों के बारे में मतभेद पाया जाए। इन पर प्राप्त संस्तुतियां विचारोपरांत स्वीकार्य है।

प्रस्तुत शोध कार्य में मुझे अन्यान्य व्यक्तियों एवं समस्त दिशाओं से सहयोग प्राप्त हुआ। मैं सभी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना चाहूँगा।

सर्वप्रथम मैं कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय के संस्था प्रमुख प्राचार्य प्रोफे. एल. आर. वर्मा द्वारा शोध कार्य हेतु अनुमति प्रदान करने हेतु उनका आभारी हूँ।

यह अध्ययन मूर्त रूप न ग्रहण कर पाता यदि धीरता जैसी प्रबल मानवीय मूल्य को सहजतापूर्वक चरितार्थ करने वाली मेरी शोध निर्देशिका डॉ. (श्रीमती) शोभा पुरकर, विभागाध्यक्ष (शिक्षा संकाय) कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भिलाई नगर, का सक्षम सहयोग नहीं मिल पाता। शोधार्थी सदैव उनका चिरऋणी रहेगा।

साथ ही मैं आभारी हूँ शिक्षा संकाय के समस्त प्राध्यापकों का विशेषकर डॉ. (श्रीमती) सुमनलता सक्सेना एवं डॉ. (श्रीमती) पुष्पलता शर्मा सहायक प्राध्यापक कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भिलाई नगर का, जिनके सतत् प्रोत्साहन व कार्य के प्रति रूचि एवं मार्गदर्शन के परिणामस्वरूप यह साधना संपन्न हो सकी।

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के ग्रंथपाल श्री इम्तियाज़ अहमद एवं महाविद्यालय के पुस्तकाल्य प्रभारी द्वारा शोध कार्य को गति प्रदान करने में सहयोग प्रदान करने हेतु अत्यंत आभारी हूँ। न्यादर्शी शिक्षकों के सहयोग प्रदान करने के लिये आभार व्यक्त करता हूँ।

मैं अपनी जीवन संगिनी एवं परिवार के समस्त छोटे–बड़े सभी सदस्यों का भी ऋणी हूँ जिन्होंने असीम धैर्य के साथ मुझे इस कार्य को पूर्ण करने में सहयोग प्रदान किये हैं।

मैं समस्त शिक्षाविदों एवं मनोवैज्ञानिकों का जिनके ग्रंथों की सहायता से मैं शोध प्रबंध प्रस्तुत करने में समर्थ हो सका, के प्रति अत्यंत आभारी हूँ।

अंत में मैं श्री संजय लांजेवार (मो. 9752990795) एवं श्री भरत साहू को अत्यंत मनोयोग के साथ शोध प्रबंध का टंकण किये जाने हेतु धन्यवाद देता हूँ।

दिनांक : 08.04.2015

राधेश्याम बघेल

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

अनुक्रमणिका

			पृष्ठ क्रमांक
1.	अध्याय प्रथम	समस्या की पृष्ठभूमि	1–23
	1.1	भूमिका	1
	1.2	संबंधित शोध अध्ययन	18
		1.2.1 चेतना विकास मूल्य शिक्षा से संबंधित शोध कार्य	18
		1.2.2 शिक्षकों के आत्मविश्वास से संबंधित शोध कार्य	19
		1.2.3 शिक्षक प्रभावशीलता से संबंधित शोध कार्य	21
2.	अध्याय द्वितीय	अध्ययन का प्रयोजन	24–31
	2.1	भूमिका	24
	2.2	अध्ययन का उद्देश्य	26
	2.3	समस्या कथन	27
	2.4	प्रकार्यात्मक परिभाषा	27
	2.5	परिकल्पना	28
	2.6	अध्ययन की परिसीमा	31
3.	अध्याय तृतीय	अध्ययन प्रविधि	32–49
	3.1	भूमिका	32
	3.2	सार्वभौम	32
	3.3	न्यादर्श	35
	3.4	उपकरण का वर्णन	44
		3.4.1 आत्मविश्वास मापनी	44
		3.4.1.1 परीक्षण का प्रशासन	44
		3.4.1.2 मापनी का फलांकन	45
		3.4.1.3 मापनी चयन का आधार	45
		3.4.2 शिक्षक प्रभावशीलता मापनी	46
		3.4.2.1 परीक्षण का प्रशासन	47
		3.4.2.2 मापनी का फलांकन	48
		3.4.2.3 मापनी चयन का आधार	48
	3.5	सांख्यिकी उपचार	49
4.	अध्याय चतुर्थ	निष्कर्ष, व्याख्या एवं विवेचना	50–98
	4.1	भूमिका	50
	4.2	–शिक्षक आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा का प्रभाव	50

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

		4.3 –शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा का प्रभाव	72
		4.4 –शिक्षक प्रभावशीलता के आयामों पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा का प्रभाव	93
		4.5 सार्वभौमिक निष्कर्ष एवं विवेचना	95
5.	अध्याय पंचम	सारांश	99–127
		5.1 भूमिका	99
		5.2 निष्कर्ष	113
		5.3 शैक्षिक उपादेयता	124
		5.4 भावी अध्ययन हेतु सुझाव	126
1	सन्दर्भ ग्रंथ सूची		128-133
	शब्दावली		134-136
	परिशिष्ट		137
	I	उपकरण	
		1.1 आत्मविश्वास मापनी	
		1.2 शिक्षक प्रभावशीलता मापनी	
	II	प्रकाशित शोध कार्य	
	III	विविध	
		III.1 छत्तीसगढ़ स्कूल शिक्षा में चेतना विकास मूल्य शिक्षा समावेश	
		III.2 चेतना विकास मूल्य शिक्षा संचालित विद्यालक्ष्मी अभिभावक विद्यालय शा.प्रा.शा. कोंकड़ी	
		III.3 नंद कुमार आई.ए.एस. सचिव स्कूल शिक्षा विभाग का पत्र – छत्तीसगढ़ राज्य में चेतना विकास मूल्य शिक्षा का अभिनव प्रयोग।	
		III.4 छत्तीसगढ़ शासन, स्कूल शिक्षा विभाग का आदेश	
		III.5 चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्रकोष्ठ संबंधी जनकारी	

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

तालिका सूची

क्रमांक	शीर्षक	पृष्ठ क्रमांक
3.1	शैक्षणिक संस्थान एवं शिक्षक संख्या वर्ष 2013	35
3.2	जिलेवार प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षक संख्या	35—36
3.3	जिलेवार चयनित शिक्षकों की संख्या	37
3.4	सामान्य जानकारी आधारित शिक्षकों की संख्या	38
3.5	लिंग आधारित शिक्षकों की जिलेवार संख्या	39
3.6	आयु आधारित शिक्षकों की जिलेवार संख्या	40
3.7	जाति आधारित शिक्षकों की जिलेवार संख्या	41
3.8	शालेय स्तर आधारित शिक्षकों की जिलेवार संख्या	42
3.9	शैक्षिक अनुभव आधारित शिक्षकों की जिलेवार संख्या	43
3.10	शैक्षणिक योग्यता आधारित शिक्षकों की जिलेवार संख्या	44
4.1	चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के आत्मविश्वास	51
4.2	चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित पुरूष शिक्षकों का आत्मविश्वास	53
4.3	चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महिला शिक्षिकाओं के आत्मविश्वास	54
4.4	चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित 35 वर्ष से कम आयु वाले शिक्षकों के आत्मविश्वास	56
4.5	चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित 40 वर्ष से अधिक आयु वाले शिक्षकों के आत्मविश्वास	57
4.6	चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित सामान्य वर्ग के शिक्षकों के आत्मविश्वास	59
4.7	चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित अ.पि.वर्ग के शिक्षकों के आत्मविश्वास	60
4.8	चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के शिक्षकों के आत्मविश्वास	62
4.9	चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित प्राथामिक स्तर के शिक्षकों के आत्मविश्वास	63
4.10	चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित माध्यमिक स्तर के शिक्षकों	65

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

	के आत्मविश्वास	
4.11	चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित उच्चतर माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के आत्मविश्वास	66
4.12	चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित 10 वर्ष से कम शैक्षिक अनुभवी शिक्षकों के आत्मविश्वास	68
4.13	चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित 15 वर्ष से अधिक शैक्षिक अनुभवी शिक्षकों के आत्मविश्वास	69
4.14	चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित स्नातक स्तर शिक्षित शिक्षकों के आत्मविश्वास	71
4.15	चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित स्नातकोत्तर स्तर शिक्षित शिक्षकों के आत्मविश्वास	72
4.16	चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता	74
4.17	चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित पुरूष शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता	75
4.18	चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महिला शिक्षकाओं के शिक्षक प्रभावशीलता	76
4.19	चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित 35 वर्ष से कम आयु वाले शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता	78
4.20	चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित 40 वर्ष से अधिक आयु वाले शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता	79
4.21	चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित सामान्य वर्ग के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता	80
4.22	चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित अन्य पिछड़ी जाति के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता	82
4.23	चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता	83
4.24	चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित प्राथामिक स्तर के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता	85
4.25	चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता	86
4.26	चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित उच्चतर माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता	88

	के आत्मविश्वास	
4.11	चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित उच्चतर माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के आत्मविश्वास	66
4.12	चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित 10 वर्ष से कम शैक्षिक अनुभवी शिक्षकों के आत्मविश्वास	68
4.13	चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित 15 वर्ष से अधिक शैक्षिक अनुभवी शिक्षकों के आत्मविश्वास	69
4.14	चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित स्नातक स्तर शिक्षित शिक्षकों के आत्मविश्वास	71
4.15	चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित स्नातकोत्तर स्तर शिक्षित शिक्षकों के आत्मविश्वास	72
4.16	चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता	74
4.17	चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित पुरूष शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता	75
4.18	चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महिला शिक्षकाओं के शिक्षक प्रभावशीलता	76
4.19	चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित 35 वर्ष से कम आयु वाले शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता	78
4.20	चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित 40 वर्ष से अधिक आयु वाले शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता	79
4.21	चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित सामान्य वर्ग के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता	80
4.22	चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित अन्य पिछड़ी जाति के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता	82
4.23	चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता	83
4.24	चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित प्राथामिक स्तर के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता	85
4.25	चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता	86
4.26	चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित उच्चतर माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता	88

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

4.27	चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित 10 वर्ष से कम शैक्षिक अनुभवी शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता	89
4.28	चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित 15 वर्ष से अधिक शैक्षिक अनुभवी शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता	90
4.29	चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित स्नातक स्तर शिक्षित शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता	92
4.30	चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित स्नातकोत्तर स्तर शिक्षित शिक्षकों कें प्रभावशीलता	93
4.31	शिक्षक प्रभावशीलता के आयामो पर चे.वि.मू.शि. का प्रभाव	95
4.32	शिक्षक आत्मविश्वास पर चे.वि.मू.शि. का प्रभाव	96–97
4.33	शिक्षक प्रभाशीलता पर चे.वि.मू.शि. का प्रभाव	97–98
4.34	शिक्षक प्रभाशीलता के आयामों पर चे.वि.मू.शि. का प्रभाव	99
5.1	जिलेवार प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षक संख्या	112
5.2	सामान्य जानकारी आधारित शिक्षकों की संख्या	112–113

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

आरेख सूची

क्रमांक	शीर्षक	पृष्ठ क्रमांक
4.1	शिक्षकों के मध्यमान	52
4.2	पुरूष शिक्षकों के मध्यमान	53
4.3	महिला शिक्षिकाओं के मध्यमान	55
4.4	35 वर्ष से कम आयु वाले शिक्षकों के मध्यमान	56
4.5	40 वर्ष से अधिक आयु वाले शिक्षकों के मध्यमान	58
4.6	सामान्य वर्ग के शिक्षकों के मध्यमान	59
4.7	अन्य पिछडी जाति के शिक्षकों के मध्यमान	61
4.8	अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के शिक्षकों के मध्यमान	62
4.9	प्राथामिक स्तर के शिक्षकों के मध्यमान	64
4.10	माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के मध्यमान	65
4.11	उच्चतर माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के मध्यमान	67
4.12	10 वर्ष से कम शैक्षिक अनुभवी शिक्षकों के मध्यमान	68
4.13	15 वर्ष से अधिक शैक्षिक अनुभवी शिक्षकों के मध्यमान	70
4.14	स्नातक स्तर शिक्षित शिक्षकों के मध्यमान	71
4.15	स्नातकोत्तर स्तर शिक्षित शिक्षकों के मध्यमान	73
4.16	शिक्षको के मध्यमान	74
4.17	पुरूष शिक्षकों के मध्यमान	76
4.18	महिला शिक्षिकाओं के मध्यमान	77
4.19	35 वर्ष से कम आयु वाले शिक्षकों के मध्यमान	78
4.20	40 वर्ष से अधिक आयु वाले शिक्षकों के मध्यमान	80

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

4.21	सामान्य वर्ग के शिक्षकों के मध्यमान	81
4.22	अन्य पिछडी जाति के शिक्षकों के मध्यमान	82
4.23	अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के शिक्षकों के मध्यमान	84
4.24	प्राथामिक स्तर के शिक्षकों के मध्यमान	85
4.25	माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के मध्यमान	87
4.26	उच्चतर माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के मध्यमान	88
4.27	10 वर्ष से कम शैक्षिक अनुभवी शिक्षकों के मध्यमान	90
4.28	15 वर्ष से अधिक शैक्षिक अनुभवी शिक्षकों के मध्यमान	91
4.29	स्नातक स्तर शिक्षित शिक्षकों के मध्यमान	92
4.30	स्नातकोत्तर स्तर शिक्षित शिक्षकों के मध्यमान	94
4.31	आयामो का मध्यमान	95

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

अध्याय प्रथम
समस्या की पृष्ठभूमि

1.1 भूमिका

1.2 संबंधित शोध अध्ययन

1.2.1 चेतना विकास मूल्य शिक्षा से संबंधित शोध कार्य

1.2.2 शिक्षकों के आत्मविश्वास से संबंधित शोध कार्य

1.2.3 शिक्षक प्रभावशीलता से संबंधित शोध कार्य

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

अध्याय–प्रथम

समस्या की पृष्ठभूमि

1.1 भूमिका –

शिक्षा परिवर्तन का सर्वोत्तम साधन है। शिक्षा का सरलतम अर्थ "सही समझना" ही है और यह सही समझ स्वयं से लेकर संपूर्ण अस्तित्व की व्यवस्था को समझना होता है अर्थात शिक्षा से आशय स्वयं को समझना एवं अस्तित्व को समझना ही है। स्वयं की समझ व अस्तित्व की समझ से ही सही मायने में मानवीयता पूर्ण आचरण की समझ का विकास होता है और यह समझ की प्रक्रिया मानव में, मानव से, मानव के लिये ही संभव है। यही मानव चेतना का विकास है। अन्यथा जीव चेतना तो पशु–पक्षी में भी विद्यमान है। इस जीव चेतना धारी पशु–पक्षी की आवश्यकता भय, भूख, वंशवृद्धि, निद्रा तक की पूर्ति तक ही सीमित होकर रह जाती है। परन्तु मानव इतने भर से ही सन्तुष्ट नहीं रहता। इससे भी इतर कुछ चाहिए। वही चाहत जीव चेतना से मानव चेतना की ओर अग्रसर होने के लिए मानव को सदियों–सदियों से प्रेरित कर रहा है। यह जीव चेतना, मानव चेतना की ओर कैसे, उन्मुख हो, यही अध्ययन वस्तु चेतना विकास मूल्य शिक्षा में अंतर्निहित एवं व्याख्यायित है। अतः इस पृष्ठभूमि में मध्यस्थ दर्शन आधारित चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रत्येक शब्द का आशय दृष्टव्य है

चेतना – चेतना से आशय, ज्ञान विज्ञान विवेक संपन्नता से है अर्थात विवेक सम्मत विज्ञान एवं विज्ञान सम्मत विवेक के द्वारा ही ज्ञान को पहचाना जाये। विवेक जीवन का लक्ष्य निर्धारित करता है एवं विज्ञान कैसे उस लक्ष्य को प्राप्त किया जाये इस पर प्रकाश डालता है। इसे ही अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन या मध्यस्थ दर्शन (सह अस्तित्व वाद) कहा गया है। इसमें जीवन क्यों और जीवन कैसे जीये ? इसका गहराई से अध्ययन कराया जाता है। मानव चूंकि श्रेष्ठ चेतना धारी है, इसलिये केवल इसे ही इन वास्तविकता को समझना है और यही चेतना का मूल अर्थ एवं प्रयोजन है।

विकास – गुणात्मक परिवर्तन ही विकास का मूल आशय है । यह गुणात्मक परिवर्तन अवस्था दर अवस्था होता है। पूरे अस्तित्व में सभी इकाई चार अवस्थाओं में गण्य है। पदार्थावस्था, प्राणावस्था, जीवावस्था एवं ज्ञानावस्था। पदार्थावस्था में मिट्टी, पानी, धातु आदि है। रचना विरचना की क्रिया सदैव इसमें होती रहती है। अस्तित्व में बने रहना ही इसका मूल लक्षण है। प्राणावस्था की इकाई पेड़–पौधे हैं जिसमें रचना विरचना के साथ ही श्वसन–प्रश्वसन की क्रिया पाई जाती है। पदार्थावस्था से प्राणावस्था में यही परिवर्तित गुण है। इसका आधार पदार्थावस्था के ही पदार्थ हैं पर गुणपरिवर्तन से प्राणावस्था में ये

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

उत्सवित हो गए। इसका लक्षण अपने अस्तित्व की पुष्टि (वृद्धि) करना है जो कि बीज के साथ सदैव अस्तित्व में विद्यमान रहते हैं। आगे पुनः गुण परिवर्तन के परिणाम स्वरूप ही जीवावस्था नजर आता है जिसमें पशु–पक्षी आते हैं। इसमें भी रचना विरचना, श्वसन–प्रश्वसन क्रिया के साथ ही शरीर में चयन आस्वादन की किया गुणात्मक रूप से विकसित हो जाती है। जिससे लाक्षणिक तौर पर शरीर द्वारा अस्तित्व की पुष्टि के साथ ही जीवन (मैं) में जीने की आशा बनी रहती है। विकास की प्रकिया में गुणपरिवर्तन के आधार पर पशु–पक्षी से अधिक विकसित ज्ञानावस्था की इकाई मनुष्य में रचना–विरचना, श्वसन–प्रश्वसन, शरीर में चित्रण, विश्लेषण, चयन की किया में गुणात्मक विकास होता है जिससे मनुष्य में जीने की आशा से आगे निरतर सुख पूर्वक जीने की चाह का गुण विकसित हो जाता है। यही निरंतर सुख पूर्वक जीने की चाह मानवीय लक्षण है। तभी तो कोई भी मनुष्य सुख की आशा में ही कोई भी काम करता है। निरंतर सुखी रहने का आकांक्षी मनुष्य, योग्यता में कमी की वजह से ऐसा कर नहीं पाता। चाहत सुख की ,पर कार्ययोजना व कार्यावधि दुख पैदा करने वाला। यह विवेकजन्य प्राकृतिक नियमों को भलीभांति न जानने से होता है। इसी कारण मानवीय लक्ष्य जो कि प्रत्येक मनुष्य के लिए समाधान,समृद्धि,अभय व सहअस्तित्व ही है, को नहीं पा रहा और इसके अभाव में मनुष्य समाधान के बदले समस्या, समृद्धि के बदले अमीरी–गरीबी में असंतुलन, अभय के बदले हमेशा धन,पद.मान. मृत्यु भय से ग्रसित रहना तथा सहअस्तित्व– साथ साथ जीने के बदले मैं जीऊं, दूसरे की चिंता नहीं। क्योंकि वर्तमान मानसिकता में अस्तित्व में मेरा होना आवश्यक है,दूसरे का गैर जरूरी है। इस मानसिकता के कारण अस्तित्व के चारों अवस्थाओं में परस्पर पूरकता व उपयोगिता समाप्त हो जाती है व विकास के नाम पर चारों अवस्थाओं में से किसी न किसी अवस्था को नुकसान पहुंचते हुए ही देखा जाता है। जिससे प्रकृति में असंतुलन और असामंजस्य पैदा हो रहा है। धरती बीमार हो गई है और चेतन इकाइयों में परस्पर कलुषता में वृद्धि हो रही है।

फलस्वरूप वर्तमान परिस्थिति के विकास को देखें तो विकास के स्थान पर विनाश का संकट महसूस किया जा रहा है। मूलरूप में विकास के लिए चारों अवस्थाओं में तालमेल आवश्यक है। जिसके लिए चेतन इकाइयों में आपस के संबंधों एवं संपर्कों को जानना अनिवार्य है तथा संबंध व संपर्क को उनमें निहित मूल्यों को पहचानने के आधार पर कार्य व्यवहार में निर्वाह किया जाना अपरिहार्य है। तभी इस धरती पर सुख – शांति पूर्वक रहा जा सकता है। इस प्रकार मध्यस्थ दर्शन में चेतना विकास से आशय है जीव चेतना से मानव चेतना में संकमित होना। जीव चेतना का अर्थ हैः प्रिय, हित,लाभ दृष्टियों से विचार करते हुए चार विषयों (आहार ,निद्रा,भय और मैथुन) और पांच संवेदनाओं(शब्द, स्पर्श, रूप, रस ,गंध) के लिए जीना। मानव चेतना का अर्थ है ज्ञान (जीवन ज्ञान,सहअस्तित्व दर्शन ज्ञान, मानवीयतापूर्ण आचरण ज्ञान) और उससे अनुबंधित विवेक और विज्ञान के अनुसार जीना।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

ज्ञान,विवेक,विज्ञान को मिलाकर मानव चेतना का विस्तार है। मध्यस्थ दर्शन मानव चेतना में संक्रमित होने के लिए अध्ययन विधि को प्रस्तावित करता है।

मूल्य – प्रत्येक इकाई में निहित मौलिकता ही मूल्य है। जो जैसा है उसको वैसा ही समझा जाए तब उसकी मौलिकता की पहचान प्रत्यक्ष होती है। किसी भी इकाई के मूल रूप में पहचान (अर्थात प्रत्येक इकाई की उपयोगिता ही उसकी पहचान है) से ही उसका एवं उससे अन्य का परस्पर निर्वहन तय होता है। यही निर्वाह करना ही भागीदारी को दर्शाता है जो कि व्यक्ति को व्यवस्था की ओर अग्रसर करता है। जीवन अपने होने एवं रहने को शरीर के द्वारा व्यक्त करता है। जीवन होने की स्वीकृति हर मानव में है ही। हर व्यक्ति अपने मन से कहता ही है कि जीवित हूं, जीवन्त हूं। किन्तु जीवन क्या है ? जीवन का प्रयोजन क्या है ? जीवन का अध्ययन करता कौन है ? उसे जीवन की दस कियाओं को समझ कर ही इन बातों को जाना जा सकता है और तद्नुरूप आचरण एवं प्रमाण प्रस्तुत किया जा सकता है।

मानव संबंधों से अछूता नहीं रह सकता क्योंकि संबंध शास्वत है। संबंध में अपेक्षाएं निहित रहती ही है। अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए जो आदान प्रदान है वही मूल्य के रूप में भावों का परस्पर आदान प्रदान करता है। वही मानव के कार्य व्यवहार का आधार है। संबंध, अपेक्षाएं, मूल्य शाश्वत है केवल मानव बदलते रहते हैं। शरीर में नश्वरत्व व जीवन में अमरत्व है। शरीर व जीवन के संयुक्त रूप मानव को व्यवहार के नियम को जानना आवश्यक है। यही विवेक है जिससे मानव लक्ष्य और उसे प्राप्त करने संबंधी आचरण का ज्ञान होता है। यही ज्ञान,विवेक,विज्ञान मानव की मौलिकता है जो सर्वोच्च चेतनधारी मानव से अपेक्षित है। मानव का होना भी निश्चित है, उसका रहना भी निश्चित है। मानव हो पर मानव के तुल्य रह नहीं पाए तो मानव होने का पहचान बन ही नहीं पाता । तभी तो कहा जाता है कि मनुष्य है पर मनुष्य जैसे इसका कृत्य नहीं है। इसे ही अमानवीय कहते हैं।

अतः मानव में मूल्य को भलीभांति जानना आवश्यक है। मानव का चैतन्य पक्ष जीवन है एवं प्रत्येक मानव को अपना रहना ही प्रमाणित करना है। मानव को रहना ही सिद्ध करना है। चूंकि मनुष्य का रूपाकार शरीर के रूप में ही दिखाई पड़ता है तो उसी को ही जीवन मानकर जीव चेतना में चलता रहता है और शरीर की 5 संवेदनाओं एवं 4 विषयों में ही जीता रहता है। यही भ्रम है, यदि मनुष्य को जीवन होना समझ में आ जाए जो कि शरीर को चलाता है, तो मानव शरीर एवं जीवन के संयुक्त रूप में अपने होना,रहना को प्रमाणित कर सकता है। एक बात मनुष्य के लिए और कहा जाता है कि वह अपने स्वभाव के अनुसार चलना चाहता है। स्वभाव का मतलब क्या है ? यदि स्वभाव शब्द का विच्छेद करें तो स्व याने स्वयं तथा भाव (भवः = होना) याने मूल्य। अर्थात मेरे होने का औचित्य। औचित्य सिद्ध होता है इकाई की उपयोगिता में। इसीलिए मध्यस्थ दर्शन में स्पष्ट है कि मेरी उपयोगिता

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R.Baghel PhD- Raipur Univ.c

ही मेरी पहचान है। यही मेरे सम्मान का आधार रूपी मूल्य है। अब यदि इकाई अपनी उपयोगिता सिद्ध नही कर पा रहा है तो उसके स्वभाव के विरूद्ध ही उसका "होना" हुआ। अतः शिक्षक के लिये स्व मूल्य को जानना समझना उसकी प्राथमिकता हो। तभी इन मूल्यों को वह परस्परता में आदान प्रदान कर पाएगा जो कि संबंध आधारित होगा। इसीलिए चेतना विकास मूल्य शिक्षा में स्थापित है कि संबंधों में ही मूल्य बहते हैं। संबंध पहचान नहीं पाने के कारण ही मूल्यों का निर्वाह नहीं हो पाता और केवल संबोधन रह जाता है। स्वभाव का अर्थ यदि देखें तो आपस में प्रभाव पैदा करने वाले गुणों को ही स्वभाव कहते हैं। आशय यही कि वे कौन कौन से मानवीय गुण हैं जो मानव में होना अति आवश्यक है। इस रूप में देखने पर प्रत्येक मानव में 6 मानवीय मूल्य धीरता, वीरता, उदारता, दया, कृपा एवं करूणा गुण के रूप मे रहता ही है। इन गुणों का विकास नहीं कर पाने के कारण यह दमित रह जाता है और इसके अभाव में धीरता के बदले उग्रता, वीरता के बदले कायरता,उदारता के बदले धृष्टता,दया के बदले दुष्टता,कृपा के बदले अपकार एवं करूणा के बदले कूरता दिखाई देती है, जो कि अमानवीय लक्षण है। इसके अलावा मानव का चैतन्य पक्ष जीवन में चाहत के रूप में 4 मूल्य सुख,शांति,संतोष,आनंद सभी को चाहिए ही चाहिए। इसके अभाव में ही व्यक्ति दुखी , अशांत, असंतुष्ट व क्षुब्ध रहता है। साथ ही इनमें 9 स्थापित मूल्य व 9 शिष्ट मूल्य भी मानवीय जीवन को प्रकृति प्रदत्त रहता ही है। मानवीय चेतना सम्पन्न मानव संबंध में 9 स्थापित मूल्य व उसके अनुरूप अभिव्यक्ति क्रम में 9 शिष्ट मूल्य निम्नांकित हैः–

स्थापित मूल्य	शिष्ट मूल्य
(1) विश्वास	(1) सौजन्यता
(2) सम्मान	(2) सौहार्द्रता
(3) स्नेह	(3) निष्ठा
(4) ममता	(4) उदारता
(5) वात्सल्य	(5) सहजता
(6) श्रद्धा	(6) पूज्यता
(7) कृतज्ञता	(7) सौम्यता
(8) गौरव	(8) सरलता
(9) प्रेम	(9) अनन्यता

उपरोक्त चैतन्य मूल्य के अलावा जड़ पक्ष में दो मूल्य उपयोगिता एवं कला मूल्य को देखा जा सकता है। इस तरह कुल 30 मूल्य प्रत्येक मानव में अनिवार्य रूप से रहता ही है। इसे ही प्रत्येक व्यक्ति में पात्रता,योग्यता, क्षमता के रूप में देखा जा सकता है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी एवं स्वामी विवेकानंद जी ने जिस अंतर्निहित शक्तियों के विकास की बात

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

रखते हैं वह यही 30 मूल्यों को विकसित करने वाले विचार "पात्रता, योग्यता, क्षमता" की शक्ति है। इन मूल्यों को शिक्षा के द्वारा विकसित किया जाना परम आवश्यक है।

प्रस्तुत शोध के माध्यम से इस दिशा में यह जानने का एक विनम्र प्रयास है कि चेतना विकास मूल्य शिक्षा के क्षेत्र में जो नूतन प्रयोग प्रारंभ किए गए हैं उसका प्रभाव किस प्रकार से परिलक्षित हो रहा है। यह सुनिश्चित रूप से कहा जा सकता है कि शिक्षा में मानवीय मूल्यों का समावेश करने से बालक के मस्तिष्क में प्रारंभ से ही सद्‌गुणों को पहचानने एवं स्वीकारने की आदत डाली जा सकती है। जो अध्ययन के साथ–साथ फलीभूत होगी और शिक्षा प्राप्त करने के बाद वह केवल पढ़ा लिखा शिक्षित होने के साथ ही मानवीय गुण संपन्न समझदार इंसान भी होगा, जो घर–परिवार, समाज और राज्य के साथ अपने उत्तदायित्वों को बखूबी वहन कर सकेगा। इसके लिए शिक्षा के पाठ्‌यकम में संशोधन व परिवर्तन के साथ ही बालक को ध्यान में रखते हुए शिक्षको को भी अपनी भूमिका पर पुर्नविचार करना होगा। इस संदर्भ मे गिजूभाई का यह विचार भावी शिक्षकों को आत्मसात करना होगा – "बुद्धि के मार्ग को जिस प्रकार बोधिसत्व प्रशस्त करते हैं, निष्कंटक करते है, निर्भय बनाते है, उसी प्रकार तुम बालकों के मार्ग को स्वच्छ, निर्भय, निष्कंटक निर्मल करो। जिस प्रकार किसान या माली अपने पौधों की पशुओं द्वारा विनाश से रक्षा करता है। उसी प्रकार तुम भी असत्य एवं हीनताओं से अपने बालकों की रक्षा करो, उनके विकास के निमित्त तुम्हारे पास जो समृद्धि है वह उन्हें प्रदान करो और अगर न हो तो उनके लिए उपलब्ध करो। इतनी सुविधा देने के पश्चात बालक स्वयं अपना विकास कर लेंगे।" स्कूल शिक्षा का सारा उपकम बालक के लिए है। बालक जिसका सर्वप्रमुख लक्षण उसकी जिज्ञासा की प्रवृत्ति है। इस जिज्ञासा के मूल में बालक में विद्यमान तीन स्वाभाविक गुण कमशः उनका सत्यवक्ता होना, न्याय का याचक होना एवं हमेशा सही करने का आकांक्षी होना को उभारने वाली शिक्षा की आज महती आवश्यकता है। फलस्वरूप शोधार्थी को यह अध्ययन करने की आवश्यकता परिलक्षित हुई। जिससे चेतना विकास मूल्य शिक्षा का प्रभाव शिक्षकों के आत्मविश्वास एवं उनके शिक्षक प्रभावशीलता में जाँच करने की इच्छा प्रबल हुई।

अतः चेतना विकास मूल्य शिक्षा, आत्मविश्वास एवं शिक्षक प्रभावशीलता को परिभाषिक दृष्टि से समझते हुये इन पर पूर्व में किये गये शोध कार्यों से परिचित होना भी आवश्यक महसुस किया गया।

चेतंना विकास मूल्य शिक्षा –

चेतना विकास मूल्य शिक्षा वास्तव में मानवीय शिक्षा का निश्चयीकरण है। या इसे यदि शिक्षा का मानवीयकरण कहें तो यह उचित होगा, क्योंकि मानव का अध्ययन ही शिक्षा का मानवीयकरण है। इसलिए अस्थिरता अनिश्चितता मूलक भौतिक रासायनिक वस्तु केन्द्रित

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

विचार बनाम विज्ञान विधि एवं रहस्यमूलक आदर्शवादी चिन्तन विधि से शिक्षा का मशीनीकरण या आदर्शीकरण से शिक्षा को बचा लें तो भी यह मानवता के लिये उपकार ही होगा।

मध्यस्थ दर्शन का परिचय – यह मध्यस्थ दर्शन, अतिस्तवमूलक, मानव केन्द्रित, चिंतन अर्थात (सह–अस्तिववाद) आधारित एक वैकल्पिक शिक्षा व्यवस्था का आश्वासन देता है। बतौर प्रयोग स्कूल शिक्षा विभाग में चेतना विकास मूल्य शिक्षा की अवधारणा की चर्चा के कार्यकम शिविर के रूप में लगातार बहुत ही मंद गति से चल रहा है। यह शिक्षा प्रकृति एवं मानव के आपसी संबंध एवं उनमें निहित मूल्यों को आत्मसात करते हुये जीने के विश्वासपूर्वक आचरण का भी उद्घाटन करता है। इसके प्रारंभिक चर्चा में ही जो कि सात दिवसीय शिविर रहता है, में ही प्रतिभागी शिक्षकगण स्वयं के प्रति आत्म चेतना एवं शिक्षकीय दायित्व के प्रति नई, सही व उपयोगी तथ्यों से रूबरू होते जाते हैं। स्वयं को जाँचने एवं उनसे ही प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर विश्वास करने की महत्ता से परिचित होते हैं। साथ ही विश्वास से भर कर शिक्षकीय दायित्व को सफलतापूर्वक किये जाने का संबल भी उन्हें प्राप्त होता हुआ दिखाई पड़ता है। इसे ही सरल शब्दों में कहें कि यह वैकल्पिक शिक्षा वर्तमान शिक्षा पद्धति में प्रचलित सीखना–सिखाना एवं समझना–समझाना के स्थान पर सीखना–करना–सिखाना तथा समझना–जीना–समझाना को काफी दृढ़ता से शिक्षकों के मध्य रखता है। शिक्षकों में अपेक्षित यही शिक्षकीय आचरण बालकों को उनके समग्र विकास एवं जागृति के लिये प्रभावकारी एवं प्रेरणात्मक अवसर देने में कार्यरत साबित हो सकता है।

मध्यस्थ दर्शन के प्रणेता श्री ए.नागराज जी ने अमरकंटक की एकान्तवदियों में जो भारत का सुप्रसिद्ध तीर्थ, नर्मदा नदी का उदगम स्थल, और मैकल पर्वत की हरी–भरी गोद है, में आदमी के मूल स्वरूप को खोजने का प्रयास किया।

आदमी का स्वयं को जान पाना हमेशा से जिज्ञासा की वस्तु है। बाबा जी बचपन से जिज्ञासु थे। उनके चार प्रमुख जिज्ञासायें थी जिनके संतोष जनक उत्तर उन्हें अपने विद्वान अग्रजों से नहीं मिला परंतु सलाह स्वरूप सभी जिज्ञासाओं का शमन समाधि में है यह समझाइस उन्हें मिलता रहा। जिसके प्रभाव में उन्होंने समाधि का एकमेव मार्ग मानते हुए उस पर चलने के उद्धृत हुए। अंततः मैसूर प्रांत के अपने हरे–भरे गांव अग्रहार को छोड़कर श्री नागराज जिन्हें अब बाबाजी कहते है कुछ प्रश्नों के उत्तर ढूंढने आये थे। घोर जंगल, घोर शीत, वर्षा, जंगली जानवर, भोजन की व्यवस्था नहीं और तमाम असुविधाओं में जीकर वे अनुसंधान करते रहे। भारत के सुप्रसिद्ध मठ के शंकराचार्य श्री चंद्रशेखर भारती द्वारा दीक्षित श्री नागराज जी पंरपरानुसार विधियों से तप करते रहे। अपने अनुसंधान के कम में उनको समाधि की स्थिति प्राप्त हुई। किन्तु अपने प्रश्नों का उत्तर नहीं मिलने के कारण उन्होंने 'संयम' किया। संयम करने पर उन्हें सृष्टि में अस्तित्व एवं अस्तित्व में आदमी समझ

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

में आ गया। अस्तित्व में व्यापक सत्ता जिसे हम ईश्वर, सत्य, ब्रम्ह आदि नामों से पुकारते हैं उसका अनुभव हो गया। उन्होंने देखा कि संपूर्ण प्रकृति सत्ता में (परमात्मा में) डूबी है, भीगी है, घिरी है।

सन् 1971 से अपने अनुभव को उन्होंने अपने पास आने वाले लोगों को बताना शुरू किया। इसी क्रम में उनके पास एक ओर देश के प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. सी.व्ही. रमन, परमाणु आयोग के अध्यक्ष डॉ. भाभा जैसे लोग भी आये तो दूसरी ओर साधारण अनपढ़ कहे जाने वाले ग्रामीण भी आये। उन्होंने सत्य को कहना शुरू किया। जीवन की सच्चाइयाँ जो उनके श्रीमुख से निःसृत हुई उनको कुछ लोगों ने समझकर "जीवन विद्या" के नाम से शिविरों में अध्ययन कराना प्रारंभ किया।

मध्यस्थ दर्शन की व्याख्या करने एवं उसे विधिवत स्वरूप प्रदान करने में प्रो. यशपाल सत्या जी का विशेष सहयोग रहा है। उन्हीं के प्रयासों से 1990 के दशक में आई.आई.टी. दिल्ली में इसके शिविरों की शुरूवात की गई।

1990 में ही बिजनौर में श्री रणसिंह आर्य ने मध्यस्थ दर्शन के जीवन विद्या शिविरों की रूपरेखा प्रारंभ करने में अपना योगदान दिया। 1990 के दशक के प्रारंभिक वर्षो से ही पवन गुप्ता जी ने मसूरी में एवं प्रो. गणेश बागड़िया जी ने कानपुर में अपना योगदान देना आरंभ किया।

दिसम्बर 1999 में अछोटी में अभ्युदय संस्थान की स्थापना की गई। 1999 में ही श्री राजन महाराज एवं गायत्री परिवार के कुछ समर्पित सदस्यों ने छत्तीसगढ़ राज्य में मध्यस्थ दर्शन में अपना विशेष योगदान देना आरंभ किया। राजन महाराज एवं अन्य मनीषियों के सहयोग से महत्वपूर्ण लेखन कार्य संपन्न हुआ जिसमें विचार और वाणी बाबा ए.नागराज जी की थी।

छत्तीसगढ़ राज्य के वरिष्ठ पत्रकार स्व. श्री रमांशकर अग्निहोत्री जी की दूरदृष्टि एवं प्रेरणा से मध्यस्थ दर्शन जीवन विद्या आधारित चेतना विकास मूल्य शिक्षा का स्कूल शिक्षा विभाग में समावेश किया गया। इसके लोकव्यापीकरण में छ.ग. राज्य के पूर्व शिक्षा सचिव श्री नंदकुमार जी (आई.ए.एस.) का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

छत्तीसगढ़ राज्य के लोकप्रिय मुख्यमंत्री माननीय डॉ. रमन सिंह एवं पूर्व शिक्षा मंत्री माननीय श्री बृजमोहन अग्रवाल जी भी इसमें यथोचित योगदान प्रदान कर रहे है। उनका सहयोग इसकी सफलता का एक बहुत बड़ा संबल है।

आई.आई.आई.टी. हैदराबाद, आई.आई.टी. कानपुर, यूपी एवं पंजाब तकनीकी विश्वविद्यालय, आई.ए.एस.ई. विश्व विद्यालय सरदार शहर, चुरू (राजस्थान) एवं देश के विभिन्न एन.आई.टी. ने इसे अपने पाठयक्रम में शामिल किया एवं छात्रों में इसका अध्ययन

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

शुरू करवाया। आई.ए.एस.ई. विश्व विद्यालय सरदार शहर, चुरू (राजस्थान) में इसे कोर्स के रूप में शामिल करवाने एवं इसके व्यापक प्रचार–प्रसार में डॉ. हिमांशु जी, डॉ. सुरेन्द्र पाठक एवं अन्य विद्वानो का भरपूर सहयोग मिल रहा है।

अभ्युदय संस्थान के प्रबोधक श्री सोम भाई, योगेश भाई, सुवर्णा दीदी, अंजनी भाई एवं अमरकंटक के प्रबोधक श्री साधन भट्टाचार्य जी के सद्प्रयासों से जीवन विद्या का परिचय एवं अध्ययन शिविर कार्यकम सफलता पूर्वक संपन्न किया जा रहा है।

आई.आई.टी. दिल्ली में 22 से 24 मई 2007 में आयोजित जीवन विद्या और मूल्य शिक्षा पर राष्ट्रीय महासम्मेलन के उद्घाटन अवसर पर महामहिम राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जी ने मूल्य शिक्षा और जीवन विद्या पर अपना महत्वपूर्ण उद्बोधन दिया। वर्तमान समास्याओं के समाधान हेतु भी श्री कलाम साहब ने मानवीय मूल्य आधारित शिक्षा पाठ्यक्रम में समाहित करने संबंधी सुझाव दिये है।

मध्यस्थ दर्शन के प्रणेता ए.नागराज का वांगमय साहित्य –

1. दर्शन
2. वाद
3. शास्त्र
4. अन्य

दर्शन से संबंधित वांगमय –

1. मानव व्यवहार दर्शन
2. कर्म दर्शन
3. अभ्यास दर्शन
4. अनुभव दर्शन

वाद से संबंधित वांगमय –

1. समाधानात्मक भौतिकवाद
2. व्यवहारात्मक जनवाद
3. अनुभवात्मक अध्यात्मवाद

शास्त्र से संबंधित वांगमय –

1. आवर्तनशील अर्थशास्त्र
2. व्यवहार वादी समाजशास्त्र
3. मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान

अन्य वांगमय –

1. विकल्प
2. अध्ययन बिन्दु
3. जीवन विद्या एक परिचय
4. मानवीय संविधान सूत्र व्याख्या
5. परिभाषा संहिता

अध्ययन का औचित्य (वर्तमान समस्या के चयन का आधार) –

शिक्षा आयोग (1964–1966) के अनुसार शिक्षा में जो सबसे मुख्य एवं तुरंत सुधार की आवश्यकता है, वह है – इसमें परिवर्तन लाना, इसको जीवन से संबंधित करने की चेष्टा करना, व्यक्तियों की आवश्यकताओं एवं महात्वाकांक्षाओं से संबंधित करना, ताकि यह सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तनों को लाने वाला एक शक्तिशाली औजार बन जाए, जो राष्ट्रीय उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए आवश्यक है। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए शिक्षा को इस प्रकार विकसित करना चाहिये कि वह आधुनिकीकरण की प्रकिया को गति दे एवं सामाजिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों को उभारे। उक्त रिपोर्ट स्वतंत्रता प्राप्ति के चन्द वर्षो पश्चात की है और आज पर्यन्त उक्त सुझावों को शिक्षा में पूर्ण रूपेण अंगीकृत नहीं किया गया।

शोधार्थी का विश्वास है कि विभिन्न आयोगों के द्वारा दिये गये सुझाव का उचित कियान्वयन नहीं होने के कारण शिक्षा में गुणात्मक परिवर्तन परिलक्षित नहीं हो रहे हैं।

आज शिक्षा प्राप्ति का लक्ष्य उच्च वेतनमान की नौकरी प्राप्त करना हो गया है अर्थात शिक्षा लाखों रूपयों के पैकेज प्रतिमाह प्राप्त करने वाले अधिकारी तो बना पा रही है पर ईमानदार, शिष्ट और आदर्श नागरिकों का सृजन नही कर पा रही है। इससे मानवीय व नैतिक गुणों का अभाव हो रहा है। इसलिए वर्तमान समाज में विविध बुराइयां उत्पन्न हो रही है। यह केवल भारतीय समाज की नही बल्कि समूची दुनियां की समस्या है। जर्मनी समेत यूरोपियन देश इस बात को लेकर बहुत चिंतित है कि उनके देशों के युवा जिस तरह से व्यवहार करने लगे है उसमें करूणा, सहयोग और सहनशीलता के मानवीय गुण पूरी तरह से लुप्त होते जा रहे हैं। वे यदि अपनी मानवता भूल जायेंगे, अपने मनुष्य होने के गुणों को भुला देंगे, तब न तो वे पर्यावरण के प्रति और न ही एक दूसरे के प्रति उदार और सहिष्णु रह पायेंगे।

वर्तमान शिक्षा प्रकिया में मूल्यों की शिक्षा दिए जाने की चर्चा भी होती है और नैतिक शिक्षा के नाम से दिया भी जाता रहा है, पर अपेक्षित प्रभाव व्यक्ति ,परिवार एवं समाज में दिखाई नहीं दे रहा है। यदि मूल्यों की शिक्षा के बदले मूल्यपरक शिक्षा प्रदान की जाए तो

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel Phd - Raipur Univ_c

व्यापक बदलाव की संभावना बनती है। मूल्यपरक शिक्षा से आशय है कि मूल्य का अलग से विषय न होकर इन्हें सभी विषयों में मनोवैज्ञानिक ढंग से समाहित कर संस्कारित किया जाए। मूल्य शिक्षा के संबंध में सभी प्रकार के विचारशील लोग मूल्यों के तेजी से हो रहे ह्रास तथा उसके परिणाम स्वरूप सार्वजनिक जीवन में व्याप्त प्रदूषण से बहुत विक्षुब्ध है। आज के छात्र पर गुणात्मक विकास के नाम से वैसे ही बस्तों का बोझ बढ़ा हुआ है। इन मूल्यों को विषयों की तरह औपचारिक रूप से पढ़ाना किसी भी तरह से ठीक नहीं होगा, क्योंकि यह किसी तकनीकी या विज्ञान शिक्षा का यंत्रवत स्वरूप नहीं है। यह मानवीय संज्ञानीयता व आचरण संबंधी मूल्य नैतिकता तथा चरित्र विकास के मूलभूत अवधारणाओं एवं उनके प्रभावशाली गुणों की शिक्षा है। यह शिक्षा भारतीय संस्कृति, भारतीय आध्यात्मिकता एवं उसके हजारों वर्षों के संजोये धरोहरों की,आदर्शों एवं व्यवहारों की शिक्षा है जो श्रेष्ठ है, उदात्त है। यह कोई धर्म की शिक्षा भी नहीं है यह उन मूल्यों की शिक्षा है, जो मानव मात्र को अपने सीमित परिवेश से नहीं अपितु विश्व क्षेत्र की विश्वमानवीयता पूर्ण संवेदना से जोड़ता है। यह मनुष्य को महामानव बनाने की शिक्षा है।

वास्तव में शिष्ट मूल्यों का उदय ही शिक्षा है। शिक्षा वही सार्थक है जिसमें समझना–जीना–समझाना व सीखना–करना–सिखाना हो। उक्त प्रकिया को पूर्ण करने वाला ही शिक्षक है। ऐसी शिक्षा देने वाली प्रकिया को ही चेतना विकास मूल्य शिक्षा कहा जा सकता है। इस पर यदि और गहराई में जाए तो समझना–जीना–समझाना अध्ययन की अनिवार्य प्रकिया है। जिसमें जीना पक्ष अक्सर छूटा रहता है, जो कि आचरण को इंगित करता है। चूंकि केवल समझना–समझाना ही अनुभव को नहीं छू सकता, इसलिए प्रमाणित होना शेष रहता है, परंतु प्रेरक के रूप में वह शिक्षक खड़ा हो सकता है। शिक्षक शिक्षा प्रदान करता है। ऐसी शिक्षा भी केवल सीखना–सिखाना तक सीमित रह गया है। जिसमें करना पक्ष का अभाव पाया जाता है, इसी कारण से सीखना–सिखाना अपेक्षित प्रभाव नहीं डाल पाता और शिक्षक केवल प्रशिक्षक बनकर रह जाता है। यह प्रशिक्षक किसी एक हूनर पर ही अपना ध्यान केन्द्रित किया रहता है और उसी को ही विशिष्ट बनाने में लगा रहता है। जिससे शिक्षा सर्वांगीण स्वरूप में न होकर एकांगी हो जाता है। यही कारण है कि वर्तमान शिक्षा में से 20 वर्ष की शिक्षा पूर्ण करने के बाद भी व्यक्ति के समक्ष बहुत सारे अनुत्तरित प्रश्न जैसे क्यों जीना व कैसे जीना परेशान किए रहता है। फलस्वरूप व्यक्ति अपने संबंधों को शिकायत युक्त पाता है एवं स्वयं को समृद्धि के बजाय अमीरी–गरीबी के बीच झूलता हुआ पाता है। समृद्धि का आशय अपनी आवश्यकता से अधिक का होना एवं रहना है जिसे अभाव का अभाव भी कहते हैं। इन्हीं कमियों के कारण व्यक्ति अपने विश्वास के साथ खड़ा नहीं हो पाता तथा अपनी इस कमी का दोषारोपण सदैव दूसरों पर करता रहता है। चेतना विकास मूल्य शिक्षा सर्वांगीण विकास पर जोर देता है। यह शिक्षा को

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

व्यवसाय की ओर न ले जाकर संस्कार की ओर ले जाता है, जिसकी आज परम आवश्यकता है।

चेतना विकास मूल्य शिक्षा सर्वप्रथम स्वयं में विश्वास पक्ष को ही मजबूती प्रदान करता है। तभी तो इसके शिविर से गुजरे हुए शिक्षक जो कि शासकीय आदेश के द्वारा आने के कारण प्रारंभ में अनमनापन एवं बेचैनी महसूस करते हैं परंतु शिविर के समापन दिवस के अवसर पर स्वमूल्यांकन में वे यह कहना नहीं भूलते कि हम मजबूरी में आए थे और मजबूत होकर जा रहे हैं। निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि चेतना विकास मूल्य शिक्षा व इसके अध्ययन विधि में शिक्षा का विकल्प प्रस्तुत किये जाने की भरपूर संभावना है।

आत्मविश्वास का अर्थ – आत्मविश्वास दो शब्दों से मिलकर बना हैं– आत्म + विश्वास जहाँ आत्म से तात्पर्य 'स्व' अर्थात मैं को जानना है तथा विश्वास का तात्पर्य भरोसा करना है। जिसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि व्यक्ति सदैव किसी परिस्थिति में ही जीवन यापन करता है। अतएव प्रत्येक स्थिति की व्यक्ति से कुछ मांग होती है और इन मांगों की पूरी करने की व्यक्तियों की क्षमताएँ उनके आत्मविश्वास में दिखाई पड़ता है।

आत्म – जीव के व्यवहार में समझने के लिए सबसे महत्वपूर्ण यह है कि इस बात को ध्यान में रखा जाये कि स्वयं व्यक्ति के आंतरिक निर्देशन का आधार क्या है?

स्व व्यक्ति का यह वह आंतरिक स्वास्थ्य है जिसका ज्ञान व्यक्ति विशेष का ही होता है। व्यक्ति की अभिप्रेरणा में 'आत्म' का महत्वपूर्ण स्थान है। क्योंकि किसी भी सामाजिक आवश्यकता एवं लक्ष्य का संगठन इसी के माध्यम से होता है।

इस तरह जीव का पर्यावरण में अंतः क्रिया से ही स्व का विकास हो सकता है। मैं और मुझे का संबंध दूसरों अथवा जीवन के अन्य पक्षों से है।

इनका प्रत्यक्ष ज्ञान उनसे संबंधित मूल्यों को ध्यान में रखते हुए करना है। 'आत्म' अन्य व्यक्तियों के संबंध में एक मनुष्य के विचारों तथा कार्यों की चेतना है।

आलपोर्ट के अनुसार (1961)–

"व्यक्ति के आत्म में स्वयं का सब कुछ सम्मिलित रहता है, जो व्यक्ति की एकता को बनाता है।"

Academic Dictionary of Psychology में स्व को उल्लेखित किया गया है – A Symbol using individual who can reflect upon his/her own behavior.

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

गार्डनर एवं मोर्टी के अनुसार (1959)–

"व्यक्ति अपने को जिस रूप में जानता है, पहचानता है वही स्व है।"

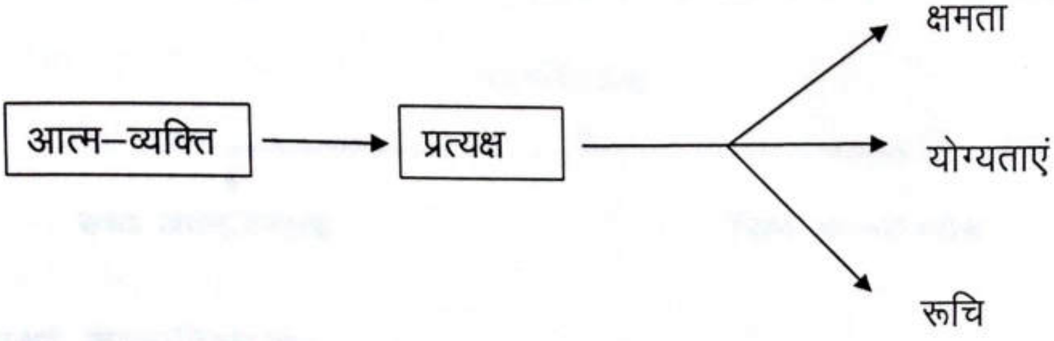

जेम्स ड्रेनर के अनुसार –

"आत्म शब्द का प्रयोग बहुधा अहं के अर्थ में किया जाता है। यह एक एजेन्ट है जो अपने पहचान के स्थायित्व के संबंध में चेतन रहता है।"

विश्वास – स्वयं के प्रति आश्वस्त एवं दूसरों के प्रति विश्वस्त रहना ही स्वयं में विश्वास है। क्योंकि "स्व" एवं "पर" का मूलाधार अस्तित्व ही सहअस्तित्व के रूप में सब में विद्यमान है। साम्यता बोध का यह विचार ही विश्वास पैदा करता है। जहाँ विश्वास है वहाँ भय निर्मूल हो जाता है एवं मानव अपने जीने के चारों आयाम विचार, कार्य, व्यवहार तथा अनुभव में उत्साहित रहता है। इसलिये चेतना विकास मूल्य शिक्षा (जीवन विद्या) को नित्य विश्वासपूर्वक जीने का विवेक व विज्ञान कहा गया है।

विश्वास को आधार मूल्य कहा है जिस पर सुदृढ़ मानवीय संबंधों की नींव टिकी रहती है। यह एक मानसिक प्रक्रिया है, जो एक व्यक्ति में उपस्थित योग्यता के परिणाम स्वरूप उत्पन्न होती है। जब व्यक्ति में स्वयं को समझने की योग्यता आ जाती है तब उसमें विश्वास जागृत होता है। विश्वास को हम कई प्रकार से समझ सकते है। यह वह शब्द है जिसे हम रोजमर्रा के जीवन में प्रतिदिन सुनते है। विश्वास का अर्थ है भरोसा रखना। विश्वास को अच्छी तरह समझने के लिए इसे अनेक भागों में बांटा जा सकता है।

विश्वास के प्रकार –

- **स्वयं के प्रति विश्वास**
- **श्रेष्ठता के सम्मान के प्रति विश्वास**
- **व्यक्तित्व एवं प्रतिभा के मध्य संतुलन के प्रति विश्वास**
- **सामाजिकता के प्रति विश्वास**
- **स्वावलंबन के प्रति विश्वास**

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R.Baghel PhD - Raipur Univ_c

आत्मविश्वास की जड़ मन में होती है। आत्मविश्वास में निहित मनोगत विशेषताएँ ही उसे प्रबल करने का कारण होता है। जो कि निम्नानुसार है –

आत्मविश्वासके प्रकार –

व्यक्ति में इसकी प्रबलता के आधार पर आत्मविश्वास मुख्यतः दो प्रकार का होता है।

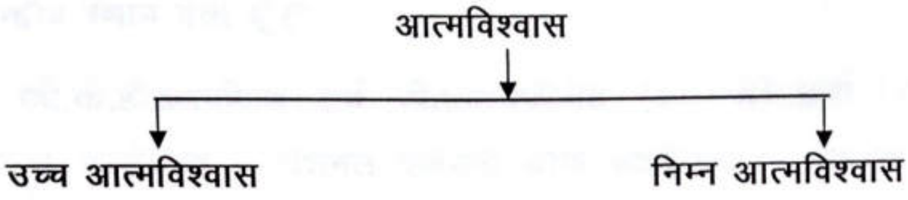

उच्च आत्मविश्वास–

उच्च आत्मविश्वासी व्यक्ति की सोच ज्यादा सकारात्मक होती है एवं निम्न आत्मविश्वासी व्यक्ति की सोच नकारात्मक ज्यादा होती है। इसका कारण उच्च शैक्षिक उपलब्धि रहता है।

आत्मविश्वासी शिक्षकों की विशेषताएं –

- आत्मचेतना
- अति उत्साह
- जिज्ञासा
- संवेदनशीलता
- निर्णय क्षमता
- प्रतियोगिता
- आत्मप्रत्यय
- महत्वाकांक्षी
- तार्किक क्षमता
- दृढ़ निश्चयी
- सौजन्यता
- सौम्यता
- विनम्रता

शिक्षक प्रभावशीलता –

जीवन की स्पष्ट समझ आत्मविश्वास को बढ़ाता है। आत्मविश्वास से भरा हुआ व्यक्ति का व्यक्तित्व प्रभावशील रहता है। आत्मविश्वास का प्रभाव व्यक्ति में आहार, विहार एवं व्यवहार में देखने को मिलता ही है। यदि शिक्षकों में आत्मविश्वास जगाने में कोई विचार

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

सफल होता है तो ऐसे शिक्षक का शिक्षण कार्य प्रभावी होगा और वे शिक्षा के प्रति प्रेरित एवं प्रोत्साहित होंगे। शिक्षक प्रभावशीलता का विद्वानों के दृष्टिकोण से समझने का प्रयास करना उचित होगा।

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

नेल्सन एवं बॉसिंग ने कहा है कि "शिक्षा की किसी भी योजना में मैं शिक्षकों को केन्द्रीय स्थान देता हूँ।"

जी.के.होडनफील्ड एवं टी.एम.स्टीनेट (2006) द्वारा लिखित "अध्यापकों की शिक्षा" में उल्लेखित – नेशनल एकेडमी ऑफ साइन्सिज – नेशनल रिसर्च काउन्सिल के रेन्डल एम. ह्वैले ने बाउलिंग ग्रीन सम्मेलन में कहा था " जो अध्यापक शिष्यों की आत्माओं को जगा सकते हैं। सुविज्ञ हों, हमारे विद्यालयों में अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों के लिए पूरी तरह तैयार हों – ऐसे अध्यापकों के बिना हमें अच्छी शिक्षा नहीं मिल सकती। बिना उत्तम शिक्षा के इस परिवर्तनशील जगत की चुनौतियों का सामना सफलता पूर्वक हम दीर्घकाल तक करने की आशा नहीं कर सकते।"

इससे अभिप्राय यही निकलता है कि प्रभावकारी शिक्षकों में ही शिष्यों की आत्मा जगाने वाली उत्तम शिक्षा की संभावना बनती है।

मुदालियर कमीशन (1952–53) ने भी अपने प्रतिवेदन में अध्यापक के महत्व को स्पष्ट शब्दों में स्वीकार किया हैं "we are however convinced that the most important factor in the contemplated educational reconctruction is the teacher - his personal qualaties his educational qualifications, his proressional training and place that he occupies in the school as well as in the community. The reputation of school and its influence on the life of community invariably depend on the kind of teachers working in it."

अतः एक प्रभावशाली शिक्षक शिक्षा का मजबूत आधारशीला रखने वाला एवं बालक के भविष्य निर्माता होता है।

प्रभावशाली शिक्षक जानते है कि उसे

- क्या पढ़ाना है कैसे पढ़ाना है ?
- जीव की रचना की समझ–सीखने की प्रक्रिया क्या है ?
- व्यवहार के प्रेरक तत्व कौन से है ?
- व्यक्ति का मूल्यांकन कैसे करना है ?
- स्वयं का विकास करने की प्रक्रिया कैसी होती है ?
- विभिन्न आयु वर्गों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए ?
- जिज्ञासा, उत्सुकता, नित्य नवीन खोज करना।
- अपने धर्मों, गुणों एवं मूल्यों को परखना।
- स्वयं का लक्ष्य निर्धारित करना।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

विद्यालयीन शिक्षा में चेतना विकास मूल्य शिक्षा की उपादेयता

वर्तमान में, विद्यालयीन शिक्षा व्यवस्था, जीवन जीने योग्य व्यक्ति को गढ़ पाने में सफल हो पा रहा है या नहीं यह विचारणीय मुद्दा है। इस पूरे वाक्य के प्रत्येक शब्द पर पहले एक नजर डाल लिया जाए। ''वर्तमान'' शब्द की समीक्षा में प्रत्येक में विश्वास का संकट स्पष्ट दिखायी देता है। विश्वास अर्थात् नित्य स्वयं के प्रति आश्वत होना व दूसरों के प्रति विश्वस्त रहना। यह भाव कहीं गुम है, मनुष्य के वजूद में। यह विश्वासहीनता व्यक्ति में स्वयं के अंदर से शुरू होकर वातारण के प्रत्येक घटक तक जाता है। न्यूनतम अपवाद हो सकता है, पर विश्वास में कमी चारों ओर अधिकतम संख्या में नजर आती है। इससे ही छुटकारा पाने के लिए अपने भीतर तो नहीं, पर बाहर ही कहीं ढूँढ़ते है। धन, पद यश में इस विश्वास को सब पाना चाहते है। इसी चक्कर में वस्तु संग्रह करने की आपाधापी, जल्द से जल्द धनवान बनने की होड़ जिसके लिए शार्टकट तरीका अपनाने की प्रवृत्ति और उसके लिए कुछ भी कर जाने की दिशा में व्यक्ति इतना आगे निकल जाता है कि उसका वर्तमान ही संकट ग्रस्त हो जाता है। उन्हें अपने एक भी संबंध से सही भांति से निर्वाह कष्टप्रद लगने लगता है। परिणामतः विश्वास घट रहा है, संकट बढ़ रहा है। वर्तमान विश्वास के नाम पर तार–तार हो रहा हैं और पाठशाला स्वयं के अध्किाार में जीने का विश्वास दे नहीं पा रही है।

विद्यालयीन शिक्षा को देखने पर यह लगता है कि वह अपने उद्देश्यों की पूर्ति में खरी नहीं उतर पा रही है। विद्यालय जहां प्रत्येक व्यक्ति के जीवन के शैशव काल के प्रारभिक तीन वर्षों को छोड़कर बचपन से लेकर कैशौर्य तक के पंद्रह वर्ष लग जाते हैं, वहां से बहुत ही कम प्रतिशत में अत्यंत ही प्रतिस्पर्धा से ग्रसित मानसिकता लिए नवयुवक निकलते है एवं बहतुतायत में उन विषयों को उत्तीर्ण किये नवयुवक सामने आते हैं जिन्हें अपने पठित विषय की उपयोगिता का ही पता नहीं होता। प्रतिस्पर्धा ग्रस्त नवयुवक ''नम्बर वन'' होने के प्रयास में जीवन को संघर्ष से भरा मानकर सुखदायी जीवन को रसहीन बना डालता है। ''कुछ'' पाना है के लिए संघर्षरत् रहता है पर उसे पता नहीं रहता कि वह ''कुछ क्या है ? न विद्यालय ही उस ''कुछ'' से उसे परिचित कराता है। कुछ अर्थात् सोद्देश्य व मानवीय आचरण से युक्त मानव का जीवन है जो केवल सुख और केवल निरंतर सुख चाहता है। विद्यालय में व्यक्ति को जब तक क्यों जी रहे हैं और कैसे जी रहे हैं से भलीभांति परिचय नहीं कराया जाएगा तो व्यक्ति के समक्ष उद्देश्यहीनता व आचरणहीनता का संकट न केवल बना ही रहेगा, बल्कि इसमें वृद्धि ही होगी, जोकि वर्तमान में स्पष्टतः दिखाई दे ही रही है। बाकी बहुतायत तो येन–केन प्रकारेण अपने को समुदाय के प्रचलित तौर तरीके में टिकाये योग्य बना ही लेता है। ऐसे व्यक्तियों को गढ़ने में विद्यालयीन शिक्षा

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

का योगदान कम और उनके परिवेशीय व्यवहारिक जानकारियां ज्यादा मददगार साबित होती है।

तीसरा शब्द ''व्यवस्था'' अपने में इतना सारगर्भित है कि यदि इससे भलीभांति परिचित हो जाए तो आनंदपूर्वक जीना स्वयं में निकल आता है। सभी संबंधों में मानवीयतापूर्ण आचरण को प्रमाणित करना ही व्यवस्था है। अस्तित्व में निश्चित व्यवस्था है, निश्चित विचार है, निश्चित परिणाम है, निश्चित उपलब्धि है, निश्चित मंजिल है। सभी में आचरण की निश्चितता है, केवल मनुष्य को छोड़कर। निश्चित आचरण ही व्यवस्था है। अस्तित्व का अर्थ ही है, ऐसा ही। ऐसा कैसा ? कैसा का मतलब कि सब व्यवस्थित है। अर्थात इस पूरे कायनात में सभी व्यवस्था में, व्यवस्था से व व्यवस्था के लिए हैं।

प्रकृति की सभी इकाई किसी न किसी अवस्था में निश्चित विकास क्रम से गुजरते हुए अपने होने के प्रयोजन को अभिव्यक्ति देता हैं यही उस इकाई की व्यवस्था है। पर दुर्भाग्य, प्रकृति की सर्वश्रेष्ठ इकाई होते हुए भी मनुष्य अन्य अवस्थाओं के सभी इकाईयों के सापेक्ष अनिश्चित आचरण से ग्रस्त है और इस अनिश्चित आचरण को सही ढंग से पहचान कराने में विद्यालयीन शिक्षा में कहीं न कहीं गंभीर चूक हो रही है, जिससे हालात दिनोंदिन बद् से बद्तर होते जा रहे है। तभी तो व्यक्ति के जीवन में घुटन, परिवार में टूटन, समाज में विघटन व प्रकृति में असंतुलन चहुँओर परिलक्षित हो रहा है।

जीवन जीने योग्य का गढ़ना भी इसीलिए संभव नहीं हो पा रहा है क्योंकि जीने के सही उद्देश्य से ही हम जब अनजान है तो निश्चित मंजिल कैसे हासिल होगी ? कहने को तो हम कह देते है कि मानव सुखधर्मी है, पर शिक्षा में पूरा तामझाम दुखी होने का परोस रहे हैं। दूसरे से तुलना कर–कर के जीने का पाठ पढ़ाया जा रहा है। दूसरे के जैसे बनने के चक्कर में वह स्वयं अपने जैसा भी नहीं बन पा रहा है न ही दूसरे जैसा हो पा रहा है। दूसरा कभी वह हो भी नहीं सकता क्योंकि हर व्यक्ति अपने संस्कारवश स्वयं में विशिष्ट है। पर हाँ, अपनी अपनी विशिष्टता के बाद भी सभी में समता, समानता न एकता के समान रूप से पहचान बिन्दु है जैसे परस्परता में एक दूसरे के लिए उपयोगी व पूरक बनकर जीने से ही सभी संबंधों में सुख की तृप्ति मिलती है। इन पहचान बिन्दुओं पर शिक्षा में ध्यानाकर्षण आवश्यक है। निरतंर सुख ही मानव लक्ष्य है। केवल जीने की आशा में जीना और सुखपूर्वक जीने की आशा में जीना इन दोनों में जितना भेद है उतना ही जीने योग्य होना ओर जीवन जीने योग्य होने में है। क्योंकि मनुष्य जीवन, पशु पक्षी के जीवन से इस मायने में विभेदीकृत है कि पशु पक्षी में केवल जीने की आशा होती है परंतु मनुष्यों में सुखपूर्वक जीने की आशा होती है। दुनिया में एक भी कोई ऐसा आदमी ढूंढ लीजिए जो सुख नहीं चाहता हो। सुख की चाहत सब में है पर सुख को उपलब्ध नहीं करा पा रहे है। हॉ, सुख के नाम

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

पर केवल सुविधा ही जुटा पा रहे है। जबकि सुख बराबर सुविधा नहीं व सुविधा बराबर सुख नहीं। सुविधा शरीर के लिए, सुख जीवन के लिए चाहिए।

मानव शरीर व जीवन का संयुक्त रूप है – यह जानना हमारी शिक्षा में कहीं छूटा हुआ है जिससे दिनोंदिन विसंगतियां बढ़ती जा रही है। तभी तो लाख रूपये के बिस्तर में सोने वाले शख्स की भी नींद उस आरामदेह बिस्तर में उड़ी रहती है और खुरदूरे फर्श पर भी एक आदमी चैन से सोता रहता है। क्यों ? यह जानना शिक्षा के द्वारा आवश्यक है। विद्यालयीन शिक्षा में आज यह कहीं अछूता है।

शिक्षा स्वयं में भाव है। वह संपूर्ण वस्तु (वास्तविकता) का स्त्रोत है। शिक्षा जीवन में विश्लेषण पूर्वक यथार्थताओं, वास्तविकताओं पर आधारित जीवन के कार्यक्रम को स्पष्ट करती है। यही प्रत्येक मनुष्य में पायी जाने वाली कामना एवं उसकी आवश्यकता है। यही शिक्षा का दायित्व है। शिक्षा ही जीवन में गुणात्मक परिवर्तन का स्त्रोत है। चरितार्थ होने का आधार है। मानवीय शिक्षा–संस्कार, समझदारी, सार्वभौम व्यवस्था, अखण्ड समाज, संस्कृति, सभ्यता, विधि, मूल्याकंन, निरीक्षण, परीक्षण, संप्रेषण प्रकाशन, संगीत, स्वर, लय, श्रुति, उत्सव, मानवसंबंध और नैसर्गिक संबंधों में जीने की कला, स्थिति, गति को समाधानित करें, न कि केवल मनुष्य को तथाकथित रूप से शिक्षित करे। चेतना विकास मूल्य शिक्षा में समाधान के सारे उपक्रम है। शिक्षित से समझदार होने की यात्रा चेतना विकास मूल्य शिक्षा अर्थात जीवन विद्या में निहित है। अपनी विद्यालयीन शिक्षा को नये सिरे से खंगालने की आवश्यकता है, जिससे हम जीव चेतना से मानव चेतना की यात्रा की ओर अग्रसर हो सकें।

यह आवश्यकता इसलिए भी कि मानव ही इस धरती पर सर्वाधिक विकसित इकाई है। सर्वाधिक का तात्पर्य पदार्थावस्था, प्राणावस्था व जीवावस्था से भी अधिक विकसित है, लेकिन ज्ञानावस्था की इस विकसित इकाई का आचरण भी सर्वाधिक अनिश्चित है। अनिश्चित आचरण से निश्चित आचरण की ओर उन्मुख करने वाली शिक्षा–संस्कार विद्यालयों से वर्तमान में निःसृत किये जाने की आवश्यकता है। मनुष्य के अनिश्चित आचरण ने व्यवस्था को अव्यवस्था में बदल दिया है। मनुष्य को पशुतुल्य बना दिया है। शिक्षा में यह गुणात्मक परिवर्तन अब नहीं तो कब ? जरा सोचें, हम सभी।

उक्त पृष्ठभूमि में शिक्षकों में आत्मविश्वास एवं शिक्षक प्रभावशीलता को अधिक गहरायी एवं गहनता से मापन, अध्ययन एवं चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्रशिक्षित, अप्रशिक्षित शिक्षकों में इन गुणों के मध्य अंतर को जानने की जिज्ञासा बलवती हुई है और शोध विषय के रूप में, शीर्षक चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के आत्मविश्वास एवं शिक्षक प्रभावशीलता के तहत् अध्ययन की आकांक्षा में इस समस्या का चयन किया गया है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

1.2 संबंधित शोध अध्ययन –

1.2.1 चेतना विकास मूल्य शिक्षा से संबंधित शोध कार्य –

चौहान, (1988) ने शेक्सपियर्स के नाटकों का रिलिजियस एण्ड मौरल ऐजुकेशन के दृष्टि से अध्ययन किया है एवं उन्होंने पाया कि धार्मिक नैतिक व स्वैच्छिक मूल्यों से शिक्षा की प्रकृति समझने की पृष्ठभूमि इन नाटकों से बनती है।

गुप्ता एण्ड गगेल, (1989) वैल्यू एमफैसिस एज परसिवड बाय प्यूपिल्स आफ प्रायमरी, मीडिल एण्ड हाई स्कूल स्टेजेस इन डिफरेन्ट इन्स्टीट्यूशनस, इन्डीयन ऐजुकेशन रिव्यू, वाल्यूम 24 (1) 133–42। इनके शोध का उद्देश्य विभिन्न संस्थाओं में विद्यार्थी के पूर्व और उच्च स्कूल स्तर की उपलब्धियों पर मूल्य आधारित ध्यान देना एवं कक्षा 5वी, 8वी, 10वी स्तर पर जैसा की शिक्षकों ने अत्यधिक ध्यान दिया है शहरी स्कूल स्थापनाओं में मूल्यों को चिन्हित करना है।

पद्मनाभन, (1992) अ स्टडी आफ द वैल्यू आफ हाई स्कूल प्यूपिल्स इन रिलेशन टू सरटेन सेलेक्टेड वेरिएबल्स पी.एच.डी. ऐजुकेशन अन्नामलाई यूनिवर्सिटी। इनके शोध का उद्देश्य कक्षा नवमी में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मूल्यों का आदर्श मानक रूप में अध्ययन करना एवं बालक और बालिकाओं के बीच सैद्धांतिक, राजनीतिक, सामाजिक, ललितकला, अभिव्यक्ति तथा धर्ममूल्यों के उल्लेखनीय अंतर को जानना था जिसके तहत् विभिन्न मानकों के आधार प्रभाव सकारात्मक पाया गया।

आर्य, (1994) ने पी.एच.डी. "सिनर्जेटिक एग्रीकल्चर सिस्टम एंड डेव्हलपमेंट",आई.आई.टी. दिल्ली, में, चेतना विकास मूल्य शिक्षा को केन्द्र में रखते हुए अपने स्त्रोत आवर्तनशील अर्थशास्त्र को उपयोगी पाया है जिसके तहत् इस पद्धति से जैविक कृषि प्रक्रिया एवं परिवार में समृद्धि व सतत् विकास के मध्य सकारात्मक संबंध पाया गया।

दिवाकर. (1995) ने शिक्षक प्रशिक्षकों के समकालीन मूल्यों के विकास पर कुछ मध्यवर्ती नीतियों के प्रभाव का अध्ययन किया और पाया कि मध्यवर्ती नीतियाँ, प्रजात्रांतिक मूल्यों और राष्ट्रीय एकता के मूल्यों के विकास की उपयोगिता को प्रोत्साहित करती है।

Bajpayi, (2000) Ph.D.Work , - Holistic Health – "Healthy human being Manav Kendrit Chintan – in the view of Astitwamulak by Baba A. Nagraj Sharma. Guide – P. Tiwari - Awarded by East West University of Holistic Health Science – Missowri – U. S. । द्वारा स्वस्थ्य मनुष्य के रूप में चैतन्य इकाई "जीवन की" प्रतिष्ठापना को जानने का प्रयास किया गया है एवं जीवन एक गठन पूर्ण परमाणु इकाई के रूप में असीम क्षमता से परिपूर्ण चैतन्य इकाई है जिसके द्वारा ही शरीर का संचालन होता रहता है – यह पाया गया।

मुक्ता एवं पाठ्क, (2007) – "वूमेन एज ए ह्यूमेन" शीर्षक पर शोध कार्य किया गया यह पाया गया कि पात्रता, योग्यता एवं क्षमता के रूप में जीवन को लैंगिक आधार पर खाँचों में विभाजित नहीं किया जा सकता।

रामचरला, (2007) ने ट्रिपल आई.आई.टी. हैदराबाद, जीवन विद्या शिविर पर शोध पत्र प्रकाशन किये हैं। जिसके अंतर्गत जीवन विद्या अर्थात चेतना विकास मूल्य शिक्षा के शिविरों को प्रभावशाली बताया गया है।

गौर, बागड़िया, सांगल, (2009) ने "ह्यूमेन वैल्यूस एण्ड प्रोफेशनल इथिक्स" में चेतना विकास मूल्य शिक्षा के चार आयाम एवं पाँच स्थितियों को गहराई से जाँचा है एवं जीव चेतना से मानव चेतना की ओर यात्रा के लिए प्रेरणास्पद पाया है।

श्रीवास्तव, (2010) ने "शिक्षा के एकांगी स्वरूप के संवाहक छात्राध्यापकों एवं शिक्षक–प्रशिक्षकों पर मानवीय मूल्यों की शिक्षा– "मध्यस्थ दर्शन" के प्रभाव का अध्ययन" किया गया है जिसमें सूचना शिविर में सम्मिलित होने वाले शिक्षकों, छात्राध्यापकों, शिक्षक प्रशिक्षकों के दृष्टिकोण एवं कार्यशैली के साथ ही जीवन संबंधी आवश्यकताओं (प्राथमिकताओं) को तय करने में उपयोगी पाया है। आवश्यकता आधारित समृद्धियुक्त जीवन शैली की ओर शिक्षकों में सकारात्मक परिवर्तन पाया गया है।

बघेल एवं साहू, (2011–12) ने अपने पायलट स्टडी में शिक्षकों एवं डी.एड. छात्राध्यापकों पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा शिविर के प्रभाव का समीक्षात्मक अध्ययन किया एवं इन्होंने मूल्यों के प्रति सकारात्मकता को पाया। अध्ययन में शिक्षकों एवं छात्राध्यापकों में चेतना विकास मूल्य शिक्षा की प्रभाविता को जानने हेतु 08 आयामों – शैक्षिक वातावरण, शैक्षिक अभिरूचि, सार्थक अंतर्सबंध, स्वयं में विश्वास (कक्षा में अभिव्यक्ति के प्रति), रूचिकर एवं प्रभावी अध्ययन, विचार, व्यवहार एवं अनुभव का स्वनिर्मित प्रश्नावली के माध्यम से अध्ययन किया एवं शिक्षकों में स्वयं में विश्वास एवं छात्राध्यापकों में व्यवहार पक्ष को छोड़कर प्रत्येक के 7 आयामों में सकारात्मकता पायी गयी।

1.2.2. शिक्षकों के आत्मविश्वास से संबंधित शोध कार्य –

वासन्न, (1971) आत्मविश्वास का आत्म प्रत्यय के रूप में अध्ययन किया एवं अधिक मानसिक योग्यताधारियों में अधिक आत्मविश्वास, अधिक आत्मविश्वासी द्वारा अधिक जोखिम उठाने व स्वयं के प्रति सम्मान अधिक होना पाया गया है।

अग्निहोत्री एण्ड गुप्ता, (1985) द्वारा बालक के आत्मविश्वास जगाने उनके पालन पोषण एवं माताओं की व्यवहार कुशलता का अध्ययन किया गया, जिसमे निम्न स्तर के आत्मविश्वासी बालक सही ढंग से पालन पोषण का नहीं होना एवं माताओं द्वारा अधिक

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

नियंत्रित अनुशासन को पाया गया। अर्थात अकुशल व्यवहार आत्मविश्वास में कमी का कारण होता है। यह उनके शोध निष्कर्ष के रूप में पाया गया।

धमीजा एंड मल्होत्रा (1991) ने विद्यार्थियों के आत्मविश्वास का उनकी अधिगमक्षमता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया। जिसमें अधिक आत्मविश्वाससीखने की प्रक्रिया को सकारात्मकता प्रदान करता है।

पवार (2002) ने कानपुर जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के आत्मविश्वासवृद्धि और आंकाक्षा स्तर पर अध्ययन किया जिसमें अनुसूचित जाति एवं जनजाति के समस्त विद्यार्थियों एवं सामान्य जाति के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास वृद्धि और आंकाक्षा स्तर में अंतर पाया गया। सामान्य जाति में आत्मविश्वास अधिक होने से आंकाक्षा स्तर भी उनमें प्रबल पाया गया।

सुब्रम्हण्यम्, (2004) ने घायल महिला एवं पुरूष खिलाड़ियों के आत्मविश्वास मानसिक स्वास्थ्य एवं कुण्ठा पर अध्ययन किया गया एवं घायलावस्था में शरीर उनके आत्मविश्वास को ऋणात्मक दिशा की ओर पाया गया।

सिंह एवं कौर (2006) ने लिंग और धर्म के संदर्भ में शिक्षक प्रशिक्षार्थियों के आत्मविश्वास का अध्ययन किया तथा लिंग का प्रभाव आत्मविश्वास पर सार्थक पाया वहीं धर्म का प्रभाव आत्मविश्वास पर सार्थक नहीं पाया गया।

रिचर्डसन एवं अन्य (2006) ने शिक्षकों के समायोजन एवं बाह्य चरों पर उनके आत्मविश्वास एवं वेतन संतुष्टि के प्रभाव का अध्ययन किया तथा पाया कि यदि आत्मविश्वास एवं वेतन संतुष्टि उच्च होती है तो शिक्षकों में समायोजन की क्षमता भी उच्च पाई जाती है।

रोलेण्ड (2008) ने प्राचार्यों के नेतृत्वशैली एवं शिक्षकों के आत्मबल के मध्य संबंध का अध्ययन किया एवं पाया कि प्राचार्यों के नेतृत्वशैली एवं शिक्षकों के आत्मबल के मध्य सार्थक सहसंबंध होता है तथा जिन विद्यालयों के प्राचार्यों की नेतृत्वशैली उच्च होती है उनके शिक्षकों में आत्मबल भी उच्च पाया जाता है।

मुज्जफ़र एवं नासिर (2011) ने महाराष्ट्र के शिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राध्यापकों के आत्मसम्मान एवं शिक्षण दक्षता के मध्य संबंध का अध्ययन किया तथा उच्च धनात्मक सह–संबंध पाया। उच्च आत्मसम्मान वाले प्रशिक्षणार्थियों की निम्न आत्मसम्मान वाले प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में दक्षता उच्च पायी गयी।

सामाजिक आर्थिक स्तर की पृष्ठभूमि में आत्मविश्वासको पुष्ट होने का अवसर मिलता है। इस पर लेनर (1966), हुण्डल (1972), बादामी (1975), केम्बेल (1991), मेजरबैंक (1996)

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

बॉबी जोसेफ (1999), जेयनेन (2002) एवं इमान (2005) द्वारा विदेशी पृष्ठभूमि पर शोधकार्य किये गये है।

1.2.3. शिक्षक प्रभावशीलता पर शोध अध्ययन –

तीराम (1980) ने पाया कि शिक्षक प्रशिक्षण, शिक्षक व्यवहार तथा शिक्षक अभिक्षमता एवं छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य धनात्मक सहसंबंध पाया जाता है।

प्रकाशम् (1986) ने शिक्षक प्रभावशीलता का शाला संगठन के कार्यों एवं शैक्षणिक सामर्थ्य के रूप में अध्ययन किया एवं यह पाया कि – शिक्षक की शिक्षण सामर्थ्य एवं शिक्षक प्रभावशीलता खुले वातावरण में शाला स्वायत्ता, पारिवारिक एवं नियंत्रित पारिवारिक बंद वातावरण की तुलना में अधिक अच्छी होती है। शहरी क्षेत्र में कार्य कर रहे शिक्षक की शैक्षणिक दक्षता और शिक्षण प्रभावशीलता अन्य क्षेत्रों में कार्य कर रहे शिक्षक से बेहतर होती है। जो शिक्षक शासकीय और अशासकीय विद्यालय में कार्य करते है उनकी शैक्षणिक प्रभावशीलता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

अग्रवाल (1988) ने "अधिक प्रभावशाली और कम प्रभावशाली शिक्षकों के संबंधित कारक और समायोजन समस्या का अध्ययन" विषय पर शोध कार्य किया एवं पाया कि अधिक प्रभावशाली शिक्षकों में अधिक समायोजन क्षमता पाई गई। कम प्रभावशाली शिक्षकों में संवेगात्मक क्षमताएँ अधिक पाई गई, जिससे अपने में उलझे रहने से इनमें समायोजन का तत्व कम पाया गया।

व्यास (1991) ने शालेय शिक्षकों की प्रभावशीलता एवं ओरियेन्टेशन प्रोग्राम के संबंध पर एक अध्ययन किया। इस अध्ययन में पाया गया कि जो शिक्षक ओरियेन्टेशन कार्यक्रम ग्रहण करते हैं। उनके प्रभावशीलता में वृद्धि होती है जबकि इसके विपरीत जिन्होंने ओरियेन्टेशन कार्यक्रम में सक्रिय भागीदारी नहीं निभाई उनकी शैक्षणिक प्रभावशीलता कम पाई गयी है।

शाह बीना (1991) ने शिक्षकों के प्रभाव में दृढ़ इच्छा शक्ति पर कार्य किया एवं पाया कि दृढ़ इच्छा शक्ति के ज्यादा होने पर शिक्षकीय प्रभावशीलता में वृद्धि होती है।

नौटियाल (1993) ने शिक्षकों की दक्षता का अध्ययन किया कि शिक्षकों के मूल्य उनके प्रकार, सदाचार उनके गुणों का प्रभाव विद्यार्थियों पर ज्यादा असर होता है।

परेशचंद्र एवं टिंकड़े (1995) ने शिक्षक प्रभावशीलता पर अध्ययन किया एवं निष्कर्ष यह पाया कि महिला अध्यापक की प्रभावशीलता अधिक होती है। अध्यापक की प्रभावशीलता विद्यालय के निजि या शासकीय होने पर निर्भर नहीं करती। खुले वातावरण में स्थित विद्यालयों में अध्यापक ज्यादा प्रभावशील होते है। अनियंत्रित वातावरण में अध्यापक सबसे

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

कम प्रभावशील होते है तथा नियंत्रित वातावरण वाले विद्यालयों में यह प्रभावशीलता मध्यम दर्जे की थी।

विश्वास और डे (1995) ने त्रिपुरा में माध्यमिक स्कूल के शिक्षकों की प्रभावशीलता पर एक अध्ययन किया एवं पाया गया कि कन्या विद्यालय के शिक्षक, महिलाएँ शिक्षकाएँ अधिक प्रभावशाली होते हैं तथा स्कूल का वातावरण शिक्षकों को प्रभावशाली बनाता है न कि स्कूल के स्थान व प्रबंधन।

सिंघल एवं शर्मा (1996) ने शिक्षकों के गुणों के अध्ययन में पाया कि शिक्षकों को अपने विषय का ज्ञान एवं विद्यार्थियों के साथ सहानुभूति व्यवहार उन्हें प्रभावशाली शिक्षक का दर्जा दिलाता है।

बोरिच (1998) ने शिक्षकों की प्रभावशीलता तथा शिक्षण विधि पर शोध अध्ययन किया जिसका निष्कर्ष यह निकला कि विद्यार्थियों को नवीन शिक्षण विधियों एवं रूचि के अनुसार अध्ययन कराया जाये।

लैम्बर्ट तथा डेविसि (1998) ने कृषि महाविद्यालय में शिक्षकीय प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन किया तथा पाया कि अधिकांश विभाग के शिक्षक प्रभावपूर्ण तरीके से छात्रों को तकनीकी को समझाने में समर्थ थे परंतु कुछ विभाग जैसे प्राकृतिक संसाधन विभाग के शिक्षकों की शिक्षकीय प्रभावशीलता अपेक्षाकृत कम पाई गई।

जी. बेन्ज (1999) ने शिक्षकों के प्रभावशीलता पर एक अध्ययन किया एवं पाया गया कि शिक्षकों के द्वारा समाज का विकास किया जा सकता है।

गुप्ता (2001) ने एक अच्छे शिक्षक के लिए विद्यार्थियों के विचार एवं शिक्षकों के गुण विद्यार्थियों की दृष्टि में इस पर शोध अध्ययन किया। इसका निष्कर्ष यह सामने आया कि किसी भी अच्छे शिक्षक की पहचान स्वयं उसके विद्यार्थी ही कर सकते है।

सुब्रमण्यम (2001) ने शिक्षकों की प्रभावशीलता पर शोध अध्ययन किया जिसका निष्कर्ष यह निकला कि शिक्षकों को पूर्ण रूप से परिपक्व होना चाहिए।

लीन (2002) ने शिक्षकीय प्रभावशीलता पर शोध अध्ययन किया जिसका निष्कर्ष यह निकला कि शिक्षक में जोश एवं उत्तदायित्व जैसे गुण होने चाहिए। जिससे शिक्षक का प्रभावकारी व्यक्तिव सामने आता है जो कि छात्रों पर सकारात्मक प्रभाव छोड़ता है।

एण्डरसन (2004) ने शिक्षकों की प्रभावशीलता में वृद्धि पर एक शोध अध्ययन किया इसका यह निष्कर्ष निकला कि शिक्षकों के प्रभावशीलता में वृद्धि करने के लिए उन्हें अपने संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास करना चाहिए।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

घाली (2005) ने शिक्षिकाओं की शिक्षक प्रभावशीलता एवं कार्य संतुष्टि पर शोध कार्य किया एवं पाया कि शिक्षकों के प्रभावशीलता पर स्कूल प्रबंधन का अधिक प्रभाव पड़ता है।

बन्धु टी. और कौर जे. (2006) ने इस शोध में पाया कि स्वशासी नियंत्रण परिचित वातावरण अध्यापकों की प्रभावशीलता को बढ़ाते है जबकि लिंग एवं विद्यालय का प्रभाव अध्यापकों कि प्रभावशीलता पर कोई प्रभाव नहीं डालता।

राउल (2007) ने स्वायत्तशासी एवं गैर स्वायत्तशासी महाविद्यालय के शिक्षकों पर शिक्षक प्रभावशीलता का अध्ययन किया गया एवं पाया कि स्वायत्तशासी महाविद्यालय के शिक्षकों एवं गैर स्वासयत्तशासी महाविद्यालय के शिक्षकों के प्रभावशीलता में सार्थक अंतर है।

रमाकांत (2008) ने सेवारत शिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम में अंग्रेजी पढ़ाने वाले शिक्षकों की शिक्षक प्रभवशीलता का अध्ययन किया गया एवं पाया कि छात्रो की अंग्रेजी विषय की उपलब्धि पर प्रभावशीलता का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

ढिल्लन एवं कौर (2009) ने शिक्षक के शिक्षक प्रभावशीलता एवं उनके मूल्य पैटर्न के मध्य संबंधों का अध्ययन किया गया एवं पाया की इनके मूल्य निर्वहन व शिक्षक प्रभावशीलता के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं है तथा महिला एवं पुरूष शिक्षकों के मध्य शिक्षक प्रभावशीलता के स्तरों में भी कोई सार्थक अंतर नहीं है।

उपरोक्त तीनों चरों संबंधित साहित्य एवं शोध के अध्ययन के पश्चात् शोधकर्ता के समक्ष निम्नांकित तथ्य उभरते हैं :–

- आत्मविश्वास की वृद्धि में आर्थिक सामाजिक पृष्ठभूमि का सकारात्मक निष्कर्ष अधिकाश अध्ययन से निकलता है। मूल्य परक शिक्षा की पृष्ठभूमि में आत्मविश्वास कितना प्रभावित करता है – यह जिज्ञासा बनती है।
- मूल्य परक शिक्षा शिक्षकों के व्यक्तिव विकास पर सकारात्मक प्रभाव डालता है कि नहीं – यह अध्ययन की दिशा होगी, क्योंकि शिक्षा के प्रभावशील होने में उनके व्यक्तिव की बड़ी भूमिका होती है। यह निष्कर्ष शिक्षक प्रभावशीलता संबंधित पूर्व शोध अध्ययन से निकलता है।
- चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन शोधकर्ता द्वारा एस.सी.ई.आर.टी. के सौजन्य से अग्रगामी अध्ययन के रूप में किया गया है। जिसमें शिक्षकों पर सकारात्मक निष्कर्ष प्राप्त हुये है। शिक्षकों के साथ शिक्षा की वास्तविक समझ को शिविरों के माध्यम से प्रकाश में लाया गया है। जिसका प्रभाव ही उनके शिक्षण एवं व्यवहार में धनात्मक रूप में देखने को मिला हैं।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

अध्याय द्वितीय
अध्ययन का प्रयोजन

2.1 भूमिका

2.2 अध्ययन का उद्दश्य

2.3 समस्या कथन

2.4 प्रकार्यात्मक परिभाषा

2.5 परिकल्पना

2.6 अध्ययन की परिसीमा

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

अध्याय–द्वितीय

अध्ययन का प्रयोजन

2.1. भूमिकाः–

शिक्षा का धारक वाहक शिक्षक अपने विद्यार्थियों के शिक्षण प्रकिया की मजबूत आधारशिला होती है। बालकों में निहित शिक्षा को उद्घाटित करने व उसे विकसित करने में अन्य और भी आधार होते हैं लेकिन शिक्षक विद्यार्थी की शैक्षिक अभिलाषा एवं उसके प्रति उनके लगाव तथा समर्पण को पहचान कर, अपनी योग्यता व क्षमता के बलबूते, जिम्मेदारी के साथ, सार्थक शिक्षा को पहचान प्रदान करता है। इसलिए समाज में शिक्षक का एक विशिष्ट स्थान होता है। उसे निरन्तर बनाए रखना आवश्यक होता है।

शिक्षकों की यह उपादेयता ही उन्हें अपने–अपने विद्यार्थियों के बीच पहचान देता है। यदि शिक्षक समाज में, विद्यार्थियों में अपनी पहचान स्थापित नहीं कर पा रहा है तो उसका निहितार्थ यही है कि वह अपने शिक्षकीय कार्य में स्वयं को उपयोगी साबित नहीं कर पा रहे है। वर्तमान में शिक्षकों के समक्ष बड़ा संकट स्वयं के पहचान का है। इस संकट से उबरने का उपाय साधारण एवं सरल शब्दों में कहा जाए तो शिक्षक की उपयोगिता ही शिक्षक की पहचान है। उनकी योग्यतायें जहाँ पीढ़ियों को गढ़ती है, वहीं उनकी नाकामयाबियाँ पीढ़ियों को भी नाकाबिल एवं नाकामयाब बनाकर रख देती है।

शिक्षक विद्यार्थियों के शिक्षण कार्य में क्यों? कैसे? कितना? उपयोगी हो सकता है, यह सब उनके व्यक्तित्व एवं प्रतिभा में संतुलन स्थापित करने की क्षमता पर निर्भर करता है। वह स्वयं की योग्यतायुक्त विश्वास के आधार पर ही विद्यार्थियों की जिज्ञासाओं को संतुष्ट करने का प्रयास करता है। इस प्रयास में वह स्वयं भी संतुष्ट होता है कि नहीं? यह मुद्दा भी मायने रखता है। साथ–साथ संतुष्ट होने की इसी सार्थक शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावशाली शिक्षक उपयोग करता है। वह अपने स्वभाव के अनुकूल ही जिज्ञासु विद्यार्थियों की जिज्ञासा को शांत करता है। विद्यार्थियों की संख्या में वृद्धि एवं उनमें गुणात्मक परिवर्तन कर पाने में शिक्षक के अध्ययन–अध्यापन गुणों की उपयोगिता रेखांकित होती है। किसी शिक्षक द्वारा कितनों का ? कितनी ? जिज्ञासा शांत करना ही उनकी पहचान है।

शिक्षक का तमगा धारण कर लेने से ही वे आत्मविश्वासी व प्रभावशाली नहीं बन जाते। शिक्षक बहुत सारी भूमिकायें एक साथ वहन करते हैं। वह अभिभावक, नेतृत्वकर्ता, पथ निर्देशक, परामर्शदाता, मित्र जैसे सहयोगी, निष्पक्ष व निर्णायक समालोचक आदि की भूमिकायें अपने विद्यार्थी व समाज के लिए करता है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

नेता एवं अभिनेता के अपने समर्थक एवं प्रशंसक होते है। नेताओं के समर्थक बनते है, उनके जनकाल्याणकारी कार्य संपादन की क्षमता से और अभिनेता के प्रशंसकों में वृद्धि होती है, उनके आकर्षक व्यक्तित्व एवं अभिनय क्षमता से। एक शिक्षक की जीवन शैली में इन दोनों चरित्रों के गुणों की अपेक्षा रहती है क्योंकि जहाँ अभिनेता की संप्रेषनीयता का गुण योग्य अध्यापक के लिए आवश्यक है, वहाँ नेता के जनोन्मुख कल्याण के समान बाल केन्द्रित शैक्षिक कार्यक्रम का सफल संपादन इनके लिए अनिवार्य है।

शिक्षक को अपने विद्यार्थी से समर्थन या प्रशंसा नहीं चाहिए। इन्हें चाहिए अपने विद्यार्थी का उन पर व्यक्त होने वाला अटूट विश्वास। अपने विद्यार्थियों के इसी विश्वास बल के सहारे बालकों को उचित राह दिखाना, स्वयं सफलता की तलाश में भटकता हुआ जीवन पथ पर आगे बढ़ते जाने का कार्य करता है। समर्थन एवं प्रशंसा जुटाने के लिए अधिक अभ्यास नहीं चाहिए। विश्वास अर्जन के लिए निरन्तर अभ्यास, सतत् स्वमूल्यांकन व आजीवन शिक्षा चाहिए।

शिक्षा आजीवन चलने वाली प्रकिया है। अतः सच्चा शिक्षक वही है जो जीवन भर सीखने के लिए लालायित रहता है। उसे विद्यार्थी बने रहने में आनंद आता है। गुरूवर रविंद्रनाथ टैगोर का मंतव्य दृष्टव्य है। ''शिक्षक तब तक सच्ची शिक्षा नहीं दे सकता, जब तक कि वह स्वयं न सीख रहा हो। एक दीपक दूसरे दीपक को तब तक नहीं जला सकता, जब तक वह स्वयं न जल रहा हो।''

जहाँ शिक्षा की कसौटी, ''तमसो मा ज्योतिर्गमय'' वहाँ शिक्षक की कसौटी है निरंतर आलोक दीप बने रहना, जो कि तब तक संभव नहीं है जब तक कि शिक्षक स्वयं ज्ञान कणों का संग्रह न करता हो। राधाकृष्ण कमीशन (1948) ने कहा है ''यह विलक्षण बात है कि हमारे विद्यालयों के शिक्षक 24 या 25 वर्ष की आयु तक पहुँचनें से पहले ही उन विषयों के संबंध में सब कुछ सीख लेते हैं जो उनको पढ़ाने होते है और उसके पश्चात् उनकी सब भावी शिक्षा अनुभव पर छोड़ दी जाती है। शिक्षा चूँकि परिवर्तन का सशक्त माध्यम के रूप में मान्य है ही, अतः शिक्षकों में नयी, सही व उपयोगी शैक्षिक रूचि व रूझान उत्पन्न करने की क्षमता रखने वाली परिवर्तनकारी वैकल्पिक शिक्षा की वर्तमान आवश्यकता है।

राज्य में मूल्य आधारित शिक्षा प्राप्त प्रशिक्षित शिक्षक अपने विद्यार्थियों के लिए प्रेरणास्त्रोत बनने में सक्षम है कि नहीं जिससे भविष्य में इनके विद्यार्थी राज्य के सर्वांगीण विकास के स्रोत बने। ये शिक्षक स्वप्रेरित विधि से उद्यमिता के विकास की दिशा में अग्रसर हो और स्वस्थ समाज निर्माण में सकारात्मक भूमिका निभाने में उनकी सक्षमता का अध्ययन करना।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

मानव चेतना विकास से स्वयं में विश्वास प्राप्त शिक्षक केवल नौकरी की दौड़ में न रह कर उद्यमिता के रास्ते से प्रदेश एवं संम्पूर्ण देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निर्वहन की संभावनाओं का अध्ययन करना।

प्रशिक्षित शिक्षकों के द्वारा मूल्य आधारित विद्यालयों में स्वानुशासन एवं सृजनात्मक अत्साह का माहौल निर्माण किए जाने की इनकी क्षमताओं का अध्ययन करना।

शिक्षा देने जैसे महत्वपूर्ण रोजगार में प्रवृत्त शिक्षक प्राय, धन, पद एवं नौकरीगत प्रतिस्पर्द्धा में ही रमे रहते है। प्रकृति और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी एवं भूमिका के प्रति उदासीन रहते है। मध्यस्थ दर्शन पर आधारित मानव चेतना विकासोन्मुख मूल्य शिक्षा उन्हें जीने के प्रत्येक स्तर जैसे परिवार, समाज, एवं प्रकृति में वर्तमान अंतर्सम्बन्धों से अत्यंत तार्किक, प्रयोगधर्मी व स्वमूल्यांकन आधारित तरीके से कराती है। इससे शिक्षकों में मानव चेतना का विकास होता है एवं मानव चेतना विकसित शिक्षक परिवार, समाज एवं प्रकृति से अपने सरोकार को समझ कर अपने विद्यार्थी अपने परिवार के लोगो के साथ उभयतृप्ति एवं उभयसमृद्धि हेतु कार्य व्यवहार कर पाता है। मानव चेतना जागृति के पूर्व ऐसा संभव नहीं हे। इसलिए आज महती आवश्यकता शिक्षा को मानव चेतना विकास से सीधे जोड़ने की है।

इस क्षेत्र में छत्तीसगढ़ राज्य शासन द्वारा क्षीण गति से संचालित किये जा रहे प्रयासों, प्रयोगो एवं शोधार्थी के स्वयं के अनुभवों के आधार पर शिक्षा के मानवीकरण की अनिवार्यता को महसूस करते हुए शिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रभाव का समीक्षात्मक अध्ययन इसका मुख्य प्रयोजन है।

2.2 अध्ययन का उद्देश्य :-

1. शालेय शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. शालेय शिक्षकों के लिंग, आयु, जाति, शालेय स्तर, शैक्षिक अनुभव एवं शैक्षणिक योग्यता के आधार पर शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. शालेय शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन करना।
4. शालेय शिक्षकों के लिंग, आयु, जाति, शालेय स्तर, शैक्षिक अनुभव एवं शैक्षणिक योग्यता के आधार पर शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन करना।
5. शिक्षक प्रभावशीलता के विभिन्न आयामों पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन करना।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

चेतना विकास मूल्य शिक्षा में क्या निश्चेष्ट शिक्षकों में उत्साह जगाने की संभावनाएं है? और इन्हीं संभावनाओं को ज्ञात करने का प्रयास इस अध्ययन द्वारा किया जा रहा है कि क्या विभिन्न स्तर के शिक्षक जिन्होंने चेतना विकास मूल्य शिक्षा को इनके परिचय एवं अध्ययन शिविरों के माध्यम से उपयोगी शैक्षिक वस्तु के स्वरूप में जानकारी ग्रहण किए है, उनके शैक्षिक रूचि–रूझानो में, विशेषकर शिक्षक के आत्मविश्वास एवं शिक्षक प्रभावशीलता में वृद्धि कर पाने में सक्षम है कि नहीं। यह जिज्ञासा प्रकरण के रूप में शोधकर्ता के सम्मुख उपस्थित हुआ एवं अद्योलिखित शीर्षक के अंतर्गत सफल अध्ययन किया गया।

2.3 समस्या कथन – चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के आत्मविश्वास एवं शिक्षक प्रभावशीलता का अध्ययन।

2.4 प्रकार्यात्मक परिभाषा –

चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्रशिक्षित शिक्षक – इससे आशय छत्तीसगढ़ शासन स्कूल शिक्षा विभाग के शासकीय शालाओं के उन शिक्षकों से है जिन्होंने मानवीय शिक्षा शोध संस्थान (अभ्युदय संस्थान) अछोटी, जिला–दुर्ग (छ.ग.) के द्वारा शासन के समन्वय के साथ संचालित शिविरों (परिचय एवं अध्ययन शिविर) के माध्यम से चेतना विकास मूल्य शिक्षा (जीवन विद्या) से परिचित हुए है।

चेतना विकास मूल्य शिक्षा अप्रशिक्षित शिक्षक – इससे आशय छत्तीसगढ़ शासन स्कूल शिक्षा विभाग के शासकीय शालाओं के उन शिक्षकों से है जिन्होंने उक्त शिविरों में न ही सम्मिलित हुए है और न ही चेतना विकास मूल्य शिक्षा (जीवन विद्या) से किसी भी प्रकार से परिचित है।

आत्मविश्वास – इससे आशय जरशील्ड (1978) के शब्दों में है कि "यह व्यक्ति के अपने विचारों: भावनाओं, आशाओं भय, कल्पनाओं तथा अपने मूल्यों के संबंध में उसकी अभिवृत्तियों की ही एक समष्टि है।" अर्थात प्रत्येक स्थिति की व्यक्ति की मांग होती है और इन मांगों को पूरी करने की क्षमताएँ उनके आत्मविश्वास में दिखाई पड़ता है।

प्रस्तुत अध्ययन में आत्मविश्वास से तात्पर्य अग्निहोत्री द्वारा निर्मित आत्म विश्वास मापनी (ASCI) पर प्राप्त कुल प्राप्तांको से है।

शिक्षक प्रभावशीलता – इससे आशय नेशनल एकेडमी ऑफ साइन्सिज द्वारा उल्लेखित अवधारणना "जो अध्यापक शिष्यों की आत्माओं को जगा सकते हैं। सुविज्ञ हों, हमारे विद्यालयों में अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों के लिए पूरी तरह तैयार हों – ऐसे अध्यापकों के बिना हमें अच्छी शिक्षा नहीं मिल सकती। बिना उत्तम शिक्षा के इस परिवर्तनशील जगत

की चुनौतियों का सामना सफलता पूर्वक हम दीर्घकाल तक करने की आशा नहीं कर सकते।" से है।

पी.कुमार एव ंडी. एन. मुथा द्वारा निर्मित शिक्षक प्रभावशिलता मापनी Teacher Effiectiveness Scale (TES) पर प्राप्त कुल प्राप्तांक ही प्रस्तुत अध्ययन में शिक्षक प्रभावशीलता बताते हैं।

2.5 परिकल्पना –

अनुसंधान कार्य में उद्देश्य को प्राप्त करने हेतु निम्न परिकल्पनाएँ निर्मित की गयी है–

आत्मविश्वास से संबंधित परिकल्पनाएँ –

H_{0-1} शिक्षकों के आत्मविश्वास पर लिंग, आयु, जाति, शालेयस्तर, शैक्षिक अनुभव, शैक्षणिक योग्यता में चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

लिंग के आधार पर

$H_{0-1.1}$ पुरूष शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

$H_{0-1.2}$ महिला शिक्षिकाओं के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

आयु के आधार पर

$H_{0-1.3}$ 35 वर्ष से कम आयु के शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

$H_{0-1.4}$ 40 वर्ष से अधिक आयु के शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

जाति के आधार पर

$H_{0-1.5}$ सामान्य जाति के शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

$H_{0-1.6}$ अन्य पिछड़ी जाति के शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

$H_{0\text{-}1.7}$ अनुसूचित जाति एवं जनजाति के शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

शालेय स्तर के आधार पर

$H_{0\text{-}1.8}$ प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

$H_{0\text{-}1.9}$ माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

$H_{0\text{-}1.10}$ उच्चत्तर माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

शैक्षिक अनुभव के आधार पर

$H_{0\text{-}1.11}$ 10 वर्ष से कम शैक्षिक अनुभव रखने वाले शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

$H_{0\text{-}1.12}$ 15 वर्ष से अधिक शैक्षिक अनुभव रखने वाले शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

शैक्षणिक योग्यता के आधार पर

$H_{0\text{-}1.13}$ स्नातक स्तर शिक्षित शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

$H_{0\text{-}1.14}$ स्नाकोत्तर स्तर शिक्षित शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

शिक्षक प्रभावशीलता से संबंधित परिकल्पनाएँ –

$H_{0\text{-}2}$ शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर लिंग, आयु, जाति, शालेय स्तर, शैक्षिक अनुभव, शैक्षणिक योग्यता में चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

लिंग के आधार पर

$H_{0\text{-}2.1}$ पुरूष शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

$H_{0-2.2}$ महिला शिक्षिकाओं के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

आयु के आधार पर

$H_{0-2.3}$ 35 वर्ष से कम आयु के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

$H_{0-2.4}$ 40 वर्ष से अधिक आयु के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

जाति के आधार पर

$H_{0-2.5}$ सामान्य जाति के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

$H_{0-2.6}$ अन्य पिछड़ी जाति के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

$H_{0-2.7}$ अनुसूचित जाति एवं जनजाति के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशिलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

शालेय स्तर के आधार पर

$H_{0-2.8}$ प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

$H_{0-2.9}$ माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

$H_{0-2.10}$ उच्चत्तर माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

शैक्षिक अनुभव के आधार पर

$H_{0-2.11}$ 10 वर्ष से कम शैक्षिक अनुभव रखने वाले शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

$H_{0-2.12}$ 15 वर्ष से अधिक शैक्षिक अनुभव रखने वाले शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

शैक्षणिक योग्यता के आधार पर

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

$H_{0\text{-}2.13}$ स्नातक स्तर शिक्षित शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

$H_{0\text{-}2.14}$ स्नाकोत्तर स्तर शिक्षित शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

$H_{0\text{-}2.15}$ शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता के विभिन्न आयामों यथा अकादमिक, व्यावसायिक, सामाजिक, भावनात्मक, नैतिक व व्यक्तित्व पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

2.6. अध्ययन की परिसीमा–

1. यह अध्ययन छत्तीसगढ़ राज्य के केवल शासकीय विद्यालयों के शिक्षकों तक सीमित है।
2. यह अध्ययन शिक्षकों के आत्मविश्वास तथा शिक्षक प्रभावशीलता तक सीमित है।
3. इस अध्ययन को चेतना विकास मूल्य शिक्षा से परिचित एवं अपरिचित शिक्षकों (जिसे शोध कार्य की सुविधा हेतु कमशः प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित संज्ञा से नामांकित किया गया है) के आत्मविश्वास एवं शिक्षक प्रभावशीलता पर पड़ने वाले प्रभाव तक सीमित रखा गया है।
4. यह अध्ययन छत्तीसगढ़ राज्य के 20 जिलों के ही 150 प्रशिक्षित एवं 150 अप्रशिक्षित शिक्षकों तक सीमित है।
5. यह अध्ययन शिक्षकों के लिंग, आयु, जाति, शालेय स्तर, शैक्षिक अनुभव एवं शैक्षणिक योग्यता तक सीमित है।
6. यह शोध कार्य चेतना विकास मूल्य शिक्षा के अध्ययन शिविर एवं परिचय शिविर के माध्यम से प्रशिक्षित शिक्षकों तक सीमित है।
7. आत्मविश्वास से संबंधित मापनी रेखा अग्निहोत्री (2005) द्वारा संशोधित निर्मित है। आत्मविश्वास का आकलन इसी मापनी तक सीमित है।
8. प्रमोद कुमार एवं डी.एन. मुथा, (Rivision 1999) द्वारा निर्मित शिक्षक प्रभावशीलता मापनी के द्वारा शिक्षक प्रभावशीलता का परीक्षण तक सीमित है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

अध्याय तृतीय
अध्ययन प्रविधि

3.1 भूमिका

3.2 सार्वभौम

3.3 न्यादर्श

3.4 उपकरण का वर्णन

3.4.1 आत्माविश्वास मापनी

3.4.1.1 परीक्षण का प्रशासन

3.4.1.2 मापनी का फलांकन

3.4.1.3 मापनी चयन का आधार

3.4.2 शिक्षक प्रभावशीलता मापनी

3.4.2.1 परीक्षण का प्रशासन

3.4.2.2 मापनी का फलांकन

3.4.2.3 मापनी चयन का आधार

3.5 सांख्यिकी उपचार

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

अध्याय–तृतीय

अध्ययन प्रविधि

3.1 भूमिका :–

अनुसंधान अपने आप में संपूर्ण तथा जटिल कार्य प्रणाली है। इसे संपन्न करने के लिए वैज्ञानिक आधार पर प्रारंभ से लेकर अंत तक संपूर्ण कार्यविधि को नियोजित अथवा व्यवस्थित करना आवश्यक होता है। बिना पूर्व नियोजित किसी भी वृहत एवं जटिल कार्य में अनेक अपूर्णताएं संभव हो सकती है।

संभावित अपूर्णताओं को दूर करने के ध्येय से ही व्यवस्थित अध्ययन प्रविधि द्वारा इससे संबंधित चरों व घटनाओं के पारपरिक संबंधों का अन्वेषण तथा विश्लेषण उपयुक्त सांख्यकीय विधि तथा वैज्ञानिक विधि द्वारा किया जाता है तथा परिणामों से वैज्ञानिक निष्कर्षो नियमों तथा सिद्धातों की रचना, खोज व पुष्टि की जाती है।

3.2 सार्वभौम :–

शोध कार्य के लिए संभावित अवलोकनों के समूह को जिसका अनुसंधान किया जा रहा है सार्वभौम कहा जाता है। ये समूह स्थान आधारित समस्त लोगों का हो सकता है। इस समग्र का वह भाग जहाँ तक अनुसंधानकर्ता की पहुँच होती है, जनसंख्या कहा जाता है तथा उसी जनसंख्या से प्रतिदर्श का चुनाव किया जाता है।

छत्तीसगढ़ राज्य दिनांक 01 नवम्बर 2000 से अस्तित्व में आया है। इसके पहले यह मध्यप्रदेश का पूर्वीय क्षेत्र कहलाता था। वर्तमान में यह उत्तर में उत्तरप्रदेश एवं झारखंड, पूर्व में उड़ीसा, दक्षिण–पश्चिम में महाराष्ट्र, उत्तर पश्चिम में मध्यप्रदेश एवं दक्षिण में आंध्रप्रदेश नामक छः राज्यों की सीमाओं से घिरा है। इसका क्षेत्रफल 135194 वर्ग किलोमीटर एवं आबादी 2.55 करोड़ है, जिसमें शहरी क्षेत्रों में 23.24 प्रतिशत निवासरत है। छत्तीसगढ़ प्रदेश की राजधानी रायपुर है तथा यह प्रदेश 27 जिलों में विभक्त है।

छत्तीसगढ़ के मैदानी इलाके से बहने वाली दो नदियां हैं। एक विख्यात महानदी और दूसरी कमज्ञात शिवनाथ। महानदी का पाट बहुत विस्तृत है लेकिन गहराई उस अनुपात में कम है। इसके विपरीत शिवनाथ एक मंझौले पाटवाली नदी है, जिसकी गहराई का अनुमान करना कई स्थानों पर तो एकदम मुश्किल हो जाता है। छत्तीसगढ़ की बुनावट और उसके चरित्र को लेकर जब बात उठती है तो लोग अक्सर या तो उसके विस्तार को नहीं संमेट पाते या फिर उसकी गहराई आंकने में गलती कर जाते है। किनारे खड़े होकर आकलन करने वाली नजरों में छत्तीसगढ़ एक शांतिप्रिय प्रदेश है, जहां के निवासी भोले–भाले हैं और जो जीवन की हर परिस्थिति को नियति मानकर स्वीकार कर लेते हैं। इतिहासकार मानते है

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

कि शिवनाथ नदी के उत्तर में 18गढ़ थे। इसी तरह शिवनाथ के दक्षिण में स्थित 18 गढ़ थे इस तरह कुल 36गढ़ो से बना छत्तीसगढ़।

गढ़ों का गढ़ छत्तीसगढ़ जहाँ एक और आदिम प्रजातियों की गौरवशाली सांस्कृतिक परम्परा को आत्मसात किये है वहीं दूसरी और प्रवासी संस्कृति के समन्वयात्मक स्वरूप को दिग्दर्शित करता है। उत्तर एवं दक्षिण तथा पूर्व एवं पश्चिम भारत के मध्य एक महत्त्वपूर्ण भावात्मक एकता की कड़ी है। यहाँ पर अतीत से वर्तमान तक सर्वधर्म समभाव की भावना विद्यमान रही है, भारत के हर अंचल की संस्कृति का स्वरूप यहाँ दृष्टिगत होता है, वस्तुतः "लघुभारत" का प्रतीक रायपुर–दुर्ग मार्ग पर स्थित "भिलाई" विश्व प्रसिद्ध है।

चीनी यात्री व्हेन सांग ई.सन् 629 में छत्तीसगढ़ से गुज़रा तो उसने इसे असीमित विस्तार वाले घने जंगलों से आच्छादित और अनगिनन छोटी–छोटी नदियों से छलकता पाया। लोगों को बलिष्ट और सम्पन्न देखा। बौद्ध विहार देखे और शांति देखी। 1790 में अंग्रेज अधिकारी जे.टी.ब्लंट ने छत्तीसगढ़ को देखा। उसने जंगल कम देखे। नदियों ने उसे कम लुभाया। उसे छत्तीसगढ़ के खेतों ने चकित किया। उसने लिखा कि यह सम्पन्न किसानों का प्रदेश है। इतना अजान होता है कि निर्यात किया जाता है। उसने लिखा कि अच्छे फसलों के दिनों में अनाज बाहर भेजने के लिए एक लाख बैलों की जरूरत पड़ती थी।

छत्तीसगढ़ धान का कटोरा कहलाने लगा था। इसी छत्तीसगढ़ के बारे में 1998 में कवि – लेखक विष्णु खरे ने लिखा–"जो राइस बाउल था वह सीमेंट का गोडाउन भी बन चुका है।" अब लोग खेतों की बात नहीं करते हीरा भंडारों की बात करते है, खनिज सम्पदा की बात करते है। इन विषमताओं के बीच आधुनिक विकास की धारा में छत्तीसगढ़ के खेतो की फसले एवं जंगल की हरियाली को औद्योंगिक चिमनियों की कालिख लगती जा रही है। कृषि का रकबा घटती जा रही है व वन क्षेत्र सिकुड़ रहें है।

शिक्षा प्रदेश की चुनोती बनी हुई है। छत्तीसगढ़ के उक्त पृष्ठभूमि पर यह अध्ययन विद्यालयीन शिक्षकों पर किया गया है। विद्यालयीन शिक्षकों की संख्या का विवरण संस्थावार निम्नानुसार तालिका में प्रदर्शित किया गया है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

तालिका–3.1

शैक्षणिक संस्थान एवं शिक्षक संख्या वर्ष 2013

क्रमांक	संस्था का नाम	संस्थाओं की संख्या	संस्थवार शिक्षक संख्या		
			पुरूष	महिला	योग (4+5)
1	2	3	4	5	6
1.	हायरसेकेंडरी	3327	18371	13477	31848
2.	हाईस्कूल	2753	9003	6437	15440
3.	माध्यमिक स्कूल	16607	41608	25981	67589
4.	प्राथमिक स्कूल	37755	69750	41678	111428
5.	पूर्व प्राथमिक स्कूल	1012	3411	1749	5160
	कुल योग	61454	142143	89322	231465

जनसंख्या :– जनसंख्या एक सांख्यिकीय संकल्पना है जिसका अर्थ होता है "बहुत सी इकाइयों का वृहद समूह" जिनमें से कुछ इकाइयों को अध्ययन के लिए चुना जाता है। तात्पर्य यह कि सार्वभौम का वह भाग जिसका शोधकर्ता उपयोग करना चाहता है। अतः जनसंख्या इकाइयों का समूह होता है।

छत्तीसगढ़ के 27 जिलों में हेतु कार्यरत शिक्षकों की कुल संख्या 231465 है तथा इनमें से शोध कार्य के उद्देश्य से 20 जिलों में कार्यरत 147646 शिक्षकों में से चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्रशिक्षित तथा अप्रशिक्षित शिक्षकों की संख्या को निम्नांकित तालिका में प्रदर्शित किया गया है।

तालिका–3.2

जिलेवार प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षक संख्या

क्रमांक	जिला का नाम	चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्रशिक्षित शिक्षकों की संख्या	चेतना विकास मूल्य शिक्षा अप्रशिक्षित शिक्षकों की संख्या	शिक्षकों की कुल संख्या
1.	धमतरी	1525	5223	6748
2.	बलौदाबाजार	721	8793	9514
3.	कोरिया	1100	3193	4293
4.	जांजगीर	1300	9907	11207
5.	म्हासमुंद	1450	6105	7555
6.	बालोद	552	6118	6670
7.	दुर्ग	502	5802	6304

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

8.	बेमेतरा	496	5214	5710
9.	कांकेर	1300	5826	7126
10.	रायपुर	642	7531	8173
11.	गरियाबंद	335	4431	4766
12.	दंतेवाड़ा	1200	1638	2838
13.	बस्तर	1150	5884	7034
14.	बिलासपुर	1109	11511	12620
15.	मुंगेली	446	3744	4190
16.	रायगढ़	1400	9246	10646
17.	राजनांदगांव	1400	9092	10492
18.	सरगुजा	1200	6813	8013
19.	कबीरधाम	1300	5071	6371
20.	जशपुर	1150	6226	7376
	कुल	20278	127368	147646

3.3 न्यादर्श :-

समग्र का वह एक अंश होता है जिसमें जनसंख्या की समस्त विशेषताओं का स्पष्ट प्रतिबिंब रहता है। पी.वी.यंग के शब्दों में "एक प्रतिदर्श अपने समस्त समूह का एक लघुचित्र होता है।"

अनुसंधान के उद्देश्य, क्षेत्र, आकार, शुद्धता की मात्रा तथा समग्र की इकाइयों की विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए एक उपयुक्त रीति का चुनाव, प्रतिनिधित्वकारी एवं पर्याप्त गुणयुक्त न्यादर्श के लिए करना होता है। न्यादर्श लेने की रीति अन्वेषण के उद्देश्य पर निर्भर करती है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सोद्देश्य न्यादर्श का चयन किया गया है क्योंकि चेतना विकास मूल्य शिक्षा (जीवन विद्या) की अवधारणा को छत्तीसगढ़ एवं मानवीय शिक्षा शोध संस्थान (अभ्युदय संस्थान) अछोटी, जिला–दुर्ग, छत्तीसगढ़ से सम्मिलित विभिन्न शिविरों के माध्यम से शासकीय शिक्षकों के लिए शिविर क्षेत्र में ही हुआ है। ये शिविर सात दिवसीय परिचय शिविर एवं एक वर्षीय अध्ययन शिविर के नाम से संचालित हो रहा है। इन शिविरों में इस शिक्षा की अवधारणात्मक विमर्श के प्रतिभागी शासकीय शिक्षकों पर पढ़ने वाले प्रभाव का अध्ययन शोधकर्ता का विषय है। इसलिए इन शिविरों में प्रशिक्षित शिक्षकों एवं इस अवधारण से बिल्कुल ही अपरिचित शासकीय शिक्षकों में से ही सोद्देश्य तथा सुविधानुसार शिक्षकों को शोध कार्य में लिया गया है।

छत्तीसगढ़ के 27 जिलों में से 20 जिलो के विभिन्न शिविरों से चे.वि.मू. शिक्षा प्रशिक्षित 20278 शिक्षकों में से 150 शिक्षक एवं इन्हीं जिलो के ही 150 अप्रशिक्षित शिक्षकों

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

का चयन किया गया है। जिलेवार चयनित शिक्षकों के संख्यात्मक विवरण निम्नानुसार तालिका में दर्ज है :—

R.Baghel PhD, Raipur Univ. c

तालिका–3.3
जिलेवार चयनित शिक्षकों की संख्या

स.क्र.	जिला का नाम	चे.वि.मू. शिक्षा प्रशिक्षितों की संख्या	चे.वि.मू. शिक्षा अप्रशिक्षितों की संख्या
1.	धमतरी	16	11
2.	बलौदाबाजार	11	10
3.	कोरिया	10	04
4.	जांजगीर	06	08
5.	महासमुंद	15	10
6.	बालोद	03	05
7.	दुर्ग	05	15
8.	बेमेतरा	16	05
9.	कांकेर	06	05
10.	रायपुर	05	11
11.	गरियाबंद	12	10
12.	दंतेवाड़ा	05	03
13.	बस्तर	01	02
14.	बिलासपुर	16	14
15.	मुंगेली	03	03
16.	रायगढ़	12	10
17.	राजनांदगांव	02	06
18.	सरगुजा	02	05
19.	कबीरधाम	02	11
20.	जशपुर	02	02
	कुल	150	150

उक्त प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों को उनके सामान्य जानकारी के आधार पर अग्रिम तालिका में प्रदर्शित हैं।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

तालिका–3.4
सामान्य जानकारी आधारित शिक्षकों की संख्या

स.क्र.	प्रशासित शिक्षक संबंधी सामान्य जानकारी	सामान्य जानकारी आधारित निर्मित विभिन्न समूह	उपलब्ध न्यादर्श	
			प्रशिक्षित (150) में से	अप्रशिक्षित (150) में से
1	2	3	4	5
1.	लिंगवार	पुरूष	130	115
		महिला	20	35
2.	आयुवार	35 वर्ष से कम	61	74
		40 वर्ष से अधिक	89	76
3.	जातिवार	सामान्य	27	28
		अ.पि.वर्ग	87	70
		अनु.जाति + अनु.जनजाति	36	52
4.	शालेयस्तर	प्राथमिक शाला	52	69
		माध्यमिक शाला	63	57
		उ.मा.शाला	35	24
5.	शैक्षिक अनुभव	10 वर्ष से कम	65	82
		15 वर्ष से अधिक	85	68
6.	शैक्षणिक योग्यता	स्नातक स्तर तक	34	59
		स्नातकोत्तर स्तर तक	116	91

उपरोक्त तालिका में प्रशासित शासकीय शिक्षकों, जिनकी संख्या प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षत क्रमशः 150 + 150 = 300 है का सुविधानुसार चयनित 20 जिलों में विभिन्न सामान्य जानकारी आधारित बने समुह, क्रमवार न्यादर्श के रूप में जिलेवार, शिक्षकों का विवरण अग्रिम पृष्ठ की तालिकाओं में दर्ज है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

तालिका–3.5
लिंग आधारित शिक्षकों की जिलेवार संख्या

क्रमांक	जिला	पुरूष			महिला		
		प्रशिक्षित	अप्रशिक्षित	कुल	प्रशिक्षित	अप्रशिक्षित	कुल
1	2	3	4	5	6	7	8
1.	धमतरी	12	08	20	04	04	08
2.	बलौदाबाजार	10	08	18	00	02	02
3.	कोरिया	10	03	13	00	01	01
4.	जांजगीर	05	07	12	00	01	01
5.	महासमुंद	15	10	25	00	00	00
6.	बालोद	03	02	05	02	01	03
7.	दुर्ग	12	12	24	03	04	07
8.	बेमेतरा	05	04	09	00	01	01
9.	कांकेर	06	04	10	01	01	02
10.	रायपुर	06	06	12	01	02	03
11.	गरियाबंद	08	09	17	01	04	05
12.	दंतेवाड़ा	04	01	05	01	00	01
13.	बस्तर	01	01	02	00	00	00
14.	बिलासपुर	15	10	25	02	04	06
15.	मुंगेली	03	03	06	00	00	00
16.	रायगढ़	10	08	18	02	03	05
17.	श्राजनांदगांव	01	06	07	01	02	03
18.	सरगुजा	02	05	07	00	02	02
19.	कबीरधाम	01	06	07	01	03	04
20.	जशपुर	01	02	03	01	00	01
	कुल	130	115	245	20	35	55

तालिका–3.6
आयु आधारित शिक्षकों की जिलेवार संख्या

क्रमांक	जिला	35 वर्ष से कम			40 वर्ष से अधिक		
		प्रशिक्षित	अप्रशिक्षित	कुल	प्रशिक्षित	अप्रशिक्षित	कुल
1	2	3	4	5	6	7	8
1.	धमतरी	11	09	20	04	03	07
2.	बलौदाबाजार	02	05	07	08	05	13
3.	कोरिया	04	01	05	06	03	09
4.	जांजगीर	01	01	02	05	07	12
5.	महासमुंद	08	04	12	08	07	15
6.	बालोद	01	00	01	02	05	07
7.	दुर्ग	09	07	16	07	05	12
8.	बेमेतरा	03	03	06	02	04	06
9.	कांकेर	01	00	01	06	05	11
10.	रायपुर	03	08	11	04	03	07
11.	गरियाबंद	02	07	09	08	03	11
12.	दंतेवाड़ा	05	00	05	01	00	01
13.	बस्तर	00	00	00	00	00	00
14.	बिलासपुर	05	05	10	11	09	20
15.	मुंगेली	01	02	03	02	02	04
16.	रायगढ़	01	05	06	11	06	17
17.	राजनांदगांव	00	05	05	02	03	05
18.	सरगुजा	00	04	04	02	03	05
19.	कबीरधाम	02	08	10	00	01	01
20.	जशपुर	02	00	02	00	02	02
	कुल	61	74	135	89	76	165

तालिका–3.7
जाति आधारित शिक्षकों की जिलेवार संख्या

क्रं.	जिला	सामान्य जाति			अन्य पिछडी जाति			अनुसूचित+अनुसूचित जनजाति		
		प्रशिक्षित	अप्रशिक्षित	कुल	प्रशिक्षित	अप्रशिक्षित	कुल	प्रशिक्षित	अप्रशिक्षित	कुल
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
1.	धमतरी	02	00	02	10	07	17	03	05	08
2.	बलौदाबाजार	00	02	02	08	08	16	02	00	02
3.	कोरिया	01	01	02	03	02	05	06	01	07
4.	जांजगीर	00	00	00	02	01	03	04	07	11
5.	महासमुंद	03	00	03	08	10	18	05	01	06
6.	बालोद	00	00	00	03	02	05	00	02	02
7.	दुर्ग	05	04	09	10	06	16	02	08	10
8.	बेमेतरा	02	01	03	03	02	05	00	02	02
9.	कांकेर	00	00	00	07	04	11	00	01	01
10.	रायपुर	00	02	02	05	06	11	01	02	03
11.	गरियाबंद	02	03	05	02	03	05	06	06	12
12.	दंतेवाड़ा	00	00	00	04	00	04	01	00	01
13.	बस्तर	00	00	00	00	00	00	01	00	01
14.	बिलासपुर	05	06	11	06	05	11	05	03	08
15.	मुंगेली	00	00	00	03	01	04	00	01	01
16.	रायगढ़	02	02	04	10	06	16	00	02	02
17.	राजनांदगांव	01	01	02	01	03	04	00	06	06
18.	सरगुजा	01	02	03	01	01	02	00	03	03
19.	कबीरधाम	01	03	04	01	03	04	00	00	00
20.	जशपुर	02	01	03	00	00	00	00	02	02
	कुल	27	28	55	87	70	157	36	52	88

तालिका–3.8
शालेय स्तर आधारित शिक्षकों की जिलेवार संख्या

क्रं.	जिला	प्राथमिक स्तर			माध्यमिक स्तर			उच्चतर माध्यमिक स्तर		
		प्रशिक्षित	अप्रशिक्षित	कुल	प्रशिक्षित	अप्रशिक्षित	कुल	प्रशिक्षित	अप्रशिक्षित	कुल
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
1.	धमतरी	07	08	15	06	05	11	02	00	02
2.	बलौदाबाजार	01	01	02	06	04	10	03	04	07
3.	कोरिया	08	02	10	01	04	05	01	00	01
4.	जांजगीर	00	01	01	04	04	08	02	03	05
5.	महासमुंद	06	06	12	08	04	12	02	01	03
6.	बालोद	02	03	05	02	01	03	01	00	01
7.	दुर्ग	08	10	18	02	02	04	04	03	07
8.	बेमेतरा	01	02	03	02	02	04	02	01	03
9.	कांकेर	03	01	04	02	03	05	02	01	03
10.	रायपुर	03	05	08	02	05	07	02	01	03
11.	गरियाबंद	01	04	05	05	04	09	04	02	06
12.	दंतेवाड़ा	03	00	03	02	00	02	01	00	01
13.	बस्तर	00	00	00	00	00	00	00	00	00
14.	बिलासपुर	03	06	09	07	07	14	06	01	07
15.	मुंगेली	01	03	04	02	01	03	00	00	00
16.	रायगढ़	03	03	06	07	05	12	02	04	06
17.	राजनांदगांव	01	03	04	00	01	01	01	03	04
18.	सरगुजा	00	03	03	02	02	04	00	00	00
19.	कबीरधाम	00	07	07	02	02	04	00	00	00
20.	जशपुर	01	01	02	01	01	02	00	00	00
	कुल	52	69	121	63	57	120	35	24	59

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

तालिका–3.9
शैक्षिक अनुभव आधारित शिक्षकों की जिलेवार संख्या

क्रमांक	जिला	10 वर्ष से कम			15 वर्ष से अधिक		
		प्रशिक्षित	अप्रशिक्षित	कुल	प्रशिक्षित	अप्रशिक्षित	कुल
1	2	3	4	5	6	7	8
1.	धमतरी	11	08	19	04	04	08
2.	बलौदाबाजार	02	03	05	08	07	15
3.	कोरिया	04	02	06	07	02	09
4.	जांजगीर	01	01	02	06	06	12
5.	महासमुंद	07	06	13	09	05	14
6.	बालोद	01	02	03	02	02	04
7.	दुर्ग	09	07	16	07	06	13
8.	बेमेतरा	03	03	06	01	05	06
9.	कांकेर	01	00	01	05	05	10
10.	रायपुर	06	07	13	05	03	08
11.	गरियाबंद	02	09	11	05	02	07
12.	दंतेवाड़ा	03	00	03	01	00	01
13.	बस्तर	01	00	01	00	00	00
14.	बिलासपुर	05	06	11	11	07	18
15.	मुंगेली	01	02	03	02	03	05
16.	रायगढ़	04	08	12	08	03	11
17.	राजनांदगांव	00	05	05	02	03	05
18.	सरगुजा	00	05	05	02	02	04
19.	कबीरधाम	02	08	10	00	01	01
20.	जशपुर	02	00	02	00	02	02
	कुल	65	82	147	85	68	153

तालिका–3.10
शैक्षणिक योग्यता आधारित शिक्षकों की जिलेवार संख्या

क्रमांक	जिला	स्नातक स्तर			स्नातकोत्तर स्तर		
		प्रशिक्षित	अप्रशिक्षित	कुल	प्रशिक्षित	अप्रशिक्षित	कुल
1	2	3	4	5	6	7	8
1.	धमतरी	04	04	08	11	08	19
2.	बलौदाबाजार	00	01	01	10	08	18
3.	कोरिया	06	03	09	04	02	06
4.	जांजगीर	01	01	02	05	07	12
5.	महासमुंद	03	06	09	13	06	19
6.	बालोद	00	00	00	03	01	04
7.	दुर्ग	04	07	11	12	11	23
8.	बेमेतरा	02	00	02	03	04	07
9.	कांकेर	00	00	00	07	05	12
10.	रायपुर	01	05	06	06	07	13
11.	गरियाबंद	00	05	05	10	05	15
12.	दंतेवाड़ा	02	00	02	02	00	02
13.	बस्तर	01	00	01	01	00	01
14.	बिलासपुर	03	05	08	13	09	22
15.	मुंगेली	01	01	02	02	02	04
16.	रायगढ़	05	06	11	07	05	12
17.	राजनांदगावं	00	02	02	02	06	08
18.	सरगुजा	00	07	07	02	00	02
19.	कबीरधाम	01	06	07	01	03	04
20.	जशपुर	00	00	00	02	02	04
	कुल	34	59	93	116	91	207

3.4 उपकरण का वर्णन –

3.4.1. आत्मविश्वास मापनी –

शिक्षकों के आत्मविश्वास का मापन करने के लिए रेखा गुप्ता (2005) द्वारा निर्मित आत्मविश्वास मापनी Agnihotri's Self-Confidence Inventory (ASCI) का चयन किया गया है। यह पूर्णतः विश्वसनीय तथा वैध उपकरण है। इस परीक्षण में कुल 56 कथन है। सभी कथनों पर सही एवं गलत संबंधित जवाब मापनी की पूर्तिकर्ता के अपने होते हैं जिन्हें पूर्णतः गोपनीय रखा जाता है व जवाब का असर किसी प्रकार से भी उनके कार्य क्षेत्र में नहीं पड़ने का आश्वासन दिया जाता है। प्रत्येक कथन के उत्तर के लिए 01 अंक दिए गए है। कथन 2,7,23,21, 40,41,40,44,45,53,54,55 के गलत जवाब भी 01 अंक दिए गए है। बाकी कथनों में सही उत्तर हेतु भी 01 अंक निर्धारित किए गए है। परीक्षण में अधिकतम 56 अंक तथा न्यूनतम 07 अथवा उससे कम प्राप्तांक है।

आत्मविश्वास परीक्षण का विश्वसनीयता गुणांकः–

Reliability of the Inventor

Method	N	Reliability Coefficient	Index of Reliability
Split-Half	362	.91	.95
K-R Formula 200	200	.89	.94
Test-Retest (After one month)	116	.78	.88

3.4.1.1 परीक्षण का प्रशासनः–

शिक्षकों के आत्मविश्वास का मापन करने के लिए सोद्देश्य चयनित न्यादर्शी शिक्षकों को TES के साथ ही इस ASCI को भी दिया गया। उन्हें निर्देशित किया गया, कि यह कोई परीक्षा नहीं है। आगे के पृष्ठों पर कुछ कथन दिए गए हैं जो आपके संबंध में सही अथवा गलत हो सकते हैं। आप प्रत्येक कथन को पढ़ें, यदि कथन आपके संबंध में सही अथवा गलत हो तो, उन्हीं के नीचे वाले खाने में क्रौस ⊗ का चिन्ह अंकित कर दें। कृपया ध्यान रखें कि आपको केवल अपने बारे में ही राय देनी है। कोई भी उत्तर सही या गलत नहीं हैं, जो उत्तर आप देंगे वही सही होगा। यद्यपि समय का बन्धन नहीं है फिर भी कार्य शीघ्रता से करें। चूंकि आपके उत्तर गोपनीय रखे जायेंगे व वर्तमान कार्यक्षेत्र में किसी प्रकार से भी आपके द्वारा दिए जाने वाले उत्तर प्रभावकारी नहीं होंगे, अतः निःसंकोच उत्तर दें।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

3.4.1.2 मापनी का फलांकनः–

इस ASCI में कुल 56 कथन है, सभी कथन के लिए 01 अंक दिए गए है। किसी–किसी कथन में गलत कथन के लिए 01 अंक दिए गए है। शिक्षक द्वारा चिन्हांकित क्रौस ⊗ जो कि सही या गलत वाले किसी भी ब्लॉक में हो सब में 01–01 अंक देते हुए योग किया गया एवं इस योग को कुल अंक 56 में से निकालकर शेष अंकों को शिक्षक के आत्मविश्वास स्तर के अंक के रूप में गणना किया गया है।

आत्मविश्वास स्तर का निर्धारण मापनी के मैन्युअल के पृष्ठ–6 के टेबल–3, में निम्नानुसार प्रदर्शित है।

RAW SCORES	INTERPRETAION
7 and below	Very high Self confidence
8-19	High Self confidence
20-32	Average Self confidence
33-44	Low Self Confidence
45 and above	Very Low Sefl confidence

उक्त तालिकानुसार कम प्राप्तांक वाले शिक्षक अधिक आत्मविश्वास स्तर के एवं अधिक प्राप्तांक वाले शिक्षक कम आत्मविश्वास स्तर के सूचक है।

3.4.1.3 मापनी चयन का आधार :–

उपकरण के चयन हेतु उसमें विशष्टि गुणों का होना आवश्यक है। उपकरण के चयन के संदर्भ में यह बात अधिक महत्व रखती है कि उपकरण अनुसंधानकर्ता के उद्देश्यों की पूर्ति करता है अथवा नहीं।

शोधार्थी द्वारा चयनित आत्मविश्वास मापनी (ASCI) उपकरण डॉ. रेखा गुप्ता द्वारा निर्मित एवं संशोधित मापनीय को उनके निम्नलिखित विशेषताओं के कारण प्ररीक्षण में उपयोग लिया गया है।

- यह उपकरण प्रमापीकृत परीक्षण है।
- यह मापनी हिन्दी भाषा में उपलब्ध है।
- यह मापनी की भाषा सरल, स्पष्ट व उद्देश्य पूर्ण है।
- इससे सरलतापूर्वक मापन एवं मूल्यांकन किया जा सकता है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

- न्यादर्श शिक्षक स्वतंत्र होकर अपने उत्तर प्रकट कर सकते हैं।
- इसके कथन विषयी के समझने में सहायक है।
- आत्मविश्वास मापनी की विश्वसनीयता स्तर .82 एवं वैधता .77 है जो कि उच्च मानी गयी है।
- इन मापनी का फलांकन सरल है।

3.4.2 शिक्षक प्रभावशीलता मापनी –

शिक्षक प्रभावशीलता मापनी का विवरण :– शिक्षक प्रभावशीलता मापनी का निर्माण पी. कुमार एवं डी.एन मुथा के द्वारा किया है। सर्वप्रथम इसका विकास 1974 में इन दोनों के संयुक्त प्रयास से हुआ था। इसे माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के प्रभावशीलता को मापने के उद्देश्य से किया था। इसके प्रारंभिक निर्माण प्रकिया में शिक्षकों के शैक्षिक व्यवहार से संबंधित 93 कथनों का 25 विशेषज्ञों के साथ विचार–विमर्श किया गया। ये कथन इनके शैक्षिक व्यवहारों को संकेत करने वाले निम्नांकित क्षेत्र थे:–

1. शिक्षक का अकादमिक सूचना स्त्रोत।
2. प्रेरक।
3. शिक्षक कौशल।
4. शिक्षण सहभागी गतिविधि।
5. व्यवसायिक ज्ञान।
6. कक्षा प्रबंधन।
7. छात्र, सहकर्मी शिक्षक, प्राचार्य एवं पालकों के साथ संबंध।
8. परामर्शमदाता एवं मार्गदर्शक।
9. अनुशासन।
10. व्यक्तित्व।

इसमें संबंधित कथनों को माध्यमिक शाला के 10 प्राचार्यो, 02 शिक्षकों के साथ चर्चा कर उनके मन एवं टिप्पणियाँ प्राप्त किया गया। परिणामतः 93 में से 22 कथनों को शिक्षक प्रभावशीलता को जाँचने हेतु अनुपयुक्त कथन मानकर खारिज किया गया एवं 71 कथनों के प्रति निर्णायकों के मध्य शत–प्रतिशत सहमति के कारण उन्हें स्वीकृत किया गया।

इन 71 कथनों को जोधपुर शहर के माध्यमिक शालाओं यादृच्छिक रीति से चयनित 100 पुरूष एवं 100 महिला शिक्षको पर प्रशासित किया गया। शिक्षकों से केवल "हाँ या ना" में विचार न लेते हुए शैक्षिक व्यवहार संबंधित सकारात्मक कथनों के पूर्णतः सहमत, अनिश्चित, असहमत एवं पूर्णतः असहमत जैसे– 05 श्रेणियों में क्रमशः 05,04,03,02 एवं 01 अंक विभाजन के साथ, विचार के लिए अंक प्रदान किए गए। उनके विचारों के प्राप्तांकों को

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

71 से 355 के मध्य अवरोही क्रम में व्यवस्थित प्रथम उच्च 27 प्रतिशत तथा निम्न 27 प्रतिशत कथनों को उनके वैधता के आधार (गैरेट–1961) पर चुना गया है। इन कथनों के विभेदीकरण मूल्य जाँच किया गया, जिससे .05 विश्वसनीयता स्तर पर उच्चतम एवं न्यूनतम समूहों में 71 कथनों में से 79 कथनों में ही विभेदीकरण लक्षण मिले। अतः अन्त में TES को 71 के बदले 69 कथनों वाला बनाया गया एवं सरदार पटेल विश्वविद्यालय, विद्यानगर के सहयोग से इसका वर्तमान स्वरूप में Teacher Effectiveness Scale (1999 Revision) सामने आया। इस मापनी की अनुसूची में 69 कथनों को लिकर्ट विधि के आधार पर 06 प्रमुख क्षेत्र एवं उनके 10 उपक्षेत्र में उनके वितरण को निम्नांकित तालिका में प्रदर्शित किया गया है।

स.क्र.	क्षेत्र	उपक्षेत्र	कथन क्रमांक	कथनों की संख्या	कुल संख्या
1.	अकादमिक	सूचना स्त्रोत	2,3,24,57	04	04
2.	शिक्षण व्यवसाय	प्रेरकता	5,6,44,68	04	
		शिक्षण कौशल	41,42,4345,47,50,51	07	
		सहभागी कियाएँ	29,30,31	03	
		व्यावसयिक ज्ञान	1,32,33,34,40,55	06	
		कक्षा प्रबंधन	16,52,54,58	04	24
3.	सामाजिक	विद्यार्थी, सहकर्मी शिक्षक, प्राचार्य व पालकों के साथ संबंध	7,9,11,12,15,21,22, 23,25,26,28,	11	11
4.	भावनात्मक	परामर्श एवं मार्गदर्शन	4,8,19,27,46,48,49,56	08	08
5.	नैतिक	अनुशासनात्मक	10,13,17,20,60,61,62, 64,65,69	10	10
6.	व्यक्तित्व	व्यक्तित्व लाक्षणिकता	14,18,35,36,37,38,39, 53,59,63,66,67	12	12
			कुल कथनों की संख्या		69

3.4.2.1 परीक्षण का प्रशासन :–

यह TES मापनी हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों ही भाषाओां में उपलब्ध है। प्रयुक्त पुस्तिका (मैनुअल) अंग्रेजी में एवं उत्तर पुस्तिका हिन्दी में उपलब्धता के आधार उपयोग किया गया है। उत्तर पुस्तिका के प्रथम पृष्ठ में आवश्यक निर्देश उल्लेखित है जिसमें शिक्षकों से प्राप्त उत्तरों की गोपनीयता बनाये रखने का आश्वासन है।

इस परीक्षण मापनी का प्रकाशन चयनित शिक्षकों पर निर्देश के आधार पर किया गया। सभी कथनों का उत्तर आवश्यक है – जो कि निर्देशित है। परीक्षण के सभी 69

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

कथनों में जिस कथन में 05 स्तरीय (लिकर्ट पैमाना) सहमति मापदण्ड में जिस स्तर पर आपको अपनी सहमति व्यक्त करना है उस स्थान पर (✓) का निशान लगाना है। उन्हें यह भी निर्देशित किया गया कि आपके मूल्यांकन का उपयोग केवल अनुसंधान के लिए किया जाएगा, जिसका उनके कार्य क्षेत्र में कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।

3.4.2.2 मापनी का फलांकन :–

इस परीक्षण में शिक्षक प्रभावशीलता की ओर संकेत करने वाले 69 सकारात्मक तथ्यों को रखा गया है। प्रत्येक कथन में 05 स्तरीय रेटिंग निम्नांकित सारणी अनुसार है:–

क्र. सं.	कथन	पूर्णतया सहमत (5 अंक)	सहमत (4 अंक)	अनिश्चित (3 अंक)	असहमत (2 अंक)	पूर्णतया असहमत (1 अंक)
1.	....		✓			
2.	....			✓		

शिक्षक द्वारा जिस स्तर पर कथन (✓) चिन्हांकित किए गए है उन्हें उस स्तर के अंक प्रदान करते हुए, उनके सभी कथनों के प्राप्तांकों के कुल योग शिक्षक प्रभावशीलता को प्रदर्शित करेंगी।

3.4.2.3 मापनी चयन का आधार :–

उपकरण के चयन हेतु उसमें विशष्टि गुणों का होना आवश्यक है। उपकरण के चयन के संदर्भ में यह बात अधिक महत्व रखती है कि उपकरण अनुसंधानकर्ता के उद्देश्यों की पूर्ति करता है अथवा नहीं।

शोधार्थी द्वारा चयनित शिक्षक प्रभावशीलता मापनी (TES) को उनकी निम्नलिखित विशेषताओं के कारण प्ररीक्षण में उपयोग लिया गया है।

- यह उपकरण प्रमापीकृत परीक्षण है।
- यह मापनी हिन्दी भाषा में उपलब्ध है।
- यह मापनी की भाषा सरल, स्पष्ट व उद्देश्य पूर्ण है।
- इससे सरलतापूर्वक मापन एवं मूल्यांकन किया जा सकता है।
- न्यादर्श शिक्षक स्वतंत्र होकर अपने उत्तर प्रकट कर सकते हैं।
- इसके कथन विषयी के समझने में सहायक है।
- शिक्षक प्रभावशीलता मापनी (TES) जिसकी विश्वसनीयता .86 एवं वैधता .82 है।
- इन मापनी का फलांकन सरल है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

3.5. सांख्यिकी उपचार :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शिक्षक के आत्मविश्वास एवं उनके शिक्षक प्रभावशीलता के प्राप्तांकों का चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित वर्ग के मध्यमान एवं प्रमाप विचलन ज्ञात करते हुए तद्आधारित "t" मूल्य का परिकलन किया गया एवं परिकलित "t" मूल्य तथा विभिन्न स्वतंत्रता अंश (df) में "t" के वास्तवीक मूल्य के माध्यम से चे.वि.मू.शि. की सार्थकता को जाँचने का प्रयास किया गया है।

———00———

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

अध्याय चतुर्थ
निष्कर्ष, व्याख्या एवं विवेचना

4.1 भूमिका

4.2 शिक्षक आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा का प्रभाव

4.3 शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल शिक्षा का प्रभाव

4.4 शिक्षक प्रभावशीलता के आयामों पर चेतना विकास मूल शिक्षा का प्रभाव

4.5 सार्वभौमिक निष्कर्ष एवं विवेचना

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

अध्याय–चतुर्थ
निष्कर्ष, व्याख्या एवं विवेचना

4.1 भूमिका :–

अनुसंधान को सफलता पूर्वक आयोजित करने के लिए उनसे संबंधित विभिन्न प्रकार के अनेक तथ्य एवं सूचनाएं संग्रह कर ली जाती हे ये सारी सूचनाएँ चाहे प्रश्नावलियों से प्राप्त हुई, हो, अथवा अवलोकन एवं साक्षात्कार की प्रविधियों से, या उन्हें द्वैतीयक स्त्रोंतो से एकत्रित किया गया हो, अपने बिखरे या फैले हुए रूप में तो ये सब निरर्थक ही है।

4.2 प्रथम भाग–शिक्षक आत्मविश्वास पर चे.वि.मू.शि. का प्रभावः–

H_{0-1} शिक्षकों के आत्मविश्वास पर लिंग, आयु, जाति, शालेय स्तर, शैक्षिक अनुभव, शैक्षणिक यौग्यता में चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

उपरोक्त परिकल्पना की पुष्टि के लिए चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित, अप्रशिक्षित शिक्षकों के आत्मविश्वास के प्राप्तांको का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा "t" मूल्य का ज्ञात किया गया, जिसका विवरण निम्नांकित तालिका में दर्शाया गया है।

तालिका–4.1
चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के आत्मविश्वास

क्र.	विवरण	संख्या	परीक्षण से प्राप्त परिणाम		
			M	SD	t Value
1.	प्रशिक्षित शिक्षक	150	13.9	9.269	5.982
2.	अप्रशिक्षित शिक्षक	150	20.887	10.849	
df = 298		P < 0.01		सार्थक अंतर है	

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों का मध्य मान 13.9 व प्रमाणिक विचलन 9.269 प्राप्त हुआ, जबकि अप्रशिक्षित शिक्षकों का मध्यमान 20.887 व प्रमाणिक विचलन 10.849 प्राप्त हुआ। (मापनी के मैन्युअल के आधार पर कम मध्यमान अधिक आत्मविश्वास का प्रतीक है तथा अधिक मध्यमान कम आत्मविश्वास का सूचक है) तथा दोनों समूहों के मध्य का "t" मूल्य 5.982 प्राप्त हुआ जो स्वतंत्रता अंश 298 पर 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर है। अतः यह परिकल्पना 0.01 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत हुई।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

आरेख 4.1–प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के आत्म विश्वास के मध्यमानों का आरेखिय प्रदर्शन।

आरेख–4.1

शिक्षकों के मध्यमान

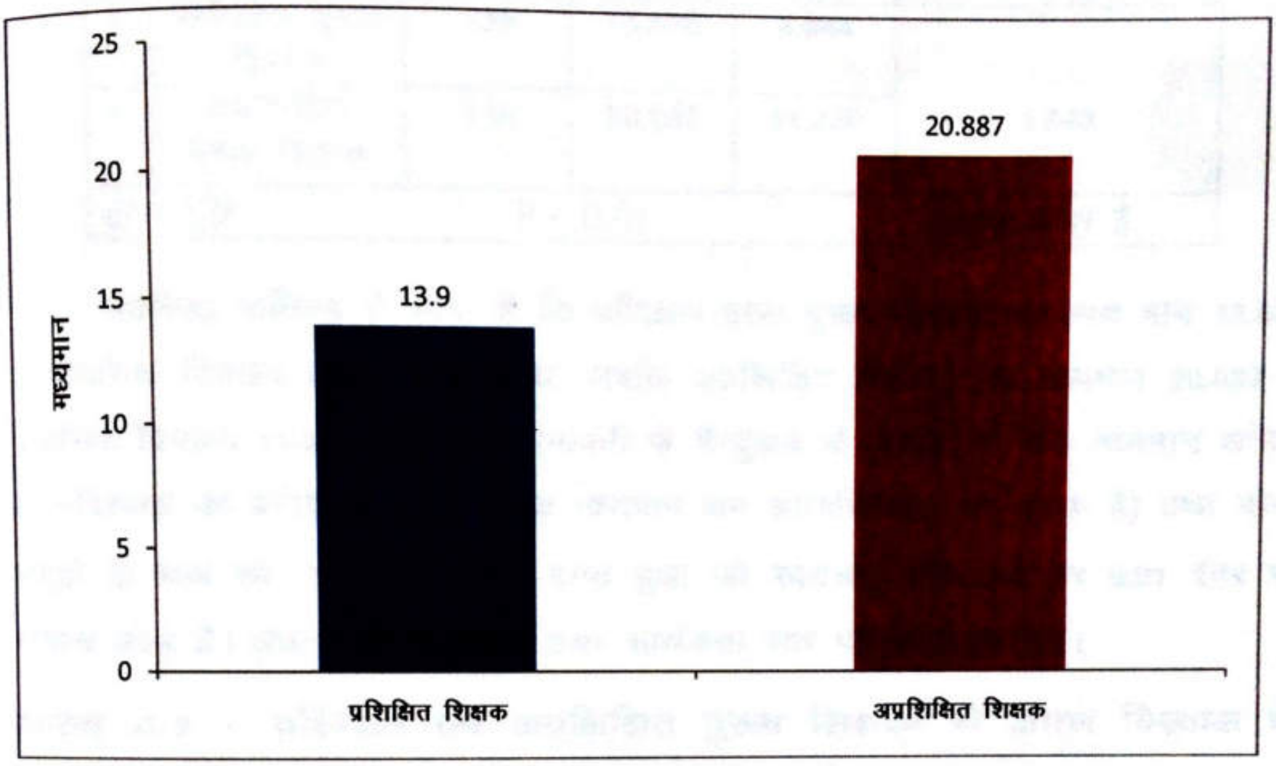

उपरोक्त आरेख से यह परिलक्षित होता है कि शिक्षकों में इससे प्रभावित होने वाले शिक्षकों की संख्या अप्रभावित शिक्षकों की संख्या से अधिक है जिसका प्रभाव इनके मध्यमान में दिखाई देता है।

लिंग के आधार पर शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव।

$H_{0-1.1}$

पुरूष शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

उपरोक्त परिकल्पना की पुष्टि के लिए चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित, अप्रशिक्षित शिक्षकों के आत्मविश्वास के प्राप्तांको का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा "t" मूल्य का ज्ञात किया गया, जिसका विवरण निम्नांकित तालिका में दर्शाया गया है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

तालिका क्रमांक–4.2

चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित पुरूष शिक्षकों का आत्मविश्वास

क्र.	विवरण	संख्या	परीक्षण से प्राप्त परिणाम		
			M	SD	t Value
1.	प्रशिक्षित पुरूष शिक्षक	130	13.808	8.944	4.848
2.	अप्रशिक्षित पुरूष शिक्षक	115	20.087	11.220	
df = 228		P < 0.01		सार्थक अंतर है	

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि प्रशिक्षण प्राप्त पुरूष शिक्षकों का मध्य मान 13.808 व प्रमाणिक विचलन 8.944 प्राप्त हुआ, जबकि अप्रशिक्षित शिक्षकों का मध्यमान 20.087 व प्रमाणिक विचलन 11.220 प्राप्त हुआ (मापनी के मैन्युअल के आधार पर कम मध्यमान अधिक आत्मविश्वास का प्रतीक है तथा अधिक मध्यमान कम आत्मविश्वास का सूचक है) तथा दोनों समूहों के मध्य का "t" मूल्य 4.848 प्राप्त हुआ जो स्वतंत्रता अंश 243 पर 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर है। अतः यह परिकल्पना 0.01 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत हुई।

आरेख 4.2 – प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित पुरूष शिक्षकों के आत्म विश्वास के मध्यमानों का आरेखिय प्रदर्शन।

आरेख–4.2

पुरूष शिक्षकों के मध्यमान

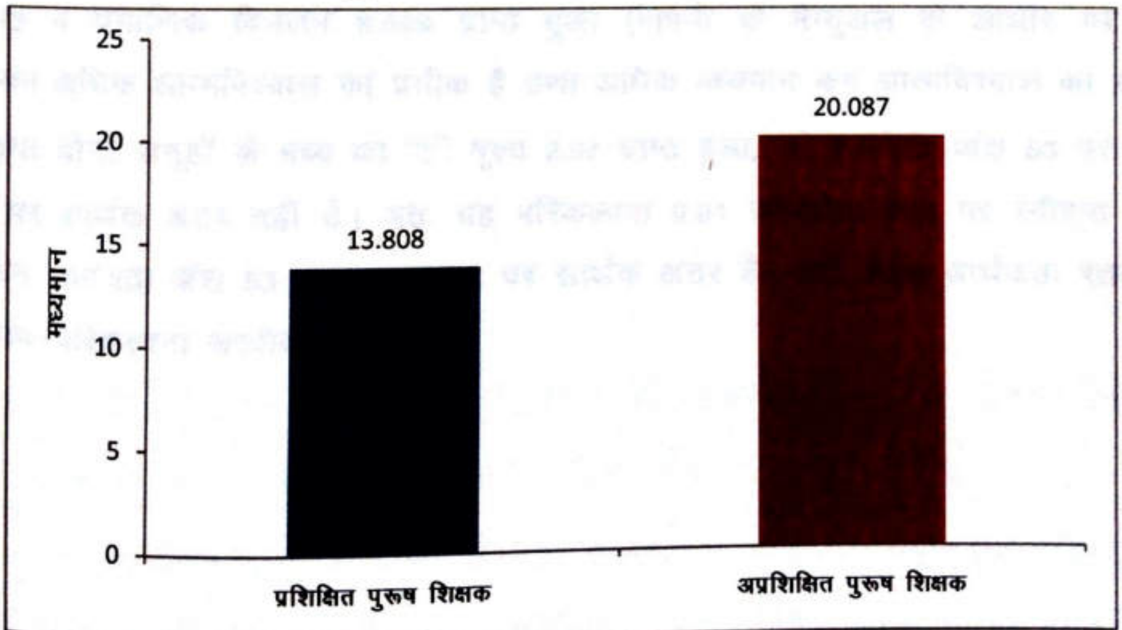

उपरोक्त आरेख से यह परिलक्षित होता है कि पुरूष शिक्षकों में इससे प्रभावित होने वाले शिक्षकों की संख्या अप्रभावित पुरूष शिक्षकों की संख्या से अधिक है जिसका प्रभाव इनके मध्यमान में स्पष्ट अन्तर के रूप में दिखाई देता है।

$H_{0-1.2}$

महिला शिक्षिकाओं के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

उपरोक्त परिकल्पना की पुष्टि के लिए चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित, अप्रशिक्षित शिक्षिकाओं के आत्मविश्वास के प्राप्तांको का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा "t" मूल्य को ज्ञात किया गया, जिसका विवरण निम्नांकित तालिका में दर्शाया गया है।

तालिका–4.3

चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महिला शिक्षिकाओं के आत्मविश्वास

क्र.	विवरण	संख्या	परीक्षण से प्राप्त परिणाम		
			M	SD	t Value
1.	प्रशिक्षित महिला शिक्षिका	20	16.1	9.4	2.67
2.	अप्रशिक्षण महिला शिक्षिका	35	22.872	8.549	
df = 53			$P > 0.01$ $P<0.05$		सार्थक अंतर नहीं है सार्थक अंतर है

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि प्रशिक्षण प्राप्त महिला शिक्षिकाओं का मध्य मान 16.1 व प्रमाणिक विचलन 9.4 प्राप्त हुआ, जबकि अप्रशिक्षित महिला शिक्षिकाओं का मध्यमान 22.872 व प्रमाणिक विचलन 8.549 प्राप्त हुआ (मापनी के मैन्युअल के आधार पर कम मध्यमान अधिक आत्मविश्वास का प्रतीक है तथा अधिक मध्यमान कम आत्मविश्वास का सूचक है) तथा दोनों समूहों के मध्य का "t" मूल्य 2.67 प्राप्त हुआ, जो स्वतंत्रता अंश 53 पर 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर नहीं है। अतः यह परिकल्पना 0.01 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत हुई। (लेकिन स्वतंत्रता अंश 53 पर 0.05 स्तर पर सार्थक अंतर है। अतः 0.05 सार्थकता स्तर पर यह उप–परिकल्पना अस्वीकृत होती है।)

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

आरेख 4.3 – प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महिला शिक्षिकाओं के आत्मविश्वास के मध्यमान का आरेखिय प्रदर्शन।

आरेख–4.3

महिला शिक्षिकाओं के मध्यमान

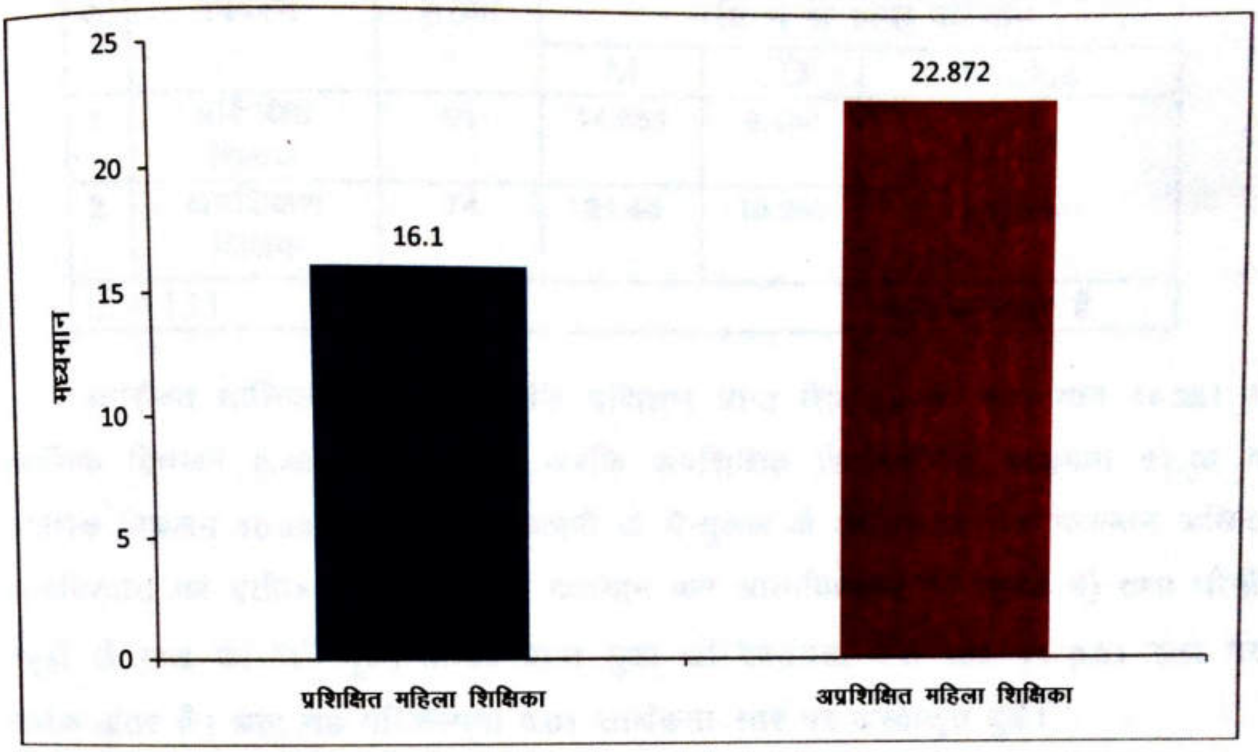

उपरोक्त आरेख से यह परिलक्षित होता है कि महिला शिक्षिकाओं में इससे अप्रभावित होने वाले शिक्षिकाओं की संख्या प्रभावित शिक्षकों की संख्या से अधिक है जिसका प्रभाव इनके मध्यमान में अन्तर तो दिखाई स्पष्ट दिखाई देता है एवं सार्थकता की पुष्टि 0.05 स्तर पर हुई है।

आयु के आधार पर शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव।

$H_{0\text{-}1.3}$

35 वर्ष से कम आयु वाले शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

उपरोक्त परिकल्पना की पुष्टि के लिए चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित, अप्रशिक्षित शिक्षकों के आत्मविश्वास के प्राप्तांको का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा "t" मूल्य का ज्ञात किया गया, जिसका विवरण निम्नांकित तालिका में दर्शाया गया है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

तालिका–4.4

चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित 35 वर्ष से कम आयु वाले शिक्षकों के आत्मविश्वास

क्र.	विवरण	संख्या	परीक्षण से प्राप्त परिणाम		
			M	SD	t Value
1.	प्रशिक्षित शिक्षक	61	14.951	9.468	3.764
2.	अप्रशिक्षण शिक्षक	74	21.46	10.285	
df = 133	P < 0.01				सार्थक अंतर है

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों का मध्य मान 14.951 व प्रमाणिक विचलन 9.468 प्राप्त हुआ, जबकि अप्रशिक्षित शिक्षकों का मध्यमान 21.46 व प्रमाणिक विचलन 10.285 प्राप्त हुआ (मापनी के मैन्युअल के आधार पर कम मध्यमान अधिक आत्मविश्वास का प्रतीक है तथा अधिक मध्यमान कम आत्मविश्वास का सूचक है) तथा दोनों समूहों के मध्य का "t" मूल्य 3.764 प्राप्त हुआ जो स्वतंत्रता अंश 133 पर 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर है। अतः यह परिकल्पना 0.01 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत हुई।

आरेख 4.4 – प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के आत्मविश्वास के मध्यमान का आरेखिय प्रदर्शन।

आरेख–4.4

35 वर्ष से कम आयु वाले शिक्षकों के मध्यमान

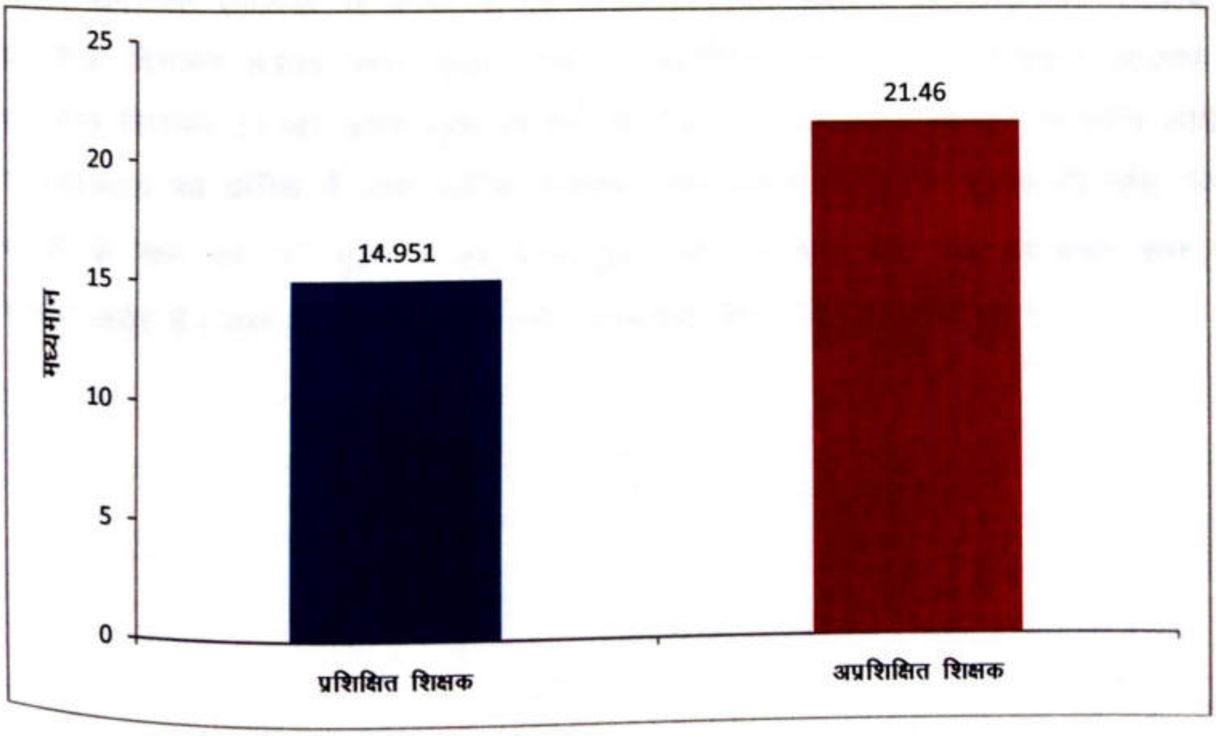

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

उपरोक्त आरेख से यह परिलक्षित होता है। कि पुरूष शिक्षकों में इससे प्रभावित होने वाले शिक्षकों की संख्या अप्रभावित पुरूष शिक्षकों की संख्या से अधिक है जिसका प्रभाव इनके मध्यमान में स्पष्ट अन्तर के रूप में दिखाई देता है।

$H_{0-1.4}$

40 वर्ष से अधिक आयु वाले शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

उपरोक्त परिकल्पना की पुष्टि के लिए चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित, अप्रशिक्षित शिक्षकों के आत्मविश्वास के प्राप्तांको का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा "t" मूल्य का ज्ञात किया गया, जिसका विवरण निम्नांकित तालिका में दर्शाया गया है।

तालिका क्रमांक–4.5

चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित 40 वर्ष से अधिक आयु वाले शिक्षकों के आत्मविश्वास

क्र.	विवरण	संख्या	परीक्षण से प्राप्त परिणाम		
			M	SD	t Value
1.	प्रशिक्षित शिक्षक	89	13.574	8.918	4.134
2.	प्रशिक्षित शिक्षक	76	20.289	11.787	
df = 163		P < 0.01		सार्थक अंतर है	

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों का मध्य मान 13.574 व प्रमाणिक विचलन 8.918 प्राप्त हुआ, जबकि अप्रशिक्षित शिक्षकों का मध्यमान 20.289 व प्रमाणिक विचलन 11.787 प्राप्त हुआ (मापनी के मैन्युअल के आधार पर कम मध्यमान अधिक आत्मविश्वास का प्रतीक है तथा अधिक मध्यमान कम आत्मविश्वास का सूचक है) तथा दोनों समूहों के मध्य का "t" मूल्य 4.134 प्राप्त हुआ जो स्वतंत्रता अंश 163 पर 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर है। अतः यह परिकल्पना 0.01 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत हुई।

आरेख 4.5 – प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के शिक्षक आत्मविश्वास के मध्यमान का रेखीय प्रदर्शन।

आरेख–4.5

40 वर्ष से अधिक आयु वाले शिक्षकों के मध्यमान

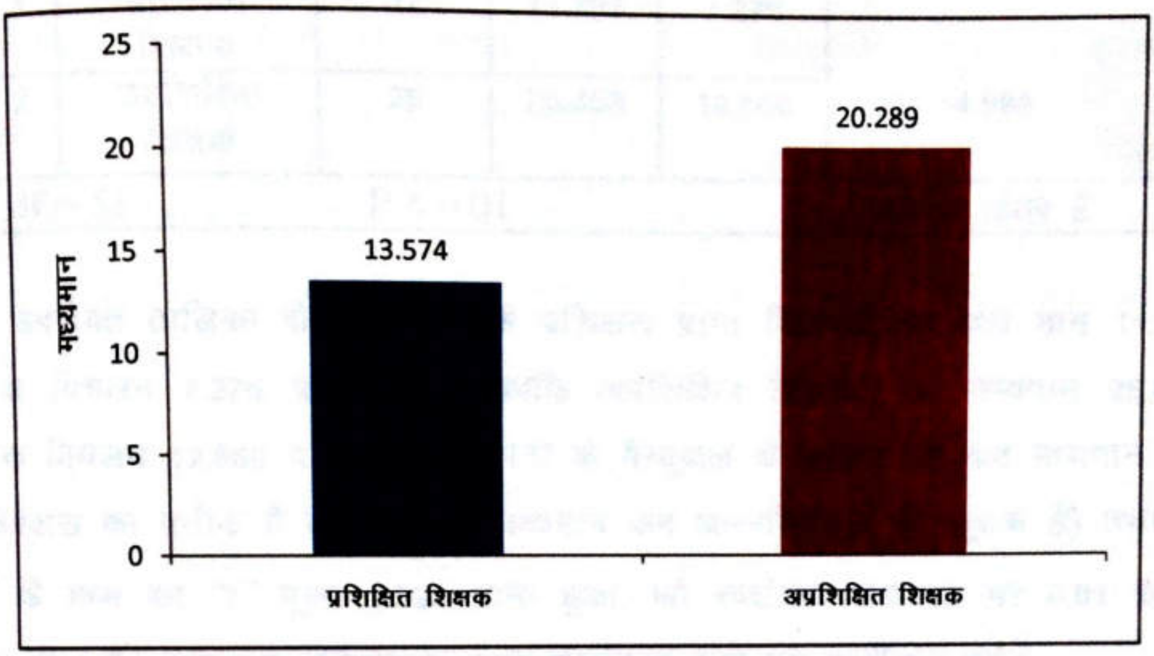

उपरोक्त आरेख से यह परिलक्षित होता है। कि पुरूष शिक्षकों में इससे प्रभावित होने वाले शिक्षकों की संख्या अप्रभावित पुरूष शिक्षकों की संख्या से अधिक है जिसका प्रभाव इनके मध्यमान में स्पष्ट अन्तर के रूप में दिखाई देता है।

जाति के आधार पर शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव।

$H_{0-1.5}$

सामान्य जाति के शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

उपरोक्त परिकल्पना की पुष्टि के लिए चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित, अप्रशिक्षित शिक्षकों के आत्मविश्वास के प्राप्तांको का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा "t" मूल्य का ज्ञात किया गया, जिसका विवरण निम्नांकित तालिका में दर्शाया गया है।

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

तालिका क्रमांक–4.6

चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित सामान्य वर्ग के शिक्षकों के आत्मविश्वास

क्र.	विवरण	संख्या	परीक्षण से प्राप्त परिणाम		
			M	SD	t Value
1.	प्रशिक्षित शिक्षक	27	11.704	7.276	4.996
2.	अप्रशिक्षित शिक्षक	28	25.858	12.566	
df = 53		P < 0.01			सार्थक अंतर है

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों का मध्य मान 11.704 व प्रमाणिक विचलन 7.276 प्राप्त हुआ, जबकि अप्रशिक्षित शिक्षकों का मध्यमान 25.858 व प्रमाणिक विचलन 12.566 प्राप्त हुआ (मापनी के मैन्युअल के आधार पर कम मध्यमान अधिक आत्मविश्वास का प्रतीक है तथा अधिक मध्यमान कम आत्मविश्वास का सूचक है) तथा दोनों समूहों के मध्य का "t" मूल्य 4.996 प्राप्त हुआ, जो स्वतंत्रता अंश 53 पर 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर है। अतः यह परिकल्पना 0.01 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत हुई।

आरेख 4.6–प्रशिक्षिम एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के आत्मविश्वास के मध्यमान का आरेखिय प्रदर्शन।

आरेख–4.6

सामान्य वर्ग के शिक्षकों के मध्यमान

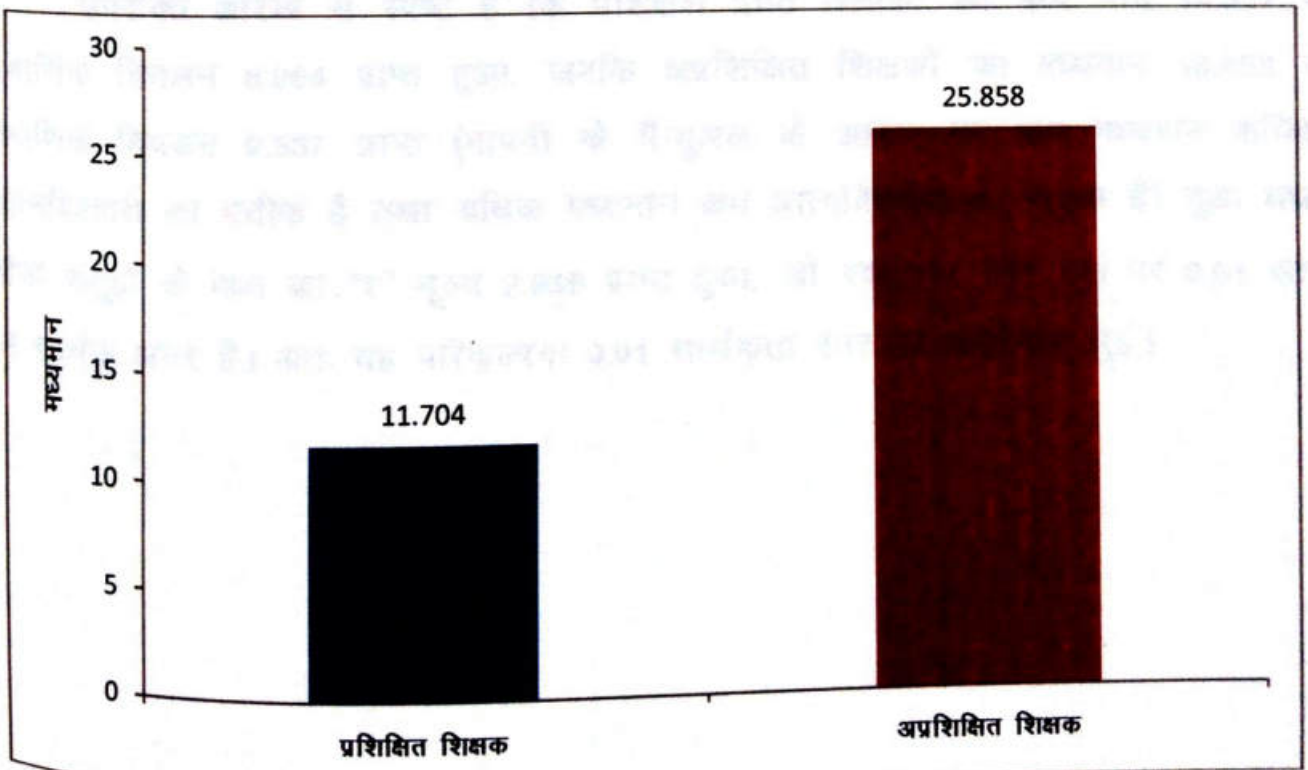

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

उपरोक्त आरेख से यह परिलक्षित होता है। कि पुरूष शिक्षकों में इससे प्रभावित होने वाले शिक्षकों की संख्या अप्रभावित पुरूष शिक्षकों की संख्या से अधिक है जिसका प्रभाव इनके मध्यमान में स्पष्ट अन्तर के रूप में दिखाई देता

$H_{0\text{-}1.6}$

अन्य पिछड़ी जाति के शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

उपरोक्त परिकल्पना की पुष्टि के लिए चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित, अप्रशिक्षित शिक्षकों के आत्मविश्वास के प्राप्तांको का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा "t" मूल्य का ज्ञात किया गया, जिसका विवरण निम्नांकित तालिका में दर्शाया गया है।

तालिका क्रमांक – 4.7
चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित अ.पि.वर्ग के शिक्षकों के आत्मविश्वास

क्र.	विवरण	संख्या	परीक्षण से प्राप्त परिणाम		
			M	SD	t Value
1.	प्रशिक्षित शिक्षक	87	14.357	8.964	2.939
2.	अप्रशिक्षित शिक्षक	70	18.858	9.537	
df = 175		P < 0.01			सार्थक अंतर है

उपरोक्त आरेख से स्पष्ट है कि प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों का मध्य मान 14.357 व प्रमाणिक विचलन 8.964 प्राप्त हुआ, जबकि अप्रशिक्षित शिक्षकों का मध्यमान 18.858 व प्रमाणिक विचलन 9.537 प्राप्त (मापनी के मैन्युअल के आधार पर कम मध्यमान अधिक आत्मविश्वास का प्रतीक है तथा अधिक मध्यमान कम आत्मविश्वास का सूचक है) हुआ तथा दोनों समूहों के मध्य का "t" मूल्य 2.939 प्राप्त हुआ, जो स्वतंत्रता अंश 175 पर 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर है। अतः यह परिकल्पना 0.01 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत हुई।

आरेख 4.7 – प्रशिक्षिम एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के आत्मविश्वास के मध्यमान का रेखीय प्रदर्शन।

आरेख–4.7

अन्य पिछ्डी जाति के शिक्षकों के मध्यमान

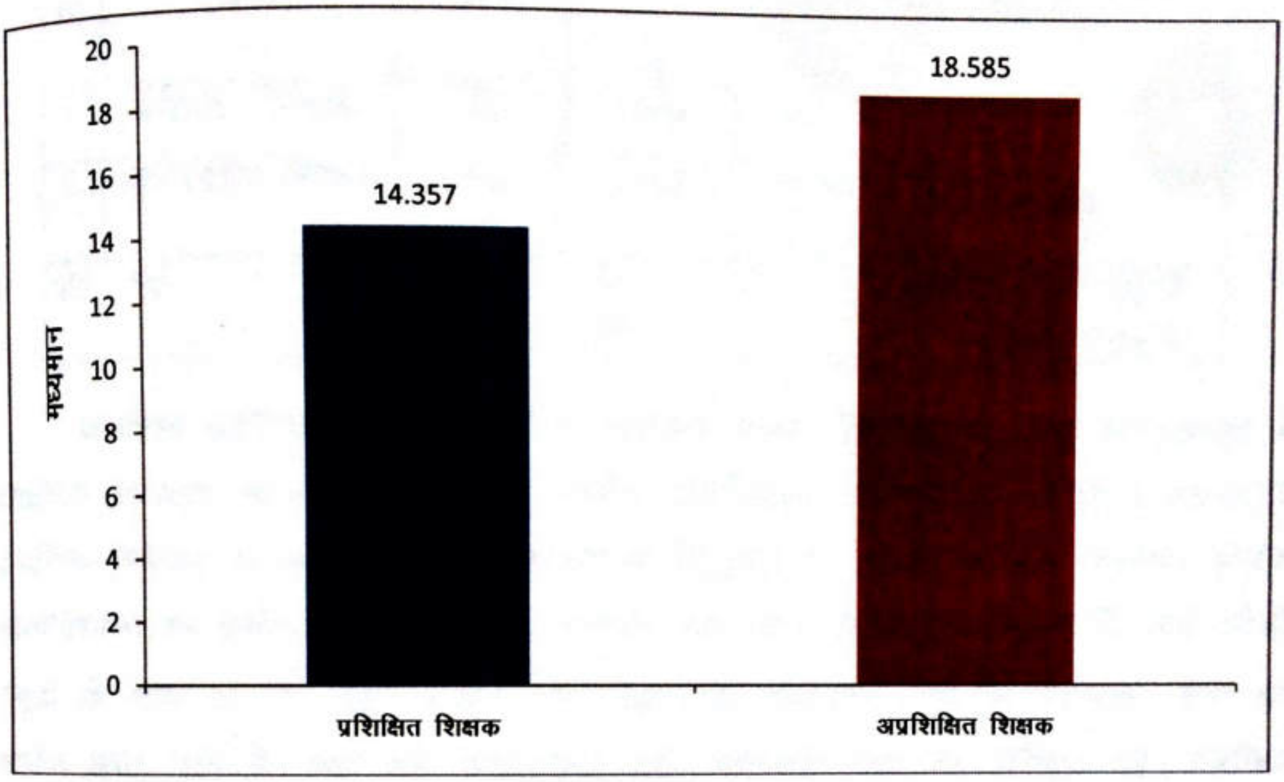

उपरोक्त आरेख से यह परिलक्षित होता है कि शिक्षित शिक्षिकों में इससे प्रभावित होने वाले शिक्षकों की संख्या अप्रशिक्षित पुरूष शिक्षकों की संख्या से अधिक है जिसका प्रभाव इनके मध्यमान में स्पष्ट अन्तर के रूप में दिखाई देता है।

$H_{0\text{-}1.7}$

अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

उपरोक्त परिकल्पना की पुष्टि के लिए चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित, अप्रशिक्षित शिक्षकों के आत्मविश्वास के प्राप्तांको का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा "t" मूल्य का ज्ञात किया गया, जिसका विवरण निम्नांकित तालिका में दर्शाया गया है।

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

तालिका–4.8

चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के शिक्षकों के आत्मविश्वास

क्र.	विवरण	संख्या	परीक्षण से प्राप्त परिणाम		
			M	SD	t Value
1.	प्रशिक्षित शिक्षक	36	15.89	10.415	2.359
2.	अप्रशिक्षित शिक्षक	52	21.52	11.191	
df = 86		P > 0.01			सार्थक अंतर नहीं है
		P < 0.05			सार्थक अंतर है

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों का मध्य मान 15.89 व प्रमाणिक विचलन 10.415 प्राप्त हुआ, जबकि अप्रशिक्षित शिक्षकों का मध्यमान 21.52 व प्रमाणिक विचलन 11.191 प्राप्त हुआ (मापनी के मैन्युअल के आधार पर कम मध्यमान अधिक आत्मविश्वास का प्रतीक है तथा अधिक मध्यमान कम आत्मविश्वास का सूचक है) तथा दोनों समूहों के मध्य का "t" मूल्य 2.359 प्राप्त हुआ जो स्वतंत्रता अंश 86 पर 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर नहीं है। अतः यह परिकल्पना 0.01 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत हुई। (लेकिन स्वतंत्रता अंश 86 पर 0.05 स्तर पर सार्थक अंतर है। अतः 0.05 सार्थकता स्तर पर यह उप–परिकल्पना अस्वीकृत होती है।)

आरेख 4.8– चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के शिक्षकों के आत्मविश्वास के मध्यमानों का आरेखिय प्रदर्शन।

आरेख – 4.8

अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के शिक्षकों के मध्यमान

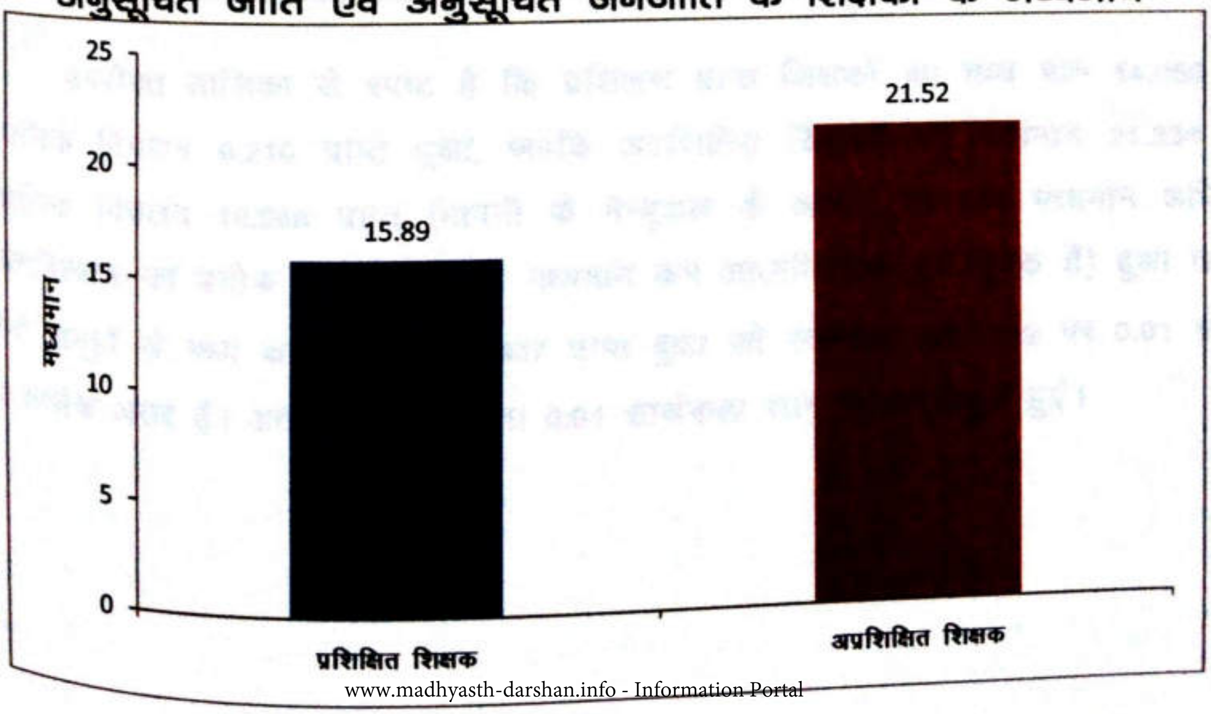

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

उपरोक्त आरेख से यह परिलक्षित होता है कि पुरूष शिक्षकों में इससे प्रभावित होने वाले शिक्षकों की संख्या अप्रभावित पुरूष शिक्षकों की संख्या से अधिक है जिसका प्रभाव इनके मध्यमान में स्पष्ट अन्तर के रूप में दिखाई देता है।

शालेय स्तर के आधार पर शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव।

$H_{0\text{-}1.8}$

प्राथामिक स्तर के शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

उपरोक्त परिकल्पना की पुष्टि के लिए चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित, अप्रशिक्षित शिक्षकों के आत्मविश्वास के प्राप्तांको का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा "t" मूल्य का ज्ञात किया गया, जिसका विवरण निम्नांकित तालिका में दर्शाया गया है।

तालिका–4.9

चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित प्राथामिक स्तर के शिक्षकों के आत्मविश्वास

क्र.	विवरण	संख्या	परीक्षण से प्राप्त परिणाम		
			M	SD	t Value
1.	प्रशिक्षित शिक्षक	52	14.058	9.216	3.837
2.	अप्रशिक्षित शिक्षक	69	21.334	10.956	
df = 119		P < 0.01			सार्थक अंतर है

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों का मध्य मान 14.058 व प्रमाणिक विचलन 9.216 प्राप्त हुआ, जबकि अप्रशिक्षित शिक्षकों का मध्यमान 21.334 व प्रमाणिक विचलन 10.956 प्राप्त (मापनी के मैन्युअल के आधार पर कम मध्यमान अधिक आत्मविश्वास का प्रतीक है तथा अधिक मध्यमान कम आत्मविश्वास का सूचक है) हुआ तथा दोनों समूहों के मध्य का "t" मूल्य 3.837 प्राप्त हुआ जो स्वतंत्रता अंश 119 पर 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर है। अतः यह परिकल्पना 0.01 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत हुई।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

आरेख 4.9 – प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के शिक्षक आत्मविश्वस के मध्यमान का आरेखिय प्रदर्शन।

आरेख–4.9

प्राथामिक स्तर के शिक्षकों के मध्यमान

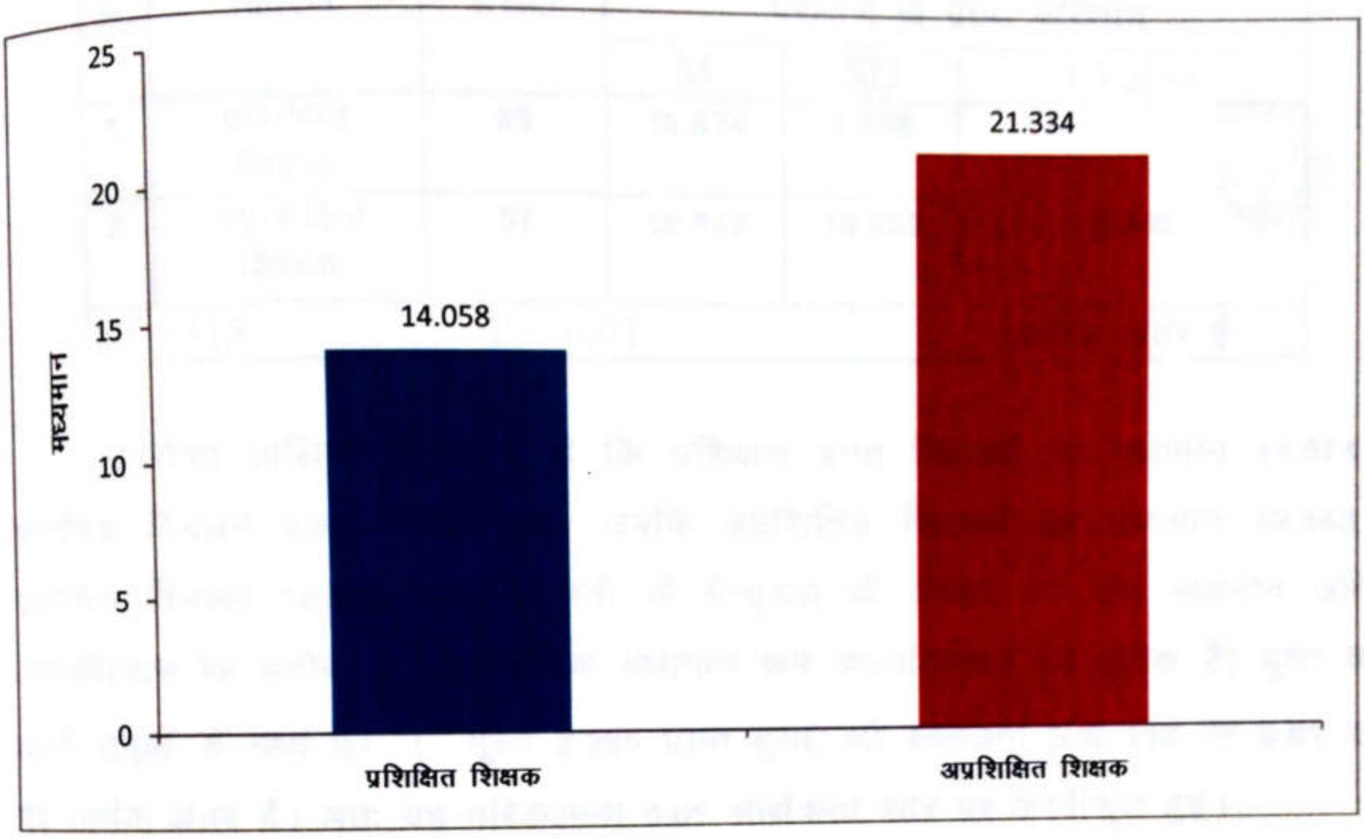

उपरोक्त आरेख से यह परिलक्षित होता है कि पुरूष शिक्षकों में इससे प्रभावित होने वाले शिक्षकों की संख्या अप्रभावित पुरूष शिक्षकों की संख्या से अधिक है जिसका प्रभाव इनके मध्यमान में स्पष्ट अन्तर के रूप में दिखाई देता है।

$H_{0\text{-}1.9}$

माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

उपरोक्त परिकल्पना की पुष्टि के लिए चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित, अप्रशिक्षित शिक्षकों के आत्मविश्वास के प्राप्तांको का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा "t" मूल्य का ज्ञात किया गया, जिसका विवरण निम्नांकित तालिका में दर्शाया गया है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

तालिका–4.10

चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के आत्मविश्वास

क्र.	विवरण	संख्या	परीक्षण से प्राप्त परिणाम		
			M	SD	t Value
1.	प्रशिक्षित शिक्षक	63	13.874	9.658	3.265
2.	अप्रशिक्षित शिक्षक	57	19.843	10.622	
df = 118		P < 0.01			सार्थक अंतर है

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों का मध्यमान 13.874 व प्रमाणिक विचलन 9.658 प्राप्त हुआ, जबकि अप्रशिक्षित शिक्षकों का मध्यमान 19.843 व प्रमाणिक विचलन 10.622 प्राप्त (मापनी के मैन्युअल के आधार पर कम मध्यमान अधिक आत्मविश्वास का प्रतीक है तथा अधिक मध्यमान कम आत्मविश्वास का सूचक है) हुआ तथा दोनों समूहों के मध्य का "t" मूल्य 3.265 प्राप्त हुआ, जो स्वतंत्रता अंश 118 पर 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर है। अतः यह परिकल्पना 0.01 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत हुई।

आरेख 4.10 – प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के आत्मविश्वास के मध्यमान का आरेखिय प्रदर्शन।

आरेख 4.10
माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के मध्यमान

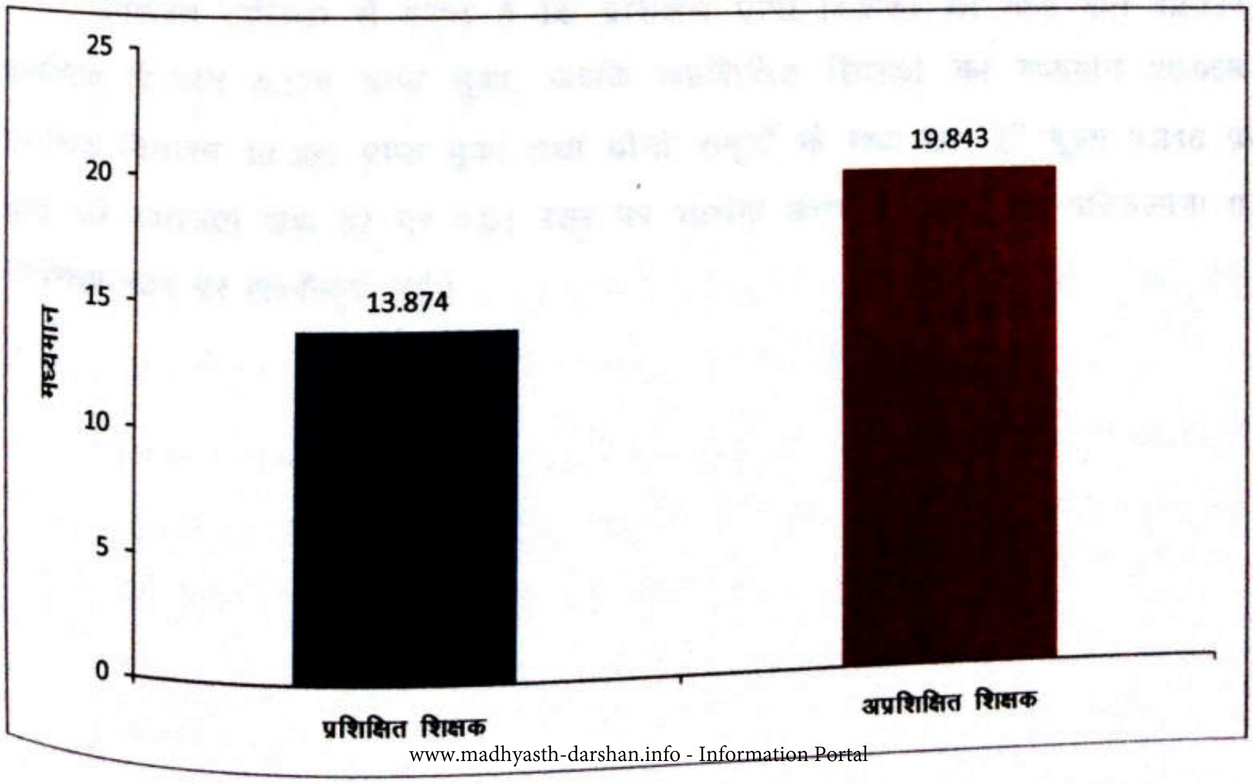

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

उपरोक्त आरेख से यह परिलक्षित होता है कि पुरूष शिक्षकों में इससे प्रभावित होने वाले शिक्षकों की संख्या अप्रभावित पुरूष शिक्षकों की संख्या से अधिक है जिसका प्रभाव इनके मध्यमान में स्पष्ट अन्तर के रूप में दिखाई देता है।

$H_{0\text{-}1.10}$

उच्चतर माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

उपरोक्त परिकल्पना की पुष्टि के लिए चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित, अप्रशिक्षित शिक्षकों के आत्मविश्वास के प्राप्तांको का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा "t" मूल्य का ज्ञात किया गया, जिसका विवरण निम्नांकित तालिका में दर्शाया गया है।

तालिका–4.11

चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित उच्चतर माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के आत्मविश्वास

क्र.	विवरण	संख्या	परीक्षण से प्राप्त परिणाम		
			M	SD	t Value
1.	प्रशिक्षित शिक्षक	35	12.714	8.378	3.316
2.	अप्रशिक्षित शिक्षक	24	20.958	10.305	
df = 57		P < 0.01			सार्थक अंतर है

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों का मध्य मान 12.714 व प्रमाणिक विचलन 8.378 प्राप्त हुआ, जबकि अप्रशिक्षित शिक्षकों का मध्यमान 20.958 व प्रमाणिक विचलन 10.305 प्राप्त हुआ तथा दोनों समूहों के मध्य का "t" मूल्य 3.316 प्राप्त हुआ, जो स्वतंत्रता अंश 57 पर 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर है। अतः यह परिकल्पना 0.01 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत हुई।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

आरेख 4.11 – प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के आत्मविश्वास के मध्यमान का आरेखिय प्रदर्शन।

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

आरेख–4.11

उच्चतर माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के मध्यमान

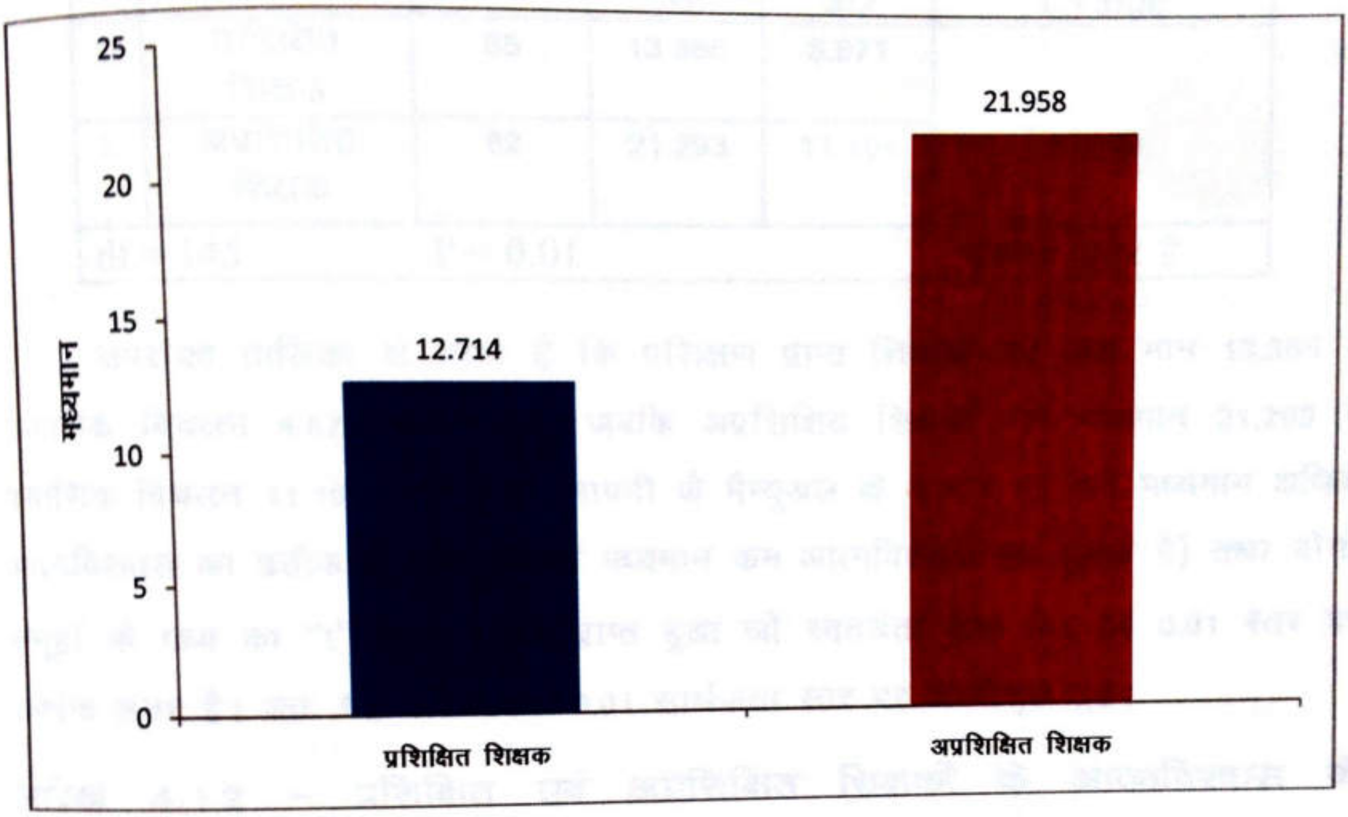

उपरोक्त आरेख से यह परिलक्षित होता है कि पुरूष शिक्षकों में इससे प्रभावित होने वाले शिक्षकों की संख्या अप्रभावित पुरूष शिक्षकों की संख्या से अधिक है जिसका प्रभाव इनके मध्यमान में स्पष्ट अन्तर के रूप में दिखाई देता है।

शैक्षिक अनुभव के आधार पर शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव।

$H_{0\text{-}1\text{-}11}$

10 वर्ष से कम शैक्षिक अनुभवी शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

उपरोक्त परिकल्पना की पुष्टि के लिए चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित, अप्रशिक्षित शिक्षकों के आत्मविश्वास के प्राप्तांको का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा "t" मूल्य का ज्ञात किया गया, जिसका विवरण निम्नांकित तालिका में दर्शाया गया है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

तालिका–4.12

छ.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित 10 वर्ष से कम शैक्षिक अनुभवी शिक्षकों के आत्मविश्वास

क्र.	विवरण	संख्या	परीक्षण से प्राप्त परिणाम		
			M	SD	t Value
1.	प्रशिक्षित शिक्षक	65	13.385	8.871	4.649
2.	अप्रशिक्षित शिक्षक	82	21.293	11.104	
df = 145		P < 0.01			सार्थक अंतर है

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों का मध्य मान 13.385 व प्रमाणिक विचलन 8.871 प्राप्त हुआ, जबकि अप्रशिक्षित शिक्षकों का मध्यमान 21.293 व प्रमाणिक विचलन 11.104 प्राप्त हुआ (मापनी के मैन्युअल के आधार पर कम मध्यमान अधिक आत्मविश्वास का प्रतीक है तथा अधिक मध्यमान कम आत्मविश्वास का सूचक है) तथा दोनों समूहों के मध्य का "t" मूल्य 4.649 प्राप्त हुआ जो स्वतंत्रता अंश 145 पर 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर है। अतः यह परिकल्पना 0.01 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत हुई।

आरेख 4.12 – प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के आत्मविश्वास के मध्यमान का आरेखीय प्रदर्शन।

आरेख 4.12
10 वर्ष से कम शैक्षिक अनुभवी शिक्षकों के मध्यमान

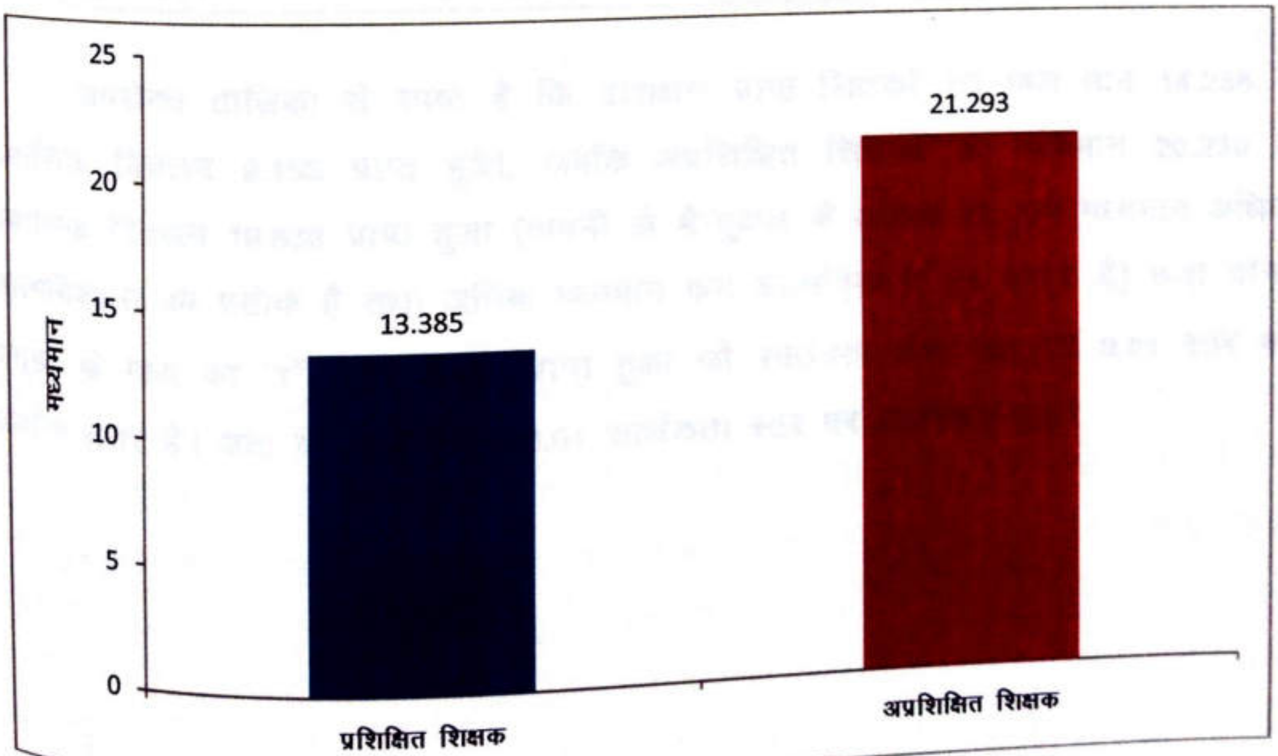

उपरोक्त आरेख से यह परिलक्षित होता है कि पुरूष शिक्षकों में इससे प्रभावित होने वाले शिक्षकों की संख्या अप्रभावित पुरूष शिक्षकों की संख्या से अधिक है जिसका प्रभाव इनके मध्यमान में स्पष्ट अन्तर के रूप में दिखाई देता है।

$H_{0\text{-}1.12}$

15 वर्ष से अधिक शैक्षिक अनुभवी शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

उपरोक्त परिकल्पना की पुष्टि के लिए चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित, अप्रशिक्षित शिक्षकों के आत्मविश्वास के प्राप्तांको का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा "t" मूल्य का ज्ञात किया गया, जिसका विवरण निम्नांकित तालिका में दर्शाया गया है।

तालिका - 4.13

चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित 15 वर्ष से अधिक शैक्षिक अनुभवी शिक्षकों के आत्मविश्वास

क्र.	विवरण	संख्या	परीक्षण से प्राप्त परिणाम		
			Mean	Sd	t Value
1.	प्रशिक्षित शिक्षक	85	14.236	9.155	3.687
2.	अप्रशिक्षित शिक्षक	68	20.236	10.838	
df = 151		P < 0.01			सार्थक अंतर है

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों का मध्य मान 14.236 व प्रमाणिक विचलन 9.155 प्राप्त हुआ, जबकि अप्रशिक्षित शिक्षकों का मध्यमान 20.236 व प्रमाणिक विचलन 10.838 प्राप्त हुआ (मापनी के मैन्युअल के आधार पर कम मध्यमान अधिक आत्मविश्वास का प्रतीक है तथा अधिक मध्यमान कम आत्मविश्वास का सूचक है) तथा दोनों समूहों के मध्य का "t" मूल्य 3.687 प्राप्त हुआ जो स्वतंत्रता अंश 151 पर 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर है। अतः यह परिकल्पना 0.01 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत हुई।

आरेख 4.13 – प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के आत्मविश्वास के मध्यमान का आरेखिय प्रदर्शन।

आरेख–4.13

15 वर्ष से अधिक शैक्षिक अनुभवी शिक्षकों के मध्यमान

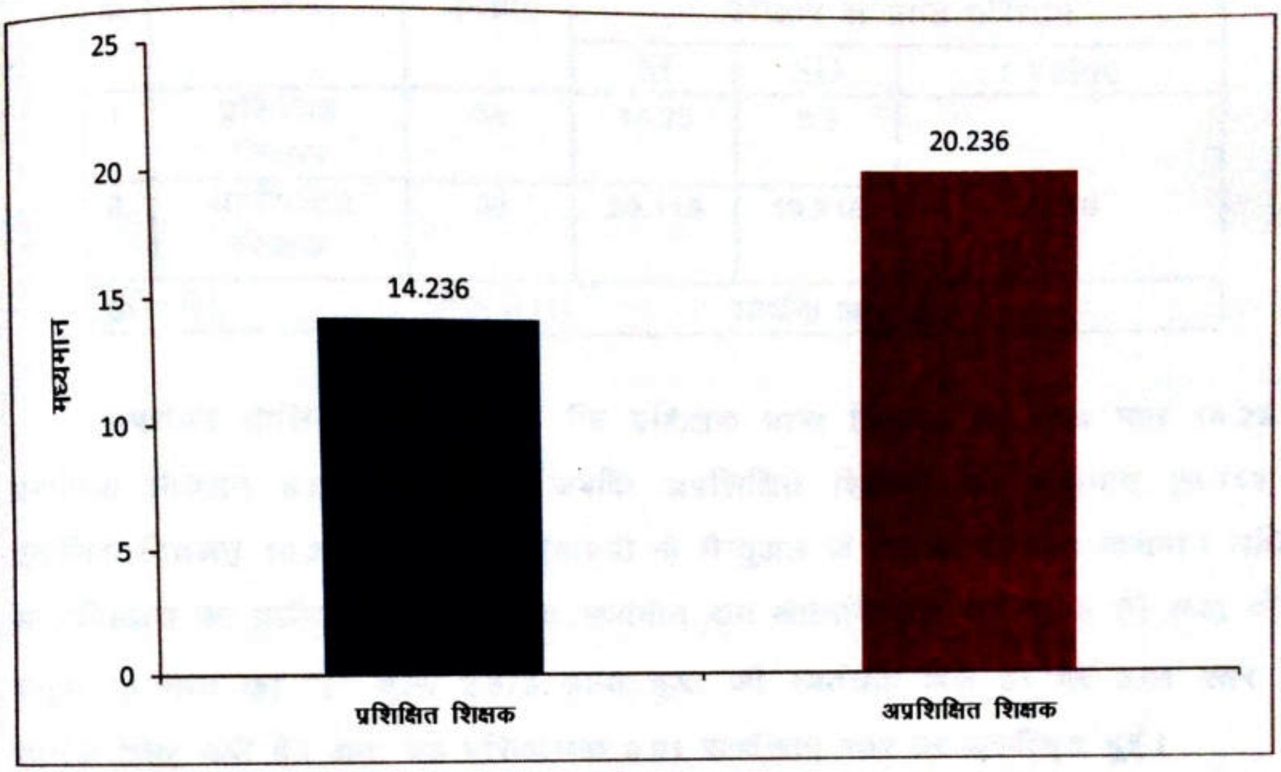

उपरोक्त आरेख से यह परिलक्षित होता है कि पुरूष शिक्षकों में इससे प्रभावित होने वाले शिक्षकों की संख्या अप्रभावित पुरूष शिक्षकों की संख्या से अधिक है जिसका प्रभाव इनके मध्यमान में स्पष्ट अन्तर के रूप में दिखाई देता है।

शैक्षणिक योग्यता के आधार पर शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव।

$H_{0-1.13}$

स्नातक स्तर शिक्षित शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

उपरोक्त परिकल्पना की पुष्टि के लिए चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित, अप्रशिक्षित शिक्षकों के आत्मविश्वास के प्राप्तांको का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा “t” मूल्य का ज्ञात किया गया, जिसका विवरण निम्नांकित तालिका में दर्शाया गया है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

तालिका – 4.14

ग्रे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित स्नातक स्तर शिक्षित शिक्षकों के आत्मविश्वास

क्र.	विवरण	संख्या	परीक्षण से प्राप्त परिणाम		
			M	SD	t Value
1.	प्रशिक्षित शिक्षक	34	14.25	9.8	2.678
2.	अप्रशिक्षित शिक्षक	59	20.119	10.218	
df = 91		P > 0.01	सार्थक अन्त है		

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों का मध्य मान 14.25 व प्रमाणिक विचलन 9.8 प्राप्त हुआ, जबकि अप्रशिक्षित शिक्षकों का मध्यमान 20.119 व प्रमाणिक विचलन 10.218 प्राप्त हुआ (मापनी के मैन्युअल के आधार पर कम मध्यमान अधिक आत्मविश्वास का प्रतीक है तथा अधिक मध्यमान कम आत्मविश्वास का सूचक है) तथा दोनों समूहों के मध्य का "t" मूल्य 2.678 प्राप्त हुआ जो स्वतंत्रता अंश 91 पर 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर नहीं है। अतः यह परिकल्पना 0.01 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत हुई।

आरेख 4.14 – प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के आत्मविश्वास के मध्यमान का रेखीय प्रदर्शन।

आरेख 4.14

स्नातक स्तर शिक्षित शिक्षकों के मध्यमान

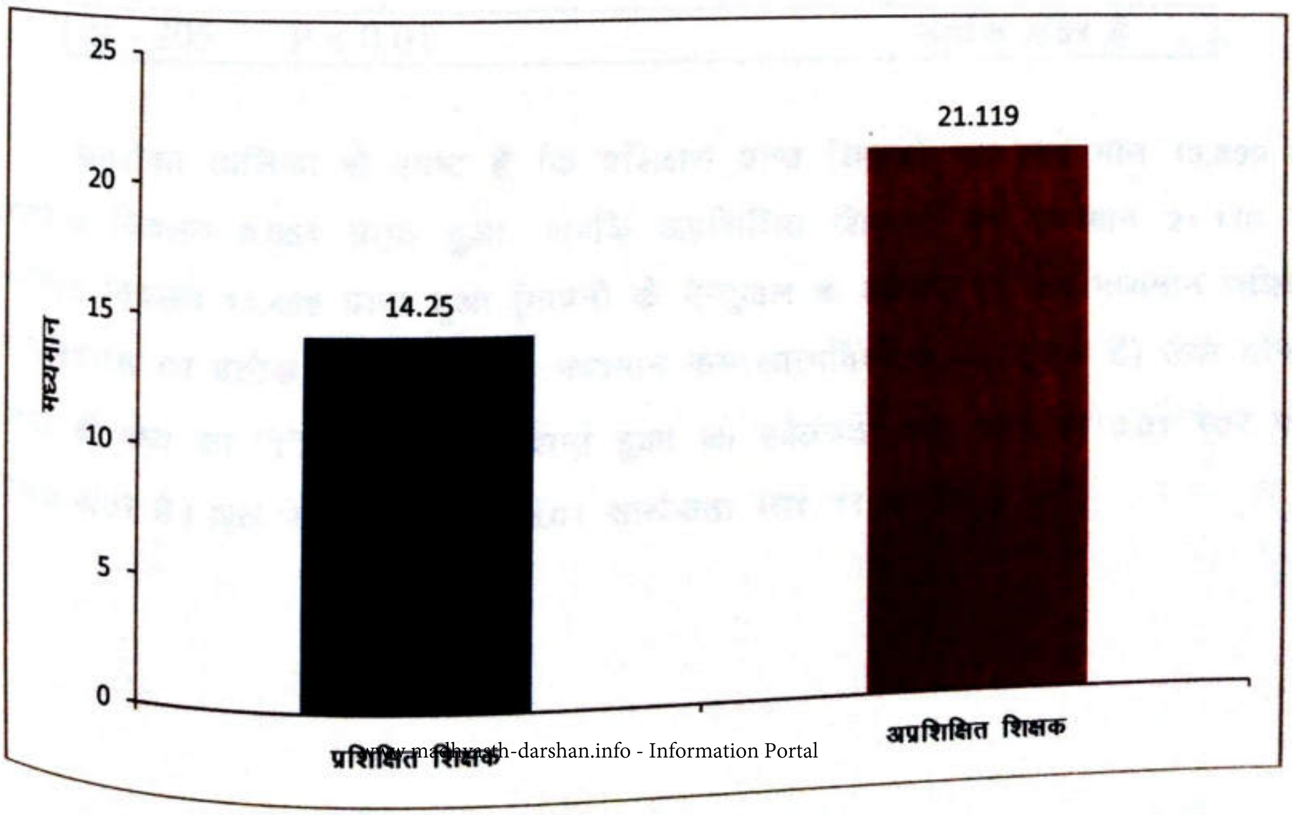

उपरोक्त आरेख से यह परिलक्षित होता है। कि पुरूष शिक्षकों में इससे प्रभावित होने वाले शिक्षकों की संख्या अप्रभावित पुरूष शिक्षकों की संख्या से अधिक है जिसका प्रभाव इनके मध्यमान में स्पष्ट अन्तर के रूप में दिखाई देता है।

$H_{0-1.14}$

स्नातकोत्तर स्तर शिक्षित शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

उपरोक्त परिकल्पना की पुष्टि के लिए चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित, अप्रशिक्षित शिक्षकों के आत्मविश्वास के प्राप्तांको का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा "t" मूल्य का ज्ञात किया गया, जिसका विवरण निम्नांकित तालिका में दर्शाया गया है।

तालिका – 4.15

चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित स्नातकोत्तर स्तर शिक्षित शिक्षकों के आत्मविश्वास

क्र.	विवरण	संख्या	परीक्षण से प्राप्त परिणाम		
			M	SD	t Value
1.	प्रशिक्षित शिक्षक	116	13.609	9.054	5.306
2.	अप्रशिक्षित शिक्षक	91	21.176	11.468	
df = 205 P < 0.01					सार्थक अंतर है

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों का मध्य मान 13.609 व प्रमाणिक विचलन 9.054 प्राप्त हुआ, जबकि अप्रशिक्षित शिक्षकों का मध्यमान 21.176 व प्रमाणिक विचलन 11.468 प्राप्त हुआ (मापनी के मैन्युअल के आधार पर कम मध्यमान अधिक आत्मविश्वास का प्रतीक है तथा अधिक मध्यमान कम आत्मविश्वास का सूचक है) तथा दोनों समूहों के मध्य का "t" मूल्य 5.306 प्राप्त हुआ जो स्वतंत्रता अंश 205 पर 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर है। अतः यह परिकल्पना 0.01 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत हुई।

आरेख 4.15 – प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के आत्मविश्वास के मध्यमान का आरेखिय प्रदर्शन।

आरेख 4.15

स्नातकोत्तर स्तर शिक्षित शिक्षकों के मध्यमान

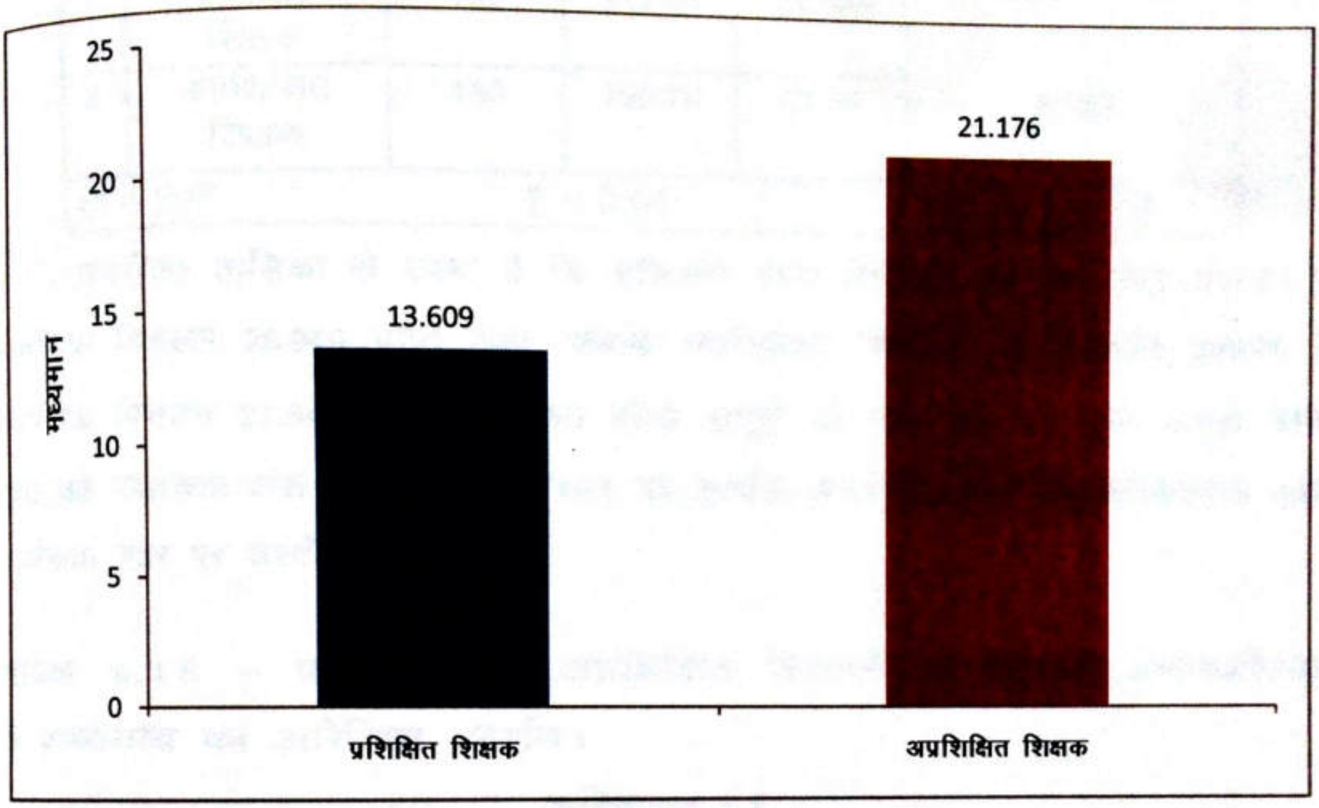

उपरोक्त आरेख से यह परिलक्षित होता है कि पुरूष शिक्षकों में इससे प्रभावित होने वाले शिक्षकों की संख्या अप्रभावित पुरूष शिक्षकों की संख्या से अधिक है जिसका प्रभाव इनके मध्यमान में स्पष्ट अन्तर के रूप में दिखाई देता है।

4.3 द्वितीय भाग–शिक्षक प्रभावशीलता पर चे.वि.मू.शि. का प्रभावः–

H_{0-2}

शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर लिंग, आयु, जाति, शालेय स्तर, शैक्षिक अनुभव, शैक्षणिक यौग्यता में चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

उपरोक्त परिकल्पना की पुष्टि के लिए चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित, अप्रशिक्षित शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता के प्राप्तांको का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा "t" मूल्य का ज्ञात किया गया, जिसका विवरण निम्नांकित तालिका में दर्शाया गया है।

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

तालिका–4.16

व्ही.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता

क्र.	विवरण	संख्या	परीक्षण से प्राप्त परिणाम		
			M	SD	t Value
1.	प्रशिक्षित शिक्षक	150	311.61	26.049	4.159
2.	अप्रशिक्षित शिक्षक	150	298.70	27.54	
df = 298		P < 0.01			सार्थक अंतर है

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों का मध्य मान 311.61 व प्रमाणिक विचलन 26.049 प्राप्त हुआ, जबकि अप्रशिक्षित शिक्षकों का मध्यमान 298.70 व प्रमाणिक विचलन 27.54 प्राप्त हुआ तथा दोनों समूहों के मध्य का "t" मूल्य 4.159 प्राप्त हुआ जो स्वतंत्रता अंश 298 पर 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर है। अतः यह परिकल्पना 0.01 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत हुई।

आरेख 4.16 – प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता के मध्यमान का आरेखिय प्रदर्शन।

आरेख–4.16

शिक्षकों के मध्यमान

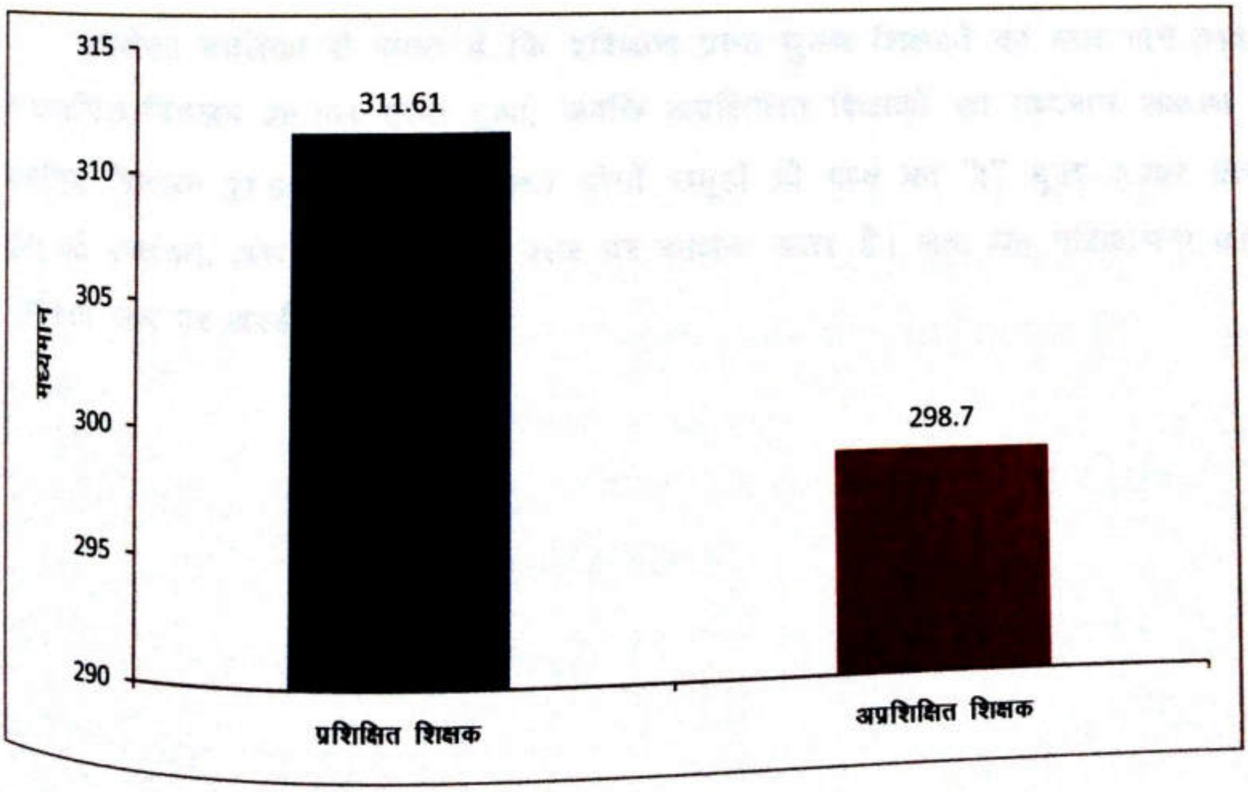

उपरोक्त आरेख से यह परिलक्षित होता है कि प्रशिक्षित एवं अशिक्षित शिक्षकों के मध्यमानों में स्पष्ट अन्तर है जो कि स्वतंत्रचर के सार्थक प्रभाव का संकेत है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

लिंग के आधार पर शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव।

$H_{0\text{-}2.1}$

पुरूष शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

उपरोक्त परिकल्पना की पुष्टि के लिए चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित, अप्रशिक्षित शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता के प्राप्तांको का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा "t" मूल्य का ज्ञात किया गया, जिसका विवरण निम्नांकित तालिका में दर्शाया गया है।

तालिका क्रमांक–4.17

चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित पुरूष शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता

क्र.	विवरण	संख्या	परीक्षण से प्राप्त परिणाम		
			M	SD	t Value
1.	प्रशिक्षित पुरूष शिक्षक	130	312.5	25.104	3.797
2.	अप्रशिक्षित पुरूष शिक्षक	115	299.66	27.61	
df = 243		P < 0.01		सार्थक अंतर है	

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि प्रशिक्षण प्राप्त पुरूष शिक्षकों का मध्य मान 313.5 व प्रमाणिक विचलन 25.104 प्राप्त हुआ, जबकि अप्रशिक्षित शिक्षकों का मध्यमान 299.66 व प्रमाणिक विचलन 27.61 प्राप्त हुआ तथा दोनों समूहों के मध्य का "t" मूल्य 3.797 प्राप्त हुआ जो स्वतंत्रता अंश 243 पर 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर है। अतः यह परिकल्पना 0.01 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत हुई।

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

आरेख 4.17 – प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता के मध्यमान का आरेखिय प्रदर्शन।

आरेख–4.17

पुरूष शिक्षकों के मध्यमान

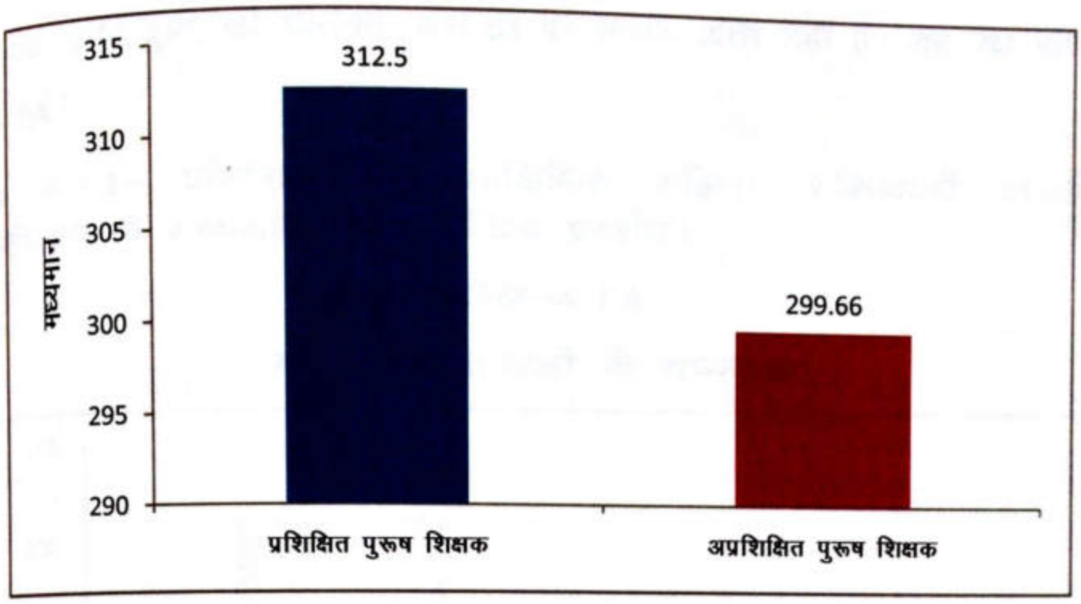

उपरोक्त आरेख से यह परिलक्षित होता है कि प्रशिक्षित एवं अशिक्षित शिक्षकों के मध्यमानों में स्पष्ट अन्तर है जो कि स्वतंत्रचर के सार्थक प्रभाव का संकेत है।

$H_{0-2.2}$

महिला शिक्षकाओं के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

उपरोक्त परिकल्पना की पुष्टि के लिए चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महिला शिक्षिकाओं के शिक्षक प्रभावशीलता के प्राप्तांको का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा "t" मूल्य का ज्ञात किया गया, जिसका विवरण निम्नांकित तालिका में दर्शाया गया है।

तालिका – 4.18

चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महिला शिक्षकाओं के शिक्षक प्रभावशीलता

क्र.	विवरण	संख्या	परीक्षण से प्राप्त परिणाम		
			M	SD	t Value
1.	प्रशिक्षित महिला शिक्षिका	20	306.50	31.442	1.393
2.	अप्रशिक्षित महिला शिक्षिका	35	295.91	23.41	

df = 53 $P > 0.05$ सार्थक अंतर नहीं है

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि प्रशिक्षण प्राप्त महिला शिक्षकाओं का मध्य मान 306.50 व प्रमाणिक विचलन 31.442 प्राप्त हुआ, जबकि अप्रशिक्षित महिला शिक्षकाओं का मध्यमान 295.91 व प्रमाणिक विचलन 23.41 प्राप्त हुआ तथा दोनों समूहों के मध्य का "t" मूल्य 1.393 प्राप्त हुआ, जो स्वतंत्रता अंश 53 पर सार्थक अंतर नहीं है। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत हुई।

आरेख 4.18– प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महिला शिक्षिकाओं के शिक्षक प्रभावशीलता के मध्यमान का आरेखिय प्रदर्शन।

आरेख–4.18

महिला शिक्षिकाओं के मध्यमान

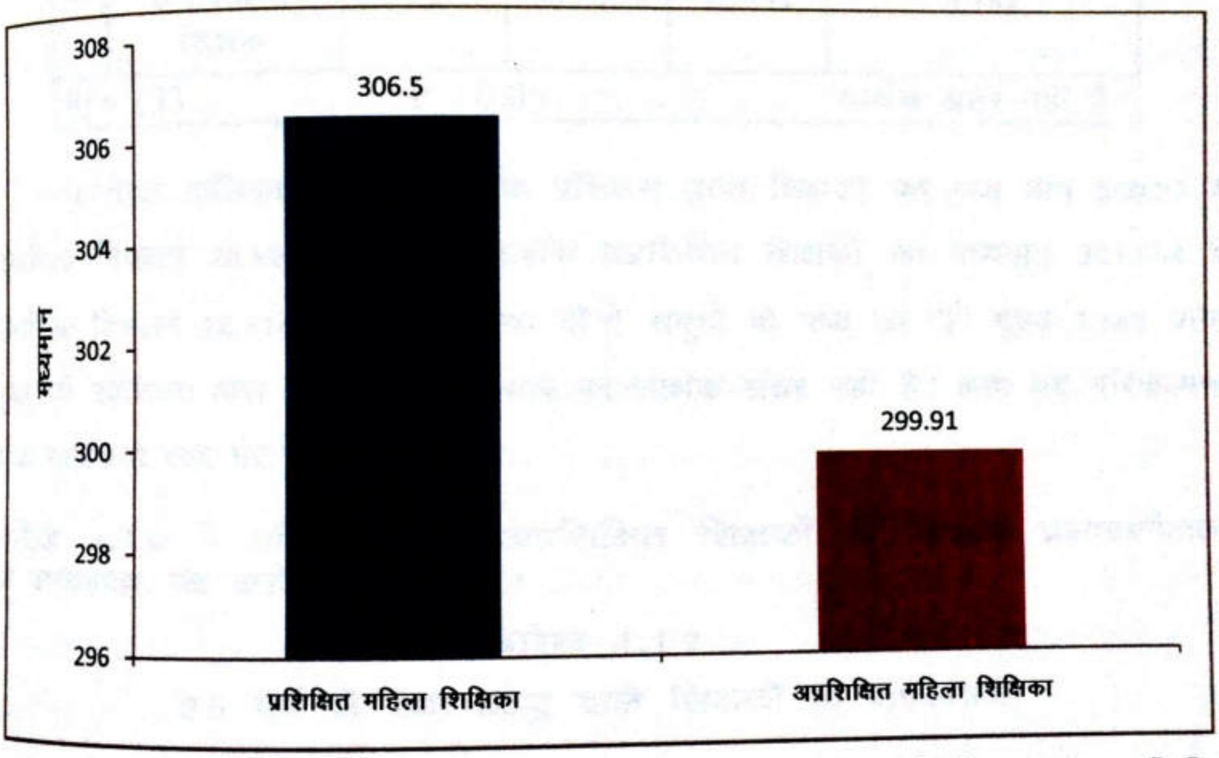

उपरोक्त आरेखिय चित्र से यह परिलक्षित होता है कि प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित महिला शिक्षका के मध्यमानों में स्पष्ट अन्तर है लेकिन स्वतंत्र चर के प्रभाव की पुष्टि नहीं होती।

आयु के आधार पर शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव।

$H_{0\text{-}2.3}$

35 वर्ष से कम आयु वाले शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

उपरोक्त परिकल्पना की पुष्टि के लिए चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित, अप्रशिक्षित शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता के प्राप्तांको का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा "t" मूल्य का ज्ञात किया गया, जिसका विवरण निम्नांकित तालिका में दर्शाया गया है।

तालिका–4.19

चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित 35 वर्ष से कम आयु वाले शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता

क्र.	विवरण	संख्या	परीक्षण से प्राप्त परिणाम		
			M	SD	t Value
1.	प्रशिक्षित शिक्षक	61	309.37	28.55	1.742
2.	अप्रशिक्षित शिक्षक	74	301.054	26.414	
df = 133		P > 0.05		सार्थक अंतर नहीं है	

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों का मध्य मान 309.37 व प्रमाणिक विचलन 28.55 प्राप्त हुआ, जबकि अप्रशिक्षित शिक्षकों का मध्यमान 301.054 व प्रमाणिक विचलन 26.414 प्राप्त हुआ तथा दोनों समूहों के मध्य का "t" मूल्य 1.742 प्राप्त हुआ जो स्वतंत्रता अंश 133 पर 0.05 स्तर पर सार्थक अंतर नहीं है। अतः यह परिकल्पना 0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत हुई।

आरेख 4.19 – प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता के मध्यमान का आरेखिय प्रदर्शन।

आरेख–4.19

35 वर्ष से कम आयु वाले शिक्षकों के मध्यमान

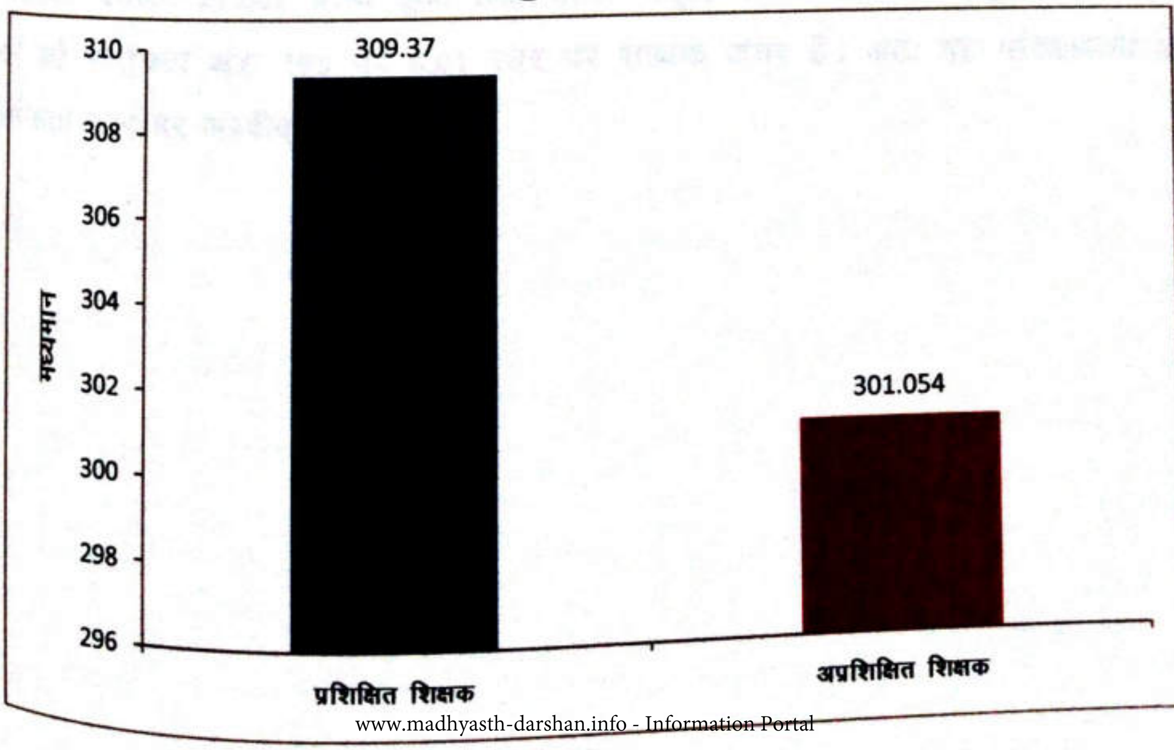

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

उपरोक्त आरेख से यह परिलक्षित होता है कि प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के मध्यमानों में स्पष्ट अन्तर है लेकिन स्वतंत्र चर के प्रभाव की पुष्टि नहीं होती।

$H_{0\text{-}2.3}$

40 वर्ष से अधिक आयु वाले शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

उपरोक्त परिकल्पना की पुष्टि के लिए चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित, अप्रशिक्षित शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता के प्राप्तांको का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा "t" मूल्य का ज्ञात किया गया, जिसका विवरण निम्नांकित तालिका में दर्शाया गया है।

तालिका–4.20

चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित 40 वर्ष से अधिक आयु वाले शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता

क्र.	विवरण	संख्या	परीक्षण से प्राप्त परिणाम		
			M	SD	t Value
1.	प्रशिक्षित शिक्षक	89	313.73	23.576	4.237
2.	अप्रशिक्षित शिक्षक	76	296.75	27.587	
df = 163		P < 0.01			सार्थक अंतर है

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों का मध्य मान 313.73 व प्रमाणिक विचलन 23.576 प्राप्त हुआ, जबकि अप्रशिक्षित शिक्षकों का मध्यमान 296.75 व प्रमाणिक विचलन 27.587 प्राप्त हुआ तथा दोनों समूहों के मध्य का "t" मूल्य 4.237 प्राप्त हुआ जो स्वतंत्रता अंश 163 पर 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर है। अतः यह परिकल्पना 0.01 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत हुई।

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

आरेख 4.20 – प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षि शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता के मध्यमानो का आरेखिय प्रदर्शन।

आरेख–4.20
40 वर्ष से अधिक आयु वाले शिक्षकों के मध्यमान

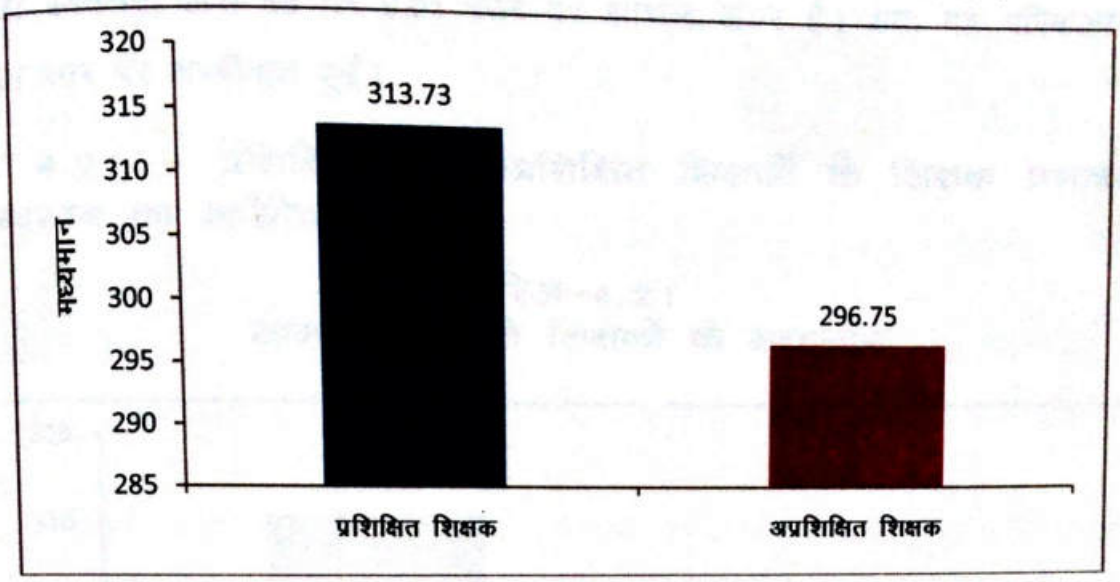

उपरोक्त आरेख से यह परिलक्षित होता है कि प्रशिक्षित एवं अशिक्षित शिक्षकों के मध्यमानों में स्पष्ट अन्तर है जो कि स्वतंत्रचर के सार्थक प्रभाव का संकेत है।

जाति के आधार पर शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव।

$H_{0\text{-}2.5}$

सामान्य वर्ग के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

उपरोक्त परिकल्पना की पुष्टि के लिए चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित, अप्रशिक्षित शिक्षकों के शिक्षक प्रभाशीलता के प्राप्तांको का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा "t" मूल्य का ज्ञात किया गया, जिसका विवरण निम्नांकित तालिका में दर्शाया गया है।

तालिका – 4.21
चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित सामान्य वर्ग के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता

क्र.	विवरण	संख्या	परीक्षण से प्राप्त परिणाम		
			M	SD	t Value
1.	प्रशिक्षित शिक्षक	27	310.593	20.336	2.737
2.	अप्रशिक्षित शिक्षक	28	292.571	27.008	
df = 53		P < 0.01			सार्थक अंतर है

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों का मध्य मान 310.593 व प्रमाणिक विचलन 20.336 प्राप्त हुआ, जबकि अप्रशिक्षित शिक्षकों का मध्यमान 292.571 व प्रमाणिक विचलन 27.008 प्राप्त हुआ तथा दोनों समूहों के मध्य का "t" मूल्य 2.737 प्राप्त हुआ, जो स्वतंत्रता अंश 53 पर 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर है। अतः यह परिकल्पना 0.01 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत हुई।

आरेख 4.21 – प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता के मध्यमान का आरेखिय प्रदर्शन।

आरेख–4.21
सामान्य वर्ग के शिक्षकों के मध्यमान

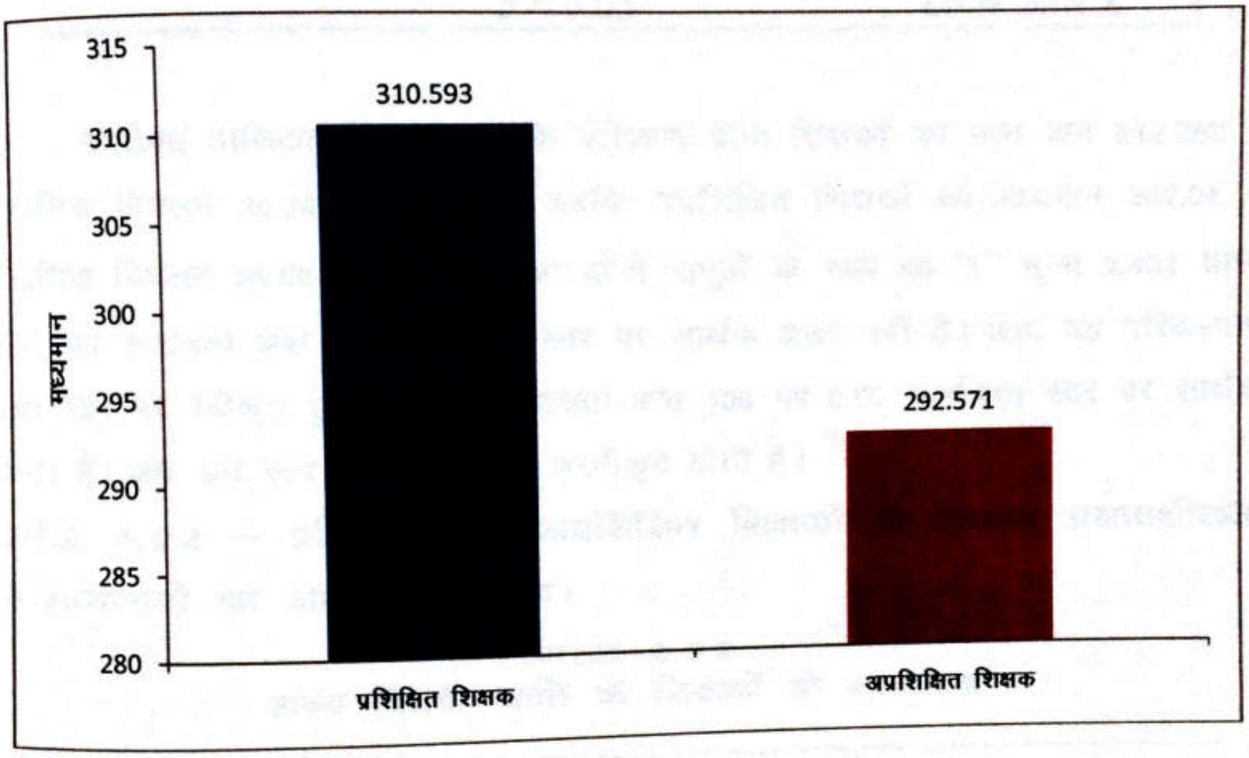

उपरोक्त आरेख से यह परिलक्षित होता है कि प्रशिक्षित एवं अशिक्षित शिक्षकों के मध्यमानों में स्पष्ट अन्तर है जो कि स्वतंत्रचर के सार्थक प्रभाव का संकेत है।

$H_{0-2.6}$

अन्य पिछड़ी जाति के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

उपरोक्त परिकल्पना की पुष्टि के लिए चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित, अप्रशिक्षित शिक्षकों के शिक्षक प्रमाशीलता के प्राप्तांको का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा "t" मूल्य का ज्ञात किया गया, जिसका विवरण निम्नांकित तालिका में दर्शाया गया है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

तालिका क्रमांक–4.22

छ.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित अन्य पिछड़ी जाति के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता

क्र.	विवरण	संख्या	परीक्षण से प्राप्त परिणाम		
			M	SD	t Value
1.	प्रशिक्षित शिक्षक	87	312.252	26.249	2.431
2.	अप्रशिक्षित शिक्षक	70	302.04	25.68	
df = 155		P > 0.01 P < 0.05		सार्थक अंतर नहीं है सार्थक अंतर है	

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों का मध्य मान 312.252 व प्रमाणिक विचलन 26.249 प्राप्त हुआ, जबकि अप्रशिक्षित शिक्षकों का मध्यमान 302.04 व प्रमाणिक विचलन 25.68 प्राप्त हुआ तथा दोनों समूहों के मध्य का "t" मूल्य 2.431 प्राप्त हुआ, जो स्वतंत्रता अंश 155 पर 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर नहीं है। अतः यह परिकल्पना 0.01 स्तर पर स्वीकृत हुई। लेकिन स्वंतत्रता अंश 155 पर 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक अन्तर है। अतः इस स्तर पर परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

आरेख 4.22 – प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता के मध्यमानों का आरेखिय प्रदर्शन।

आरेख–4.22
अन्य पिछड़ी जाति के शिक्षकों के मध्यमान

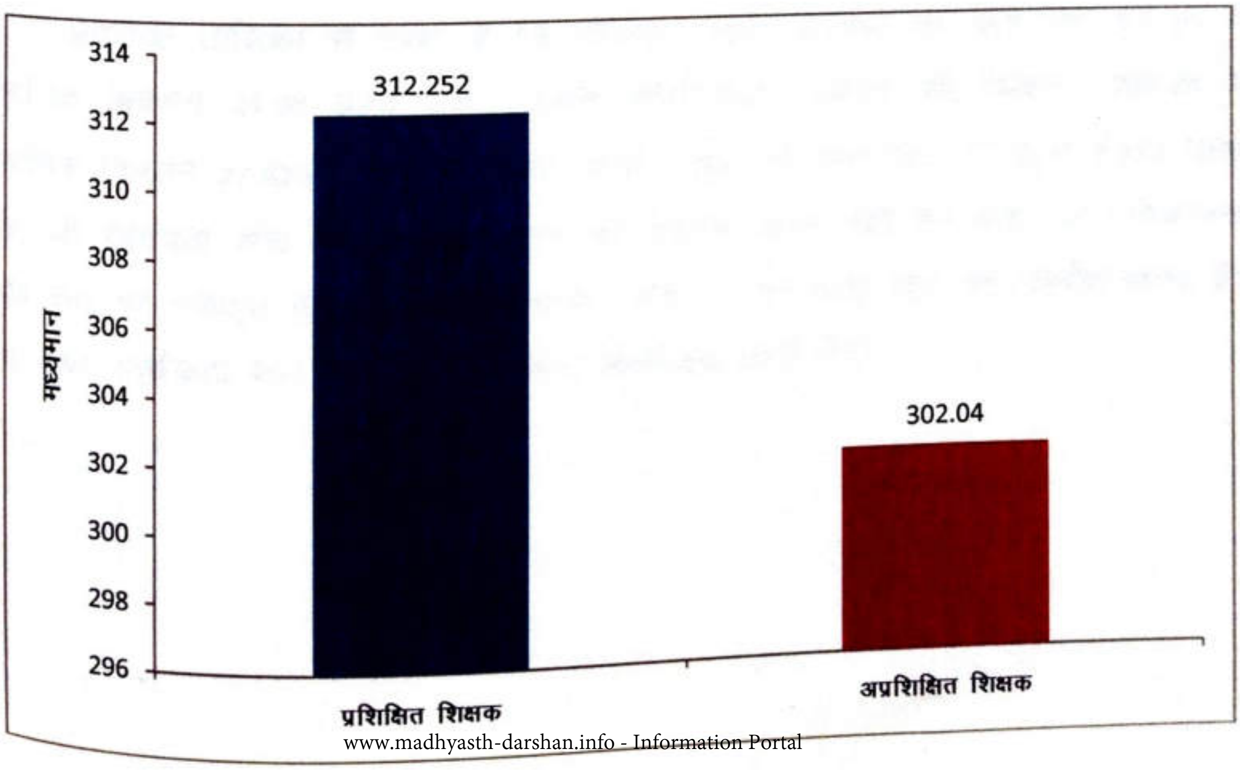

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

उपरोक्त आरेख से यह परिलक्षित होता है कि प्रशिक्षित एवं अशिक्षित शिक्षकों के मध्यमानों में स्पष्ट अन्तर है जो 0.05 स्तर पर स्वतंत्रचर के सार्थक प्रभाव का संकेत है।

$H_{0\text{-}2.7}$

अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

उपरोक्त परिकल्पना की पुष्टि के लिए चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित, अप्रशिक्षित शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता के प्राप्तांको का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा "t" मूल्य का ज्ञात किया गया, जिसका विवरण निम्नांकित तालिका में दर्शाया गया है।

तालिका – 4.23

चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता

क्र.	विवरण	संख्या	परीक्षण से प्राप्त परिणाम		
			M	SD	t Value
1.	प्रशिक्षित शिक्षक	36	311.91	24.96	2.173
2.	अप्रशिक्षित शिक्षक	52	299.25	27.625	
df = 86			$P > 0.01$ $P < 0.05$		सार्थक अंतर नहीं है सार्थक अंतर है

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों का मध्य मान 311.91 व प्रमाणिक विचलन 24.96 प्राप्त हुआ, जबकि अप्रशिक्षित शिक्षकों का मध्यमान 299.25 व प्रमाणिक विचलन 27.625 प्राप्त हुआ तथा दोनों समूहों के मध्य का "t" मूल्य 2.173 प्राप्त हुआ जो स्वतंत्रता अंश 86 पर 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर नहीं है। अतः यह परिकल्पना 0.01 स्तर पर स्वीकृत हुई। (लेकिन स्वतंत्रता अंश 86 पर 0.05 स्तर पर सार्थक अंतर है। अतः 0.05 सार्थकता स्तर पर यह परिकल्पना अस्वीकृत होती है।)

आरेख 4.23– प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता के मध्यमानों का आरेखिय प्रदर्शन।

आरेख–4.23

अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के शिक्षकों के मध्यमान

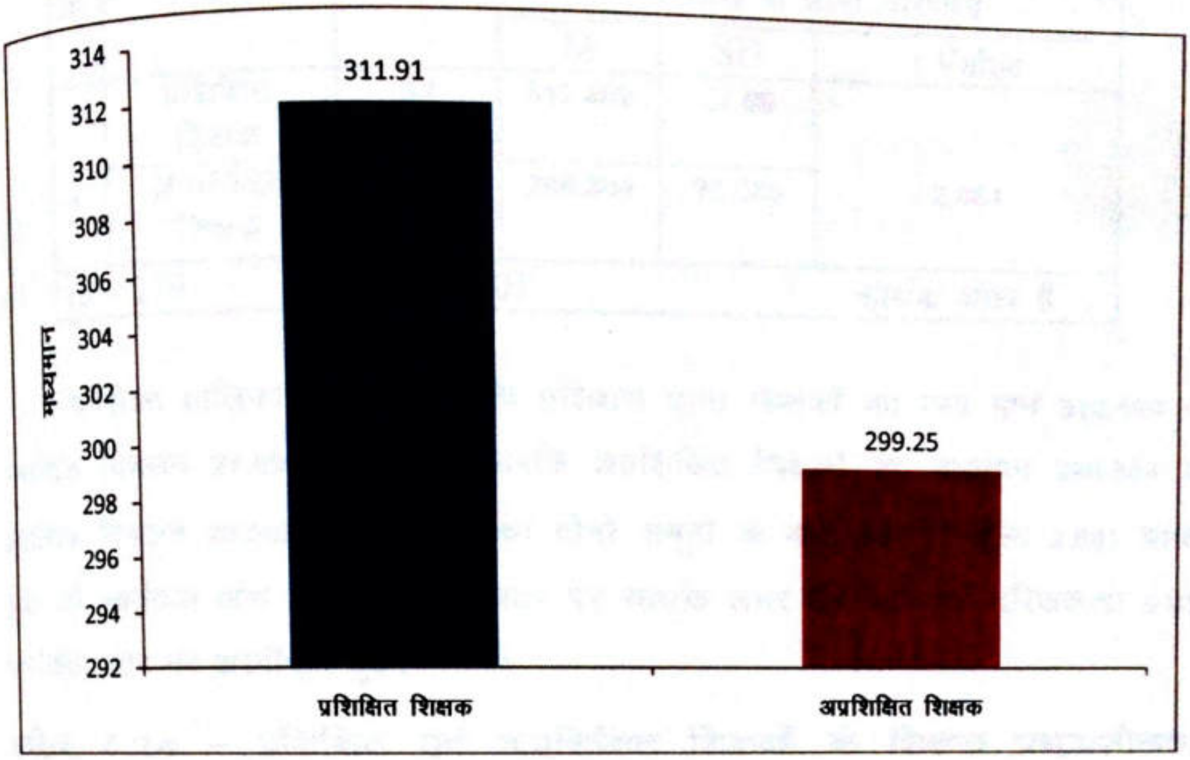

उपरोक्त आरेख से यह परिलक्षित होता है कि प्रशिक्षित एवं अशिक्षित शिक्षकों के मध्यमानों में स्पष्ट अन्तर है जो 0.05 स्तर पर स्वतंत्रचर के सार्थक प्रभाव का संकेत है।

शालेय स्तर के आधार पर शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

$H_{0\text{-}2.8}$

प्राथामिक स्तर के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

उपरोक्त परिकल्पना की पुष्टि के लिए चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित, अप्रशिक्षित शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता के प्राप्तांको का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा "t" मूल्य को ज्ञात किया गया, जिसका विवरण निम्नांकित तालिका में दर्शाया गया है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

तालिका–4.24

चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता

क्र.	विवरण	संख्या	परीक्षण से प्राप्त परिणाम		
			M	SD	t Value
1.	प्रशिक्षित शिक्षक	52	312.499	27.69	2.861
2.	अप्रशिक्षित शिक्षक	69	298.304	26.085	
df = 119		P < 0.01			सार्थक अंतर है

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों का मध्य मान 312.499 व प्रमाणिक विचलन 27.69 प्राप्त हुआ, जबकि अप्रशिक्षित शिक्षकों का मध्यमान 298.304 व प्रमाणिक विचलन 26.085 प्राप्त हुआ तथा दोनों समूहों के मध्य का "t" मूल्य 2.861 प्राप्त हुआ जो स्वतंत्रता अंश 119 पर 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर है। अतः यह परिकल्पना 0.01 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत हुई।

आरेख 4.24 – प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता के मध्यमान का आरेखिय प्रदर्शन।

आरेख–4.24

प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के मध्यमान

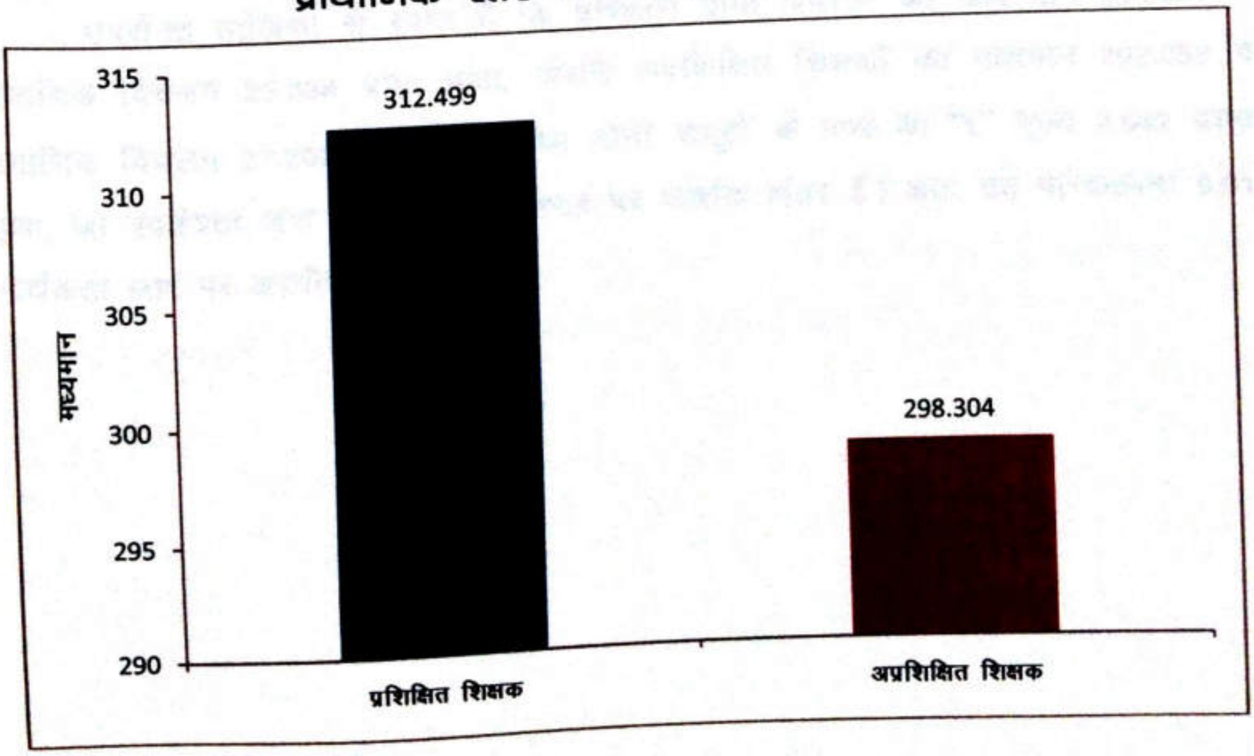

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

उपरोक्त आरेख से यह परिलक्षित होता है कि प्रशिक्षित एवं अशिक्षित शिक्षकों के मध्यमानों में स्पष्ट अन्तर है जो कि स्वतंत्रचर के सार्थक प्रभाव का संकेत है।

$H_{0\text{-}2.9}$

माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

उपरोक्त परिकल्पना की पुष्टि के लिए चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित, अप्रशिक्षित शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता के प्राप्तांको का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा "t" मूल्य को ज्ञात किया गया, जिसका विवरण निम्नांकित तालिका में दर्शाया गया है।

तालिका–4.25

चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता

क्र.	विवरण	संख्या	परीक्षण से प्राप्त परिणाम		
			M	SD	t Value
1.	प्रशिक्षित शिक्षक	63	314.857	25.038	2.662
2.	अप्रशिक्षित शिक्षक	57	302.052	27.202	
df = 118		P < 0.01			सार्थक अंतर है

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों का मध्य मान 314.857 व प्रमाणिक विचलन 25.038 प्राप्त हुआ, जबकि अप्रशिक्षित शिक्षकों का मध्यमान 302.052 व प्रमाणिक विचलन 27.202 प्राप्त हुआ तथा दोनों समूहों के मध्य का "t" मूल्य 2.662 प्राप्त हुआ, जो स्वतंत्रता अंश 118 पर 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर है। अतः यह परिकल्पना 0.01 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत हुई।

आरेख 4.25 – प्रशिक्षण एवं अप्रशिक्षण शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता के मधमान का आरेखिय प्रदर्शन।

आरेख – 4.25

माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के मध्यमान

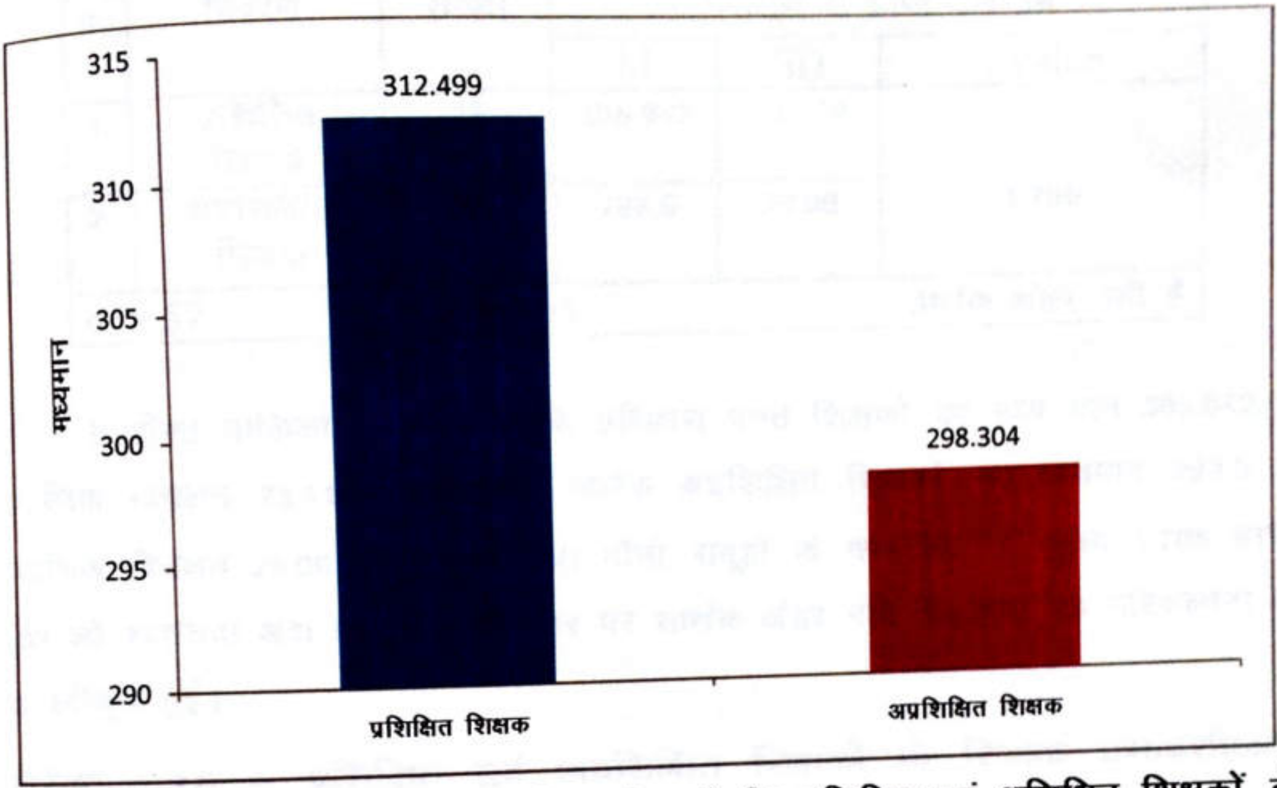

उपरोक्त आरेख से यह परिलक्षित होता है कि प्रशिक्षित एवं अशिक्षित शिक्षकों के मध्यमानों में स्पष्ट अन्तर है जो कि स्वतंत्रचर के सार्थक प्रभाव का संकेत है।

$H_{0\text{-}2.10}$

उच्चतर माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

उपरोक्त परिकल्पना की पुष्टि के लिए चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित, अप्रशिक्षित शिक्षकों के शिक्षक प्रभाशीलता के प्राप्तांको का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा "t" मूल्य को ज्ञात किया गया, जिसका विवरण निम्नांकित तालिका में दर्शाया गया है।

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

तालिका–4.26

वे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित उच्चतर माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता

क्र.	विवरण	संख्या	परीक्षण से प्राप्त परिणाम		
			M	SD	t Value
1.	प्रशिक्षित शिक्षक	35	305.942	23.118	1.795
2.	अप्रशिक्षित शिक्षक	24	293.5	29.06	
df = 57		P > 0.05			सार्थक अंतर नहीं है

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों का मध्य मान 305.942 व प्रमाणिक विचलन 23.118 प्राप्त हुआ, जबकि अप्रशिक्षित शिक्षकों का मध्यमान 293.5 व प्रमाणिक विचलन 29.06 प्राप्त हुआ तथा दोनों समूहों के मध्य का "t" मूल्य 1.795 प्राप्त हुआ जो स्वतंत्रता अंश 57 पर 0.05 स्तर पर सार्थक अंतर नहीं है। अतः यह परिकल्पना 0.05 स्वीकृत हुई।

आरेख 4.26 – प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता के मध्यमान का आरेखिय प्रदर्शन।

आरेख–4.26

उच्चतर माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के मध्यमान

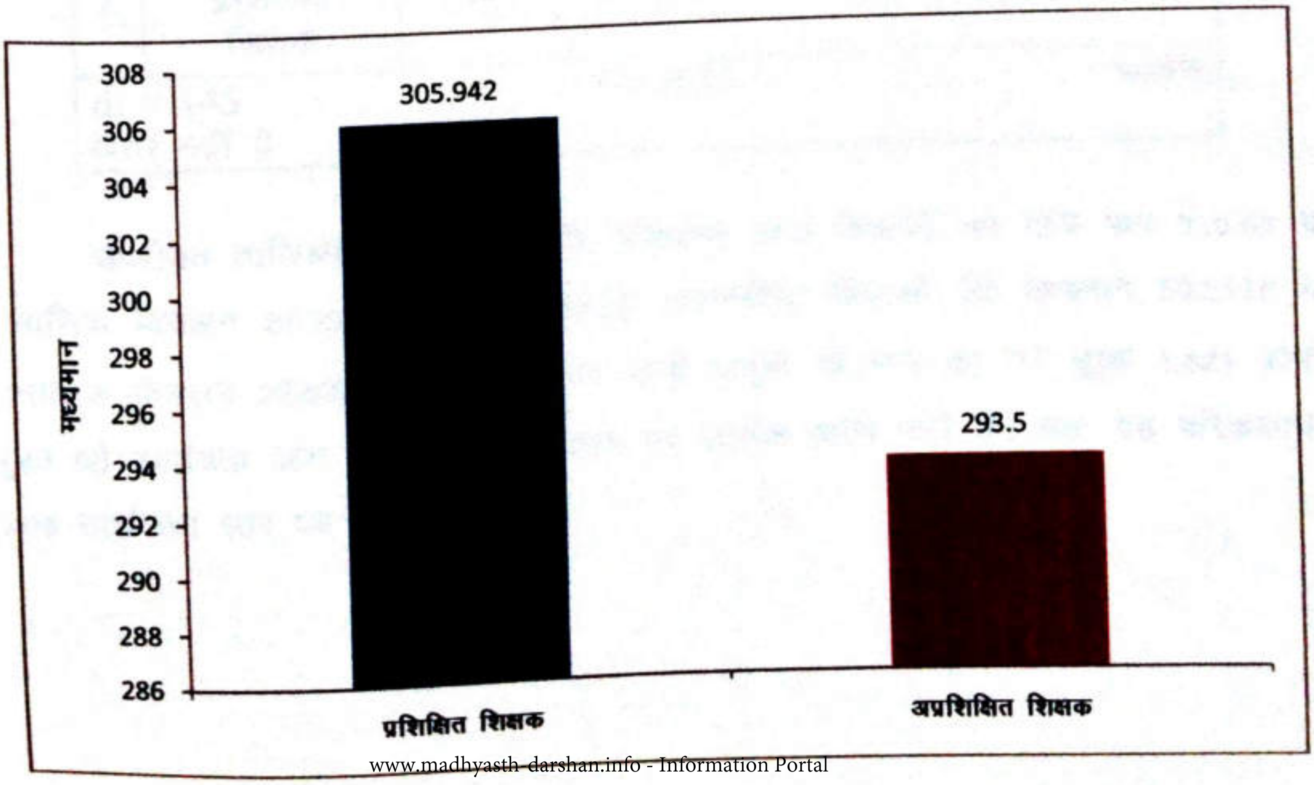

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

उपरोक्त आरेखिय चित्र से यह परिलक्षित होता है कि प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के मध्यमानों में स्पष्ट अन्तर है लेकिन स्वतंत्र चर के प्रभाव की पुष्टि नहीं होती।

शैक्षिक अनुभव के आधार पर शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव की जाँच एवं पुष्टि है।

$H_{0-2.11}$

10 वर्ष से कम शैक्षिक अनुभवी शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

उपरोक्त परिकल्पना की पुष्टि के लिए चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित, अप्रशिक्षित शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता के प्राप्तांको का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा "t" मूल्य को ज्ञात किया गया, जिसका विवरण निम्नांकित तालिका में दर्शाया गया है।

तालिका – 4.27

चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित 10 वर्ष से कम शैक्षिक अनुभवी शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता

क्र.	विवरण	संख्या	परीक्षण से प्राप्त परिणाम		
			M	SD	t Value
1.	प्रशिक्षित शिक्षक	65	310.60	27.73	1.821
2.	प्रशिक्षित शिक्षक	82	302.378	26.403	
df = 145			P > 0.05		सार्थक अंतर नहीं है

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों का मध्य मान 310.60 व प्रमाणिक विचलन 27.73 प्राप्त हुआ, जबकि अप्रशिक्षित शिक्षकों का मध्यमान 302.378 व प्रमाणिक विचलन 26.403 प्राप्त हुआ तथा दोनों समूहों के मध्य का "t" मूल्य 1.821 प्राप्त हुआ जो स्वतंत्रता अंश 145 पर 0.05 स्तर पर सार्थक अंतर नहीं है। अतः यह परिकल्पना 0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत हुई।

आरेख 4.27 – प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता के मध्यमान का आरेखिय प्रदर्शन।

आरेख–4.27

10 वर्ष से कम शैक्षिक अनुभवी शिक्षकों के मध्यमान

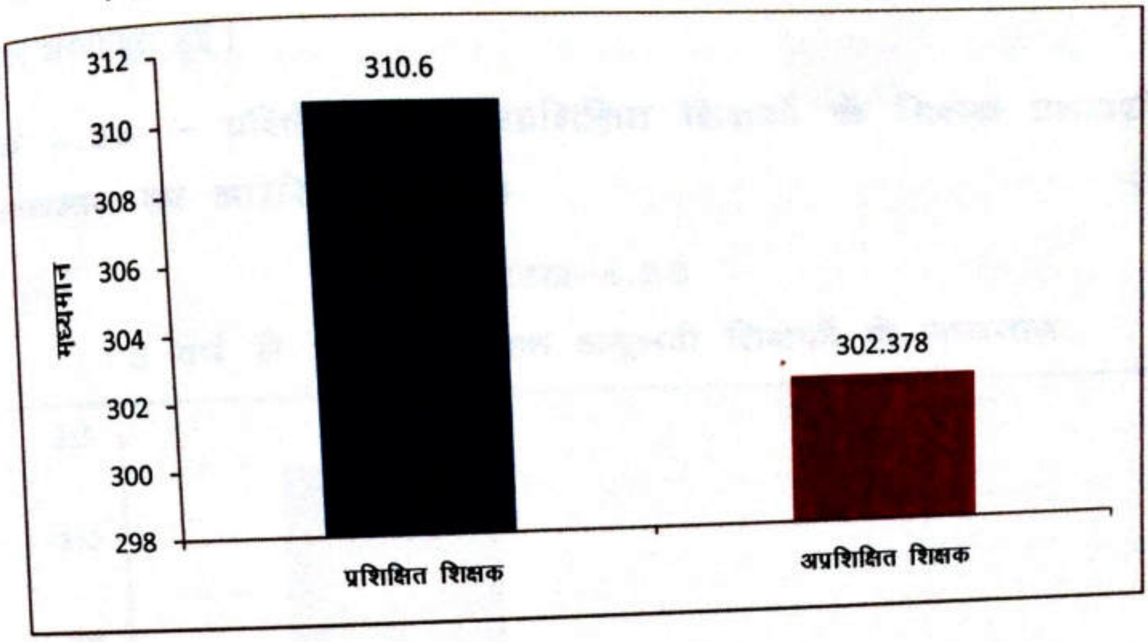

उपरोक्त आरेख से यह परिलक्षित होता है कि प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के मध्यमानों में स्पष्ट अन्तर है लेकिन स्वतंत्र चर के प्रभाव की पुष्टि नहीं होती।

$H_{0-2.12}$

15 वर्ष से अधिक शैक्षिक अनुभवी शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

उपरोक्त परिकल्पना की पुष्टि के लिए चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित, अप्रशिक्षित शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता के प्राप्तांको का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा "t" मूल्य को ज्ञात किया गया, जिसका विवरण निम्नांकित तालिका में दर्शाया गया है।

तालिका क्रमांक – 4.28

चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित 15 वर्ष से अधिक शैक्षिक अनुभवी शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता

क्र.	विवरण	संख्या	परीक्षण से प्राप्त परिणाम		
			M	SD	t Value
1.	प्रशिक्षित शिक्षक	85	313.305	24.092	4.418
2.	अप्रशिक्षित शिक्षक	68	294.83	25.698	
df = 151		P < 0.01			सार्थक अंतर है

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों का मध्य मान 313.305 व प्रमाणिक विचलन 24.092 प्राप्त हुआ, जबकि अप्रशिक्षित शिक्षकों का मध्यमान 294.83 व प्रमाणिक विचलन 25.698 प्राप्त हुआ तथा दोनों समूहों के मध्य का "t" मूल्य 4.418 प्राप्त हुआ जो स्वतंत्रता अंश 151 पर 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर है। अतः यह परिकल्पना 0.01 स्तर पर अस्वीकृत हुई।

आरेख 4.28 – प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता के मध्यमान का आरेखिय प्रदर्शन।

आरेख–4.28

15 वर्ष से अधिक शैक्षिक अनुभवी शिक्षकों के मध्यमान

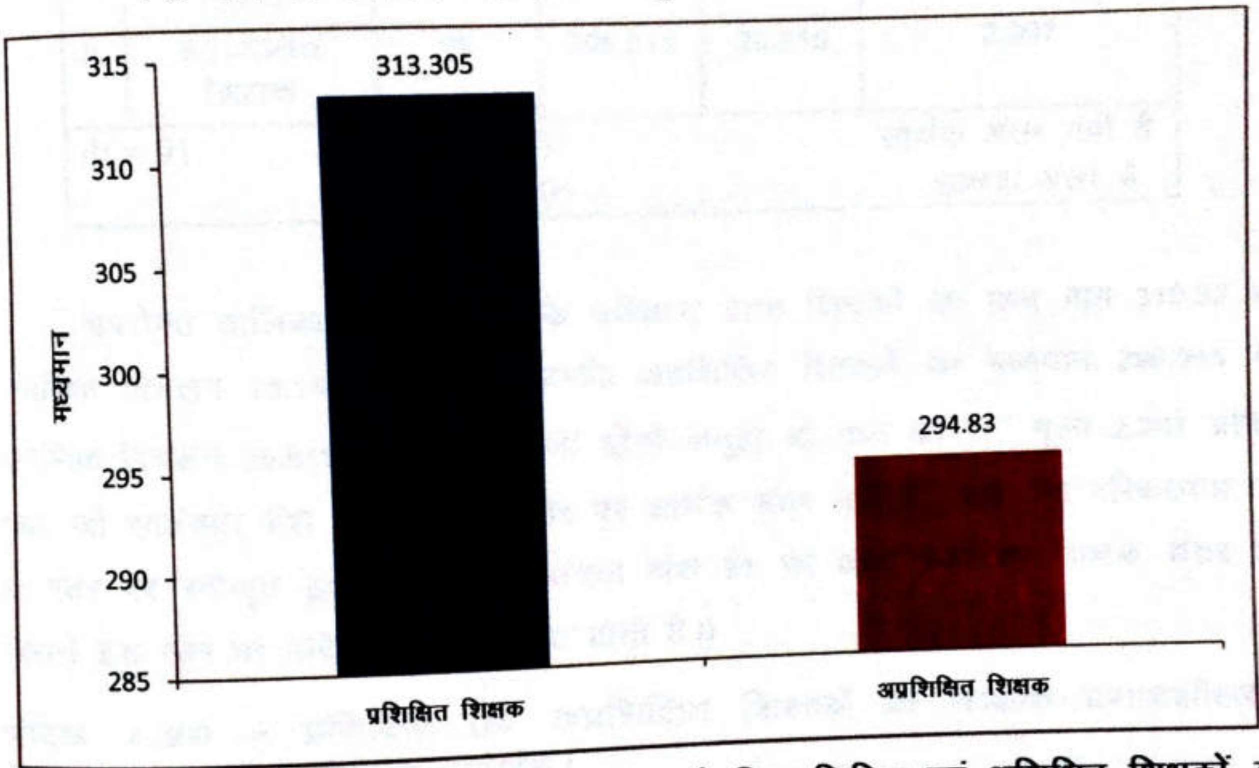

उपरोक्त आरेख से यह परिलक्षित होता है कि प्रशिक्षित एवं अशिक्षित शिक्षकों के मध्यमानों में स्पष्ट अन्तर है जो कि स्वतंत्रचर के सार्थक प्रभाव का संकेत है।

शैक्षणिक योग्यता के आधार पर शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव ।

$H_{0-2.13}$

स्नातक स्तर शिक्षित शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

उपरोक्त परिकल्पना की पुष्टि के लिए चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित, अप्रशिक्षित शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशील के प्राप्तांको का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा "t" मूल्य को ज्ञात किया गया, जिसका विवरण निम्नांकित तालिका में दर्शाया गया है।

तालिका – 4.29

चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित स्नातक स्तर शिक्षित शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता

क्र.	विवरण	संख्या	परीक्षण से प्राप्त परिणाम		
			M	SD	t Value
1.	प्रशिक्षित शिक्षक	34	310.32	28.16	2.307
2.	अप्रशिक्षित शिक्षक	59	296.915	25.816	
df = 91		P > 0.01 P < 0.05			सार्थक अंतर नहीं है सार्थक अंतर है

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों का मध्य मान 310.32 व प्रमाणिक विचलन 28.16 प्राप्त हुआ, जबकि अप्रशिक्षित शिक्षकों का मध्यमान 296.915 व प्रमाणिक विचलन 25.816 प्राप्त हुआ तथा दोनों समूहों के मध्य का "t" मूल्य 2.307 प्राप्त हुआ, जो स्वतंत्रता अंश 91 पर 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर नहीं है। अतः यह परिकल्पना 0. 01 स्तर पर स्वीकृत हुई। (लेकिन स्वतंत्रता अंश 91 पर 0.05 स्तर पर सार्थक अंतर है जिससे इस स्तर पर परिकल्पना अस्वीकृत होती है।)

आरेख 4.29 – प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता के मध्यमान का आरेखिय प्रदर्शन।

आरेख–4.29
स्नातक स्तर शिक्षित शिक्षकों के मध्यमान

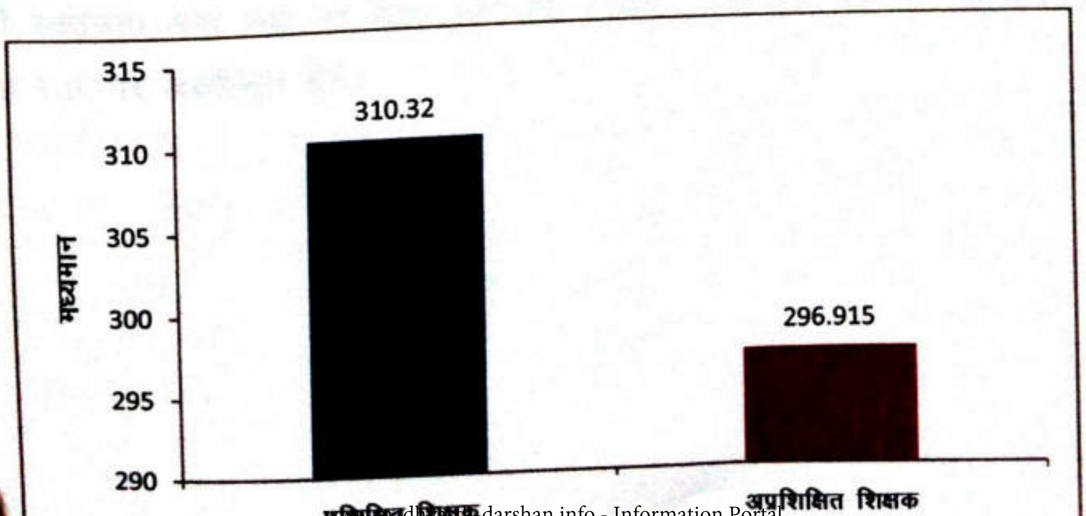

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

उपरोक्त आरेख से भी यह परिलक्षित होता है। कि प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के मध्यमानों में स्पष्ट अंतर है जो 0.05 स्तर पर स्वतंत्रचर के सार्थक प्रभाव का संकेत है।

$H_{0\text{-}2.14}$

स्नातकोत्तर स्तर शिक्षित शिक्षकों कें प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

उपरोक्त परिकल्पना की पुष्टि के लिए चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित, अप्रशिक्षित शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता के प्राप्तांको का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा "t" मूल्य को ज्ञात किया गया, जिसका विवरण निम्नांकित तालिका में दर्शाया गया है।

तालिका – 4.30

चे.वि.मू.शि. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित स्नातकोत्तर स्तर शिक्षित शिक्षकों कें प्रभावशीलता

क्र.	विवरण	संख्या	परीक्षण से प्राप्त परिणाम		
			M	SD	t Value
1.	प्रशिक्षित शिक्षक	116	312.103	25.302	3.415
2.	अप्रशिक्षित शिक्षक	91	299.42	27.72	
df = 205		P < 0.01		सार्थक अंतर है	

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों का मध्य मान 312.103 व प्रमाणिक विचलन 25.302 प्राप्त हुआ, जबकि अप्रशिक्षित शिक्षकों का मध्यमान 299.42 व प्रमाणिक विचलन 27.72 प्राप्त हुआ तथा दोनों समूहों के मध्य का "t" मूल्य 3.415 प्राप्त हुआ जो स्वतंत्रता अंश 205 पर 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर है। अतः यह परिकल्पना 0.01 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत हुई।

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

आरेख 4.30 – प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षि शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता के मध्यमान का आरेखिय प्रदर्शन।

आरेख–4.30

स्नातकोत्तर स्तर शिक्षित शिक्षकों के मध्यमान

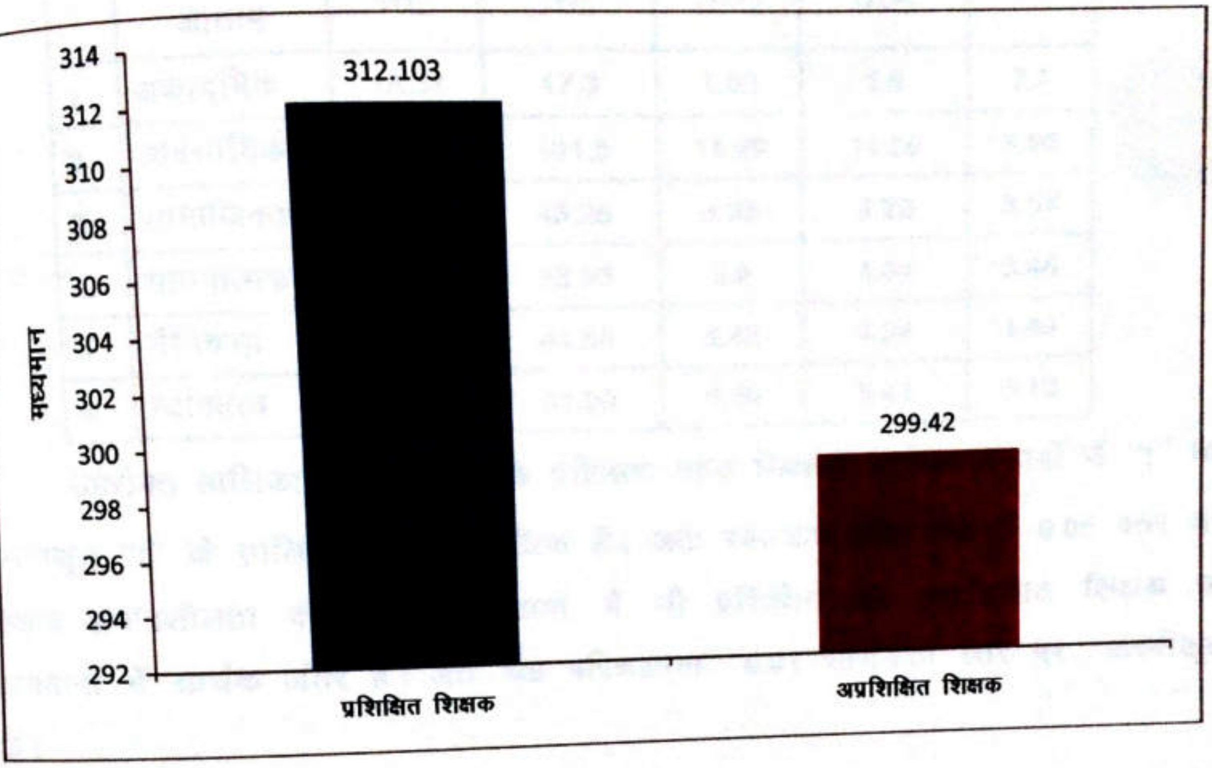

उपरोक्त आरेख से यह परिलक्षित होता है कि प्रशिक्षित एवं अशिक्षित शिक्षकों के मध्यमानों में स्पष्ट अन्तर है जो कि स्वतंत्रचर के सार्थक प्रभाव का संकेत है।

4.4 शिक्षक प्रभावशीलता के आयामों पर चे.वि.मू.शि. का प्रभावः–

$H_{0-2.15}$

शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता के विभिन्न आयामों पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

उपरोक्त परिकल्पना की पुष्टि के लिए चे.वि.मू.शि प्रशिक्षित, अप्रशिक्षित शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता के प्राप्तांको का मध्यमान प्रमाणित विचलन तथा "t" मूल्य को मूल्य ज्ञात किया गया, जिसका विवरण निम्नांकित तालिका में दर्शाया गया है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

तालिका–4.31

शिक्षक प्रभावशीलता के आयामो पर चे.वि.मू.शि. का प्रभाव

क्रं.	शिक्षका प्रभावशीलता के विभिन्न आयाम	प्रशिक्षित शिक्षक M$_1$	अप्रशिक्षित शिक्षक M$_2$	प्रशिक्षित शिक्षक SD$_1$	अप्रशिक्षित शिक्षक SD$_2$	"t" का मान
1.	अकादमिक	18.34	17.3	1.63	1.9	2.7
2.	व्यवसायिकता	106.7	101.5	11.29	11.59	3.96
3.	सामाजिक्ता	50.00	48.25	4.35	4.28	3.57
4.	भावनात्मक	35.53	33.93	3.8	4.04	3.46
5.	नैतिकता	46.66	44.66	3.42	4.34	4.44
6.	व्यक्तित्व	54.13	51.00	5.20	5.41	5.13

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों प्रत्येक आयामों में "t" का गणनाकृत "t" के तालिका मान से अधिक है। अतः स्वतंत्रता अंश 298 में 0.01 स्तर पर शिक्षक प्रभावशीलता के विभिन्न आयामों में भी प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षक के माध्यमानों में सार्थक अंतर है। अतः यह परिकल्पना 0.01 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत हुई।

प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के प्रभावशीलता के विभिन्न आयामों के मध्यमान का आरेखिय प्रदर्शन।

आरेख–4.31

आयामो का मध्यमान

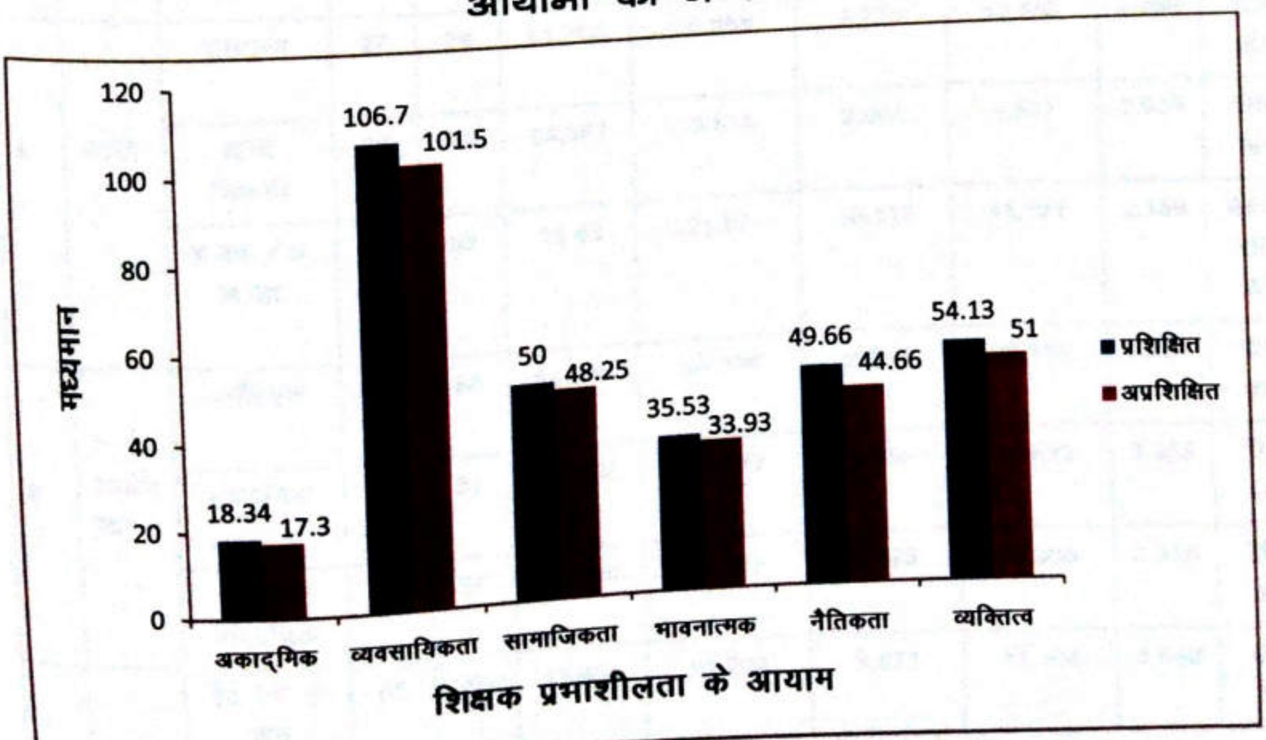

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

उपरोक्त आरेख से यह परिलक्षित होता है कि विभिन्न आयामों के माध्यमान में स्पष्ट अंतर दिखाई देता है जो कि चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रभाव की पुष्टि स्वतंत्रता अंश 258 के द्वारा हो रही है।

4.5 सार्वभौमिक निष्कर्ष एवं विवेचना :-

तालिका – 4.32

शिक्षक आत्मविश्वास पर चे.वि.मू.शि. का प्रभाव

क्रं.	शिक्षक विवरण		प्रशिक्षित	अप्रशिक्षित	प्रशिक्षित शिक्षक	अप्रशिक्षित शिक्षक	प्रशिक्षित शिक्षक	अप्रशिक्षित शिक्षक	"t" मान	निष्कर्ष
			N_1	N_2	M_1	M_2	SD_1	SD_2		
1.	कुल शिक्षक		150	150	13.9	20.887	9.269	10.849	5.982	सार्थक अंन्तर
2.	लिंग	पुरूष	130	115	13.808	20.087	8.944	11.220	4.848	सार्थक अंन्तर
		महिला	20	35	16.1	22.872	9.4	8.549	2.67	0.05 स्तर पर सार्थक अन्तर
3.	आयु	35 वर्ष से कम	61	74	14.951	21.46	9.468	10.285	3.764	सार्थक अंन्तर
		40 वर्ष से अधिक	89	76	13.574	20.289	8.918	11.787	4.134	सार्थक अंन्तर
4.	जाति	सामान्य	27	28	11.704	25.858	7.276	12.566	4.996	सार्थक अंन्तर
		अन्य पिछड़ी	87	70	14.357	18.858	8.964	9.537	2.939	सार्थक अंन्तर
		अ.जा./अ.ज.जा.	36	52	15.89	21.52	10.415	11.191	2.359	0.05 पर सार्थक अंन्तर
5.	शालेय स्तर	प्राथिमक	52	69	14.058	21.334	9.216	10.956	3.837	सार्थक अंन्तर
		माध्यमिक	63	57	13.874	19.843	9.658	10.622	3.265	सार्थक अंन्तर
		उच्चतर माध्यमिक	35	24	12.714	20.958	8.378	10.305	3.316	सार्थक अंन्तर
		10 वर्ष से कम	65	82	13.885	21.293	8.871	11.104	4.649	सार्थक अंन्तर

6.	शैक्षिक अनुभव	15 वर्ष से अधिक	85	68	14.236	20.236	9.155	10.838	3.687	सार्थक अंन्तर
		स्नातक	34	59	14.25	20.119	9.8	10.218	2.678	सार्थक अन्तर
7.	शैक्षणिक योग्यता	स्नातकोत्तर	116	91	13.609	21.176	9.054	11.468	5.306	सार्थक अंन्तर

प्रशिक्षित शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का सार्थक प्रभाव पाया गया। शिक्षकों के लिंग, आयु, जाति, शालास्तर, शैक्षिक अनुभव व शैक्षणिक योग्यता के आधार पर इनमें प्रशिक्षण का सार्थक प्रभाव पाया गया। लिंग के आधार पर पुरूष शिक्षकों में प्रशिक्षण का सार्थक प्रभाव पाया गया। महिला शिक्षकों में 0.05 स्तर पर प्रभाव सामान्य एवं अन्य पिछड़ी जाति के शिक्षकों में सार्थक प्रभाव देखने को मिला। अनुसूचित जाति एवं जनजाति के शिक्षकों में 0.05 स्तर पर प्रभाव में सार्थकता पायी गयी।

तालिका – 4.33

शिक्षक प्रभाशीलता पर चे.वि.मू.शि. का प्रभाव

क्रं.	शिक्षक विवरण		प्रशिक्षित N_1	अप्रशिक्षित N_2	प्रशिक्षित शिक्षक M_1	अप्रशिक्षित शिक्षक M_2	प्रशिक्षित शिक्षक SD_1	अप्रशिक्षित शिक्षक SD_2	"t" मान	निष्कर्ष
1.	कुल शिक्षक		150	150	311.61	298.7	26.049	27.54	4.159	सार्थक अन्तर
2.	लिंग	पुरुष	130	115	312.5	299.66	25.104	27.61	3.797	सार्थक अन्तर
		महिला	20	35	306.5	295.91	31.442	23.41	1.393	सार्थक अंन्तर नहीं
3.	आयु	35 वर्ष से कम	61	74	309.37	301.054	28.55	26.414	1.742	सार्थक अन्तर नहीं
		40 वर्ष से अधिक	89	76	313.73	296.75	23.576	27.587	4.237	सार्थक अन्तर
		सामान्य	27	28	310.593	292.571	20.336	27.008	2.737	सार्थक अन्तर

4.	जाति	अन्य पिछड़ी	87	70	312.252	302.04	26.249	25.68	2.431	0.05 पर सार्थक अन्तर
		अ.जा. /अ.ज. जा.	36	52	311.91	299.25	24.96	27.625	2.173	0.05 पर सार्थक अन्तर
5.	शालेय स्तर	प्राथिमक	52	69	312.499	298.304	27.69	26.085	2.861	सार्थक अन्तर
		माध्यमिक	63	57	314.857	302.052	25.038	27.202	2.662	सार्थक अन्तर
		उच्चतर माध्यमिक	35	24	305.942	293.5	23.118	29.06	1.795	सार्थक अन्तर नहीं
6.	शैक्षिक अनुभव	10 वर्ष से कम	65	82	310.6	302.378	27.73	26.403	1.821	सार्थक अन्तर नहीं
		15 वर्ष से अधिक	85	68	313.305	294.83	24.092	25.698	4.418	सार्थक अन्तर
7.	शैक्षणिक योग्यता	स्नातक	34	59	310.32	296.915	28.16	25.816	2.307	0.05 पर सार्थक अन्तर
		स्नातकोत्तर	116	91	312.103	299.42	25.302	27.72	3.415	सार्थक अन्तर

- शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चे.वि.मू.शि. के प्रशिक्षण का सार्थक प्रभाव पड़ता है।
- लिंग के आधार पर पुरूष शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चे.वि.मू.शि. के प्रशिक्षण का सार्थक प्रभाव पड़ता है। जबकि महिलाओं में सार्थक प्रभाव कम मात्रा में पाया गया।
- आयु के आधार पर 40 वर्ष से अधिक आयु वाले शिक्षकों पर सार्थक प्रभाव देखा गया है। जबकि 35 वर्ष से कम आयु वाले शिक्षकों में कम प्रभाव पाया गया।
- जाति के आधार पर सामान्य जाति के शिक्षकों पर इस प्रशिक्षिण का सार्थक प्रभाव पाया गया। जबकि अन्य पिछड़ी जाति तथा अनुसूचित एवं अनुसूचित जनजाति शिक्षकों पर कम प्रभाव पाया गया।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

- प्राथमिक स्तर एवं माध्यमिक स्तर में शिक्षकों के प्रशिक्षण का उनके शिक्षक प्रभावशीलता पर सार्थक प्रभाव पाया गया। जबकि उच्चतर माध्यमिक स्तर के शिक्षकों में प्रशिक्षण अप्रभावकारी पाया गया।

- शैक्षिक अनुभव के आधार पर शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर सार्थक प्रभाव पाया गया। अधिक अनुभवी शिक्षकों (15 वर्ष से अधिक अनुभवी शिक्षक) पर इनका सार्थक प्रभाव पाया गया। जबकि 10 वर्ष से कम अनुभवी शिक्षकों पर कम प्रभावकारी है।

- शैक्षणिक योग्यता स्तर पर स्नातकोत्तर योग्यताधारी शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर सार्थक प्रभाव पाया गया जबकि स्नातक स्तर तक के योग्यताधारी शिक्षकों में प्रभाव कम पाया गया।

तालिका –4.34

शिक्षक प्रभाशीलता के आयामों पर चे.वि.मू.शि. का प्रभाव

क्रं.	शिक्षका प्रभावशीलता के विभिन्न आयाम	प्रशिक्षित शिक्षक	अप्रशिक्षित शिक्षक	प्रशिक्षित शिक्षक	अप्रशिक्षित शिक्षक	"t" का मान
		M_1	M_2	SD_1	SD_2	
1.	अकाद्मिक	18.34	17.3	1.63	1.9	2.7
2.	व्यवसायिकता	106.7	101.5	11.29	11.59	3.96
3.	सामाजिक्ता	50.00	48.25	4.35	4.28	3.57
4.	भावनात्मक	35.53	33.93	3.8	4.04	3.46
5.	नैतिकता	46.66	44.66	3.42	4.34	4.44
6.	व्यक्तित्व	54.13	51.00	5.20	5.41	5.13

प्रशिक्षित शिक्षक N_1 =150, अप्रशिक्षित शिक्षक N_2 =150 df =298

शिक्षक प्रभावशीलता के विभिन्न आयामों यथा अकादमिक, व्यावसायिक, सामाजिक, भावनात्मक, नैतिक, व्यक्तित्व, पर सार्थक प्रभाव पाया गया।

—00—

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

अध्याय पंचम

सारांश

5.1 भूमिका

5.2 निष्कर्ष

5.3 शैक्षिक उपादेयता

5.4 भावी अध्ययन हेतु सुझाव

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

अध्याय–5

सारांश

5.1 भूमिका :–

शिक्षा परिवर्तन का सर्वोत्तम साधन है। शिक्षा का सरलतम अर्थ "सही समझना" ही है और यह सही समझ स्वयं से लेकर संपूर्ण अस्तित्व की व्यवस्था को समझना होता है अर्थात शिक्षा से आशय स्वयं को समझना एवं अस्तित्व को समझना ही है। स्वयं की समझ व अस्तित्व की समझ से ही सही मायने में मानवीयता पूर्ण आचरण की समझ का विकास होता है और यह समझ की प्रक्रिया मानव में, मानव से, मानव के लिये ही संभव है। यही मानव चेतना का विकास है। अन्यथा जीव चेतना तो पशु–पक्षी में भी विद्यमान है। इस जीव चेतना धारी पशु–पक्षी की आवश्यकता भय, भूख, मैथुन, निद्रा तक की पूर्ति तक ही सीमित होकर रह जाती है। परन्तु मानव इतने से सन्तुष्ट नहीं रहता। इससे भी इतर कुछ चाहिए। वही चाहत जीव चेतना से मानव चेतना की ओर अग्रसर होने के लिए मानव को सदियों–सदियों से प्रेरित कर रहा है। यह जीव चेतना, मानव चेतना की ओर कैसे उन्मुख हो ? यही अध्ययन वस्तु चेतना विकास मूल्य शिक्षा में अंतर्निहित एवं व्याख्यायित है।

वर्तमान शिक्षा प्रकिया में मूल्यों की शिक्षा दिए जाने की चर्चा होती है और नैतिक शिक्षा के नाम से दिया जाता है, पर अपेक्षित प्रभाव व्यक्ति, परिवार एवं समाज में दिखाई नहीं दे रहा है। यदि मूल्यों की शिक्षा के बदले मूल्यपरक शिक्षा प्रदान की जावे तो व्यापक बदलाव की संभावना बनती है। मूल्यपरक शिक्षा से आशय है कि मूल्य का अलग से विषय न होकर इन्हें सभी विषयों में मनोवैज्ञानिक ढंग से समाहित कर संस्कारित किया जाय। मूल्य शिक्षा के संबंध में सभी प्रकार के विचारशील लोग मूल्यों के तेजी से हो रहे ह्रास तथा उसके परिणाम स्वरूप सार्वजनिक जीवन में व्याप्त प्रदूषण से बहुत विक्षुब्ध है। आज के छात्र पर गुणात्मक विकास के नाम से वैसे ही बस्तों का बोझ बढ़ा हुआ है। इन मूल्यों को विषयों की तरह औपचारिक रूप से पढ़ाना किसी भी तरह से ठीक नहीं होगा, क्योंकि यह किसी तकनीकी या विज्ञान शिक्षा का यंत्रवत स्वरूप नहीं है। यह मानवीय संज्ञानीयता व आचरण संबंधी मूल्य, नैतिकता तथा चरित्र विकास के मूलभूत अवधारणाओं एवं उनके प्रभावशाली गुणों की शिक्षा है। यह शिक्षा भारतीय संस्कृति, भारतीय आध्यात्मिकता एवं उसके हजारों वर्षों के संजोये धरोहरों की,आदर्शों एवं व्यवहारों की शिक्षा है जो श्रेष्ठ है,उदात्त है। श्यह कोई धर्म की शिक्षा भी नहीं है यह उन मूल्यों की शिक्षा है, जो मानव मात्र को अपने सीमित परिवेश से नहीं अपितु विश्व क्षेत्र की विश्वमानवीयता पूर्ण संवेदना से जोड़ता है। यह मनुष्य को प्राणी कहे जाने वाले विशेषण से हटाकर सही अर्थों

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

में महामानव बनाने की शिक्षा है। अतः इस पृष्ठभूमि में मध्यस्थ दर्शन आधारित चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रत्येक शब्द का आशय दृष्टव्य है।

चेतना– ज्ञान, विज्ञान विवेक संपन्न। अर्थात विवेक संपन्नता विज्ञान एवं विज्ञान संपन्नता विवेक द्वारा ज्ञान को पहचानना ही चेतना से आशय है।

विकास– गुणात्मक परिर्वतन ही विकास का मुख्य आशय है। चारों अवस्थाओ (पदार्थावस्था, प्राणावस्था, जीवावस्था एवं ज्ञानावस्था) में संतुलनकारी सामंजस्य एवं समन्वयपूर्वक गुणात्मक परिवर्तन ही विकास है।

मूल्य– प्रत्येक इकाई में निहित मौलिकता ही मूल्य है। जो जैसा है उसको वैसा ही समझा जाये, तब उसकी मौलिकता की पहचान प्रत्यक्ष होना ही मूल्य है।

शिक्षा– सही समझ पैदाकर पाने वाला प्रशिक्षण शिक्षण एवं अध्ययन की संयुक्त प्रक्रिया जिसके माध्यम से शिष्ट मूल्यों का उदय हो सके वही शिक्षा है।

चेतना विकास मूल्य शिक्षा– समुच्वित रूप से चेतना विकास मूल्य शिक्षा से आशय चेतना का ऐसा विकास जिसमें जीव चेतना से मानव चेतना की ओर अग्रसर करने वाली मूल्य शिक्षा हो।

मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तिववाद) से – प्रणेता ए. नागराज

प्रशिक्षित शिक्षक– इससे आशय छत्तीसगढ़ शासन स्कूल शिक्षा विभाग के शासकीय शालाओं के उन शिक्षकों से है जिन्होंने मानवीय शिक्षा शोध संस्थान (अभ्युदय संस्थान) अछोटी, जिला–दुर्ग (छ.ग.) के द्वारा शासन के समन्वय के साथ संचालित शिविरों (परिचय एवं अध्ययन शिविर) के माध्यम से चेतना विकास मूल्य शिक्षा (जीवन विद्या) से परिचित हुए है।

अप्रशिक्षित शिक्षक– इससे आशय छत्तीसगढ़ शासन स्कूल शिक्षा विभाग के शासकीय शालाओं के उन शिक्षकों से है जिन्होंने उक्त शिविरों में न ही सम्मिलित हुए है और न ही चेतना विकास मूल्य शिक्षा (जीवन विद्या) से किसी भी प्रकार से परिचित है।

आत्मविश्वास– इससे आशय जरशील्ड (1978) के शब्दों में है कि ''यह व्यक्ति के अपने विचारों, भावनाओं, आशाओं भय, कल्पनाओं तथा अपने मूल्यों के संबंध में उसकी अभिवृत्तियों की ही एक समष्टि है।'' अर्थात प्रत्येक स्थिति की व्यक्ति की मांग होती है और इन मांगों को पूरी करने की क्षमताएँ उनके आत्मविश्वास में दिखाई पड़ता है।

आत्मविश्वास का अर्थ– आत्मविश्वास दो शब्दों से मिलकर बना हैं–आत्म+विश्वास जहाँ आत्म से तात्पर्य 'स्व' अर्थात मैं को जानना है तथा विश्वास का तात्पर्य भरोसा करना है। जिसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि व्यक्ति सदैव किसी परिस्थिति में ही जीवन

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

यापन करता है। अतएव प्रत्येक स्थिति की व्यक्ति से कुछ मांग होती है और इन मांगों की पूरी करने की व्यक्तियों की क्षमताएँ उनके आत्मविश्वास में दिखाई पड़ता है।

आलपोर्ट के अनुसार (1961)–

"व्यक्ति के आत्म में स्वयं का सब कुछ सम्मिलित रहता है, जो व्यक्ति की एकता को बनाता है।"

Academic **Dictionary of Psychology** में स्व को उल्लेखित किया गया है – A Symbol using individual who can reflect upon his/her own behavior.

गार्डनर एवं मोर्टी के अनुसार (1959)–

"व्यक्ति अपने को जिस रूप में जानता है, पहचानता है वही स्व है।"

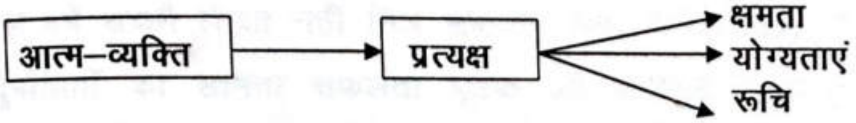

जेम्स ड्रेनर के अनुसार –

"आत्म शब्द का प्रयोग बहुधा अहं के अर्थ में किया जाता है। यह एक एजेन्ट है जो अपने पहचान के स्थायित्व के संबंध में चेतन रहता है।"

विश्वास– स्वयं के प्रति आश्वस्त एवं दूसरों के प्रति विश्वस्त रहना ही स्वयं में विश्वास है। क्योंकि "स्व" एवं "पर" का मूलाधार अस्तित्व ही सहअस्तित्व के रूप में सब में विद्यमान है। साम्यता बोध का यह विचार ही विश्वास पैदा करता है। जहाँ विश्वास है वहाँ भय निर्मूल हो जाता है एवं मानव अपने जीने के चारों आयाम विचार, कार्य, व्यवहार तथा अनुभव में उत्साहित रहता है। इसलिये चेतना विकास मूल्य शिक्षा (जीवन विद्या) को नित्य विश्वासपूर्वक जीने का विवेक व विज्ञान कहा गया है। विश्वास को आधार मूल्य कहा है जिस पर सुदृढ़ मानवीय संबंधों की नींव टिकी रहती है। यह एक मानसिक प्रक्रिया है, जो एक व्यक्ति में उपस्थित योग्यता के परिणाम स्वरूप उत्पन्न होती है। जब व्यक्ति में स्वयं को समझने की योग्यता आ जाती है तब उसमें विश्वास जागृत होता है। विश्वास को हम कई प्रकार से समझ सकते है। यह वह शब्द है जिसे हम रोजमर्रा के जीवन में प्रतिदिन सुनते है। विश्वास का अर्थ है भरोसा रखना।

- स्वयं के प्रति विश्वास
- श्रेष्ठता के सम्मान के प्रति विश्वास
- व्यक्तित्व एवं प्रतिभा के मध्य संतुलन के प्रति विश्वास
- सामाजिकता के प्रति विश्वास
- स्वावलंबन के प्रति विश्वास

आत्मविश्वास की जड़ मन में होती है। आत्मविश्वास में निहित मनोगत विशेषताएँ ही उसे प्रबल करने का कारण होता है। अनुभवों में इसकी प्रबलता के आधार पर व्यक्ति या तो

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

अधिक आत्मविश्वासी या फिर कम आत्मविश्वासी होते है। अधिक आत्मविश्वासी व्यक्ति की सोच ज्यादा सकारात्मक होती है एवं निम्न आत्मविश्वासव्यक्ति की सोच नकारात्मक ज्यादा होती है।

आत्मविश्वासी शिक्षकों की विशेषताएं –

आत्मचेतना, अति उत्साह, जिज्ञासा, संवेदनशीलता, निर्णय क्षमता, प्रतियोगिता, आत्मप्रत्यय, महत्वाकांक्षी, तार्किक क्षमता, दृढ़ निश्चयी, सौजन्यता, सौम्यता एवं विनम्रता।

शिक्षक प्रभावशीलता– इससे आशय नेशनल एकेडमी ऑफ साइन्सिज द्वारा उल्लेखित अवधारणा "जो अध्यापक शिष्यों की आत्माओं को जगा सकते हैं। सुविज्ञ हों, हमारे विद्यालयों में अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों के लिए पूरी तरह तैयार हों – ऐसे अध्यापकों के बिना हमें अच्छी शिक्षा नहीं मिल सकती। बिना उत्तम शिक्षा के इस परिवर्तनशील जगत की चुनौतियों का सामना सफलता पूर्वक हम दीर्घकाल तक करने की आशा नहीं कर सकते।" से है।

जीवन की स्पष्ट समझ आत्मविश्वास को बढ़ाता है। आत्मविश्वास से भरा हुआ व्यक्ति का व्यक्तित्व प्रभावशील रहता है। आत्मविश्वास का प्रभाव व्यक्ति में आहार, विहार एवं व्यवहार में देखने को मिलता ही है। यदि शिक्षकों में आत्मविश्वास जगाने में कोई विचार सफल होता है तो ऐसे शिक्षक का शिक्षण कार्य प्रभावी होगा और वे शिक्षा के प्रति अधिक प्रेरित एवं प्रोत्साहित होंगे।

नेल्सन एवं बॉसिंग ने कहा है कि "शिक्षा की किसी भी योजना में मैं शिक्षकों को केन्द्रीय स्थान देता हूँ।"

जी.के.होडनफील्ड एवं टी.एम.स्टीनेट (2006) द्वारा लिखित "अध्यापकों की शिक्षा" में उल्लेखित – नेशनल एकेडमी ऑफ साइन्सिज – नेशनल रिसर्च काउन्सिल के रेन्डल एम. ह्वैले ने बाउलिंग ग्रीन सम्मेलन में कहा था " जो अध्यापक शिष्यों की आत्माओं को जगा सकते हो, सुविज्ञ हो, हमारे विद्यालयों में अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों के लिए पूरी तरह तैयार हो – ऐसे अध्यापकों के बिना हमें अच्छी शिक्षा नहीं मिल सकती। बिना उत्तम शिक्षा के इस परिवर्तनशील जगत की चुनौतियों का सामना सफलता पूर्वक हम दीर्घकाल तक करने की आशा नहीं कर सकते।"

मुदालियर कमीशन (1952–53) ने भी अपने प्रतिवेदन में अध्यापक के महत्व को स्पष्ट शब्दों में स्वीकार किया हैं "we are however convinced that the most important factor in the contemplated educational reconctruction is the teacher - his personal qualaties his educational qualifications, his proressional training

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

and place that he occupies in the school as well as in the community. The reputation of school and its influence on the life of community invariably depend on the kind of teachers working in it."

एक प्रभावशाली शिक्षक शिक्षा की मजबूत आधारशीला रखने वाले एवं बालक के भविष्य निर्माता होते हैं।

प्रभावशाली शिक्षक जानते है कि –

- क्या पढ़ाना है कैसे पढ़ाना है ?
- जीव की रचना की समझ–सीखने की प्रक्रिया क्या है ?
- व्यवहार के प्रेरक तत्व कौन से है ?
- व्यक्ति का मूल्यांकन कैसे करना है ?
- स्वयं का विकास करने की प्रक्रिया कैसी हो ?
- विभिन्न आयु वर्गो के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए ?
- जिज्ञासा, उत्सुकता, नित्य नवीन खोज करना।
- अपने धर्मो, गुणों एवं मूल्यों को परखना।
- स्वयं का लक्ष्य निर्धारित करना।

अध्ययन की सार्थकता :–

शिक्षा की वर्तमान व्यवस्था कहीं न कहीं काफी निराशाजनक परिदृश्य को ही दिखाता है। युवकों में बेरोजगारी बढ़ी है। यद्यपि आज की स्थिति में शिक्षा का उद्देश्य केवल नौकरी प्राप्त करना ही रह गया है। व्यक्तियों में शिक्षा के स्पष्ट लक्ष्य के अभाव में व्यक्ति के अंदर स्वयं में घुटन, परिवार का टुटना, समाज में बिखराव एवं प्रकृति में असंतुलन दिखाई देता है। मानव की महिमा आत्मविश्वासी होने में एवं शिक्षक की गरिमा प्रभावशाली होने में है। आत्मविश्वासी सफलता के सोपान गढ़ता है एवं स्वयं को, अपने व्यवसाय को प्रभावशाली बनाता है। इससे उनके संपर्क में आने वाला व्यक्ति प्रभावित होता है। इस अध्ययन से शिक्षकों में आत्मविश्वास जगाने का एवं स्वयं को अपनी तथा समाज की नजरों में सार्थक व उपयुक्त शिक्षक के रूप में पहचाने जाने का प्रयास है। शिक्षक अपने आत्मविश्वास एवं अपनी प्रभावकारी पहचान के बलबुते स्वयं का, बालक तथा समाज का सही मार्गदर्शन कर सकेंगे।

प्रस्तुत अध्ययन केवल प्रेरणास्पद ही नहीं है वरन शिक्षकों में स्वयं अपनी कमियों को ढूंढ पाने एवं उन्हें दूर कर पाने की मूल चेष्टा की ओर प्रेरित करने वाला भी है। इससे प्राप्त आँकड़े एक प्रभावी शिक्षक के विभिन्न आयामों में परिलक्षित समस्याओं को

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

सुधारने एवं परिमार्जित करने में उनके लिए निश्चित ही सहायक होंगे, जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से शिक्षकों के आत्मविश्वास को बढ़ायेंगे, शिक्षक प्रभावशीलता भी बढ़ेगी। इससे विद्यालय में उनके विद्यार्थी लाभान्वित होंगे।

सम्बन्धित शोध अध्ययन :-

चेतना विकास मूल्य शिक्षा से संबंधित शोध :-

मुक्ता एवं पाठ्क, (2007) ने "वूमेन एज ए ह्यूमेन" शीर्षक पर शोध कार्य किये, एवं पाया कि पात्रता, योग्यता एवं क्षमता के रूप में जीवन को लैंगिक आधार पर खाँचों में विभाजित नहीं किया जा सकता।

रामचरला, (2007) ने ट्रिपल आई.आई.टी. हैदराबाद, जीवन विद्या शिविर पर शोध पत्र प्रकाशन किये हैं। जिसके अंतर्गत जीवन विद्या अर्थात चेतना विकास मूल्य शिक्षा के शिविरों को प्रभावशाली बताया गया है।

गौर, बागड़िया, सांगल, (2009) ने "ह्यूमेन वैल्यूस एण्ड प्रोफेशनल इथिक्स" में चेतना विकास मूल्य शिक्षा के चार आयाम एवं पाँच स्थितियों को गहराई से जाँचा है एवं जीव चेतना से मानव चेतना की ओर यात्रा के लिए प्रेरणास्पद पाया है।

श्रीवास्तव, (2010) ने "शिक्षा के एकांगी स्वरूप के संवाहक छात्राध्यापकों एवं शिक्षक–प्रशिक्षकों पर मानवीय मूल्यों की शिक्षा– "मध्यस्थ दर्शन" के प्रभाव का अध्ययन" किया गया है जिसमें सूचना शिविर में सम्मिलित होने वाले शिक्षकों, छात्राध्यापकों, शिक्षक प्रशिक्षकों के दृष्टिकोण एवं कार्यशैली के साथ ही जीवन संबंधी आवश्यकताओं (प्राथमिकताओं) को तय करने में उपयोगी पाया है। आवश्यकता आधारित समृद्धियुक्त जीवन शैली की ओर शिक्षकों में सकारात्मक परिवर्तन पाया गया है।

बघेल एवं साहू, (2011–12) ने अपने पायलट स्टडी में शिक्षकों एवं डी.एड. छात्राध्यापकों पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा शिविर के प्रभाव का समीक्षात्मक अध्ययन किया एवं इन्होंने मूल्यों के प्रति सकारात्मकता को पाया। अध्ययन में शिक्षकों एवं छात्राध्यापकों में चेतना विकास मूल्य शिक्षा की प्रभाविता को जानने हेतु 08 आयामों – शैक्षिक वातावरण, शैक्षिक अभिरूचि, सार्थक अंतर्संबंध, स्वयं में विश्वास (कक्षा में अभिव्यक्ति के प्रति), रूचिकर एवं प्रभावी अध्ययन, विचार, व्यवहार एवं अनुभव का स्वनिर्मित प्रश्नावली के माध्यम से अध्ययन किया एवं शिक्षकों में स्वयं में विश्वास एवं छात्राध्यापकों में व्यवहार पक्ष को छोड़कर प्रत्येक के 7 आयामों में सकारात्मकता पायी गयी।

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

आत्मविश्वास से संबंधित शोध :-

सिंह एवं कौर (2006) ने लिंग और धर्म के संदर्भ में शिक्षक प्रशिक्षार्थियों के आत्मविश्वास का अध्ययन किया तथा लिंग का प्रभाव आत्मविश्वास पर सार्थक पाया वहीं धर्म का प्रभाव आत्मविश्वास पर सार्थक नहीं पाया गया।

रिचर्डसन एवं अन्य (2006) ने शिक्षकों के समायोजन एवं बाह्य चरों पर उनके आत्मविश्वास एवं वेतन संतुष्टि के प्रभाव का अध्ययन किया तथा पाया कि यदि आत्मविश्वास एवं वेतन संतुष्टि उच्च होती है तो शिक्षकों में समायोजन की क्षमता भी उच्च पाई जाती है।

रोलेण्ड (2008) ने प्राचायों के नेतृत्वशैली एवं शिक्षकों के आत्मबल के मध्य संबंध का अध्ययन किया एवं पाया कि प्राचार्यों के नेतृत्वशैली एवं शिक्षकों के आत्मबल के मध्य सार्थक सहसंबंध होता है तथा जिन विद्यालयों के प्राचार्यों की नेतृत्वशैली उच्च होती है उनके शिक्षकों में आत्मबल भी उच्च पाया जाता है।

मुज्जफर एवं नासिर (2011) ने महाराष्ट्र के शिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राध्यापकों के आत्मसम्मान एवं शिक्षण दक्षता के मध्य संबंध का अध्ययन किया तथा उच्च धनात्मक सह-संबंध पाया। उच्च आत्मसम्मान वाले प्रशिक्षणार्थियों की निम्न आत्मसम्मान वाले प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में दक्षता उच्च पायी गयी।

शिक्षक प्रभावशीलता से संबंधित शोध :-

परेशचंद्र एवं टिंकड़े (1995) ने शिक्षक प्रभावशीलता पर अध्ययन किया एवं निष्कर्ष यह पाया कि महिला अध्यापक की प्रभावशीलता अधिक होती है। अध्यापक की प्रभावशीलता विद्यालय के निजि या शासकीय होने पर निर्भर नहीं करती। खुले वातावरण में स्थित विद्यालयों में अध्यापक ज्यादा प्रभावशील होते है। अनियंत्रित वातावरण में अध्यापक सबसे कम प्रभावशील होते है तथा नियंत्रित वातावरण वाले विद्यालयों में यह प्रभावशीलता मध्यम दर्जे की थी।

विश्वास और डे (1995) ने त्रिपुरा में माध्यमिक स्कूल के शिक्षकों की प्रभावशीलता पर एक अध्ययन किया एवं पाया गया कि कन्या विद्यालय के शिक्षक, महिलाएँ शिक्षकाएँ अधिक प्रभावशाली होते हैं तथा स्कूल का वातावरण शिक्षकों को प्रभावशाली बनाता है न कि स्कूल का स्थान व प्रबंधन।

राउल (2007) ने स्वायत्तशासी एवं गैर स्वायत्तशासी महाविद्यालय के शिक्षकों पर शिक्षक प्रभावशीलता का अध्ययन किया गया एवं पाया कि स्वायत्तशासी महाविद्यालय के शिक्षकों एवं गैर स्वासयत्तशासी महाविद्यालय के शिक्षकों के प्रभावशीलता में सार्थक अंतर है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

रमाकांत (2008) ने सेवारत शिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम में अंग्रेजी पढ़ाने वाले शिक्षकों की शिक्षक प्रभवशीलता का अध्ययन किया गया एवं पाया कि छात्रो की अंग्रेजी विषय की उपलब्धि पर प्रभावशीलता का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

ढिल्लन एवं कौर (2009) ने शिक्षक के शिक्षक प्रभावशीलता एवं उनके मूल्य पैटर्न के मध्य संबंधों का अध्ययन किया गया एवं पाया की इनके मूल्य निर्वहन व शिक्षक प्रभावशीलता के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं है तथा महिला एवं पुरूष शिक्षकों के मध्य शिक्षक प्रभावशीलता के स्तरों में भी कोई सार्थक अंतर नहीं है।

समस्या कथन :-

चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के आत्मविश्वास एवं शिक्षक प्रभावशीलता का अध्ययन।

प्रकार्यात्मक परिभाषा :-

चेतना विकास मूल्य शिक्षा–मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है–क्या सचमुच ? वस्तुतः मनुष्य ज्ञानावस्था की इकाई है। प्राणी जीवावस्था की इकाई है। प्राणियों में केवल जीने की आशा बलवती होती है, परंतु मनुष्यों में सुखपूर्वक जीने की लालसा प्रबल रहती है। वह भी नित्य व निरंतर। इन दोनों अवस्थाओं के बीच की यही असमानता मनुष्यों को मात्र प्राणी बने न रहने की जीजीविषा इन्हें ज्ञानवान अर्थात् समझदार बनने के लिए प्रेरित व प्रोत्साहित करते रहता है। इसके लिए सतत् वह प्रयासरत रहता है। प्रयास की इस प्रक्रिया में शिक्षा को सदैव अपना भागीदार बनाया है।

इस कड़ी में ही चेतना विकास मूल्य शिक्षा वस्तुतः जीव चेतना से मानव चेतना में मूल्यान्तरण व कार्यान्तरण का आग्रह है। यह समुचित शिक्षा के माध्यम से संभव है।

नागराज (1999) के शब्दों में – समझदारी बोधपूर्वक प्रमाणित करने के लिए जो कार्य है उसका नाम है शिक्षा ।

चेतना विकास मूल्य शिक्षा के सात दिवसीय परिचय शिविर एवं एक वर्षीय अध्ययन शिविर के दौरान दिये गये प्रशिक्षण के माध्यम से क्या शिक्षकों के आत्मविश्वास, प्रभावशीलता प्रभावित हो रही है ? ऐसे शिक्षक जिन्होंने एस.सी.ई.आर.टी. व मानवीय शिक्षा शोध संस्थान (अभ्युदय संस्थान) अछोटी जिला–दुर्ग के संयुक्त प्रयास से आयोजित चेतना विकास मूल्य शिक्षा के कार्यक्रम में भाग लिया है। तथा ऐसे शिक्षक जिन्होंने प्रशिक्षण में भाग नहीं लिया है। दोनों प्रकार के शिक्षकों के मध्य मूल्य, आत्मविश्वास तथा प्रभावशीलता को शोधकर्ता ने जानने का प्रयास किया है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

अध्ययन के उद्देश्य :-

1. शालेय शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. शालेय शिक्षकों के लिंग, आयु, जाति, शालेय स्तर, शैक्षिक अनुभव एवं शैक्षणिक योग्यता के आधार पर शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. शालेय शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन करना।
4. शालेय शिक्षकों के लिंग, आयु, जाति, शालेय स्तर, शैक्षिक अनुभव एवं शैक्षणिक योग्यता के आधार पर शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन करना।
5. शिक्षक प्रभावशीलता के विभिन्न आयामों पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पना :-

अनुसंधान कार्य में उद्देश्य को प्राप्त करने हेतु निम्न परिकल्पनाएँ निर्मित की गयी है–

आत्मविश्वास से संबंधित परिकल्पनाएँ –

H_{0-1} शिक्षकों के आत्मविश्वास पर लिंग, आयु, जाति, शालेयस्तर, शैक्षिक अनुभव, शैक्षणिक योग्यता में चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

लिंग के आधार पर

$H_{0-1.1}$ पुरूष शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

$H_{0-1.2}$ महिला शिक्षिकाओं के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

आयु के आधार पर

$H_{0-1.3}$ 35 वर्ष से कम आयु के शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

$H_{0-1.4}$ 40 वर्ष से अधिक आयु के शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

जाति के आधार पर

$H_{0-1.5}$ सामान्य जाति के शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

$H_{0-1.6}$ अन्य पिछड़ी जाति के शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

$H_{0-1.7}$ अनुसूचित जाति एवं जनजाति के शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

शालेय स्तर के आधार पर

$H_{0-1.8}$ प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

$H_{0-1.9}$ माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

$H_{0-1.10}$ उच्चत्तर माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

शैक्षिक अनुभव के आधार पर

$H_{0-1.11}$ 10 वर्ष से कम शैक्षिक अनुभव रखने वाले शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

$H_{0-1.12}$ 15 वर्ष से अधिक शैक्षिक अनुभव रखने वाले शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

शैक्षणिक योग्यता के आधार पर

$H_{0-1.13}$ स्नातक स्तर शिक्षित शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

$H_{0-1.14}$ स्नाकोत्तर स्तर शिक्षित शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

शिक्षक प्रभावशीलता से संबंधित परिकल्पनाएँ –

$H_{0\text{-}2}$ शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर लिंग, आयु, जाति, शालेय स्तर, शैक्षिक अनुभव, शैक्षणिक योग्यता में चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

लिंग के आधार पर

$H_{0\text{-}2.1}$ पुरूष शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

$H_{0\text{-}2.2}$ महिला शिक्षिकाओं के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

आयु के आधार पर

$H_{0\text{-}2.3}$ 35 वर्ष से कम आयु के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

$H_{0\text{-}2.4}$ 40 वर्ष से अधिक आयु के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

जाति के आधार पर

$H_{0\text{-}2.5}$ सामान्य जाति के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

$H_{0\text{-}2.6}$ अन्य पिछड़ी जाति के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

$H_{0\text{-}2.7}$ अनुसूचित जाति एवं जनजाति के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशिलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

शालेय स्तर के आधार पर

$H_{0\text{-}2.8}$ प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

$H_{0\text{-}2.9}$ माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

$H_{0-2.10}$ उच्चत्तर माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

शैक्षिक अनुभव के आधार पर

$H_{0-2.11}$ 10 वर्ष से कम शैक्षिक अनुभव रखने वाले शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

$H_{0-2.12}$ 15 वर्ष से अधिक शैक्षिक अनुभव रखने वाले शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

शैक्षणिक योग्यता के आधार पर

$H_{0-2.13}$ स्नातक स्तर शिक्षित शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

$H_{0-2.14}$ स्नाकोत्तर स्तर शिक्षित शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

$H_{0-2.15}$ शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता के विभिन्न आयामों यथा अकादमिक, व्यावसायिक, सामाजिक, भावनात्मक, नैतिक व व्यक्तित्व पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

शोध प्रविधि –

जनसंख्या – छत्तीसगढ़ राज्य में कुल 27 जिले हैं, जिसमें कुल विद्यालय की संख्या 61,454 है। इसमें प्राथिक विद्यालयें में शिक्षकों की संख्या 1,18,390, माध्यमिक विद्यालय में शिक्षिकों की संख्या 67,589 एवं उच्चत्तर विद्यालयों में शिक्षिकों की संख्या 47,288 कार्यरत है। राज्य में शासकीय शिक्षकों की संख्या 233267 है।

चयनित 20 जिले जिसका आधार चेतना विकास मूल्य शिक्षा शिविर है। इसमें परिचय एवं अध्ययन शिविर में प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों की संख्या 20278 एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों की संख्या 1,27,368 जिनका दोनो का योग 1,47,646 है– जनसंख्या के रूप में जिलेवार निम्नांकित तालिका द्वारा प्रदर्शित किया गया है:–

तालिका – 5.1

जिलेवार प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षक संख्या

क्रमांक	जिला का नाम	चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्रशिक्षित शिक्षकों की संख्या	चेतना विकास मूल्य शिक्षा अप्रशिक्षित शिक्षकों की संख्या	शिक्षकों की कुल संख्या
1.	धमतरी	1525	5223	6748

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

	बलौदाबाजार	721	8793	9514
2.	कोरिया	1100	3193	4293
3.	जांजगीर	1300	9907	11207
4.	महासमुंद	1450	6105	7555
5.	बलोद	552	6118	6670
6.	दुर्ग	502	5802	6304
7.	बेमेतरा	496	5214	5710
8.	कांकेर	1300	5826	7126
9.	रायपुर	642	7531	8173
10.	गरियाबंद	335	4431	4766
11.	दंतेवाड़ा	1200	1638	2838
12.	बस्तर	1150	5884	7034
13.	बिलासपुर	1109	11511	12620
14.	मुंगेली	446	3744	4190
15.	रायगढ़	1400	9246	10646
16.	राजनांदगावं	1400	9092	10492
17.	सरगुजा	1200	6813	8013
18.	कबीरधाम	1300	5071	6371
19.	जशपुर	1150	6226	7376
20.	कुल	20278	127368	147646

न्यादर्शः– प्रदेश के 20 जिलों के प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित 300 शिक्षक न्यादर्श के रूप में सोद्देश्य सुविधानुसार चयन किया गया है जिसे निम्न तालिका में दर्शाया गया है।

तालिका–5.2
सामान्य जानकारी आधारित शिक्षकों की संख्या

स.क्र.	प्रशासित शिक्षक संबंधी सामान्य जानकारी	सामान्य जानकारी आधारित निर्मित विभिन्न समूह	उपलब्ध न्यादर्श	
			प्रशिक्षित (150) में से	अप्रशिक्षित (150) में से
1	2	3	4	5
1.	लिंगवार	पुरूष	130	115
		महिला	20	35
2.	आयुवार	35 वर्ष से कम	61	74
		40 वर्ष से अधिक	89	76
3.	जतिवार	सामान्य	27	28
		अ.पि.वर्ग	87	70
		अनु.जाति + अनु.जनजाति	36	52
4.	शालेयस्तर	प्राथमिक शाला	52	69
		माध्यमिक शाला	63	57
		उ.मा.शाला	35	24
5.	शैक्षिक अनुभव	10 वर्ष से कम	65	82
		15 वर्ष से अधिक	85	68
6.	शैक्षणिक योग्यता	स्नातक स्तर तक	34	59
		स्नातकोत्तर स्तर तक	116	91

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

9. शोध अभिकल्पः–

चर

स्वतंत्र चर

चेतना विकास मूल्य शिक्षा
प्रशिक्षित तथा अप्रशिक्षित शिक्षक
(परिक्षणीय घटक)

- लिंग
  - पुरूष
  - महिला
- आयु
  - 35 वर्ष से कम
  - 40 वर्ष से अधिक
- जाति
  - सामान्य
  - अन्यपिछड़ी जाति
  - अनुसूचित व अनुसूचित जनजाति
- शालेय स्तर
  - प्राथमिक स्तर
  - माध्यमिक स्तर
  - उच्चत्तर माध्यमिक स्तर
- अनुभव
  - 10 वर्ष से कम
  - 15 वर्ष से अधिक
- शैक्षणिक योग्यता
  - स्नातक स्तर शिक्षित
  - स्नातकोत्तर स्तर शिक्षित

आश्रित चर

1. आत्मविशवास
2. शिक्षक प्रभावशीलता

शिक्षक प्रभावशीलता के आयाम

- अकादमिक
- व्यावसायिक
- सामाजिक
- भावनात्मक
- नैतिक
- व्यक्तित्व

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

उपकरण –

1. आत्मविश्वास मापनी – शिक्षकों के आत्मविश्वास के मापन के लिए गुप्ता, आर. (2005) द्वारा निर्मित Agnihotri's Self - Confidence Inventory (ASCI) प्रमापीकृत परीक्षण का उपयोग किया गया है। इसमें 56 कथन है। मापनी द्वारा प्रशासित शिक्षक संबंधी सामान्य जानकारी के साथ उनके प्राप्तांक लिए गये है। सभी शिक्षक शासकीय विद्यालयों से है जिनकी कुल संख्या 300 है जिनमें 150 प्रशिक्षित एवं 150 अप्रशिक्षित है। मापनी की विश्वसनीयता 0.88 है। मापनी के प्रमाणीकृत निर्माण प्रक्रिया में प्रारंभ में 2074 (पुरूष N = 748 एवं महिला N = 1326) शिक्षा क्षेत्र के व्यक्तियों का आकलन किया गया, जिसका 116 न्यादर्शों पर परीक्षण पुनः परीक्षण कर इसे वैध एवं विश्वसनीय स्वरूप दिया गया।

शिक्षक प्रभावशीलता मापनी – शिक्षकों में शिक्षक प्रभावशीलता के मापन के लिए मुथा, डी.एन. (1974) द्वारा निर्मित Techer Effectiveness Scale - TES (1999 Revision) का उपयोग किया गया है। शिक्षक प्रभावशीलता के इस मापनी द्वारा शिक्षकों के 06 आयामों में परीक्षण किया गया है। यह भी उन्हीं 300 शासकीय शिक्षकों, जिसमें 150 प्रशिक्षित एवं 150 अप्रशिक्षित से मत लिया गया है। जिन पर TES का परीक्षण किया गया है। TES में 69 कथन है। इसकी विश्वसनीयता .86 है।

5.2 निष्कर्ष :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शिक्षकों पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा का प्रभाव जानना केन्द्रीय उद्देश्य है। यह प्रभाव उनके आत्मविश्वास एवं शिक्षक रूप में उनकी प्रभावशीलता को जाँचना उद्देश्य है। इन्ही उद्देश्य को लेकर जो परिकल्पनाएँ की गयी है उसमें आत्मविश्वास को प्रभावित करने की पुष्टि व स्वीकृति शिक्षकों के विभिन्न समूहों यथा लिंग, जाति, आयु, शालेय स्तर, शैक्षिक अनुभव व शैक्षणिक योग्यता के आधार पर सभी समूहों पर प्रभावशाली रहा है, परन्तु उनके शिक्षक प्रभावशीलता की जाँच में जहाँ पुरूष शिक्षकों पर की गयी परिकल्पना की पुष्टि होती है तो महिला शिक्षकों में पुष्टि नहीं हुई। 35 वर्ष से कम आयु वाले, 10 वर्ष से कम अध्यापन अनुभव रखने वाले, व उच्चतर माध्यमिक शालाओं में कार्यरत शिक्षकों में इसके प्रभाव की पुष्टि नहीं होती शेष अन्य समुहों में यह शिक्षक प्रभावशीलता को प्रभावित करता है। अध्ययन के निष्कर्ष अधोलिखित प्राप्त हुए हैं।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

प्रथम भाग – आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा का प्रभाव

$H_{0\text{-}1}$ शिक्षकों के आत्मविश्वास पर लिंग, आयु, जाति, शालेयस्तर, शैक्षिक अनुभव, शैक्षणिक योग्यता में चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

निष्कर्ष– शिक्षकों के आत्मविश्वास के आयाम पर प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षकों के "t" का मान 5.982 है जो कि 1 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर "t" के तालिका मान से अधिक है उनके मध्यमानों पर सार्थक अंतर है। फलस्वरूप उक्त परिकल्पना की पुष्टि नहीं होती व परिकल्पना अस्वीकृत होती हैं।

अतः आत्मविश्वास पर इस प्रशिक्षण का प्रभाव पड़ता है। प्रशिक्षित शिक्षकों के आत्मविश्वास की वृद्धि में यह प्रशिक्षण सार्थक है।

लिंग के आधार पर

$H_{0\text{-}1.1}$ पुरूष शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

निष्कर्ष– पुरूष शिक्षकों के आत्मविश्वास के आयाम पर प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षकों के "t" का मान 4.848 है जो कि 1 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर "t" के तालिका मान से अधिक है उनके मध्यमानों पर सार्थक अंतर है। फलस्वरूप उक्त परिकल्पना की पुष्टि नहीं होती व परिकल्पना अस्वीकृत होती हैं।

अतः आत्मविश्वास पर इस प्रशिक्षण का प्रभाव पड़ता है। प्रशिक्षित पुरूष शिक्षकों के आत्मविश्वास की वृद्धि में यह प्रशिक्षण सार्थक है।

$H_{0\text{-}1.2}$ महिला शिक्षिकाओं के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

निष्कर्ष– महिला शिक्षिकाओं के आत्मविश्वास के आयाम पर प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षकों के "t" का मान 2.67 है जो कि 1 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर "t" के तालिका मान के ही समकक्ष है, जिससे सार्थक अन्तर नहीं है। फलस्वरूप उक्त परिकल्पना की पुष्टि होती व परिकल्पना स्वीकृत होती हैं।

अतः महिलाओं के आत्मविश्वास पर इस प्रशिक्षण का विशेष प्रभाव दिखाई नहीं पड़ता है लेकिन प्रशिक्षित के मध्यमान, एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के मध्यमान से अधिक है एवं 0.05 स्तर पर "t" की गणना मान इनके तालिका मान से अधिक व सार्थक अंतर है। अतः 05 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर यह उप–परिकल्पना अस्वीकृत होती हैं।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

आयु के आधार पर :-

$H_{0\text{-}1.3}$ 35 वर्ष से कम आयु वाले शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

निष्कर्ष– 35 वर्ष से कम आयु वाले शिक्षकों के आत्मविश्वास के आयाम पर प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षकों के "t" का मान 3.764 है जो कि 1 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर "t" के तालिका मान से अधिक है जिससे उनके मध्यमानों में सार्थक अंतर है। फलस्वरूप उक्त परिकल्पना की पुष्टि नहीं होती व परिकल्पना अस्वीकृत होती हैं।

अतः आत्मविश्वास पर इस प्रशिक्षण का प्रभाव पड़ता है। शिक्षकों के आत्मविश्वास की वृद्धि में यह प्रशिक्षण सार्थक है।

$H_{0\text{-}1.4}$ 40 वर्ष से अधिक आयु वाले शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

निष्कर्ष– 40 वर्ष से अधिक आयु वाले शिक्षकों के आत्मविश्वास के आयाम पर प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षकों के "t" का मान 4.134 है जो कि 1 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर "t" के तालिका मान से अधिक है जिससे उनके मध्यमानों में सार्थक अंतर है। फलस्वरूप उक्त परिकल्पना की पुष्टि नहीं होती व परिकल्पना अस्वीकृत होती हैं।

अतः आत्मविश्वास पर इस प्रशिक्षण का प्रभाव पड़ता है। शिक्षकों के आत्मविश्वास की वृद्धि में यह प्रशिक्षण सार्थक है।

जाति के आधार पर :-

$H_{0\text{-}1.5}$ सामान्य जाति के शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

निष्कर्ष– सामान्य जाति के शिक्षकों के आत्मविश्वास के आयाम पर प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षकों के "t" का मान 4.996 है जो कि 1 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर "t" के तालिका मान से अधिक है जिससे उनके मध्यमानों में सार्थक अंतर है। फलस्वरूप उक्त परिकल्पना की पुष्टि नहीं होती व परिकल्पना अस्वीकृत होती हैं।

अतः आत्मविश्वास पर इस प्रशिक्षण का प्रभाव पड़ता है। सामान्य जाति के शिक्षकों के लिए आत्मविश्वास की वृद्धि में यह प्रशिक्षण सार्थक है।

$H_{0\text{-}1.6}$ अन्य पिछड़ी जाति के शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

निष्कर्ष– अन्य पिछड़ी जाति के शिक्षकों के आत्मविश्वास के आयाम पर प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षकों के "t" का मान 2.939 है जो कि 1 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर "t" के तालिका मान से अधिक है जिससे उनके मध्यमानों में सार्थक अंतर है। फलस्वरूप उक्त परिकल्पना की पुष्टि नहीं होती व परिकल्पना अस्वीकृत होती हैं।

अतः आत्मविश्वास पर इस प्रशिक्षण का प्रभाव पड़ता है। अन्य पिछड़ी जाति के शिक्षकों के लिए आत्मविश्वास की वृद्धि में यह प्रशिक्षण सार्थक है।

$H_{0\text{-}1.7}$ अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

निष्कर्ष– अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के शिक्षकों के आत्मविश्वास के आयाम पर प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षकों के "t" का मान 2.359 है जो कि 1 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर "t" के तालिका मान के ही समकक्ष है, जिससे सार्थक अन्तर नहीं है। फलस्वरूप उक्त परिकल्पना की पुष्टि होती व परिकल्पना स्वीकृत होती हैं।

अतः अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के शिक्षकों के आत्मविश्वास पर इस प्रशिक्षण का विशेष प्रभाव दिखाई नहीं पड़ता है लेकिन प्रशिक्षित के मध्यमान, एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के मध्यमान से अधिक है एवं 0.05 स्तर पर "t" की गणना मान इनके तालिका मान से अधिक व सार्थक अंतर है। अतः 05 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर यह परिकल्पना अस्वीकृत होती हैं।

शालेय स्तर के आधार पर :–

$H_{0\text{-}1.8}$ प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

निष्कर्ष– प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के आत्मविश्वास के आयाम पर प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षकों के "t" का मान 3.837 है जो कि 1 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर "t" के तालिका मान से अधिक है जिससे उनके मध्यमानों में सार्थक अंतर है। फलस्वरूप उक्त परिकल्पना की पुष्टि नहीं होती व परिकल्पना अस्वीकृत होती हैं।

अतः आत्मविश्वास पर इस प्रशिक्षण का प्रभाव पड़ता है। प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के लिए आत्मविश्वास की वृद्धि में यह प्रशिक्षण सार्थक है।

$H_{0\text{-}1.9}$ माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

निष्कर्ष– माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के आत्मविश्वास के आयाम पर प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षकों के "t" का मान 3.265 है जो कि 1 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर "t" के तालिका मान से अधिक है जिससे उनके मध्यमानों में सार्थक अंतर है। फलस्वरूप उक्त परिकल्पना की पुष्टि नहीं होती व परिकल्पना अस्वीकृत होती हैं।

अतः आत्मविश्वास पर इस प्रशिक्षण का प्रभाव पड़ता है। माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के लिए आत्मविश्वास की वृद्धि में यह प्रशिक्षण सार्थक है।

$H_{0-1.10}$ उच्चतर माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

निष्कर्ष– उच्चतर माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के आत्मविश्वास के आयाम पर प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षकों के "t" का मान 3.316 है जो कि 1 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर "t" के तालिका मान से अधिक है जिससे उनके मध्यमानों में सार्थक अंतर है। फलस्वरूप उक्त परिकल्पना की पुष्टि नहीं होती व परिकल्पना अस्वीकृत होती हैं।

अतः आत्मविश्वास पर इस प्रशिक्षण का प्रभाव पड़ता है। उच्चतर माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के लिए आत्मविश्वास की वृद्धि में यह प्रशिक्षण सार्थक है।

शैक्षिक अनुभव के आधार पर :–

$H_{0-1.11}$ 10 वर्ष से कम शैक्षिक अनुभव वाले शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

निष्कर्ष– 10 वर्ष से कम अध्यापकीय अनुभव वाले शिक्षकों के आत्मविश्वास के आयाम पर प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षकों के "t" का मान 4.649 है जो कि 1 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर "t" के तालिका मान से अधिक है जिससे उनके मध्यमानों में सार्थक अंतर है। फलस्वरूप उक्त परिकल्पना की पुष्टि नहीं होती व परिकल्पना अस्वीकृत होती हैं।

अतः आत्मविश्वास पर इस प्रशिक्षण का प्रभाव पड़ता है। शिक्षकों के आत्मविश्वास की वृद्धि में यह प्रशिक्षण सार्थक है।

$H_{0-1.12}$ 15 वर्ष से अधिक शैक्षिक अनुभव वाले शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

निष्कर्ष– 15 वर्ष से अधिक अध्यापकीय अनुभव वाले शिक्षकों के आत्मविश्वास के आयाम पर प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षकों के "t" का मान 3.687 है जो कि 1 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर "t" के तालिका मान से अधिक है जिससे उनके मध्यमानों में सार्थक अंतर है। फलस्वरूप उक्त परिकल्पना की पुष्टि नहीं होती व परिकल्पना अस्वीकृत होती हैं।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

अतः आत्मविश्वास पर इस प्रशिक्षण का प्रभाव पड़ता है। शिक्षकों के आत्मविश्वास की वृद्धि में यह प्रशिक्षण सार्थक है।

$H_{0\text{-}1.13}$ स्नातक स्तर शिक्षित शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

निष्कर्ष– स्नातक स्तर शिक्षित शिक्षकों के आत्मविश्वास के आयाम पर प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षकों के "t" का मान 2.678 है जो कि 1 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर "t" के तालिका मान से अधिक है, जिससे उनके मध्यमानों में सार्थक अन्तर है। फलस्वरूप उक्त परिकल्पना की पुष्टि नहीं होती व परिकल्पना अस्वीकृत होती हैं।

अतः आत्मविश्वास पर इस प्रशिक्षण का प्रभाव पड़ता है। स्नातक शिक्षित शिक्षकों के लिए आत्मविश्वास की वृद्धि में यह प्रशिक्षण सार्थक है।

$H_{0\text{-}1.14}$ स्नातकोत्तर स्तर शिक्षित शिक्षकों के आत्मविश्वास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

निष्कर्ष– स्नातकोत्तर स्तर शिक्षित शिक्षकों के आत्मविश्वास के आयाम पर प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षकों के "t" का मान 5.306 है जो कि 1 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर "t" के तालिका मान से अधिक है जिससे उनके मध्यमानों में सार्थक अंतर है। फलस्वरूप उक्त परिकल्पना की पुष्टि नहीं होती व परिकल्पना अस्वीकृत होती हैं।

अतः आत्मविश्वास पर इस प्रशिक्षण का प्रभाव पड़ता है। स्नातकोत्तर शिक्षकों के लिए आत्मविश्वास की वृद्धि में यह प्रशिक्षण सार्थक है।

द्वितीय भाग–शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा का प्रभावः–

$H_{0\text{-}2}$ शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर लिंग, आयु, जाति, शालेस्तर, शैक्षिकअनुभव, शैक्षणिक योग्यता में चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

निष्कर्ष– शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता के आयाम पर प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षकों के "t" का मान 4.159 है जो कि 1 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर "t" के तालिका मान से अधिक है उनके मध्यमानों पर सार्थक अंतर है। फलस्वरूप उक्त परिकल्पना की पुष्टि नहीं होती व परिकल्पना अस्वीकृत होती हैं।

अतः शिक्षक प्रभावशीलता पर इस प्रशिक्षण का प्रभाव पड़ता है। प्रशिक्षित शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता की वृद्धि में यह प्रशिक्षण सार्थक है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

लिंग के आधार पर :-

$H_{0-2.1}$ पुरूष शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

निष्कर्ष– पुरूष शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता के आयाम पर प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षकों के "t" का मान 3.797 है जो कि 1 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर "t" के तालिका मान से अधिक है उनके मध्यमानों पर सार्थक अंतर है। फलस्वरूप उक्त परिकल्पना की पुष्टि नहीं होती व परिकल्पना अस्वीकृत होती हैं।

अतः शिक्षक प्रभावशीलता पर इस प्रशिक्षण का प्रभाव पड़ता है। प्रशिक्षित पुरूष शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता की वृद्धि में यह प्रशिक्षण सार्थक है।

$H_{0-2.2}$ महिला शिक्षिकाओं के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

निष्कर्ष– महिला शिक्षिकाओं के शिक्षक प्रभावशीलता के आयाम पर प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षकों के "t" का मान 1.393 है जो कि 1 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर "t" के तालिका मान से कम है उनके मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं है। फलस्वरूप उक्त परिकल्पना की पुष्टि नहीं होती व परिकल्पना स्वीकृत होती हैं।

अतः महिला शिक्षिकाओं के शिक्षक प्रभावशीलता पर इस प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं देखा गया है। अन्य आयामो में जैसे की पुरूष शिक्षकों पर इसका प्रभाव पड़ता है तो महिलाओं के उपर इस प्रशिक्षण का और गंभीरतापूर्वक किये जाने पर महिलाओं पर भी संभवतः असर पड़ सकता है।

आयु के आधार पर :-

$H_{0-2.3}$ 35 वर्ष से कम आयु वाले शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

निष्कर्ष– 35 वर्ष से कम आयु वाले शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता के आयाम पर प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षकों के "t" का मान 1.742 है जो कि 1 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर "t" के तालिका मान से कम है उनके मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं है। फलस्वरूप उक्त परिकल्पना की पुष्टि नहीं होती व परिकल्पना स्वीकृत होती हैं।

अतः कम उम्र के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर इस प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं देखा गया है। अन्य आयामो में जैसे की 40 वर्ष से अधिक उम्र वाले शिक्षकों पर इसका प्रभाव पड़ता है तो 35 वर्ष से कम उम्र वाले शिक्षकों के उपर इस प्रशिक्षण का और

गंभीरतापूर्वक प्रयास किये जाने पर कम उम्र के शिक्षकों पर भी संभवतः प्रशिक्षण का असर पड़ सकता है।

$H_{0\text{-}2.4}$ 40 वर्ष से अधिक आयु वाले शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

निष्कर्ष– 40 वर्ष से अधिक आयु वाले शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता के आयाम पर प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षकों के "t" का मान 4.237 है जो कि 1 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर "t" के तालिका मान से अधिक है जिससे उनके मध्यमानों में सार्थक अंतर है। फलस्वरूप उक्त परिकल्पना की पुष्टि नहीं होती व परिकल्पना अस्वीकृत होती हैं।

अतः शिक्षक प्रभावशीलता पर इस प्रशिक्षण का प्रभाव पड़ता है। 40 वर्ष से अधिक आयु वाले शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता की वृद्धि में यह प्रशिक्षण सार्थक है।

जाति के आधार पर :–

$H_{0\text{-}2.5}$ सामान्य जाति के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

निष्कर्ष– सामान्य जाति के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता के आयाम पर प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षकों के "t" का मान 2.737 है जो कि 1 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर "t" के तालिका मान से अधिक है उनके मध्यमानों पर सार्थक अंतर है। फलस्वरूप उक्त परिकल्पना की पुष्टि नहीं होती व परिकल्पना अस्वीकृत होती हैं।

अतः सामान्य वर्ग के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर इस प्रशिक्षण का प्रभाव पड़ता है। प्रशिक्षित सामान्य वर्ग के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता की वृद्धि में यह प्रशिक्षण सार्थक है।

$H_{0\text{-}2.6}$ अन्य पिछड़ी जाति के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

निष्कर्ष– अन्य पिछड़ी जाति के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता के आयाम पर प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षकों के "t" का मान 2.431 है जो कि 5 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर "t" के तालिका मान से अधिक है उनके मध्यमानों में सार्थक अंतर है। फलस्वरूप उक्त परिकल्पना की 0.05 स्तर पर पुष्टि नहीं होती है व परिकल्पना अस्वीकृत होती हैं।

अतः अन्य पिछड़ी जाति के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर इस प्रशिक्षण का प्रभाव पड़ता है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

$H_{0-2.7}$ अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

निष्कर्ष– अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता के आयाम पर प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षकों के "t" का मान 2.173 है जो कि 5 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर "t" के तालिका मान से अधिक है उनके मध्यमानों में सार्थक अंतर है। फलस्वरूप उक्त परिकल्पना की 0.05 स्तर पर पुष्टि नहीं होती है व परिकल्पना अस्वीकृत होती हैं।

अतः अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर इस प्रशिक्षण का प्रभाव पड़ता है।

शालेय स्तर के आधार पर :-

$H_{0-2.8}$ प्राथामिक स्तर के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

निष्कर्ष– प्राथामिक स्तर के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता के आयाम पर प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षकों के "t" का मान 2.861 है जो कि 1 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर "t" के तालिका मान से अधिक है उनके मध्यमानों पर सार्थक अंतर है। फलस्वरूप उक्त परिकल्पना की पुष्टि नहीं होती व परिकल्पना अस्वीकृत होती हैं।

अतः प्राथामिक स्तर के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर इस प्रशिक्षण का प्रभाव पड़ता है। प्रशिक्षित प्राथामिक शाला के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता की वृद्धि में यह प्रशिक्षण सार्थक है।

$H_{0-2.9}$ माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

निष्कर्ष– माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता के आयाम पर प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षकों के "t" का मान 2.662 है जो कि 1 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर "t" के तालिका मान से अधिक है उनके मध्यमानों पर सार्थक अंतर है। फलस्वरूप उक्त परिकल्पना की पुष्टि नहीं होती व परिकल्पना अस्वीकृत होती हैं।

अतः माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर इस प्रशिक्षण का प्रभाव पड़ता है। प्रशिक्षित पूर्व माध्यमिक शाला के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता की वृद्धि में यह प्रशिक्षण सार्थक है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

$H_{0-2.10}$ उच्चतर माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

निष्कर्ष– उच्चतर माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता के आयाम पर प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षकों के "t" का मान 1.795 है जो कि 1 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर "t" के तालिका मान से कम है उनके मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं है। फलस्वरूप उक्त परिकल्पना की पुष्टि नहीं होती व परिकल्पना स्वीकृत होती हैं।

अतः उच्चतर माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर इस प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं देखा गया है। अन्य आयामो में जैसे की शाला के अन्य स्तर के शिक्षकों पर इसका प्रभाव पड़ता है तो उच्चतर माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के उपर इस प्रशिक्षण का और गंभीरतापूर्वक प्रयास किये जाने पर उच्चतर माध्यमिक के शिक्षकों पर भी संभवतः प्रशिक्षण का असर पड़ सकता है।

शैक्षिक अनुभव के आधार पर :–

$H_{0-2.11}$ 10 वर्ष से कम शैक्षिक अनुभव रखने वाले शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

निष्कर्ष– 10 वर्ष से कम शैक्षिक अनुभव रखने वाले शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता के आयाम पर प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षकों के "t" का मान 1.821 है जो कि 1 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर "t" के तालिका मान से कम है उनके मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं है। फलस्वरूप उक्त परिकल्पना की पुष्टि नहीं होती व परिकल्पना स्वीकृत होती हैं।

अतः कम अनुभवी शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर इस प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं देखा गया है। अन्य आयामो में जैसे की 15 वर्ष से अधिक अनुभवी शिक्षकों पर इसका प्रभाव पड़ता है तो 10 वर्ष से कम अनुभवी शिक्षकों के उपर इस प्रशिक्षण का और गंभीरतापूर्वक प्रयास किये जाने पर कम अनुभवी शिक्षकों पर भी संभवतः प्रशिक्षण का असर पड़ सकता है।

$H_{0-2.12}$ 15 वर्ष से अधिक शैक्षिक अनुभव रखने वाले शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

निष्कर्ष– 15 वर्ष से अधिक शैक्षिक अनुभव रखने वाले शिक्षकों के आत्मविश्वास के आयाम पर प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षकों के "t" का मान 4.418 है जो कि 1 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर "t" के तालिका मान से अधिक है जिससे उनके मध्यमानों में सार्थक अंतर है। फलस्वरूप उक्त परिकल्पना की पुष्टि नहीं होती व परिकल्पना अस्वीकृत होती हैं।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

अतः शिक्षक प्रभावशीलता पर इस प्रशिक्षण का प्रभाव पड़ता है। 15 वर्ष से अधिक अध्यापकीय अनुभवी शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता की वृद्धि में यह प्रशिक्षण सार्थक है।

शैक्षणिक योग्यता के आधार पर :-

$H_{0\text{-}2.13}$ **स्नातक स्तर शिक्षित शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।**

निष्कर्ष– स्नातक स्तर शिक्षित शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता के आयाम पर प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षकों के "t" का मान 2.307 है जो कि 5 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर "t" के तालिका मान से अधिक है उनके मध्यमानों में सार्थक अंतर है। फलस्वरूप उक्त परिकल्पना की 0.05 स्तर पर पुष्टि नहीं होती है व परिकल्पना अस्वीकृत होती हैं।

अतः स्नातक स्तर शिक्षित शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर इस प्रशिक्षण का प्रभाव पड़ता है।

$H_{0\text{-}2.14}$ **स्नातकोत्तर स्तर शिक्षित शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।**

निष्कर्ष– स्नातकोत्तर स्तर शिक्षित शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता के आयाम पर प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षकों के "t" का मान 3.415 है जो कि 1 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर "t" के तालिका मान से अधिक है उनके मध्यमानों में सार्थक अंतर है। फलस्वरूप उक्त परिकल्पना की पुष्टि होती व परिकल्पना अस्वीकृत होती हैं।

अतः स्नातकोत्तर स्तर शिक्षित शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता पर इस प्रशिक्षण का प्रभाव पड़ता है।

शिक्षक प्रभावशीलता के विभिन्न आयामों पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा का प्रभाव

$H_{0\text{-}2.15}$ **शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता के विभिन्न आयामों यथा अकादमिक, व्यावसायिक, सामाजिक, भावनात्मक, नैतिक व व्यक्तित्व पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता है।**

निष्कर्ष– शिक्षको के शिक्षक प्रभावशीलता के विभिन्न आयामों पर प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षकों के परिकलित "t" का मान अकादमिक में 2.7 व्यवसायिकता में 3.96 सामाजिकता 2. 57, भावनात्मक में 3.46, नैतिकता में 4.44 एवं व्यक्तित्व में 5.13 है। जो कि 1 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर "t" के तालिका मान से सभी अधिक है। उनके मध्यमानों में सार्थक अंतर

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

है जिससे परिकल्पना की पुष्टि नहीं होती व अस्वीकृत होती अतः शिक्षक प्रभावशीलता के विभिन्न गुणात्मक आयामों को प्रभावकारी बनाने में यह प्रशिक्षण शिक्षकों हेतु सार्थक है।

5.3 शैक्षिक उपादेयता

यह अकाट्य तथ्य है कि संपूर्ण मानव जाति में कोई भी मनुष्य दुखी होना नहीं चाहता, परंतु दुखी होता है। चाहने और होने की दूरी क्यों और कैसे कम हो यह निहितार्थ शिक्षा में हो। मनुष्यों में निरंतर सुखी बने रहने की कामना सभी में विद्यामान है।

वास्तव में जीवन को निरंतर सुखपूर्वक जीने की कला में दक्ष बना देना ही शिक्षा का मुख्य ध्येय हो। शिक्षा वही है जो मनुष्यों को प्रत्येक परिस्थति के लिए तैयार कर दें। वही व्यक्ति वास्तव में शिक्षित है जिसे हर वातावरण पर विजय प्राप्त करना आता है। यही शिक्षा की वास्तविक जीवन निधि है। यही शिक्षा मानव को दृढ़ चित्त और चरित्र देती है। इससे मानव किसी भी अवस्था में विचलित नहीं होता एवं अपनी आदतों पर नियंत्रण रखकर नए परिप्रेक्ष्यों में नूतन दृष्टि का प्रयोग कर सकने मे सक्षम होता है।

प्रस्तुत अध्ययन के शैक्षिक महत्व का एक आधार यह भी है कि शिक्षा का अर्थ केवल विद्यार्थियों को दिये जाने वाले ज्ञान से ही नहीं है बल्कि शिक्षा की प्रक्रिया जन्म से लेकर मृत्यु तक अबाध गति से चलती रहती है। मानव शिक्षा से हर पल कुछ न कुछ सीखता है और उसका कार्य–व्यवहार में उपयोग करता है। यह शिक्षा से ही संभव हैं।

अतः शिक्षा में उन मूल्यों का विकास हो जो स्वयं के लिए आवश्यक है, जिससे यही मूल्य हमें परिवार एवं समाज में सामंजस्यपूर्ण जीने में सक्षमता प्रदान करे। चूंकि विद्यालय सामाजिक मूल्यों के विकास का ऐसा माध्यम है जहां बालक कुछ न कुछ तो ग्रहण करता ही है। इसीलिए विद्यालयों को मानवीय व नैतिक मूल्यों का कार्य स्थल बनाना आवश्यक है। इसे शिक्षक ही संभव कर सकते हैं। चूंकि अध्ययन से चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्रशिक्षण का सकारात्मक प्रभाव शिक्षको के आत्मविश्वास व शिक्षक प्रभावशिलता पर प्रत्यक्षत रूप से दिखता है। फलतः इसका अनिवार्यतः प्रशिक्षण शिक्षकों हेतु उपयोगी है, क्योंकि जिसके पास जो रहता है। वह उसी को बांटता है– शिक्षक अपने आत्मविश्वास एवं प्रभाव की उपयोगिता को समझदारी पूर्वक अपने विद्यार्थियों में विस्तारित करेगा।

वर्तमान किंकर्तव्यविमूढ़ शिक्षकों के समक्ष अपने एवं अपने व्यवसाय के प्रति यह सुदृढ़ विश्वास उत्पन्न करता है जिससे वह गर्व के साथ परिवार व समाज में अपनी पहचान कायम करेगा।

अतः आज की महती आवश्यकता मूल्यों के प्रकाश में शिक्षा प्रदान करने की योग्यता लाने हेतु शिक्षकों में चेतना विकास मूल्य शिक्षा संबंधी उन्मुखीकरण प्रशिक्षण महत्वपूर्ण है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

अध्ययन आधारित शिक्षकों हेतु सुझाव –

1. शिक्षकों को चाहिये कि वे मानवीय मूल्यों की शिक्षा देने के लिए सर्वप्रथम अपने स्वयं के कार्य व्यवहार चरित्र में मानवीय मूल्यों का समावेश करें, तभी उनके द्वारा दी जा रही शिक्षा को छात्र ग्रहण कर सकेंगे।
2. शिक्षक हमेशा समझना–जीना–समझाना के प्रति सजग रहें जिससे जीने के धरातल पर वह विद्यार्थियों के लिए अनुकरणीय हो सके। मानवीय आचरण जीने में ही परिलक्षित होता है।
3. इसी भांति सीखना–करना–सिखाना के प्रति भी शिक्षक सदैव सतर्क रहें ताकि विद्यार्थियों में करने का अभ्यास अर्थात श्रम करने की आदत व उसके प्रति सम्मान का भाव विकसित हो सके।
4. शिक्षकों को प्रत्येक संबंधों के प्रति निष्ठावान होना चाहिए क्योंकि जहां संबंधों के प्रति सही समझ के साथ निर्वाह होता है वहां संबंधों में निहित मूल्य स्वमेव स्वीकृत होते जाते हैं। ताकि शिक्षकों की यह विशेषता बच्चों में अनुकरणीय आदत होने के कारण उनके लिए लाभकारी हो सके।
5. शिक्षा विद्यार्थियों का बहुर्मुखी विकास कर सके इसकी पहल शिक्षकों को अपने स्तर पर आरंभ कर देनी चाहिये और यह तभी संभव है जब शिक्षक इस बात को अंतर मन से स्वीकार करेंगे।

अभिभावकों हेतु सुझाव :–

1. प्रत्येक बच्चों में यह स्वाभाविक गुण है कि वह न्याय चाहता है, सत्य वक्ता होता है व हमेंशा सही कार्य –व्यवहार करने का आकांक्षी होता है। उनके इस स्वाभाविक गुणों की प्रतिपूर्ति एवं संवर्धन के लिए समुचित वातावरण उपलब्ध कराना प्रत्येक अभिभावकों की जिम्मेदारी है जिसे उन्हें बखूबी निभाना चाहिए।
2. पालकों को विद्यार्थियों की गतिविधियों पर सतत नजर रखनी चाहिये और उन पर यथोचित नियंत्रण भी रखना होगा, ताकि उनके जीवन में भटकाव पैदा न हो।
3. अभिभावक विद्यार्थियों की ऐसी दिनचर्या निर्मित करायें जिसमें प्रातः उठने से लेकर रात्रि विश्राम तक सदाचार, संयम, परिश्रम के साथ कार्य करते हुए वे भरपूर प्यार स्नेह और समुचित मार्ग दर्शन को प्राप्त कर सकें।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

विद्यार्थियों हेतु सुझाव :-

1. विद्यार्थियों को नई–नई बातों को जानने के प्रति सदैव उत्सुक रहना चाहिए ताकि जो चीज जैसी है उसे वैसा ही जानकर स्वयं को निर्भय बना सके एवं अपना सर्वांगीण विकास कर सके।
2. विद्यार्थियों को सभी कालखण्डों में अनुशासित रह कर अध्ययन का कार्य पूर्ण करना एवं पाठ्येत्तर गतिविधियों में उत्साहित होकर अधिकाधिक भाग लेना होगा।
3. विद्यार्थियों को परिवार और शाला में कमशः अपने परिजनों एवं साथियों के साथ संपर्क व संबंध को मजबूत रखने की आदत डालनी चाहिए।
4. विद्यार्थियों का प्रत्येक क्रियाकलाप ऐसा हो कि वे स्वयं में विश्वास के साथ खड़ा हो सकें।

प्रशासनिक स्तर पर सुझाव :-

छत्तीसगढ़ शासन के द्वारा मध्यस्थ दर्शन के प्रचार–प्रसार के लिए समुचित मार्गदर्शन एवं सहयोग प्रदान किया जा रहा है इसी संदर्भ में और अधिक सहयोग की आकांक्षा को लेकर निम्न सुझाव प्रस्तुत किये जा रहे हैं –

1. शासन स्तर पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के स्थायित्व एवं निरंतरता हेतु व्यवस्थित रणनीति बनाई जाए। इसकी शुरूवात जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान को केन्द्र बनाते हुए वहां अध्ययन शिविर से पारंगत शिक्षक की व्यवस्था कर की जा सकती है। ताकि डी.एड. छात्राध्यापकों के साथ ही सेवाकालीन शिक्षकों को भी उनके लिए निरंतर आयोजित होने वाले प्रशिक्षणों में इसकी अवधारणा दी जा सके। साथ ही इसके सुव्यवस्थित संचालन हेतु पर्याप्त बजटीय प्रावधान भी रखा जाए।
2. स्कूली शिक्षा एवं मानवीय मूल्यों में परस्परता एवं पूरकता हेतु नियमित अंतराल में इसकी समीक्षा एवं मूल्यांकन होता रहे।
3. मूल्यपरक शिक्षा के लोकव्यापीकरण हेतु समुचित रणनीति बनाई जानी चाहिए।

5.4 भावी अध्ययन हेतु शोध प्रस्ताव :-

1. शिक्षा का उद्देश्य, लक्ष्य एवं विषय वस्तु का विश्लेषणात्मक विवेचन (मानवीय क्रिया कलाप के संदर्भ में)
2. मानव भेद के दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय कारण और चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रकाश में मानव में समानता का अध्ययन।
3. शिक्षा के मानवीयकरण की आवश्यकताः एक अध्ययन (सह–अस्तित्व वाद के संदर्भ में)

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

4. शिक्षा के मानवीयकरण की आवश्यकता एवं संभावनाओं का विवेचनात्मक अध्ययन।
5. बालक के सर्वांगीण विकास के लिए वर्तमान शिक्षा के स्वरूप में मानव संचेतना पक्ष के अध्ययन के समावेश की अपरिहार्यता: एक अध्ययन।
6. द्वंद्वात्मक भौतिकवाद के संघर्ष सिद्वांत की वैकल्पिक व्यवस्था के रूप में सामाधानात्मक सह अस्तित्व के सिद्वात की समालोचनात्मक व्याख्या।
7. मध्यस्थ दर्शन के प्रकाश में मानव विकास का अवधारणात्मक अध्ययन।
8. चेतना विकास मूल्य शिक्षा शिविर किए हुए शैक्षणिक कार्य से जुड़े व्यक्तियों के व्यवहार में आने वाले परिवर्तन का अध्ययन।
9. चेतना विकास मूल्य शिक्षा शिविर किए हुए शैक्षणिक कार्य से जुड़े व्यक्तियों के स्वयं के प्रति विश्वास में हुई वृद्धि का अध्ययन।

विद्यालय स्तर पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रभाव का समीक्षात्मक अध्ययन। (प्रथम कालखंड में पाठ्यक्रम में इसे शामिल किये जाने के आधार पर)

—00—

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

शब्दावली

परिशिष्ट

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

संदर्भ ग्रंथ सूची

- आर्य, डॉ.एस.पी. (1986), प्रारंभिक सामाजिक अनुसंधान, साहित्य भवन आगरा
- आलपोर्ट, जी. डब्ल्यू (1961), पैटर्न एण्ड ग्रोथ इन पर्सनाल्टी, लंडन होल्ट, रिनेहार्ट एण्ड विंस्टन, सौजन्य सायकोलॉजी फॉर टीचर्स, डेविड फोन्टाना पृ. 278
- आर्य, आर. (1994), मध्यस्थ दर्शन के प्रभाव का अध्ययन एम.एड., 2010 रविशंकर वि. वि., रायपुर (छ.ग.)
- अग्रवाल, जे.सी. (2003), राष्ट्रीय शिक्षा नीति, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली पृ. थ्योरी एन्ड मेथड ऑफ साइंस, पृ. 165
- अग्निहोत्री एण्ड गुप्ता. (1985), स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि का उनके आत्मविश्वास पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, एम. एड्. 2012, रविशंकर वि.वि., रायपुर (छ.ग.) पृ. 27
- आडिल, एस. (2012), स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि का उनके आत्मविश्वास पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, एम. एड्. 2012, रविशंकर वि. वि., रायपुर (छ.ग.)
- अग्रवाल, (1988), सर्व शिक्षा अभियान में माध्यमिक स्तर पर नियमित एवं शिक्षाकर्मी शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड्. 2010, रविशंकर वि.वि., रायपुर (छ.ग.) पृ. 20
- एण्डरसन, (2004), शिक्षक एवं शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षक प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड्. 2011, रविशंकर वि.वि., रायपुर (छ.ग.) पृ. 13
- बर्गेस, इ.डब्लू. (1961), अमेरिकन जनरल आफ सोशलॉजी पृ. 492
- भार्गव, महेश, (1996), आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापन, शैक्षिक प्रकाशन, आगरा
- बाजपेयी, (2000), मध्यस्थ दर्शन के प्रभाव का अध्ययन एम.एड., 2010 रविशंकर वि. वि., रायपुर (छ.ग.)
- बघेल, आर.एस. एवं साहू, के.के., (2011–12), शिक्षको एवं डी.एड. छात्राध्यापकों पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रभाव का समीक्षात्मक अध्ययन, शोध प्रोजेक्ट, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, रायपुर, छ.ग.
- बोरिच, (1988), शिक्षक एवं शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षक प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड्. 2011, रविशंकर वि.वि., रायपुर (छ.ग.) पृ. 12
- बन्धु, टी. और कौर, जे. (2006), माध्यमिक स्तर के प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षको की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड्. 2010, रविशंकर वि.वि., रायपुर (छ.ग.) पृ. 35.

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

- बुलदेव, एन. (2010), माध्यमिक स्तर के प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षको की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड्. 2010, रविशंकर वि.वि., रायपुर (छ.ग.) पृ. 17.
- चौहान, (1988), मध्यस्थ दर्शन के प्रभाव का अध्ययन एम.एड., 2010 रविशंकर वि.वि., रायपुर (छ.ग.)
- ढिल्लन, जे. एस. एवं कौर, एन. (2009), टीचर इफेक्टिव्हनेस इन रिलेशन टू देयर वैल्यू पैटर्न्स, एजूट्रैक्स, 9 (3)
- दिवाकर, (1995), मध्यस्थ दर्शन के प्रभाव का अध्ययन एम.एड., 2010 रविशंकर वि. वि., रायपुर (छ.ग.)
- धमीजा एण्ड मल्होत्रा, (1991), स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि का उनके आत्मविश्वास पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, एम. एड्. 2012, रविशंकर वि.वि., रायपुर (छ.ग.) पृ. 27
- गांधी, मोहनदास, (1948), मेरे सपनों का भारत, सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी पृ.55
- गिजूभाई–ग्रंथमाल–7 (2003), शिक्षक हो तो, ई.वी. अनुवाद रामनरेश सोनी
- गौर, आर.आर., बागडिया, जी. सांगल, आर. (2009), ह्यूमेन वैल्यूज एण्ड प्रोफेशनल इथिक्स, एक्सेल बुक्स पब्लि, नई दिल्ली.
- गुप्ता एण्ड गगेल, (1989), मध्यस्थ दर्शन के प्रभाव का अध्ययन एम.एड., 2010 रविशंकर वि.वि., रायपुर (छ.ग.)
- घाली, (2005), विभिन्न विषयों के शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता का अध्ययन, एम. एड्. 2010, रविशंकर वि.वि., रायपुर (छ.ग.) पृ. 27
- जी. बेंज, (1999), शिक्षक एवं शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षक प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड्. 2011, रविशंकर वि.वि., रायपुर (छ.ग.) पृ. 13
- गुप्ता, (2001), शिक्षक एवं शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षक प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड्. 2011, रविशंकर वि.वि., रायपुर (छ.ग.) पृ. 12
- गेरेट, एच. ई. स्टैटिक्स इन साइकोलॉजी एण्ड ऐजुकेशन, मुम्बई : एलाइड पैसिफिक (पी.) लिमिटेड, 1961.
- होडन फील्ड, जी.के., स्टीनेट, टी.एम., (2006), अध्यापकों की शिक्षा आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली
- जॉन, डी. व्ही. (1916), डेमोक्रेसी एन्ड एजुकेशन, ई.डी.
- करलिंगर, एन. फ्रेड (1968), फाउन्डेशन ऑफ विहेवियर रिसर्च,
- कपिल, एच. के. (2012), अनुसंधान विधियाँ (व्यवहारपरक विज्ञानों में), एच. पी. भार्गव बुक हाउस, आगरा

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel PhDei Raipur Univ_c

- कुमार, पी. एण्ड मुथा, डी. एन., टीचर इफेक्टिव्हनेस स्केल फॉर सेकेंडरी टीचर्स : इट्स डेव्हलपमेंट एण्ड स्टैण्डर्डराइजेशन, इंडिया, जे. साइकोमेट्री एण्ड एजुकेशन, 1974 (अंडर पब्लीकेशन)
- कृष्णमूर्ति, जे. (2009), शिक्षा क्या है, राज्यपाल एन्ड संस, नई दिल्ली
- लुंड वर्ग, जी.ए. (1951), सोशल रिसर्च
- लीन, (2002), शिक्षक एवं शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षक प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड्. 2011, रविशंकर वि.वि., रायपुर (छ.ग.) पृ. 13
- लैम्बर्ट तथा डेविसि (1998), शिक्षक एवं शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षक प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड्. 2011, रविशंकर वि.वि., रायपुर (छ.ग.) पृ. 12
- मुक्ता, ए. एवं पाठक, एस. (2007), शोध प्रोजेक्ट वूमेन एज ए ह्यूमेन, महिला अध्ययन केन्द्र बरकतउल्ला वि.वि., भोपाल (म.प्र.),
- मुज़फ्फर, जेड. एवं नासिर, टी. (2011), ए स्टडी ऑफ सेल्फ स्टीम एंड टीचिंग काम्पीटेंस ऑफ प्यूपिल टीचर, एडूसर्च, 2 (2), 97–99.
- महर्षि एस.के. (2007), अध्यापक शिक्षण, नेहा पाब्लिशर्ष, दरियागंज दिल्ली
- नागराज ए. (1998), जीवन विद्या एक परिचय जीवन विद्या प्रकाशन अमरकंटक, श्री भजन आश्रम अमरकंटक पृ. 1
- नागराज ए. (2003), मानव व्यवहार दर्शन, जीवन विद्या प्रकाशन, श्री भजन आश्रम, अमरकंटक
- नागराज ए. (2003), कर्म दर्शन, जीवन विद्या प्रकाशन, श्री भजन आश्रम, अमरकंटक
- नागराज ए. (2003), अनुभव दर्शन, जीवन विद्या प्रकाशन, श्री भजन आश्रम, अमरकंटक
- नागराज ए. (2003), अभ्यास दर्शन, जीवन विद्या प्रकाशन, श्री भजन आश्रम, अमरकंटक
- नागराज ए. (2003), समाधानात्मक भौतिकवाद, जीवन विद्या प्रकशन, श्री भजन आश्रम, श्री नर्मदाअंचल अमरकंटक
- नागराज ए. (2003), व्यवहारात्मक जनवाद, जीवन विद्या प्रकाशन, श्री भजन आश्रम, श्री नर्मदाअंचल अमरकंटक
- नागराज ए. (2003), अनुभवात्मक अध्यात्मवाद, जीवन विद्या प्रकाशन, श्री भजन आश्रम, श्री नर्मदाअंचल अमरकंटक
- नागराज ए. (2003), आवर्तनशील अर्थशास्त्र, जीवन विद्या प्रकाशन, श्री भजन आश्रम, श्री नर्मदाअंचल अमरकंटक

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel PhD Raipur Univ_c

- नागराज ए. (2003), व्यवहारवादी समाजशास्त्र,जीवन विद्या प्रकाशन, श्री भजन आश्रम, श्री नर्मदाअंचल अमरकंटक
- नागराज ए. (2003), मानव संचेतनावादी मनोविज्ञानजीवन विद्या प्रकाशन, श्री भजन आश्रम, श्री नर्मदाअंचल अमरकंटक
- नौटियाल, (1993), शिक्षक एवं शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षक प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड्. 2011, रविशंकर वि.वि., रायपुर (छ.ग.) पृ. 11
- परेशचंद एवं टिंकड़े. (1995), माध्यमिक स्तर के प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षको की शिक्षक प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन, एम.एड़. (2010), रविशंकर वि.वि., रायपुर (छ.ग.)
- पद्मनाभन, (1992), मध्यस्थ दर्शन के प्रभाव का अध्ययन एम.एड., 2010 रविशंकर वि. वि., रायपुर (छ.ग.)
- पवार, (2001), स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि का उनके आत्मविश्वास पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, एम. एड्. 2012, रविशंकर वि.वि., रायपुर (छ.ग.) पृ. 27
- प्रकाशम, (1986), शिक्षको कि शिक्षक प्रभावशीलता का अध्ययन उनके अनुभव एवं विद्यालयों के प्रकार के विशेष संदर्भ में एम.एड़. (2010), रविशंकर वि.वि., रायपुर (छ.ग.) पृ. 31
- रमाकान्त (2008), इंपेक्ट ऑफ इन–सर्विस टीचर एजूकेशन प्रोग्राम्स आन टीचर इफेक्टिव्हनेस एंड स्टूडेन्स एचिव्हमेंट इन इंग्लिश, जरनल ऑफ इंडियन एजूकेशन, 34, 74–76.
- रामचरला, पी. (2009), अमेरिकन सोसायटी ऑफ इंजीनियनिंग एडूकेशन में शोध पत्र प्रकाशित.
- रोलेण्ड, के.ए. (2008), द रिलेशनशिप ऑफ प्रिंसिपाल लीडरशिप एंड टीचर मॉरेल, ए डिसर्टशन प्रेजेंट टू द फैकल्टी ऑफ द स्कूल ऑफ एजुकेशन लिबर्टी यूनिवर्सिटी.
- रिचर्डसन एवं अन्य, (2006), टीचर्स एंड डेयर इंटरनेशनल रैलोकेशन : द इफेक्ट ऑफ सेल्फ स्टीम एंड पे सेटिस्फेक्शन ऑन एड्जस्टमेन्ट एंड आउटकम वेरियेबल्स, इंटरनेशलन एजूकेशन जरनल 7 (7), 883–894। http:lliej.com.94.
- राउल, एस.के. (2007), टीचर इफेक्टिनेट ऑफ आटोनामस एंड नानआटोनामस कालेज टीचर्स, जरनल ऑफ कम्यूनिटी गाइडेंस एंड रिसर्च, 24 (3), 326–339.
- रयान, डी. जी., कैरेक्टरस्टिक्स ऑफ टीचर्स देल्ही : स्टर्लिंग पब्लीकेशन प्रा.लिमिटेड 1989.
- शर्मा, डॉ. शंकर दयाल (1999), शिक्षा के आयाम प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली पृ. 77
- सेन, ए. (2006), भारतीय अर्थतंत्र इतिहास और संस्कृति सन पृ.111 राजपाल एन्ड संस कष्मीरी गेट, नई दिल्ली

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

- सिंह, पी. (2007), समस्या और समाधान, पृ 20, परिवार मानव जुलाई अगस्त संयुक्तांक, मसूरी
- स्वामी ए. (2010), व्यक्तित्व विकास कैसे करें, जाह्नवी प्रकाशन, नई दिल्ली
- श्रीवास्तव, एस., (2010), शिक्षा के एकांगी स्वरूप के संवाहक छात्राध्यापकों एवं शिक्षक प्रशिक्षकों पर माननिय मूल्यों की शिक्षा – मध्यस्थ दर्शन के प्रभाव का अध्ययन एम.एड़, शोध प्रबंध (2010), रविशंकर वि.वि., रायपुर (छ.ग.).
- सिंग, टी.आर. एवं कौर, बी. (2006), इफेक्ट ऑफ स्टेटियेट मेडीटेशन ऑन, इमोशनल मैचयुरटी ऑफ स्टूडेण्ट टीचर्स, सायको–लिंग्वा, 37 (2), 2007.
- सुब्रम्हणयम, (2004), स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि का उनके आत्मविश्वास पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, एम. एड्. 2012, रविशंकर वि. वि., रायपुर (छ.ग.) पृ. 28
- शाह, बीना, (1991), डिटरमिनेट्स ऑफ टीचर इफेक्टिव्हनेस, इन फिफ्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एडूकेशन (1988–92), 11, 1480.
- शुक्ल, एस. एम. एवं सहाय, एस.पी. (2008), सांख्यिकीय विश्लेषण, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा
- सिंघल एवं शर्मा, (1996), शिक्षक एवं शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षक प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड्. 2011, रविशंकर वि.वि., रायपुर (छ.ग.) पृ. 11
- सुब्रम्हणयम, (2001), शिक्षक एवं शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षक प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड्. 2011, रविशंकर वि.वि., रायपुर (छ.ग.) पृ. 12
- टैगोर, रविन्द्रनाथ (1962), शिक्षा, सन्मार्ग प्रकाशन दिल्ली पृ. 24 मान्टेसरी शिक्षण समिति, राजलदेशर
- टाउनशेड़, जे.सी. (1953), इन्ट्रोडक्शन टू एक्सपायरीमेंटल मेथड (एम.सी.ग्रॉव) हिल बुक कं. आइएनसी, न्यूयार्क पृ. 32 (पी.व्ही.टी.एल.टी.डी.)
- तीराम, (1980), शिक्षको कि शिक्षक प्रभावशीलता का अध्ययन उनके अनुभव एवं विद्यालयों के प्रकार के विशेष संदर्भ में एम.एड़. (2010), रविशंकर वि.वि., रायपुर (छ.ग.) पृ. 31
- उपाध्याय, पं. दीनदयाल – 1990 एकात्म मानववाद भारतीय जनता पार्टी म.प्र. प्रादेशिक कार्यालय
- वर्मा, व्ही. (2002), गढ़ छत्तीस, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
- विश्वास और डे, (1995), विभिन्न विषियों के शिक्षको की शिक्षक प्रभावशीलता का अध्ययन, एम.एड. (2010), रविशंकर वि.वि. रायपुर (छ.ग.).
- वासन्न, (1971), स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि का उनके आत्मविश्वास पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, एम. एड्. 2012, रविशंकर वि.वि., रायपुर (छ.ग.) पृ. 28

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

व्यास, (1991), शिक्षक एवं शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षक प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड्. 2011, रविशंकर वि.वि., रायपुर (छ.ग.) पृ. 11

——00——

शब्दावली

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

असार्थक	NON SIGNIFICANT
अध्ययन विधियाँ	METHODS OF STUDY
अनुसंधान	RESEARCH
अनुकरणीय अध्ययन	FOLLOW UP STUDY
अनुभव	EXPERIENCE
अनुसंधानकर्ता	RESEARCHER
अपरिचित	NON FAMILIER
अप्रशिक्षित	UNTRAINED
अवस्था	ORDER
अस्वीकृत	REJECTION
अस्तित्व	EXICESTANCE
औपचारिक	FORMAL
औचित्य	JUSTIFICATION
आत्मविश्वास	SELF CONFIDENCE
आवश्यकता	NEED
उद्देश्य	OBJECTIVE
उपकरण	TOOL
उपादेयता	CONTRIBUTION
उद्देश्यपूर्ण	PURPOSIVE
उत्तरदायित्व	RESPONSIBLE
कार्यकुशलता / दक्षता	EFFICIENCY
कौशल	SKILL
जनसंख्या	POPULATION
चिर	VARIABLE
न्यादर्श	SAMPLE
निष्कर्ष	RESULT

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

निर्देश	INSTRUCTION
परिचित	FAMILIER
परिसीमा	LIMITATION
परिकल्पना	HYPOTHESIS
प्रभावशीलता	EFFECTIVENESS
प्रश्नावली	QUESTIONNAIRE
प्रशिक्षित	TRAINED
प्राक्कथन	PREDICTION
प्रक्षेप	TECHNIQUE
प्रदत्त	DATA
प्रतिदर्श	SAMPLE
प्रमाणिक विचलन	STANDARD DEVIATION
प्रस्तावना	INTRODUCTION
प्रमापीकृत	STANDARDISED
प्रशासन	ADMINISTRATION
परीक्षण	TEST
परिभाषा	DEFINATION
फलांकन	SCORING
मापन	MEASUREMENT
मापनी	SCALE
मूल्य	VALUE
मूल्याकंन	EVALUATION
मध्यमान	MEAN
मानक	NORMS
यादृच्छिक	RANDOM
योग्यता	ABILITY
व्याख्या	INTERPRETATION

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

विकास	DEVELOPMENT
विधि	METHOD
पारिवारिक वातावरण	FAMILY ENVIRONMENT
विश्वसनीय	RELIABILITY
विवरण	DISCRIPTION
वैधता	VALIDITY
विवेचना	DISCUSSION
विश्लेषण	ANALYSIS
स्वतंत्रता के अंश	DEGREE OF FREEDOM
संकल्पना	CONCEPT
समस्या	PROBLEM
सारांश	SUMMARY
सारणी क्रमांक	TABLE NUMBER
सांख्यिकीय विश्लेषण	STATISTICAL ANALYSIS
सामाजिक – आर्थिक स्थिति	SOCIO-ECONOMY STATUS
सुझाव	SUGGESTION
सार्थकता	SIGNIFICANT
सामान्य	GENREL
सार्वभौम	UNIVERSE
स्नातक	GRADUATE
स्नातकोत्तर	POST GRADUATE
स्वीकृत	ACCEPET
संदर्भित ग्रंथ	BIBLIOGRAPHY
लिंग	SEX
सहसंबंध	CORRELATION
शैक्षिक	EDUCATIONAL

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

परिशिष्ट

I उपकरण

1.1 आत्मविश्वास मापनी

1.2 शिक्षक प्रभावशीलता मापनी

II प्रकाशित शोध कार्य

III विविध

III.1 छत्तीसगढ़ स्कूल शिक्षा में चेतना विकास मूल्य शिक्षा समावेश

III.2 चेतना विकास मूल्य शिक्षा संचालित विद्यालक्ष्मी अभिभावक विद्यालय शा.प्रा.शा. कोंकड़ी

III.3 नंद कुमार आई.ए.एस. सचिव स्कूल शिक्षा विभाग का पत्र – छत्तीसगढ़ राज्य में चेतना विकास मूल्य शिक्षा का अभिनव प्रयोग।

III.4 छत्तीसगढ़ शासन, स्कूल शिक्षा विभाग का आदेश

III.5 चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्रकोष्ठ संबंधी जानकारी

T. M. No. 458715

Consumable Booklet of SCI-G (Hindi Version)

Dr. Rekha Gupta (Meerut)

कृपया निम्न सूचनायें दीजिये :—

नाम .... आयु .... लिंग ....

शिक्षा/कक्षा .... विद्यालय ....

जाति .... धर्म .... व्यवसाय ....

निर्देश

यह कोई परीक्षा नहीं है। आगे के पृष्ठों पर कुछ कथन दिए गए हैं जो आपके सम्बन्ध में सही अथवा गलत हो सकते हैं। आप प्रत्येक कथन को पढ़ें, यदि कथन आपके सम्बन्ध में सही अथवा गलत हो तो उन्हीं के नीचे वाले खाने में क्रौस (×) का चिन्ह अंकित कर दें। कृपया ध्यान रखें कि आपको केवल अपने बारे में ही राय देनी है। कोई भी उत्तर सही या गलत नहीं है, जो उत्तर आप देंगे वही सही होगा। यद्यपि समय का बन्धन नहीं है फिर भी कार्य शीघ्रता से करें।

चूँकि आपके उत्तर गोपनीय रखे जायेंगे, अतः निःसंकोच उत्तर दें।

✆ : (0562)2464926

Estd. 1971

NATIONAL PSYCHOLOGICAL CORPORATION

4/230, KACHERI GHAT, AGRA - 282 004

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

क्रमांक	कथन	सही	गलत
1.	आपके साथ प्रायः ऐसा होता है कि काम करने का समय आने तक आप अपना निर्णय नहीं ले पाते हैं।	☐	☐
2.	आप पर कोई बात कही जाय तो प्रायः आप उसका जवाब देने में नहीं चूकते।	☐	☐
3.	लोगों से बातचीत करने में प्रायः कठिनाई अनुभव होती है।	☐	☐
4.	आपकी भावनाओं को बहुत जल्दी ठेस पहुँच जाती है।	☐	☐
5.	कुछ लोगों सें न मिलने के विचार से आप प्रायः सड़क पार करके दूसरी तरफ चले जाते हैं।	☐	☐
6.	इस बात का भय लगा रहता है कि दूसरे लोग आपको नापसन्द करेंगे।	☐	☐
7.	बिना परेशान हुए किसी कठिन परिस्थिति का सामना कर सकते हैं।	☐	☐
8.	कुछ चीजों के लिए लोग आपको प्रायः अनुचित रूप से (unjustly) दोषी ठहरा देते हैं।	☐	☐
9.	आप कुछ खेल खेलने से इसलिए मना कर देते हैं क्योंकि आप उनमें अच्छे नहीं हैं।	☐	☐
10.	हर बात को बहुत ज्यादा सोचते हैं।	☐	☐
11.	आप अपनी भावनाओं को खुलकर प्रदर्शित नहीं कर पाते।	☐	☐
12.	लोग प्रायः आपसे फायदा उठा ले जाने में सफल हो जाते हैं।	☐	☐
13.	किसी काम को करने की सोचते हैं तो उसमें असफल हो जाने का डर (horror) लगा रहता है।	☐	☐
14.	मौके पर सही बात कह पाना कठिन लगता है।	☐	☐
15.	आपके लिए जीवन साधारणतः एक तनाव (strain) की चीज है।	☐	☐
16.	कठिनाई या खतरे (crisis) का सामना करने से पीछे हटते हैं।	☐	☐
17.	किसी एक ही काम पर अपना ध्यान लगाए रखना आपको कठिन लगता है।	☐	☐
18.	कई बार आपने किसी काम को करने का विचार इसलिए छोड़ दिया क्योंकि उनके लिए आपको अपनी योग्यता (ability) कम लगती है।	☐	☐
19.	आपको ये लगता है कि आप चीजों का ठीक से सामना नहीं कर पा रहे हैं।	☐	☐
20.	आप अपना काफी समय भविष्य की चिन्ता में बिता देते हैं।	☐	☐

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

क्रमांक	कथन	सही	गलत
21.	आपने कई अच्छे अवसर गँवा दिए क्योंकि आप जल्दी कोई निर्णय नहीं ले पाते।	☐	☐
22.	आप प्रायः दुःखी-दुःखी से रहते हैं।	☐	☐
23.	आप उतनी ही जल्दी दोस्त बना लेते हैं जितनी जल्दी दूसरे लोग बनाते हैं।	☐	☐
24.	जब दूसरे लोगों की राय आपकी अपनी राय से मेल नहीं खाती तो आप हतोत्साहित (discouraged) हो जाते हैं।	☐	☐
25.	प्रायः अपनी अपूर्ण इच्छाओं को कल्पना में पूरा करके सन्तुष्टि कर लेते हैं।	☐	☐
26.	किसी काम में पहल करने की प्रवृत्ति (to take initiative) की आप में कमी है।	☐	☐
27.	आप प्रायः जल्दी ही हतोत्साहित (discouraged) हो जाते हैं।	☐	☐
28.	भावनात्मक रूप से अव्यवस्थित (upset) हो जाने पर उससे ठीक होने में आपको समय लगता है।	☐	☐
29.	आपको प्रायः ऐसा लगता है कि आपको कोई नहीं समझता।	☐	☐
30.	कभी-कभी आपको इतनी बेचैनी होती है कि आप एक जगह टिक कर नहीं बैठ पाते।	☐	☐
31.	आप सामान्यतः स्वयं को तन्दुरुस्त व शक्तिशाली अनुभव करते हैं।	☐	☐
32.	आप साधारणतः स्वयं को असहाय सा अनुभव करते हैं।	☐	☐
33.	अपने बड़े अफसर के साथ बातचीत शुरू करने में आपको कठिनाई होती है।	☐	☐
34.	आपको नये दोस्त बनाना जरा मुश्किल सा लगता है।	☐	☐
35.	किसी सामाजिक वार्तालाप में आप प्रायः श्रोता ही रहते हैं बजाय वक्ता के।	☐	☐
36.	स्वयं को प्रायः असुरक्षित (insecure) सा अनुभव करते हैं।	☐	☐
37.	बहुत सारे लोगों के सामने बोलना मुश्किल लगता है।	☐	☐
38.	जब दूसरे लोग आपकी ओर देख रहे हों तो आप किसी काम को उतना अच्छा नहीं कर पाते जितना अच्छा कर सकते हैं।	☐	☐
39.	प्रत्येक व्यक्ति द्वारा की गई प्रशंसा या निन्दा का आप पर बहुत असर पड़ता है।	☐	☐
40.	आप स्वयं को एक सफल व्यक्ति मानते हैं।	☐	☐
41.	आपको हमेशा ऐसा लगता है कि आप जो पाना चाहते हैं वो पा सकते हैं।	☐	☐
42.	अपने निर्णयों पर पहुँचने में आपको कठिनाई होती है।	☐	☐

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

क्रमांक	कथन	सही	गलत
43.	किसी खेल या प्रतियोगिता में एक ऐसे विरोधी के सम्मुख जो आप से बहुत अधिक श्रेष्ठ है आप ठीक प्रकार से खेल लेते हैं।	☐	☐
44.	आप यह निर्णय हमेशा पहले कर लेते हैं कि अगला कदम क्या होना चाहिये।	☐	☐
45.	आप बहुत आसानी से दिमाग की परेशानी दूर करके विश्राम की अनुभूति (relaxed) कर लेते हैं।	☐	☐
46.	नीचा दिखाने वाली (humiliating) परिस्थितियों से अन्य व्यक्तियों की अपेक्षाकृत आप ज्यादा परेशान हो जाते हैं।	☐	☐
47.	आप साधारणतः स्वयं को अयोग्य (unworthy) अनुभव करते हैं।	☐	☐
48.	आप जल्दी ही रो पड़ते हैं।	☐	☐
49.	मीटिंग शुरू हो जाने पर अन्दर जाने में आपको झिझक महसूस होती है।	☐	☐
50.	प्रायः निराशा (frustrated) अनुभव करते हैं क्योंकि जो चाहते हैं वो कर नहीं पाते हैं।	☐	☐
51.	आपको लगता है कि आपके दोस्तों ने ज्यादा अच्छी तरह से जीवन के समायोजन किये हैं।	☐	☐
52.	आप अक्सर अनिश्चित (confused) से रहते हैं।	☐	☐
53.	यदि आपको अवसर मिले तो आप एक अच्छे नेता साबित हो सकते हैं।	☐	☐
54.	आपको ये लगता है कि कोई भी बाधा आपको अपना इच्छित लक्ष्य प्राप्त करने से नहीं रोक सकती।	☐	☐
55.	किसी पार्टी वगैरहा में अपने स्वाभाविक (natural) तरीके से व्यवहार कर लेते हैं।	☐	☐
56.	प्रायः जब कोई गम्भीर परिस्थिति गुजर जाती है तब ये सोचते हैं कि आपको ये करना चाहिये था परन्तु नहीं कर पाये।	☐	☐

© 2011 All rights reserved. Reproduction in any form is a violation of Copyright Act.
Consumable Booklet of Agnihotri Self Confidence Inventory (SCI-a) Hindi Version

TEACHER EFFECTIVENESS SCALE

***DR. PRAMOD KUMAR & DR. D. N. MUTHA**

निर्देश :—

इस प्रश्नावली में अध्यापक तथा अध्यापन के विभिन्न कार्यों व / गुणों का विवरण दिया गया है। प्रत्येक गुण व कार्य को एक या अधिक कथनों में प्रदर्शित किया गया है। आपको अपने को अध्यापक के रूप में / अपने सहयोगी अध्यापक को अध्यापक के रूप में / अपने अध्यापक को अध्यापक के रूप में हर कथन पर पाँच में से केवल एक वर्ग पर मूल्यांकन करना है। कथन के जिस वर्ग पर आप अपना/अपने सहयोगी अध्यापक का/अपने अध्यापक का मूल्यांकन करें, उस पर सही (√) का निशान लगा दें। आपके मूल्यांकन का उपयोग केवल अनुसन्धान के लिए ही किया जायेगा तथा इसे पूर्ण रूप से गोपनीय रखा जायेगा। अत: आप प्रत्येक कथन को ध्यानपूर्वक पढ़कर ही स्वयं का / अपने सहयोगी अध्यापक का/अपने अध्यापक का स्पष्टता से मूल्यांकन करें। धन्यवाद !

उदाहरण—अध्यापक A का मूल्यांकन निम्न कथनों पर करना है—

क्र. सं.	कथन	पूर्णतया सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	पूर्णतया असहमत
1.	छात्र के साथ व्यवहार में निष्पक्ष है।	√				
2.	शाला का हर कार्य नियत समय पर समाप्त करता है।			√.		

कथन 1 पर सम्बन्धित अध्यापक का मूल्यांकन "पूर्णतया सहमत" पर किया गया है अत: वर्ग (1) के नीचे सही (√) का चिन्ह लगाया गया है। इसी प्रकार कथन (2) पर सम्बन्धित अध्यापक का मूल्यांकन "अनिश्चित" पर किया गया है अत: वर्ग (3) पर सही (√) का निशान लगाया गया है।

इन्हें भरिये :—

Name of Institution ....

Type of Institution (1) Boys / Girls (2) Government / Private

Name of Teacher ....Age ....years. Sex : Male/Female

Marital Status : Married/Unmarried ....Caste ....

Qualification : M. A. / M. Sc. / M. Com. / B. Ed. / M. Ed. / Any other

Teaching experience .... years.

प्राप्तांक तालिका :—

पृष्ठ	1	2	3	योग
प्राप्तांक				

* Professor of Psychology, Sardar Patel University, Vallabh Vidyanagar - 388 120 ; Gujarat.

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

कथन	पूर्णतया सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	पूर्णतया असहमत
1. जिस विषय को पढ़ाता हूँ / है उस पर पूर्ण अधिकार है ।					
2. अपने ज्ञान का विकास करने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहता हूँ / है ।					
3. अपने पाठ्य-विषय के अतिरिक्त अन्य उपयोगी विषयों, जैसे—तत्कालीन घटनाओं का ज्ञान, सामान्य ज्ञान आदि का ज्ञान देने की क्षमता रखता हूँ / है ।					
4. छात्रों को उनकी समस्याओं का हल ढूँढ़ने के लिए आवश्यकतानुसार परामर्श देता हूँ/ है ।					
5. छात्रों को उपयुक्त उत्प्रेरण (motivation) के योग्य अवसर प्रदान करता हूँ / है ।					
6. वांछनीय लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए कक्षा में पुरस्कार का अधिकतर तथा दण्ड का न्यूनतम प्रयोग करता हूँ / है ।					
7. समस्त छात्रों के प्रति एक-सा व्यवहार करता हूँ / है ।					
8. अपना समय व श्रम छात्रों के लिए स्वेच्छा से देने को सदैव तैयार रहता हूँ / है ।					
9. छात्रों को यथा सम्भव शारीरिक दण्ड नहीं देता हूँ / है ।					
10. छात्रों के साथ शिष्ट भाषा का प्रयोग करता हूँ / है ।					
11. छात्रों के साथ समानता का व्यवहार करता हूँ / है ।					
12. छात्रों के विचारों व प्रस्तावों का सम्मान करता हूँ / है ।					
13. छात्रों को अकारण ही कक्षा के बाहर किसी कार्य के लिए नहीं बुलाता हूँ / है ।					
14. छात्रों द्वारा बताई गई अपनी त्रुटियों को सहर्ष स्वीकार करता हूँ / है ।					
15. संस्था प्रधान का वरिष्ठतम सदस्य के अनुरूप सम्मान करता हूँ / है ।					
16. छात्रों के बेतुके प्रश्नों को भी धैर्य से सुनकर उनका समाधान करता हूँ / है ।					
17. विद्यालय के दैनिक कार्यों में वांछित सहयोग देता हूँ / है ।					
18. भरपूर आत्म-विश्वास (confidence) है ।					
19. विद्यालय की गतिविधियों के सम्बन्ध में अपनी निष्पक्ष राय देता हूँ / है ।					
20. संस्था के हित के विरुद्ध कोई भी कार्य नहीं करता हूँ / है ।					
21. अपने मतभेदों का निवारण विचार-विनिमय द्वारा करता हूँ / है ।					
22. अपने साथी अध्यापकों की पीठ पीछे निन्दा नहीं करता हूँ / है ।					
प्राप्तांक					

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

कथन	पूर्णतया सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	पूर्णतया असहमत
23. साथी अध्यापक के साथ मित्रता व भातृत्व का सम्बन्ध रखता हूँ / है ।					
24. अपने साथी अध्यापक से ज्ञान ग्रहण करने में संकोच नहीं करता हूँ / है ।					
25. अपने साथी अध्यापकों का मार्गदर्शन करने के लिए सदैव तैयार रहता हूँ / है ।					
26. जाति, सामाजिक-स्तर व आर्थिक स्थिति आदि का बिना भेदभाव किए समस्त अभिभावकों के साथ सम्मानजनक व्यवहार करता हूँ / है ।					
27. छात्रों की समस्याओं के समाधान अथवा उनके सद्विकास के लिए अभिभावकों को यथावसर सहयोग देता हूँ / है ।					
28. छात्रों के सर्वांगीण विकास में अभिभावकों का सहयोग प्राप्त करता हूँ / है ।					
29. विद्यालय में संचालित सह-शैक्षणिक क्रियाओं (co-curricular) में रुचि लेता हूँ / है ।					
30. छात्रों की रुचि व क्षमता के अनुसार उन्हें सहशैक्षणिक क्रियाओं (co-curricular) में भाग लेने के लिए तैयार करता हूँ / है ।					
31. सह-शैक्षणिक क्रियाओं (co-curricular) का सुसंचालन करता हूँ / है ।					
32. दैनिक-पाठ योजना नियमित रूप से तैयार करता हूँ / है ।					
33. पाठ के शिक्षण उद्देश्यों से पूर्णतया परिचित हूँ / है ।					
34. उपयुक्त सहायक सामग्री का पहले चयन या निर्माण करता हूँ / है ।					
35. सृजनशील (creative) हूँ / है ।					
36. उत्तरदायी (responsible) हूँ / है ।					
37. अन्तःदृष्टि (insight) है ।					
38. कल्पनाशील (imaginative) हूँ / है ।					
39. समायोजन क्षमता (adjustment capacity) है ।					
40. छात्रों की क्षमता के अनुसार अभ्यास कार्य (गृह-कक्षा) तैयार करता हूँ / है ।					
41. कक्षा में उपयुक्त शिक्षण विधि का उपयोग करता हूँ / है ।					
42. विषय-सामग्री स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करता हूँ / है ।					
43. अभिव्यक्ति (expression) प्रभावशाली है ।					
44. पाठ में छात्रों की रुचि का विकास करता हूँ / है ।					
प्राप्तांक					

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

कथन	पूर्णतया सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	पूर्णतया असहमत
45. श्याम-पट्ट (black-board) का उपयोग करता हूँ / है ।					
46. प्रत्येक छात्र पर व्यक्तिगत ध्यान देता हूँ / है ।					
47. सहायक सामग्री (material aid) का अधिकाधिक उपयोग करता हूँ / है ।					
48. कक्षा अभ्यास कार्य की उपयुक्त परिवीक्षण (supervision) करता हूँ / है ।					
49. लिखित कार्य की समय पर उपयुक्त जाँच करता हूँ / है ।					
50. यथावश्यक उपचारात्मक (remedial) विधियों का प्रयोग करता हूँ / है ।					
51. पाठ की समाप्ति पर पाठ की समीक्षा (review) करता हूँ / है ।					
52. कक्षा की स्वच्छता की ओर ध्यान देता हूँ / है ।					
53. भावात्मक स्थिरता (emotional stability) वाला हूँ / है ।					
54. कक्षा का भयमुक्त नियन्त्रण करता हूँ / है ।					
55. शिक्षा मनोविज्ञान का पूर्ण ज्ञान है ।					
56. शिक्षा मनोविज्ञान का उपयोग छात्रों की व्यक्तिगत भिन्नता के आधार पर करता हूँ / है ।					
57. शिक्षा की नवीनतम प्राविधियों (devices) का ज्ञान प्राप्तकर उनका उपयोग करने के लिए प्रयत्नशील रहता हूँ / है ।					
58. कक्षा व्यवस्था में अधिकाधिक छात्रों का सहयोग लेता हूँ / है ।					
59. विद्यालय में स्फूर्तिमय (smart), क्रियाशील (active) और प्रसन्नचित्त रहता हूँ / है ।					
60. कक्षा में सम्मानित वेशभूषा में रहता हूँ / है ।					
61. नियमित एवं समय का पाबन्द हूँ / है ।					
62. कक्षा में धूम्रपान / चायपान नहीं करता हूँ / है तथा पान आदि खाकर नहीं आता हूँ / है ।					
63. सहयोग की भावना है ।					
64. व्यवसाय के प्रति रुचि है ।					
65. व्यवसाय में निष्ठा (dedication) है ।					
66. विनोदी (humorous) हूँ / है ।					
67. मिशनरी उत्साह (missionary zeal) है ।					
68. छात्रों में नियमितता की आदत पर जोर देता हूँ / है ।					
69. अनुशासित (disciplined) हूँ / है ।					
प्राप्तांक					

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel PhD - Raipur U

ISSN 097-6459

शोध-संप्रेषण

SHODH-SAMPRESHAN

International Research Journal

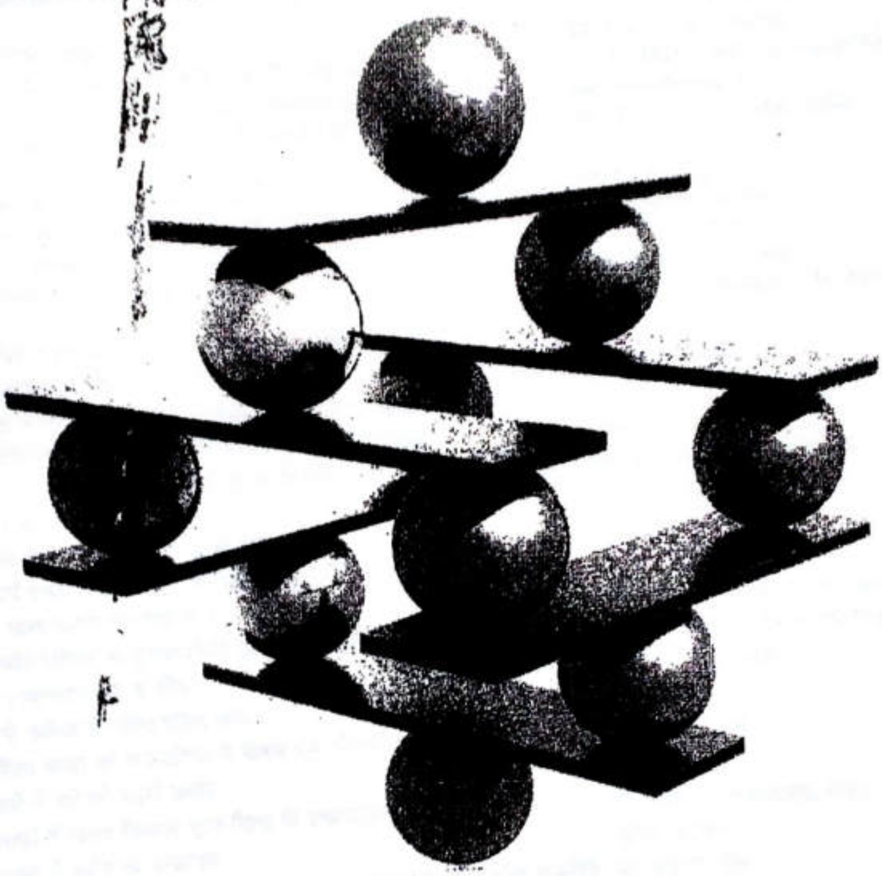

RRDC

शोध एवं अनुसंधान के लिए समर्पित अंतरराष्ट्रीय रिसर्च जर्नल

International Research Journal for Research & Research Activities

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

शोध-संप्रेषण

त्रैमासिक अंतरराष्ट्रीय रिसर्च जर्नल्स

अनुक्रमणिका

1.	Effect of Mass Media (T.V.) on the Aggressive Behaviour of Adolescents	Sandhya Chandrakar	3
2.	Union Budget 2012-13	Dr. Priyanka Vaishnav, Gaurav Sharma	6
3.	Trends of Corruption in India today and its impact on economy	Dr. Prabhunath Singh	11
4.	Corruption in Indian Politics	Mukersh Kumar Malviya & Priyanka Chakrawarti	16
5.	Sting Operation and Right to Privacy	Dr. Vinita Agrawal and Smt. Shradha Pandey	20
6.	Global Warming	Dr. Ranjana Sharma	22
7.	A Comparative study of SC and ST higher,....	Dr. K.Nagamani, Dr. Kavita Verma	26
8.	Fantasy in Saul Bellow's Novel Henderson the Rain King	Dr. Kannambal.M	32
9.	Love, Power and Passion in Paulo Coelho's 'The Winner Stands Alone'	Dr. K.L.Verma, Anita Saha	36
10.	Slum Population in Chhattisgarh	Dr. C. R. Ratre	38
11.	Human Resource Management in India	Dr. Jawahar Lal Roy	44
12.	Role of family in Nation building	Prof. P.K.Sharma	48
13.	Techniques of Artificial Clouding	Manoj Kumar Jhariya Pandu Ram Paikra, K.P. Sahu	51
14	माध्यमिक शाला के छात्रों की उपलब्धि पर गणितीय सर्जनात्मकता के प्रभाव का अध्ययन	कु. प्रीति श्रीवास्तव	55
15.	उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिभावक प्रोत्साहन में संबंध	संध्या चंद्राकर	59
16.	भारतीय चुनाव प्रक्रिया में कमियाँ सुधार के उपाय	डॉ.हरीश कश्यप, डॉ.प्रमोद यादव	63
17.	जैनेन्द्र के त्यागपत्र में स्त्री-विमर्श	डॉ. सुनील बाबूराव कुलकर्णी	65
18.	रघुवीर सहाय और गद्य कविता की निष्पत्ति	डॉ. मालती साहू	68
19.	आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की साहित्येतिहास लेखन दृष्टि	प्रो. डॉ. सुनील डहाळे	72
20.	क्या भारत धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है ?	मुकेश कुमार मालवीय, गोविन्द कुमार मालवीय	75
21.	मानवीय संवेदना के कुशल चितेरे कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद	डॉ. श्रद्धा चन्द्राकर, श्रीमती रजनी यदु	78
22.	वेद : मानवाधिकार के स्रोत	डॉ. सरस्वती अग्रवाल	80
23.	हिन्दी कविता में वर्णित दलित जीवन	डॉ. शीला शर्मा	84
24.	पूर्वोत्तर बस्तर की जनजातियों में पोषण एक भौगोलिक विश्लेषण	डॉ. टी. एल. वर्मा	88
25.	छात्रों में नशे की बढ़ती प्रवृत्ति	डॉ. जया ठाकुर	96
26.	शिक्षकों में चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रभावशीलता पर एक अध्ययन	डॉ. शोभा पुरकर,आर.एस. बघेल	98
27.	धम्मपद में अर्हत् का सम्प्रत्यय	कुमारी सांत्वना	100
28.	वैश्विक जलवायु परिवर्तन पर कार्बन क्रेडिट व्यवसाय की अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति	डॉ. प्रभुनाथ सिंह	104
29.	21 वीं सदी में वैश्वीकरण का बढ़ता दुष्प्रभाव	डॉ. मालती तिवारी	115
30.	शिक्षा अनुसंधान मे टाईप -वन त्रुटि तथा टाईप -टू त्रुटियॉ	डॉ. तृषा शर्मा	118
31.	भारतीय महिलाएँ और कानून	डॉ. अंजली कश्यप	121
32.	गीतगोविन्द : लालित्यपूर्ण अनुवाद की संप्रेषणीयता	डॉ. राजेश दुबे, डॉ. सुधीर शर्मा	123

• शोधपत्रों के प्रकाशन के लिए संपादक/संपादक मंडल से सहमति अनिवार्य नहीं है । • आलेखों के तथ्यों के लिए लेखक, शोधकर्ता ही उत्तरदायी हैं । • संपादक सहित सभी पद अवैतनिक • सभी विवाद रायपुर (छ.ग.) न्यायालय में ही मान्य

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

शिक्षकों में चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रभावशीलता पर एक अध्ययन

प्रत्येक व्यक्ति की यह आंतरिक प्रेरणा व कामना होती है कि वह सर्वसुख प्राप्त करे और उसी को वह अपने जीवन की लक्ष्यपूर्ति भी समझता है। इसी लक्ष्यपूर्ति के लिए शिक्षा अनिवार्य है जो न केवल भौतिक वातावरण की आवश्यकता एवं मांग है, बल्कि सामाजिक वातावरण के साथ समायोजन करने के लिए भी आवश्यक है।

शिक्षा एक ऐसी शक्ति है जो मानव को मानव बनाने में सहायक सिद्ध होती है और यह विद्यार्थियों पर अपना प्रभाव किसी न किसी मूल्य के रूप में डालती है। विद्यार्थियों को जिस प्रकार की शिक्षा परिवार, विद्यालय और समाज से प्राप्त होती है उसी के अनुरूप मूल्य विकसित हो जाते हैं।

[illegible]

छत्तीसगढ़ शासन शिक्षा विभाग ने नवम्बर 2007 से 'मध्यस्थ दर्शन' पर आधारित चेतना विकास मूल्य शिक्षा (जीवन विद्या) के माध्यम से सर्वप्रथम स्कूल शिक्षकों को इस दिशा में संकल्पित करने और निष्ठा भाव से मानव के लिए जीवनोपयोगी शिक्षा प्रदान करने की पहल की। शिक्षा के स्वरूप को लोकहितकारी बनाने के साथ ही साथ इसे व्यक्ति (शिक्षकों एवं विद्यार्थियों) के सर्वांगीण विकास से जोड़ा गया। जिसमें मात्र शरीर–पोषण तक सीमित, भौतिकवादी व्यवस्था में बंधी शिक्षा के स्थान पर जीवन पोषण, आत्मप्राण पर आधारित मानवतावादी शिक्षा पर बल दिया गया है।

मध्यस्थां दर्शन एक ऐसी विचारधारा है जो विश्व की प्रमुख विचारधाराओं, भौतिकवादी और आध्यात्मवादी के मध्य का मार्ग प्रस्तुत करते हुए तन, मन, धन से समझदारी पूर्वक और सदुपयोगी जीवन जीने का मार्ग प्रशस्त करती है। मध्यस्थ दर्शन प्रकृति में मेरी खुशी और सबकी तृप्ति के साथ सहआधित्व की प्रधानता को स्वीकारता है, जिससे "जीने दो और जियो" एक मूल मंत्र बन जाता है। मध्यस्थ दर्शन (सह अस्तित्ववाद) वर्तमान में विश्व समुदाय के समक्ष एक ऐसा अभिकल्प (मॉडल) प्रस्तुत करता है जिसमें निरन्तर सुख प्रत्येक व्यक्ति को उपलब्ध होगा, व्यक्ति शिक्षित और संस्कारित होगा।

चेतना विकास मूल्य शिक्षा वास्तव में मानवीय शिक्षा का निस्पयीकरण है। प्रस्तुत अध्ययन हेतु प्रदेश के दो जिले दुर्ग एवं महासंमुद के क्रमशः धमधा एवं महासमुंद विकासखण्ड के तीन–तीन शैक्षिक संकुलों को लिया गया है। इन संकुलों के शिक्षकों पर शोध कार्य केन्द्रित है। चेतना विकास मूल्य शिक्षा (जीवन विद्या) कक्षा 1से 5वीं तक के लिए निर्मित पुस्तक का क्षेत्र परीक्षण किया गया है। इन संकुलों के शिक्षकों को चेतना विकास मूल्य शिक्षा का सात दिवसीय एवं दस दिवसीय दो शिविरों के माध्यम से मूल्य आधारित शिक्षा की प्रारंभिक अवधारणाओं से परिचित कराया गया है। परिचय शिविर सम्मिलित इन शिक्षकों को प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक कहा गया है एवं चेतना विकास मूल्य शिक्षा के उक्त दोनों शिविरों में सम्मिलित न होने वाले शिक्षकों को प्रशिक्षित शिक्षक कहा गया है। इन संकुलों के 50 प्रशिक्षित तथा 50 अप्रशिक्षित शिक्षकों का चयन उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन विधि से किया गया। अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्न है :–

- चेतना विकास मूल्य शिक्षा का शैक्षिक वातावरण निर्माण में पड़ने वाले सकारात्मक प्रभाव का अध्ययन करना।
- शिक्षकों के शैक्षिक अभिरूचि, छात्रों के साथ सार्थक संबंध, छात्रों के सम्मुख स्वयं की अभिव्यक्ति, शिक्षकों के व्यवहार तथा शिक्षकों के

डॉ. शोभा पुरकर
विभागाध्यक्ष,
शिक्षा संकाय
कल्याण स्नातकोत्तर
महाविद्यालय
भिलाई नगर
एवं
आर.एस.बघेल
सहायक प्राध्यापक
एस.सी.ई.आर.टी.
शंकर नगर, रायपुर
(छत्तीसगढ़)

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

अनुभव पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना है।

परिकल्पना –

इस अध्ययन में निम्नांकित परिकल्पनाओं की रचना की गयी है –

- चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्राप्त प्रशिक्षित शिक्षकों पर कक्षा शैक्षिक वातावरण के निर्माण में सकारात्मक प्रभाव होता है।
- चेतना विकास मूल्य शिक्षा शिक्षकों की अभिरूचि, छात्रों के साथ अर्न्तसंबंध, स्वयम् की अभिव्यक्ति का सार्थक धनात्मक प्रभाव होता है।
- शिक्षकों के विचार, व्यवहार, तथा अनुभव का धनात्मक प्रभाव पड़ता है।

उपकरण –

प्रस्तुत अध्ययन में स्वनिर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया गया है जिसमें बहु विकल्पीय प्रश्न जिसके कुल अंक 105 है। उपरोक्त तालिका द्वारा प्राप्त परिणाम यह दर्शाते है कि चेतना विकास मूल्य के विभिन्न आयामों में प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के मध्य सार्थक अंतर प्रदर्शित हो रहे है, यह शासन द्वारा एक अभिनव प्रयास है जिसमें शिक्षकों को मूल्य परक शिक्षा के क्षेत्र में निश्चित रूप से धनात्मक प्रभाव होता है यदि शिक्षा के सभी स्तरों पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया जाये तो उनके शैक्षिक वातावरण, अभिरूचि, छात्रों के साथ अंर्तसंबंधों, स्वयं के प्रति अभिव्यक्ति, विचारों की सार्थकता में वृद्धि होगी और समाज में मूल्य परक शिक्षा में क्रांति आयेगी।

चेतना विकास मूल्य शिक्षा के विभिन्न आयाम	शिक्षकों की संख्या	मध्यमान	प्रामाणित विचलन	'टी' मूल्य
1. शैक्षिक वातावरण	प्रशिक्षित 50	33.6	5.16	2.16*
	अप्रशिक्षित 50	33.3	5.44	
2. शैक्षिक अभिरूचि	प्रशिक्षित 50	44.2	6.76	2.08*
	अप्रशिक्षित 50	33.5	6.26	
3. छात्रों के साथ अंर्तः संबंध	प्रशिक्षित 50	35.8	5.21	2.2*
	अप्रशिक्षित 50	33.6	4.75	
4. स्वंय में अभिव्यक्ति	प्रशिक्षित 50	38.1	6.2	1.88
	अप्रशिक्षित 50	35.8	6.01	
5. शिक्षकों द्वारा कक्षा में रूचिकर एवं प्रभावी अध्ययन	प्रशिक्षित 50	26.6	4.2	2.03*
	अप्रशिक्षित 50	25.0	3.7	
6. शिक्षकों के विचारों की सार्थकता	प्रशिक्षित 50	13.4	2.55	2.2*
	अप्रशिक्षित 50	12.08	3.04	
7. शिक्षकों के व्यवहारों की सार्थकता	प्रशिक्षित 50	23.06	2.8	3.00*
	अप्रशिक्षित 50	22.1	2.76	
8. शिक्षकों के अनुभव की सार्थकता	प्रशिक्षित 50	40	6.85	2.13*
	अप्रशिक्षित 50	37.1	6.83	

सन्दर्भ –

- शर्मा, शंकर दयाल 1999 : शिक्षा के आयाम, प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली–पृ.–77
- नागराज 2004 : जीवन विद्या एक परिचय, जीवन विद्या प्रकाशन, अमरकंटक, श्री भजन आश्रम, पृ. 1

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

छत्तीसगढ़ स्कूल शिक्षा में चेतना विकास मूल्य शिक्षा समावेश हेतु

*****

1 चेतना विकास मूल्य शिक्षा की आवश्यकता
2 जीवन विद्या विधि से देश में प्रयोगों पर एक नजर
3 छ0ग0 स्कूल शिक्षा में अभी तक हुए प्रयास
4 भविष्य की योजना व क्रियान्वयन हेतु कुछ बिंदु

सूचनार्थ

1 डॉ. रमन सिंह जी
मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़ शासन

2 श्री अजय चंद्राकर जी
स्कूली शिक्षा मंत्री

3 श्री नंदकुमार जी
सचिव स्कूली शिक्षा, छत्तीसगढ़

प्रस्तुतकर्ता

सोम
अभ्युदय संस्थान, अछोटी
जिला–दुर्ग

(9301700400)

13 सितंबर 2008

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

चेतना विकास मूल्य शिक्षा की आवश्यकता

कुछ ज्वलंत प्रश्न–

1. पर्याप्त धन अर्जित करने के बावजूद भी क्या हम आर्थिक रूप से स्वयं को सुरक्षित महसूस कर पाते हैं ?
2. क्या उम्र बढ़ने के साथ–साथ हम अकेले नहीं हो रहे हैं ? शायद एक भी संबंध में हम ऐसा नहीं जी पा रहे हैं जैसा हम जीना चाहते हैं ?
3. क्या हमारी अधिकांश उपलब्धियां एवं सफलता दूसरों की तुलना में नहीं है ? क्या इससे मिला विश्वास स्थायी है ? हम स्थायी विश्वास चाहते है या अस्थायी ?
4. बच्चों की कितनी भी महंगी उपलब्ध विद्यालयी शिक्षा देने के बाद भी क्या हम सुनिश्चित से कह सकते है कि भविष्य में हमारे अपने बच्चों से संबंध बहुत सुखद होंगे ?
5. सारी शिक्षा के बाद क्या हम स्वस्थ जीवन जीने में सक्षम होते है ?
6. ग्लोबल वार्मिंग (धरती का गरम होना) में शिक्षित लोगों का योगदान अधिक है या अशिक्षित का ?
7. क्या प्रचलित शिक्षा बढ़ने के साथ मानव की संबंधों में तालमेल पूर्वक जीने की योग्यता बढ़ी है ?
8. शिक्षा के प्रचार–प्रसार के साथ–साथ राजनीति, धर्मनीति आर्थिक, शैक्षणिक, स्वास्थ्य सेवाओं के प्रति आम आदमी का विश्वास बढ़ रहा है या घट रहा है ?

अतः प्रचलित शिक्षा से हुई तमाम उपलब्धियों का सम्मान करते हुए एवं अभाव को पहचानते हुए अभाव की पूर्ति करने की आवश्यकता है । उपरोक्त सभी समस्याओं का व्यवहारिक समाधान चेतना विकास मूल्य शिक्षा से संभव है । चेतना विकास मूल्य शिक्षा का स्त्रोत मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद है जिसके प्रणेता श्री ए.नागराज है ।

धरती पर मुख्य रूप से पदार्थ, पेड़–पौधे, पशु–पक्षी व मानव ये चार अवस्थाएं विद्यमान हैं । मानव के अलावा शेष तीनों अवस्थाओं में हर इकाई का आचरण निश्चित है अर्थात हर इकाई स्वयं में व्यवस्था है, समग्र व्यवस्था में भागीदार है । संपूर्ण प्रकृति स्वयं में व्यवस्था है । हर मानव भी व्यवस्था

में जीना चाहता है । लेकिन प्राकृतिक रूप में मानव जैसा है, प्रकृति जैसी है, प्राकृतिक व्यवस्था जैसी है, उसे न समझ पाने के कारण मानव अव्यवस्थित जीने के लिए बाध्य है । यही मानव का अनिश्चित आचरण है । धरती पर सारी समस्याऐं मानव के अनिश्चित आचरण से है । सारी समस्यायें भ्रमित मानसिकता का फलन है एवं सम्पूर्ण व्यवस्था समाधानित मानसिकता का फलन है । भ्रमित मानसिकता ही जीव चेतना है समाधान सम्पन्न मानसिकता ही मानव चेतना है।

कोई भी मानव मूल रूप में गलती करना नही चाहता है जीव चेतना वश भ्रमित विधि से अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने के कम में गलती करता है । यही समस्त समस्याओं का कारण है । मानव चेतना विधि से हर मानव समाधान (सुख) एवं समृद्दि पूर्वक जी सकता है ।

इस प्रकार जीव चेतना से मानव चेतना में संकमण ही चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम का लक्ष्य है ।

चेतना विकास मूल्य शिक्षा, कार्यक्रम मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रस्तावित निम्नलिखित आधारभूत शर्तो को पूरा करता है ।

1. **पाठ्यक्रम दर्शन आधारित हैं। सार्वभौम मानवीय मूल्यों को व्याख्यान्वित करता है।**
2. **पाठ्यक्रम किसी भी प्रकार के अंधविश्वास, कर्मकाण्ड, पूजन पद्धति से सर्वथा मुक्त है। किसी भी प्रकार के सम्प्रदायवाद एवं रहस्यवाद से मुक्त है।**
3. **पाठ्यक्रम तर्क आधारित है। प्रतिभागी तर्कपूर्ण ढंग से इसका प्रयोगों एवं विश्लेषण द्वारा परीक्षण कर सकते है।**
4. **इसके अध्ययन के लिए पुस्तकें उपलब्ध हैं ।**
5. **इसे कार्य–व्यवहार में लाकर इसका परीक्षण किया जा सकता है ।**

जीवन विद्या विधि सम्पन्न से कुछ प्रयोगों पर एक दृष्टि

1 तकनीकी शिक्षा छत्तीसगढ़ –

सन 2001 में अभ्युदय संस्थान की स्थापना हुई । आई0आई0टी0 दिल्ली व एन0आई0टी0 रायपुर के सहयोग से सन 2002 में एन0आई0टी0 के 2000 छात्रों ने अभ्युदय संस्थान में जीवन विद्या शिविर किया । स्वामी विवेकानंद तकनीकी विश्व विद्यालय ने जीवन विद्या आधारित मूल्य शिक्षा को नियमित पाठ्मक्रम के रूप में सभी कालेज में शुरू कराया । पूर्व राष्ट्रपति ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम ने स्वयं एन0आई0टी0 रायपुर आकर जीवन विद्या आधारित गतिविधियों का अवलोकन किया ।

2 आई0आई0टी0 दिल्ली –

सन् 1993 से आई0आई0टी0 दिल्ली में जीवन विद्या आधारित कोर्स पढ़ाते रहे । आई0आई0टी0 दिल्ली में राष्ट्रीय मूल्य शिक्षा संसाधन केन्द्र (इंजीनियरिंग हेतु) ने जीवन विद्या पर आधारित तीन कोर्स बनाये । वर्तमान में आई0आई0टी0 दिल्ली में आने वाले सभी छात्रों को चेतना विकास मूल्य शिक्षा का परिचय दिया जाता है । 22–24 मई 2007 को आई0आई0टी0 दिल्ली में आई0आई0आई0टी0 हैदराबाद व आई0आई0टी0 कानपुर के संयुक्त तत्वाधान में तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन हुआ जिसका उद्घाटन तत्कालीन राष्ट्रपति ए.पी.जे.अब्दुलकलाम ने किया ।

3 आई0आई0टी0 कानपुर –

यहाँ भी छात्रों एवं शिक्षकों हेतु जीवन विद्या शिविर आयोजित किये जाते हैं । इसे नियमित पाठ्यक्रम में लाने का प्रयास जारी है ।

4 आई0आई0आई0टी0 हैदराबाद –

सभी छात्रों को जीवन विद्या शिविर कराया जाता है । यह उनके नियमित पाठ्यक्रम का हिस्सा है । कालेज में रैगिंग रूपी समस्या का समाधान हुआ है । छात्रों में परिवार एवं समाज के प्रति जिम्मेदारी का भाव विकसित हुआ है । शिक्षक विद्यार्थी संबंध भी पहले से बेहतर हुआ है ।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

सोमैया विद्या विहार मुम्बई – इस संस्थान में लगभग 27000 छात्र अध्ययनरत् हैं । यहाँ मैंनेजमेंट, इंजीनियर, आर्टस, कॉमर्स एवं मेडिकल कालेज हैं । यहां जीवन विद्या प्रकोष्ठ की स्थापना 2007 से हुई । लगातार जीवन विद्या शिविरों का कम चलता रहता है । 07 से 09 सितम्बर, 2008 को सोमैया विद्या विहार मुम्बई में गोल्डन जुबली समारोह का आयोजन हुआ जिसमें मुख्य रूप से चेतना विकास मूल्य शिक्षा का क्रियान्वयन कैसे हो सकता है इस पर कार्यशाला आयोजित की गयी ।

छ0ग0 स्कूली शिक्षा में अभी तक हुए प्रयास

दिनांक 06 नवम्बर 2007 आदरणीय श्री ए0 नागराज (प्रणेता मध्यस्थ दर्शन सह अस्तित्ववाद) की माननीय मुख्य मंत्री छ0ग0 शासन डा0 रमन सिंह से भेट हुई । इसमें श्री नंदकुमार शिक्षा सचिव, श्री अग्निहोत्री जी वरिष्ठ पत्राकार एवं अभ्युदय संस्थान के सदस्यगण उपस्थित थे । चर्चा का मुख्य मुद्दा चेतना विकास मूल्य शिक्षा रहा । जिसके आधार पर ग्लोबल वार्मिंग, प्रदूषण, अपना–पराया की दूरी से मुक्ति हो सकती है। इसके निवारण हेतु **"स्वयं में विश्वास, श्रेष्ठता का सम्मान, प्रतिभा एवं व्यक्तित्व में संतुलन, व्यवसाय में स्वावलंबन, व्यवहार में सामाजिकता पूर्वक जीने योग्य जनमानस को तैयार करने की आवश्यकता है ।"** श्री ए.नागराज जी द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव के आधार पर माननीय मुख्यमंत्री ने श्री नन्दकुमार जी को उपरोक्त प्रस्ताव का अध्ययन कर क्रियान्वयन करने की जिम्मेदारी सौपी ।

दिनांक 07 नवंबर 2007 – आदरणीय नागराज जी ने श्री नन्दकुमार जी से भेंट कर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के स्वरूप व कार्यक्रम पर चर्चा की। शिक्षा विभाग के विभिन्न स्तरों के अधिकारियों हेतु जीवन विद्या शिविरों का क्रम प्रारंभ हुआ

चेतना विकास मूल्य शिक्षा के मूल में मध्यस्थ दर्शन सह अस्तित्ववाद है। जीवन विद्या शिविर चेतना विकास कार्यक्रम हेतु परिचयात्मक प्रस्तुति है।

श्री नन्दकुमार जी ने स्वयं स्फूर्त प्रेरणा से 7 दिवसीय पूर्ण आवासीय शिविर अभ्युदय संस्थान में रहकर किया। स्वयं आश्वस्त होने के बाद SECRT के सभी सदस्य, सभी D.E.O. सर्व शिक्षा अभियान, साक्षरता के जिला स्तर के अधिकारी, डी.आई.ई.टी. के प्राचार्य व अन्य प्राचार्यों ने शिविरों में भाग लिया। इस प्रकार अभ्युदय संस्थान व **अमरकण्टक में 20 जीवन विद्या शिविर सम्पन्न हुए,** जिसमें

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

लगभग 650 लोगों ने भाग लिया । सभी शिविरों में प्रबोधन कार्य अभ्युदय संस्थन के सदस्यों ने उपकार विधि अर्थात् निःशुल्क किया ।

इन शिविरों से प्रतिभागियों में स्वयं में विश्वास, संबंधों में तालमेल, शिक्षा किस प्रकार जीवनोउपयोगी हो सकती है ? और जिन्दगी कैसे उत्सव पूर्ण हो सकती है ? इसकी एक झलक देखी । इस उत्साह को देखकर इसे पूरे स्कूली शिक्षा में ले जाने के लिये Edusat का सफल प्रयोग किया गया ।

दिनांक 26–27 फरवरी, 2008 को दो दिन सुबह 10 से शाम 5 बजे तक अलग–अलग प्रतिभागियों के साथ प्रयोग किया गया कि जीवन की वास्तविकताओं से जुड़ा यह गहरा प्रयोग Edu sat के माध्यम से सम्पन्न हो सकता है ? परिणाम इतना उत्साहित करने वाले थे कि दूसरे दिन संख्या पहले दिन से भी अधिक थी ।

दिनांक 4–10 मई को 1256 CAC's के साथ पूरा शिविर किया गया। लेकिन सात दिन का समय कम रहा। प्रतिभागियों ने अनुरोध किया कि समय बढ़ा कर 10 दिन किया जाए।

दिनांक 25 जून–4 जुलाई स्कूल शिक्षा के 1200 प्राचार्यों के साथ 10 दिवसीय शिविर सम्पन्न किया गया।

इस प्रकार लगभग 2876 प्रतिभागियों हेतु 7 व 10 दिवसीय शिविर किये गए एवं लगभग 1600 प्रतिभागियों को 1 दिवसीय गोष्ठी के माध्यम से जीवन विद्या से परिचित कराया गया । उपरोक्त सभी प्रयास अभ्युदय संस्थान द्वारा उपकार विधि अर्थात निःशुल्क किया गया ।

<u>अभिप्रेरणा प्रकोष्ठ</u> :– उपरोक्त सफलता के आधार पर शिक्षा मंत्री श्री अजय चन्द्राकर जी ने चेतना विकास मूल्य शिक्षा को छ.ग. स्कूली शिक्षा में स्थापना हेतु अभिप्रेरणा प्रकोष्ठ की स्थापना की ।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

अभिप्रेरणा प्रकोष्ठ

अभिप्रेरणा अर्थात् अभ्युदय के अर्थ में प्रेरणा (अभ्युदय = सर्वतोमुखी समाधान = चेतना विकास मूल्य शिक्षा)

उद्देश्य :–

1. ज्ञान विवेक विज्ञान अर्थात् ज्ञान पक्ष में एकरूपता
2. मूल्य चरित्र नैतिकता में एकरूपता
3. प्रबुद्धता संप्रभुता प्रभुसत्ता में एकरूपता

प्रक्रिया :–

1. हर समझदार मानव परिवार में समाधान समृद्धि प्रमाणित होना।
2. लोक न्याय सर्वसुलभ होना।
3. उर्जा संतुलन सर्वसुलभ होना।
4. अखण्ड राष्ट्र, राष्ट्रीय चरित्रा, चेतना विकास कार्य सर्वसुलभ होना ।
5. सार्वभौम व्यवस्था सूत्र अध्ययन अखण्ड राष्ट्र एवं समाज में सर्वसुलभ होना ।

अध्ययन का स्त्रोत :–

– अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन ज्ञान रूपी मध्यस्थ दर्शन–सहस्तित्व–वाद एवं शास्त्र, शिक्षा–संसार विधि से विकल्प रूप में प्रस्तुत है।

– उपरोक्त उद्देश्य की पूर्ति हेतु मध्यस्थ दर्शन आधारित प्रबंध, निबंध–सदग्रंथ रहेगा।

– भारत सरकार एवं राज्य सरकार मनसा का अध्ययन स्त्रोत रूप में रहेगा, जो अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था के अर्थ में रहेगा।

उपलब्धि

– सार्वभौम मानवीय आचरण
सार्वभौम मानवीय शिक्षा
सार्वभौम मानवीय व्यवस्था
सार्वभौम मानवीय संविधान

धरती पर मानव परम्परा हेतु हर परिवार के समाधान के समृद्धि पूर्वक जीने के लिये उपरोक्त चारों बिन्दुओं पर सूत्र व्याख्या आवश्यक है। शिक्षा संस्कार विधि से अध्ययन गम्य होने के लिये यह भी **आवश्यक है कि सूत्र व्याख्या, रहस्यवाद एवं सम्प्रदायवाद से मुक्त हो, तर्कपूर्ण हो एवं जीने के व्यावहारिक स्वरूप को स्पष्ट करता है। अभिप्रेरणा प्रकोष्ठ सभी प्रस्तुत प्रस्तावों को उपरोक्त आधार पर अध्ययन करेगी।** सर्वशुभ हेतु जांचना एवं जन–जन तक पहुंचाना ही राज्य स्कूली शिक्षा का दायित्व एवं वैभव है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

भविष्य की योजना एवं कियान्वयन हेतु कुछ बिंदु

दिनांक 11 सितम्बर 2008 को अभ्युदय संस्थान में आदरणीय नागराज जी, श्री नन्दकुमार जी व अभ्युदय परिवार की उपस्थिति में हुई चर्चा –

1. सहायक वाचन के रूप में कक्षा 1 से 10 तक चेतना विकास मूल्य शिक्षा हेतु पाठ्य पुस्तक का लेखन। अभ्युदय परिवार इसमें भागीदार होगा।
2. **वर्ष 2009–10 में इसे क्रियान्वित करने हेतु राज्य सरकार की अनुमति। इस हेतु कक्षावार पाठ्यक्रम संलग्न है ।**
3. जीवन विद्या शिविर मानवीय शिक्षा (चेतना विकास मूल्य शिक्षा) हेतु सुचना है। इसे समझकर प्रबोधित करने के लिए शिक्षा विभाग के अधिकारी तैयार हो सकें, इस हेतु **एक वर्षीय अध्ययन पाठ्यक्रम अभ्युदय संस्थान में संचालित किया जाए। भोजन, आवास, रखरखाव, बिजली आदि का खर्च 100/– प्रति व्यक्ति प्रतिदिन राज्य सरकार वहन करे एवं प्रबोधन कार्य संस्थान के सदस्यों द्वारा निःशुल्क सम्पन्न किया जायेगा।** अभ्युदय परिवार 1 से 3 वर्ष तक अध्ययन की जिम्मेदारी स्वीकारता है। इसके उपरान्त ऐसी अपेक्षा और अनुमान है कि शिक्षा विभाग इस दायित्व को निभाने में सक्षम हो जायेगा।
4. एक वर्षीय कार्यक्रम हेतु प्रतिभागियों को चिन्हित करने के लिए Edu Sat से शिविर किये प्राचार्य जो स्वेच्छा से पारंगत होना चाहते हैं, उनके साथ 10 दिवसीय शिविर अछोटी से सम्पन्न किये जायें। शायद 1 वर्षीय पाठ्यक्रम में 15 दिन अभ्युदय संस्थान में तथा 15 दिन अपने कार्यस्थल में रहना उचित होगा।
5. **अभिप्रेरणा समिति** :– राज्य में चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रचार–प्रसार, अध्ययन–अध्यापन हेतु श्री कौशिक जी के नेतृत्व में 10 सदस्यीय समिति का गठन किया जाए। ये सभी सदस्य प्रबोधन कार्य में सक्षम होंगे तभी SCERT शिक्षा विभाग में प्रेरणा स्त्रोत बन सकेगा।
6. प्रतिमाह Edu Sat के माध्यम से 7 दिवसीय शिविर का संचालन किया जाए। प्रत्येक डाइट में कम से कम 5 लोग प्रबोधन कार्य में तैयार हों, ताकि राज्य की प्राथमिक शिक्षा चेतना विकास मूल्य शिक्षा सम्पन्न हो सके।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

7. Model के रूप में डाइट रायपुर को तैयार किया जाए। रायपुर में अभ्युदय परिवार के सदस्य भी अपनी भागीदारी कर सकेंगे। इस हेतु डाइट रायपुर में शिक्षक और विद्यार्थियों के साथ एक शिविर किया जाए।

8. **शिविर करने के तुरन्त बाद प्रतिभागियों को अध्ययन सामग्री के रूप में शिविरों की DVD, Books संकल्प पत्रिका आदि उपलब्ध हो, इस हेतु SECRT, PGBT. एवं सभी डाईट में व्यवस्था करना।**

9. राज्य में स्कूल शिक्षा विभाग के लगभग 3000 लोगों ने शिविर किया, लेकिन शिविर के बाद निरन्तरता बनाये रखने के लिए कार्यक्रम के अभाव में आगे संतोषजनक गति नही बनती। विभिन्न प्रतिभागियों से सुझाव आया कि सभी CAC, DEO, Principal साप्ताहिक गोष्ठी करें, ताकि उनकी भी पठन, अध्ययन की आवश्यकता बने एवं वातावरण तैयार होता जाए।

10. PGBT Raipur &AISC Bilaspur से इच्छुक लोगों को तैयार किया जाए। चयन हेतु college में ही विद्यार्थियों व स्टाफ के साथ शिविर किया जाए।

11. राज्य साक्षरता में लोक शिक्षा के रूप में जीवन विद्या शिविर के संचालक हेतु योग्य लोगों का चयन।

✠ ✠ ✠

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

चेतना विकास मूल्य शिक्षा संचालित

विद्यालक्ष्मी अभिभावक विद्यालय शा.प्रा.शा. कोंकड़ी

संकुल केन्द्र-खट्टा, पोस्ट - पटेवा (खट्टा), व्हाया - पिथौरा, विकासखण्ड, तहसील व जिला - महासमुन्द (छ.ग.)

मानव जाति एक मानव धर्म एक, मानव समाज एक ... पूरी धरती एक

अखण्डसमाज सार्वभौम व्यवस्था

★ मानव का लक्ष्य समाधान, समृद्धि, अभय व सह अस्तित्व है।

★ व्यक्ति में समाधान, परिवार में समृद्धि, समाज में अभय प्रकृति में संतुलन ही शिक्षा का प्रयोजन है।

★ मानव जाति एक, मानव धर्म एक, मानव समाज एक, मानव मूल्य एक, पूरी धरती एक, अखण्ड समाज

★ जिनके विचार सुंदर होते है, वे कभी एकांत में नही होते।

★ वेतनभोगी प्रमाणित नही हो सकता, शिक्षा, व्यापार की वस्तु नही है।

★ रूप, बल, बुद्धि का विकास आहार, विहार, व्यवहार की संयमता पर है।

★ हम जैसा सोचते हैं वैसा बन जाते हैं वैसा पा जाते हैं।

★ हम वही पाते हैं, जिसके हम पात्र हैं।

★ मनुष्य मात्र समस्त प्रयास तृप्ति अथवा सुख के लिए है। निरंतर सुख ही मानव धर्म है।

★ मनुष्य जाति सही में एक तथा गलती में अनेक है।

★ स्वयं की उपयोगिता को सिद्ध करना ही तृप्ति का आधार व प्रमाण है।

★ शिष्य का जीवन गुरू के द्वारा कराये गये गये अध्ययन के द्वारा अर्थबोध सम्पन्नता से सफल है।

★ गुरू का सम्मान, शिष्य के द्वारा दूसरों को अर्थबोध कराना है।

★ संसार में केवल सुख ही सुख है। दुःख मात्र हमारी समझ में कमी की सूचना है।

★ आचरण -स्व धन, स्व नारी, स्वपुरूष, दयापूर्ण कार्य व्यवहार, संबंधो की पहचान, मूल्यों का निर्वाह व मूल्यांकन, उभय तृप्ति, तन-मन-धन रूपी अर्थ का सदुपयोग व सुरक्षा मानवत्व है।

★ स्वधन-स्वनारी/स्वपुरूष दयापूर्ण कार्यव्यवहार ही मानवीय चरित्र है।

★ मानवीय शिक्षा का अर्थ व्यक्ति में समाधान, परिवार में समृद्धि, समाज मे अभय तथा प्रकृति के साथ तालमेल पूर्वक जीने के लिए प्रत्येक मानव को सक्षम बनाना है

★ जीव चेतना से मानव चेतना में विकास ही चेतना विकास मूल्य शिक्षा है।

आदरणीय. - शिक्षक साथियों .

"वन्दे मातरम्"

आप सभी ने 1 वर्षीय सहअध्ययन शिविर चेतना विकास मूल्य शिक्षा का किया है. निश्चित ही यह आपके जीवन के संस्कार का असर है. अब आपका जीवन रहेगा घर, परिवार. स्कूल. समाज में प्रमाणित करेंगे!

— इन्हीं अपेक्षाओं के साथ

नजर"

नजर! अपने विचारो पर रखो
क्योंकि वे 'शब्द' बन जाते हैं।
अपने शब्दों पर नजर रखो
क्योंकि वे कार्य बन जाते हैं!
अपने कार्यो पर नजर रखों
क्योंकि वे आदत बन जाते हैं
अपने आदतों पर नजर रखों
क्योंकि वे स्वभाव बन जाते हैं
अपने स्वभाव पर नजर नजर रखो
क्योंकि ये चरित्र बन जाते हैं!
अपने चरित्र पर नजर रखों
क्योंकि जीवन की पूर्णता
उसी पर निर्भर रहती है!

2

"''परंपरा''"

उन परंपराओं को बदल दो,जो रहस्य से भरी हुयी है,
जो कर्मकांड व संप्रदाय विशेष से सजी हुयी है।।
अगर मानवीय परंपरा का प्रमाण हमें प्रस्तुत करना है।
तो न्याय-धर्म-सत्य से हमें सजना है।
कब तक झेलेंगे?अंधविश्वास और भ्रष्टाचार से लिपटी हुयी ये सडी परंपरायें।
आओ प्रतीकों को तोडकर,मंदिर-मस्जिद को छोडकर,
सब मानव को जोडकर ,सार्वभौमता से अपने आपको सजायें।
गानें हो या पहनावा,शिक्षा हो या दीक्षा,गीत हो या गान।
जो पूरी मानव जाति को एक कर दे,आओ बनायें कुछ ऐसी पहचान।।
कोई और नहीं,हम शिक्षक ही ''मानवीय पंरपरा''बना सकते हैं।
हम ही इस धरती को ''अखंडसमाज सार्वभौम व्यवस्था''से सजा सकते हैं।

आपके आगमन की प्रतिक्षा में

गेंदलाल कोंकड़िया
विद्या लक्ष्मी अभिभावक विद्यालय
शा.प्रा.शा. कोकड़ी, संकुल केन्द्र-खट्टा
मो. 96913-23121, 9669351601
समय सुबह व सायं 7 से 9 बजे

★ शिष्य को अर्थ बोध होना ही गुरू दक्षिणा है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

1 वर्षीय अध्ययन शिविर व प्रबोधकों/शिक्षकों में सुधारात्मक अपेकक्षायें....................12–6–14.

1 अध्ययन शिविर कराने वालों में से कम से कम 1 या 2 अध्यापक 1 वर्षीय अध्ययन शिविर से गुजरे अध्यापक हो ....इससे सरकारी शिक्षकों में और जयादा असर जायगा।........

2 बाबा जी की सोच पर कम से कम अभी जो सरकारी स्कूल अध्यापन करां रहे हैं.......उन स्कूलों का नियमित शैक्षिक भ्रमण अध्ययनार्थियों कों करायां जांये ....जीवंत प्रमाणों को देखकर अध्ययन की सार्थकता होगीं।

3 मेल मुंलाकात और संवाद का कम निरंतर बना रहे ....सनस्थान ही इसका केन्द्र बिंदु रहे .... मुलाकात का कम तोडने का प्रत्यक्ष उदाहरण "हमारे पूर्व के 1 वर्षीय अध्ययनार्थी साथी प्राथमिकता कम में "चेतना विकास मूल्य शिक्षा संबंधी कार्यकमों को न ही स्कूल में रख पा रहे हैं,न ही परिवार में जी पा रहे हैं......न ही ऐसे कार्यकमों में बगर टी.ए.डी.ए की अपनी सहभागिता दे पा रहे हैं।

4 चेतना विकास मूल्य शिक्षा संबंधी सभी कार्यकमों और बैठकों को सरकारी भत्तों व मानदेय से मुक्त रखे।.........ताकि पैसों के स्वार्थी ऐसे ही इस पुण्य कार्य से अभी अलग रहे।

5 हम सभी 1वर्षीय अध्ययन शिविर से गुजरे शिक्षक न सिर्फ छ.ग. अपिंतु पुरे व्रिश्व के सभी शिक्षाविदों व पालकों के केन्द्र बिंदु में हैं,अतएव आज से ही हम अपने स्वयं की स्कूलों में ,बच्चों के साथ,परिवार के साथ,समाज के साथ,प्रकृति के साथ मासिक,वार्षिक कार्ययोजना बनाकर,लिपिबदध तरीके से काम करें,ताकि खुद का निरिक्षण के अलावा हमारा कोई परीक्षण करे वह पूरी तरह से हमसे तृप्त रहे।

6 प्रचार–प्रसार के सभीं माध्यमों टीवी,मीडिया,प्रेस,इंटरनेट,फेसबुक,सोशल साइटस पर सकिय भागीदारी से चेतना विकास मूल्य के प्रचार –प्रसार में जीवंत प्रमाणों के साथ जुडे...........हर आदमी में कुछ न कुछ दूसरे से खास होता है,क्या पता ...ये किसी दूसरे को प्रमाणित होने का ,प्ररित होने का मार्ग बनें।

7 अपने स्कूलों में आप कोंकडी स्कूल की ही तरह और नये प्रयोग व चित्रों को चित्रांकन करवाये....... कोंकडी स्कूल को चेतना विकास मूल्य शिक्षा के चित्रों और आलेखो से मैनें और योगेश भैया/बाबाजी ने सजाया है,जो पहले नजर मे ही आगंतुकों का मन आकर्षित करता है,और बच्चों व स्वयं के लिये भी प्रेरणादायी चित्रण बने रहता है।जो अच्छा करने को प्रेरित करता है।

8 हर रोज खुद से ......अपने बच्चों से रोज पूछे 1 आज मैने क्या अच्छा सोंचा? 2 आज मैंने क्या अच्छा बोला ? 3 आज मैंने क्या अच्छा किया?

9 अपने सत्यापन के मूल अंश ,जैसे इस अध्ययन शिविर को करने के बाद आपमें क्या बदलाव आया?स्वमूल्यांकन कर सभी शिक्षाविद व scert,beo, deo, cm , pm, president eju.cm, mla ,ncert ,collector, midiya chif,को पत्र लिखकर सूचति करें,ये शिक्षा विभाग के लिये सबूत रहेगा,उसने अच्छा काम किया।सिर्फ सत्यापन का ही नही,आपके सभी अच्छे कामों का ,जो आप समय–समय पर करते हैं,पत्र से सूचित करते रहें।

10 अखबार में अपने अच्छे कामों की सूचि व खबर जरूरी दे,पेपर कटिंग विभाग को भेजे,अपने विद्यालय व घर के दीवाल के एक हिस्सा में चस्पा कर रखे,आपकों और आपके शुभ चिंतकों को कुछ अच्छा करने के लिये प्रेरित करता रहेगा।शिक्षा में मानवीयकरण "संबधी कोंकडी स्कूल के पत्र का जवाब,शिक्षासचिव श्री दिनेश श्रीवास्तव,राज्यपाल,पूर्व शिक्षा मंत्री बृजमोहन अग्रवाल,मुख्यमंत्री डॉ.रमन सिंह ,व डी.पी.आई. प्रमुख व संचालक,एस.सी.ई.आर.टी. ने भी दिया है। आपकों भी मिलेगा,जो आपको उत्साह वर्धित करते रहेगा।

आपका एक शिक्षक साथी
गेंदलाल कोकडिया,विदयालक्ष्मी अभिभावक विदयालय
शा.प्रा.शा. कोंकडी,संकुल खट्टा,व्हाया– पिथौडा
जिला महासमुंद पिन 493551
मो.9691323121 सुबह व सायं 7 से 9 बजें फेसबुक:–chetnavikaspatewa msmdईमेल:–kokdiya.gend@gmail.com

"चेतना विकास मूल्य शिक्षा से मेरी दिनचर्या ,व्यवहार व स्कूल में आये बदलाव"

संसार से तालमेल बनाए रखते हुए उसके साथ सफल होने का मार्ग है। प्रमाण संसार के साथ ही है। न्याय संसार के साथ ही है। धर्म समाधान संसार के साथ ही है। सत्य सार्वभौम व्यवस्था संसार के साथ ही है। अध्ययन भी संसार के साथ ही है। अध्ययन जीने के लिए है। जीते हम संसार के साथ ही हैं। संसार के साथ ही व्यवहार करते हैं, व्यवसाय करते हैं, वस्तुओं का उपयोग करते हैं। एकांत प्रमाणित होता नहीं है। अध्ययन भी एकांत में नहीं है। समझने के क्रम में लक्ष्य समाधान समृद्धि स्वीकार हो जाता है, फिर उसको पाने के लिए अपनी यथास्थिति से प्रगति की अगली कड़ियों को पहचानने की बात है। हरेक की यथास्थिति एक नहीं है इसलिए हरेक की अगली कड़ियाँ भी एक नहीं हैं।

1 वर्तमान में बच्चों के साथ रोज 1 पीरियड कोंकडीस्कूल मे "चेतना विकास मूल्य शिक्षा संचालित है,जिसका बच्चों पर व्यापक असर पडा है।

प्रमाणस्वरूप "चेतना विकास मूल्य शिक्षा के कार्य के लिये,किसी भी बैठक के लिये मैं शासन से कोई भी टी.ए. डी.ए नही लेता हूँ,पहले भी नही लेता था,क्योकि मुझे भली भाति समझ है कि "शिक्षा व्यापार का वस्तु नही है,शिक्षा/समझ देने/लेने के लिए पैसा या वेतन नही लिया जाता है।

2 बाबा जी ए.नागराज जी की हार्दिक इच्छा है,मेरी भी है,कोंकडी के ग्रमिणों व बच्चों का भी है कि "कोंकडी गॉव में चेतना विकास मूल्य शिक्षा सं संबंधित पूर्व माध्यमिक विद्यालय शासन खोले,जिसमे मैं और मेरी पत्नि राखी कोकडिया निःशुल्क अध्ययन कराएंगे,,किसी भी प्रकार का कोई वेतन/भत्ता नही लेंगे।जिसका विद्यालय खोलने का प्रारूप शिक्षासचिव श्री दिनेश श्रीवास्तव ने कलेक्टर महासमुंद के माध्यम से मंगाया है.

3 मैंने विवाह मे भी किसी भी प्रकार का कोई उपहार/दहेज नही लिया,न ही धरती को प्रदुषित करने वाला कोई भी पटाखा ,प्लास्टिक का डिस्पोजल कप ,डिस्को,बैंडबाजा का उपयोग किया,पूरी सादगीयता से मात्र 30000हजार रू में शादी का कार्य पूर्ण हुआ,जिसके लिए मैं मेरे ससुर जी श्री बाबूलाल नायक और मेरी पत्नि राखी कोकडिया के प्रति कृतज्ञ हूँ।साथ ही मेरे परिजनों का,।

4 डाइट के छात्राध्यापकों या अन्य किसी भी व्यक्ति समुदाय विशेष,मानव समाज को "चेतना विकास मूल्य शिक्षा के अध्ययन,अध्यापन,शिविर के लिये मैं कोई भी शुल्क,भत्ता ,वेतन नही लूँगा। न लेता हूँ।

5 मैं अपने वेतन के 50 फीसदी से ज यादा को "शिक्षा और शिक्षा संबंधी कार्यों में ही खर्च करता हूँ,वर्तमान में 4 बच्चों के एन.आई.टी का फीस व 2 व्यक्तियो को स्वरोजगार हेतु एक लाख बीस हजार रूप्ये कोंकडी स्कूल निःशुल्क बगैर ब्याज का दिया है,जो कि मेरे ही वेतन से है।

7 कोंकडी स्कूल में कुल 50 हजार रूप्ये की पेंटिंग ,10 हजार का मिनी स्टेज,10 हजार रू. का गली कांकिटीकरण,घिसलपट्टी,10 हजार रूप्ये से कोंकडी के बच्चो को मानवीय शिक्षा शोध केन्द्र अछोटी का भ्रमण करवाया,जो कि मेरे ही वेतन के पैसे से करवाया,कहने का मतलब शिक्षा के प्रति समर्पित हू,उसका यह एक प्रमाण है

8 परिवार से ,गॉव से ,स्कूल से,पालकों से,बच्चों से संबंध बहुत ही अच्छा है,सभी का भरपूर सहयोग मिलता है, मुझे भी मेरे स्कूल ,गॉव,बच्चों,ग्रामिणों,पालकों से प्रेम है,जिसके कारण मैंने अपना "पदोन्नति"नही ली,जिसके कारण हर माह मुझे 7000 रू.वेतन कम मिलता है।मुझे मेरे परिवार को,मेरे पत्नि,मेरे गॉव के ग्रमिणों,बच्चों,पालकों,शाला प्रबंधन विकास समीति को गर्व है,उनके अनुसार यह भी एक प्रमाण है कि "मैं शिक्षा के प्रति पूर्णतःसमर्पित हूँ।

प्रबोधकों/शिक्षको का मूल्यांकन का "मानक आधार" क्या हो?

1 अगर प्रबोधक स्कूल का प्रधानाध्यापक है तो,उस स्कूल में "वंदना गीत,अवस्था,संबंध,आहार,विहार,व्यवहार से संबंधित चित्रों का पेंटिंग हो।

2 जीवन विद्या/चेतना विकास से संबंधित सूक्ति वाक्यो का स्कूल में उल्लेख हो।

3 स्कूल में अलग से "चेतना विकास मूल्यं शिक्षा संबंधी भ्रमण पंजी हो।जिसमें आंगतुक का मत लिखित हो।

4 बच्चों–पालकों के अभिमत में प्रबोधकों के प्रति स्वीकृति का भाव हो।

5 "मन–तन–धन स्कूल में लगाया हो,स्वयं के व्यय से अपने विद्यालय के लिये कुछ किया हो।

6 वेतनभोगी नही,वेतनसदुपयोगी हो।

7 स्वयं के व्यय से वर्ष में कम से कम अपने पैतृक गॉव,स्कूल गॉव या निकटस्थ गॉवों में प्रबोधक के द्वारा एक बार वर्ष में 2,3,7 दिवसीय शिविर समायोजित किया हो।

8 स्कूल की उपलब्धि,बच्चों की उपलब्धि को प्रबोधक के द्वारा पोस्टकार्ड,लिफाफा के माध्यम से अपने जिले के शिक्षाधिकारियो व एस.सी.ई.आर.टी. को भेजता हो।

"मैं एक प्रेरणास्पद ,श्रेष्ठ प्रबोधक/ शिक्षक हूँ।"

1 मैंने स्वस्फूर्त अपने स्कूल में कोंकडी स्कूल में कुल 50 हजार रूप्ये की पेंटिंग ,10 हजार का मिनी स्टेज,10 हजार रू. का गली कांकिटीकरण,घिसलपट्टी,10 हजार रूप्ये से कोंकडी के बच्चो को मानवीय शिक्षा शोध केन्द्र अछोटी का भ्रमण करवाया,जो कि मेरे ही वेतन के पैसे से करवाया,कहने का मतलब शिक्षा के प्रति समर्पित हू,उसका यह एक प्रमाण है।

2 मेंडिकल,डेंटल,शिक 1,2 ,का पद छोडकर कोकडी जैसे दुरस्थ स्कूल में शिक्षाकर्मी बनना पसंद किया,आजीवन इसी स्कूल मे सेवा करने का संकल्प लिया है,2005 के पहले यहॉ कोकडी के बच्चे उच्च कक्षा की शिक्षा नही ले पाते थे,गॉव में जुआ और शराब का बोलबाला था,जिसे "ग्राम स्वराज्य के पटरी पर लाया ।

3 यही नही पत्नि श्रीमती राखी कोकडिया राजस्थान के "चेतना विकास मूल्य शिक्षा विश्वविद्यालय को छोडकर कोकडी स्कूल मे शिक्षक न होते हुए भी आजीवन निःशुल्क सेवा दे रही हैं ,कोंकडी स्कूल ने राज्य में पहले वैकल्पिक शिक्षक गॉव के युवा श्री पुरूषोत्तम पाहरे को नियुक्त किया,जो अभी भी समय–समय पर जब स्कूल को उनकी जरूरत होती है,कार्यरत हैं।

4 हडताल के दौरान स्वयं हडताल में शामिल नही हुआ,जिसकी पुष्टि अनेक अखबारों ने समाचार के माध्यम से भी किया है,यही नहीं अपनी पत्नि श्रीमती राखी कोकडिया को भी अपने घर से अपने स्कूल लाया,वो भी निःशुल्क शिक्षादान के लिए,और सिर्फ हडताल की अवधि तक के लिए नही,बल्कि आजीवन निःशुल्क शिक्षादान के लिए प्रेरित किया,जिसे बखूबी राखी कोकडिया ने अंगीकार किया,व निःशुल्क कोकडी स्कूल में अध्यापनरत है।

5 गॉव वालों के सम्मान के आगे,गॉववालों के प्यार के आगे,गॉववालों के निश्छलता के आगे,अपने होने वाले पदोन्नति जिसके तहत वे वर्ग 2 व्याख्याता पंचायत बन जाता,जिससे मेरा वेतन लगभग 25000रू. के आसपास हो जाता,जबकि प्रमोशन नही लेने के कारण आज मेरा वेंतन मात्र 18796रू. है,

6 कोंकडी स्कूल में मेरे वेतन के बचत रकम से 4 बच्चों को "एन.आई.टी."का फीस व 2 बच्चों को "स्वरोजगार"के लिए बगैर ब्याज के रकम उपलब्ध कराया है,जिसे बाद में वे सिर्फ मूलधन स्कूल को वापस करेंगे। इस तरह से अनेक बच्चों को सुविधा दी है,देते रहेंगे।

7 शिक्षा पर कार्य करने वाली "मानवीय चेतना विकास संस्थान,तेंदुवाही,पटेवा का स्थापना किया है,जिसने महासमुंद व रायगढ जिले मे कुल 7 से अनेक 7 दिवसीय शिविर आयाजित किया है।

8 महासमुंद जिले के प्रायः सभी राजनीतिक ,पत्रकार,समाजसेवकों,व शिक्षाधिकारियो को 3 घंटे का व्यक्तिगत अलग–अलग मिलकर सी.वी.एम.एस./मानवीय शिक्षा की जानकारी दी है।

9 हर वर्ष 5,6,7 सितंबर को व 28 जुलाई को चेतना विकास पर चर्चा–परिचर्चा गॉव के सभी ग्रामिण,पालकों व बच्चों से होता है।

10 विवाह भी जीवनविद्या पद्धति से किया,जिसके अंतर्गत 1 दहेज मे फूटी कौडी नही लिया 2 कोई गाना–बाजा,बैड बाजा नही बजा 3 पटाखे नही फोडे गये 4 आतिसबाजी,तामझाम नही हुआ,सादगीयता से विवाह हुआ 5 प्लास्टिक का डिस्पोजल,कप का इस्तेमाल विवाह मे नही किया। 6 विवाह के बाद आजीवन मेरी पत्नि राखी बगैर वेतन के कोंकडी स्कूल मे अध्यापन रत है।

11 पुत्र रागेंश्वर को भी शिक्षक बनाएंगे,और वो भी कोंकडी गॉव के सरकारी स्कूल में ही पढेगा।

12 बच्चों को पत्र लिखवाकर मुख्यमंत्री से कोंकडी गॉव के गली क्रांकिटीकरण, व संचालक एस.सी.ई. आर.टी रायुपर से स्कूल के अतिरिक्त जमीन का अहाता निर्माण का कार्य करवाया है।

13 चेतना विकास शिविर का कोई भी यात्रा भत्ता नही लेता,

14 कोई भी रैली व हडताल में मैं शामिल नही रहता

15 प्रथम संस्था जो पूरे देश में शिक्षा पर कार्य करती है,के राज्य प्रभारी ने कोंकडी स्कूल का भ्रमण किया व कोंकडी स्कूल के बारे मे दिल्ली व अमेरिका में भी बताया ।

16 कोंकडी स्कूल में चेतना विकास केशैक्षिक भ्रमण के लिये शैक्षिक कार्यो का अवलोकन न सिर्फ छ.ग. एस.सी.ई.आर.टी.अपितु म.प्र.,व मुंबई एस.सी.ई.आर.टी के अलावा अंतर्राष्ट्रीय बाल मनोवैज्ञानिक डॉ. कृषामोहन,अमेरिका व लंदन के अलावा पूर्व शिक्षासचिव व संचालक एस.सी.ई.आर.टी.श्री नंदकुमार के अलावा चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रणेता श्री ए.नागराज जी स्वयं अपने समस्त विद्वानों के साथ कोकंडी स्कूल का शैक्षिक भ्रमण किये हैं। पत्रकारों,समाजसेवकों,विधायक ,राजनेताओं के अलावा विभाग के अधिकारियों ने भी कोंकडीस्कूल का शैक्षिक भ्रमण किया है।राजस्थान के आई.ए.सी. यूनिर्वसिटी के श्री हिमांसु के अलावा गुजरात व अन्य राज्यों ने भी कोंकडी स्कूल का भ्रमण किया है।

17 कोंकडीस्कूल व मुझे "शिक्षा के मानवीयकरण व चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रचार–प्रसार के लिये अनेक सम्मानों के अलावा शिक्षामंत्री श्री बृजमोहन अग्रवाल,पूर्व कलेक्टर श्रीमती अलरमेल मंगई डी व कलेक्टर महासमुंद श्रीमती आर.संगीता के माध्यम से कृषिमंत्री श्री चंद्रशेखर साहु द्वारा भी शिक्षा के मानवीयकरण के लिये सम्मानित किया जा चुका है,अनेक जिलो के शिक्षकों व टीम ने भी कोंकडीस्कूल का शैक्षिक भ्रमण व अवलोकन किया है।

18 कोंकडी स्कूल के माध्यम से मेरे शिक्षा के मानवीयकरण व चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रचार–प्रसार के लिये पत्रों का जवाब शिक्षा मंत्री,शिक्षासचिव,मुख्यमंत्री,कलेक्टर,संचालक एस.सी.ई. आर.टी.,डी.पी.आई.राज्यपाल डी.ई.ओ. विधायक,पत्रकारों सभी ने पत्र का जवाब देते रहते हैं आपके कोंकडीस्कूल आगमन व पत्र की प्रतिक्षा में।

आपका एक शिक्षक साथी
गेंदलाल कोकडिया,इमेल kokdiya.gend@gmail.com
विद्यालक्ष्मी अभिभावाक विद्यालय, शा.प्रा.शा.कोंकडी,पोस्ट–खट्टा,व्हाया–पिथौडा
सुबह व सायं 7 से 9 बजे तक
मो.9691323121/8823046201
gendlal kokdiya@gmail.com
फेसबुकः–chetnavikaspatewa msmd @gmaii.com,

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

नंदकुमार
आई.ए.एस.
सचिव
स्कूल शिक्षा विभाग

अर्द्ध शास. पत्र क्र. DO-1190/PA/20/2010
फोन नं. : 0771-4080553, 2221248
फैक्स नं. : 0771-2221230
ई-मेल : nand41@yahoo.com
छत्तीसगढ़ शासन
मंत्रालय
दाऊ कल्याण सिंह भवन, रायपुर - 492 001

दिनांक : 26-05-2010

विषयः–छत्तीसगढ़ राज्य में चेतना विकास मूल्य शिक्षा का अभिनव प्रयोग ।

––0––

विभिन्न शिक्षा आयोग, शिक्षा समितियों, शिक्षाविद् और हमारे महापुरूष समय–समय पर शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन एवं शिक्षा वस्तु को बदलने का प्रयास करते रहे हैं । उनके चिंतन और निष्कर्षों में मानवीय मूल्यों की शिक्षा संबंधी सिफारिशें एवं निर्देश मिलते रहे हैं । पिछले एक दशक में एन.सी.ई.आर.टी., ए.आई.सी.टी.ई., यू.जी.सी. एवं अन्य राष्ट्रीय संस्थाएं मूल्य शिक्षा एवं पर्यावरणीय शिक्षा को विभिन्न पाठ्यकमों में शामिल करने पर जोर दे रहीं हैं । कारण स्पष्ट है कि शिक्षा का संस्थागत ढांचा एवं अध्ययन वस्तु मानवीय मूल्यों के संरक्षण–संवर्धन, सामाजिक सरोकारों के प्रति निष्ठा, राष्ट्रीय चरित्र को बनाए रखने में सफलता नहीं हुई । यह भी सर्वविदित है कि वारिवार एवं समाज टूट रहे हैं, मूल्यहीनता बढ़ने की चिंता सभी लोग व्यक्त करते हैं । भौतिकवादी प्रवृत्तियॉं समाज में पसर रही है । प्राकृतिक असंतुलन एवं पर्यावरणीय प्रदूषण की चिन्ता सर्वविदित है ।

प्रशासनिक सेवाओं में मेरा ज्यादातर कार्यकाल शिक्षा दायित्वों से संबंधित रहा । अतः स्वाभाविक रूप से उपरोक्त चिन्ताऐं मुझे प्रचलित शिक्षा के विकल्प पर विचार करने के लिए विवश करती रही । छत्तीसगढ़ में संयोग से मैं 'चेतना विकास मूल्य शिक्षा' के प्रस्ताव से अवगत हुआ जो "अमरकंटक मध्यप्रदेश के श्री ए. नागराज के 25 वर्षों के दीर्घकालीन शोध एवं अनुसंधान 'अस्तित्वमूलक मानव केन्द्रित चिंतन–मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद' के आधार पर तैयार किया गया था ।

मानवीय शिक्षा शोध संस्थान (अभ्युदय संस्थान, श्री सोमदेव त्यागी–9301700400, श्री योगेश शास्त्री 09303040188, श्री अंजनी अग्रवाल–09300205129 ग्राम अछोटी, ब्लाक मुरमुंदा जिला दुर्ग) द्वारा तैयार यह प्रस्ताव पूर्णतः धर्म, मत, पंथ, सम्प्रदाय आधारित शिक्षा से मुक्त और अस्तित्व, सहअस्तित्व, प्रकृति और व्यवस्था संबंधी किया कलापों, अन्तर्कियाओं व अंतर्संबंधों पर आधारित था ।

मैंने सात दिवसीय शिविर दो वर्षों के अध्ययन में पाया कि यह एक ऐसा प्रस्ताव है जिसमें व्यक्ति, परिवार, समाज प्रकृति व अस्तित्व में परस्पर अन्तर्संबंधों की व्याख्या प्रस्तुत की गई है । सम्पूर्ण परिप्रेक्ष्य में विचार करने पर ऐसा लगता है कि समाज के सोच की ऊंचाई थोड़ी और बढ़ जाने के बाद यह प्रचलित शिक्षा का एक विकल्प हो सकता है । यह मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार से प्राप्त निर्देशों एवं मार्गदर्शक तत्वों के भी अनुरूप है ।

इसी कम में छत्तीसगढ़ राज्य के स्कूल शिक्षा विभाग के कक्षा पहली से दसवीं तक के लिए 'चेतना विकास मूल्य शिक्षा' के पाठ्यकम तैयार कराए गए और राज्य के सभी विद्यालयों में एक अनिवार्य पीरियड का प्रावधान इसके अध्यापन के लिए किया गया । अध्यापन के लिए पाठ्यपुस्तकें एवं अध्ययन सामग्री को मानवीय शिक्षा शोध संस्थान एवं एस.सी.ई.आर.टी. (श्री के.के. साहू, 09425230200) द्वारा तैयार की गयी । अध्यापन को प्रभावी बनाने के लिए स्कूल शिक्षा विभाग ने लगभग 20 हजार शिक्षकों और अधिकारियों का 7 से 10 दिन (50 से 60 घंटे) का प्रशिक्षण कराया गया । लगभग 50 शिक्षकों को इस आशय के साथ दीर्घकालीन (छह माह) प्रशिक्षण कराया गया ताकि वे जिला स्तर पर राज्य के अन्य शिक्षकों को प्रशिक्षण देने में सक्षम हो

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

सकें । एक कार्ययोजना भी तैयार की गई जिसके तहत राज्य के सभी दो लाख शिक्षकों को चेतना विकास मूल्य शिक्षा का एक वर्षीय प्रशिक्षण दिलाया जा सके । यह योजना चार वर्ष में पूर्ण होगी । भविष्य में शिक्षकों की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए राज्य के 20 डाईट केन्द्रों में डी.एड. की 25 प्रतिशत सीटें आरक्षित की गई हैं ।

इससे पूर्व भी आई.आई.टी. (कानपुर, दिल्ली), आई.आई.आई.टी. हैदराबाद, उत्तरप्रदेश तकनीकी विश्वविद्यालय, स्वामी विवेकानंद तकनीकी विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, सोमैया विद्याविहार, मुम्बई आदि शिक्षण संस्थाएं मध्यस्थ दर्शन–सहअस्तित्ववाद (जीवन विद्या) पर आधारित पाठ्यक्रमों को संचालित कर रहे हैं । जिनके फीडबैक भी उत्साहित करने वाले हैं ।

इस प्रशिक्षण का मुझ पर एवं शिक्षकों पर गहरा सकारात्मक प्रभाव पड़ा है । सभी में स्वयंस्फूर्त परिवर्तन प्रवृत्तियां देखी गई हैं। शिक्षक के आत्मसम्मान में वृद्धि हुई है । यह प्रशिक्षण एवं पाठ्यक्रम मूल्यों के संरक्षण–संवर्धन एवं पर्यावरणीय चेतना के विकास में भी सहायक साबित हो रहा है । विद्यार्थियों में इससे तर्कशीलता, मौलिक चिंतन प्रवृत्ति, प्रमाण आधारित सोच और सार्वभौमिक नियमों/सिद्धांतों के प्रति निष्ठा को भी देखा गया है । इस संबंध में विस्तृत रिपोर्ट छत्तीसगढ़ एस.सी.ई.आर.टी. की वेबसाइट(http://scert.cg.gov.in/) में अपलोड की गई है ।

प्रत्येक राज्य के शिक्षा विभाग इस प्रयोग का अवलोकन कर सकते हैं । इसके लिए विभाग/विश्वविद्यालय के वरिष्ठ अधिकारियों की 7 दिवसीय परिचयात्मक शिविर आयोजित करना होगा । शिविर आयोजन अथवा अतिरिक्त जानकारी के लिए अधोहस्ताक्षरित अथवा पत्र में दर्शित फोन अथवा ई–मेल पर संपर्क किया जा सकता है। आपका राज्य/विश्वविद्यालय इस दिशा में आगे बढ़े इसी आशा एवं अपेक्षा के साथ।

भवदीय

नंदकुमार

(नंदकुमार)
nand41@yahoo.com
No. - 09425507116

प्रति,

श्री..............................

छत्तीसगढ़ शासन
स्कूल शिक्षा विभाग
मंत्रालय,
दाऊ कल्याण सिंह भवन रायपुर
===0===
// आदेश //

क्रमांक 11793
दिनांक 1.6.10

रायपुर, दिनांक ....

कमांक एफ 13–33/20–दो/2010 :: राज्य शासन एतद् द्वारा स्कूल शिक्षा विभाग के अंतर्गत चेतना विकास मूल्य शिक्षा के स्थायित्व एवं निरंतरता हेतु निम्नलिखित निर्देश प्रसारित करता है :–

1. चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्रकोष्ठ की स्थापना–

(i) एस.सी.ई.आर.टी.रायपुर में चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्रकोष्ठ की स्थापना जो संचालक, एस.सी.ई.आर.टी को रिपोर्ट करे तथा जिसका संचालन चेतना विकास मूल्य शिक्षा में पारंगत व्यक्तियों व मानवीय शिक्षा शोध संस्थान (अभ्युदय संस्थान) अछोटी जिला–दुर्ग के सदस्य के मार्गदर्शन में हो।

(ii) चेतना विकास मूल्य शिक्षा में पारंगत होने के लिए चेतना विकास मूल्य शिक्षा आधारित 14 वांगमय का विधिवत अध्ययन प्रस्तावित किया गया है जिसकी व्यवस्था मानवीय शिक्षा शोध संस्थान (अभ्युदय संस्थान) द्वारा एक वर्षीय पाठ्यक्रम के रुप में निर्धारित की गई है। जिसमें प्रति वर्ष साठ प्रतिभागियों को लिया जाएगा। पारंगत होने के लिए न्यूनतम एक वर्षीय पाठ्यक्रम जिसमें सम्पूर्ण विषयवस्तु का परिचय हो सके आवश्यक है।

जो अधिकारी/शिक्षक लगातार एक वर्षीय आवासीय अध्ययन के लिए अपना समय नहीं निकाल पाते हैं उनके लिए प्रत्येक माह में सात दिवसीय अध्ययन शिविर आयोजित किया जाएगा ।

उपरोक्त दोनों विधि से पारंगत होने की घोषणा अध्ययन करने वाला स्वयं करेगा। जब तक वह अपनी घोषणा से भिन्न आचरण नहीं करता तब तक उसे सही माना जाए।

(iii) स्कूल शिक्षा विभाग, छ.ग. शासन द्वारा मानवीय शिक्षा शोध संस्थान (अभ्युदय संस्थान) को चेतना विकास मूल्य शिक्षा हेतु राज्य स्रोत केन्द्र के रुप में पहचाना जाए। मानवीय शिक्षा शोध संस्थान के अंतर्गत चेतना विकास मूल्य शिक्षा अनुसंधान केन्द्र का संचालन होगा जिसका प्रमुख उद्देश्य प्रचलित शिक्षा के विकल्प को प्रस्तुत करना होगा।

38Orderall2010

santosh

विगत से वर्तमान तक समय–समय पर धरती के सभी भागों में अनेक महापुरुषों एवं शिक्षाविदों ने वर्तमान शिक्षा के अधुरेपन एवं खामियों को स्पष्ट इंगित किया है लेकिन विकल्प के अभाव में छोटे–छोटे परिवर्तन को छोड़कर शिक्षा की विषयवस्तु एवं मूल्यांकन पद्धति में अधिक परिवर्तन नहीं हो सका है।

चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रकाश में मानवीय शिक्षा का स्वरुप स्पष्ट होता है जिसमें मानव चेतना, देव चेतना ,दिव्य चेतना का अध्ययन कराया जाता है। जो अभी तक शिक्षा के संदर्भ में व्यक्त सभी कामनाओं, अपेक्षाओं को पूरा करने में सक्षम है।

चेतना विकास मूल्य शिक्षा शोध केन्द्र, एस.सी.ई.आर.टी.रायपुर के सदस्य मध्यस्थ दर्शन का गहन अध्ययन कर इस बात को जाचेंगे। साथ ही प्रचलित शिक्षा के विकल्प के रुप में कक्षा 1 से 12 वीं तक पाठ्यक्रम व पाठ्यपुस्तकें तैयार करने का काम मानवीय शिक्षा शोध संस्थान (अभ्युदय संस्थान) के सदस्यों के साथ मिलकर करेंगे।

(iv) एस.सी.ई.आर.टी. में चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्रकोष्ठ में दस पारंगत व्यक्ति रहेंगे जो पूरे छत्तीसगढ़ राज्य में चेतना विकास संबंधित गतिविधियों का संचालन व अन्य राज्यों मे मार्गदर्शन एवं समन्वय करेंगे । इस प्रकोष्ठ का प्रमुख कार्य राज्य स्रोत केन्द्र के साथ मिलकर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के सिद्धांत एवं शिक्षा के अन्य सिद्धांतों का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए इस शिक्षा का प्रसार संपूर्ण मानवता तक पहुंचाना होगा।

(v) चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्रकोष्ठ में प्रारंभिक दो वर्ष अभ्युदय संस्थान का एक सदस्य इसका प्रमुख रहेगा, तत्पश्चात् शिक्षा विभाग से संयुक्त संचालक स्तर का एवं चेतना विकास मूल्य शिक्षा में पारंगत व्यक्ति इसका संचालन करेगा।

अभ्युदय संस्थान के सभी सदस्य चेतना विकास मूल्य शिक्षा का अध्यापन उपकार विधि (बिना किसी आर्थिक अपेक्षा) से कराते रहे हैं व भविष्य में भी कराते रहेंगे। तथापि प्रकोष्ठ में कार्यरत संस्थान के व्यक्ति को नियमानुसार प्रवास में प्रवास भत्ता अलग देय होगा।

(vi) चेतना विकास मूल्य शिक्षा हेतु एस.सी.ई.आर.टी. में एक कक्ष जिसमें सभी दस सदस्य एक साथ बैठ सकते हों व एक हॉल जिसमें समय–समय पर चर्चा/गोष्ठी व शिविरों का आयोजन होता रहे की व्यवस्था की जाएगी।

39Orderall2010

santosh

(vi) चेतना विकास मूल्य शिक्षा हेतु एस.सी.ई.आर.टी. में एक कक्ष जिसमें सभी दस सदस्य एक साथ बैठ सकते हों व एक हॉल जिसमें समय–समय पर चर्चा/गोष्ठी व शिविरों का आयोजन होता रहे की व्यवस्था की जाएगी।

santosh . 39OrdersII2010

रहेंगे। तथापि प्रकोष्ठ में कार्यरत संस्थान के व्यक्ति को नियमानुसार प्रवास में प्रवास भत्ता अलग देय होगा।

(vi) चेतना विकास मूल्य शिक्षा हेतु एस.सी.ई.आर.टी. में एक कक्ष जिसमें सभी दस सदस्य एक साथ बैठ सकते हों व एक हॉल जिसमें समय–समय पर चर्चा/गोष्ठी व शिविरों का आयोजन होता रहे की व्यवस्था की जाएगी।

santosh . 39OrdersII2010

रहेंगे। तथापि प्रकोष्ठ में कार्यरत संस्थान के व्यक्ति को नियमानुसार प्रवास में प्रवास भत्ता अलग देय होगा।

(vi) चेतना विकास मूल्य शिक्षा हेतु एस.सी.ई.आर.टी. में एक कक्ष जिसमें सभी दस सदस्य एक साथ बैठ सकते हों व एक हॉल जिसमें समय–समय पर चर्चा/गोष्ठी व शिविरों का आयोजन होता रहे की व्यवस्था की जाएगी।

santosh . 39OrdersII2010

रहेंगे। तथापि प्रकोष्ठ में कार्यरत संस्थान के व्यक्ति को नियमानुसार प्रवास में प्रवास भत्ता अलग देय होगा।

(vi) चेतना विकास मूल्य शिक्षा हेतु एस.सी.ई.आर.टी. में एक कक्ष जिसमें सभी दस सदस्य एक साथ बैठ सकते हों व एक हॉल जिसमें समय–समय पर चर्चा/गोष्ठी व शिविरों का आयोजन होता रहे की व्यवस्था की जाएगी।

39OrdersII2010 santosh .

रहेंगे। तथापि प्रकोष्ठ में कार्यरत संस्थान के व्यक्ति को नियमानुसार प्रवास में प्रवास भत्ता अलग देय होगा।

(vi) चेतना विकास मूल्य शिक्षा हेतु एस.सी.ई.आर.टी. में एक कक्ष जिसमें सभी दस सदस्य एक साथ बैठ सकते हों व एक हॉल जिसमें समय–समय पर चर्चा/गोष्ठी व शिविरों का आयोजन होता रहे की व्यवस्था की जाएगी।

39OrdersII2010

santosh .

(iv) शिक्षा विभाग के अलावा अन्य विभागों के लोंग जो शिविर करना चाहते हैं उन्हें छ. ग. शासन द्वारा अवकाश की सुविधा जैसे महाराष्ट्र में विपश्यना ध्यान के लिए दस दिन का अवकाश दिया जाता है, दी जाएगी।

3. स्कूल शिक्षा विभाग के निर्णयानुसार राज्य में डी.एड. की न्यूनतम 25 प्रतिशत सीटें चेतना विकास मूल्य शिक्षा में चलाई जाएंगी। इस हेतु–

(i) सभी डाइट में चेतना विकास मूल्य शिक्षा में पारंगत 2 व्यक्ति की नियुक्ति की जाएगी।

(ii) प्रत्येक विद्यालय में चेतना विकास मूल्य शिक्षा से हर विद्यार्थी में स्वयं के प्रति विश्वास एवं श्रेष्ठता के प्रति सम्मान से जीने की राह प्रशस्त होगी तथा प्रत्येक गांव में जीवन विद्या शिविरों एवं अध्ययन से **परिवार मूलक ग्राम स्वराज्य व्यवस्था** साकार होने की परिकल्पना को ठोस आधार मिलेगा।

इस हेतु सभी जिलों में **डाइट** एवं ब्लाक स्तर पर **बाइट** में भी चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्रकोष्ठ स्थापित किए जाएंगे।

4. एस.सी.ई.आर.टी., डाइट, बाइट व सभी विद्यालयों में चेतना विकास मूल्य शिक्षा का अध्यापन कराने के लिए पारंगत शिक्षक उपलब्ध हों इस हेतु जीवन विद्या परिचय शिविर से गुजरने के बाद स्वेच्छा से पारंगत होने की इच्छा रखने वाले शिक्षक, अन्य विभागों के अधिकारी व समाज के लोगों के लिए अभ्युदय संस्थान, डाइट एवं विभिन्न संकुलों पर 1 वर्षीय चेतना विकास मूल्य शिक्षा अध्ययन पाठ्यक्रम के संचालन की व्यवस्था की जाएगी।

5. एस.सी.ई.आर.टी.रायपुर में प्रतिमाह 2 जीवन विद्या शिविर का संचालन चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्रकोष्ठ के प्रबोधकों द्वारा किया जाएगा। एस.सी.ई.आर.टी. में स्थान अभाव होने पर **'सत्यम जीवन विद्या केन्द्र'** व्ही.आई.पी. रोड पर भी शिविर आयोजित किये जाएंगे।

6. शिविर के बाद एवं इसके अध्ययन क्रम में चेतना विकास मूल्य शिक्षा आधारित वागंमय एवं जीवन विद्या शिविर का डीवीडी की कॉपी एस.सी.ई.आर.टी. को उपलब्ध करा दिया गया है। इसकी कॉपी बनाकर सभी विद्यालयों एवं अधिकारियों तक भेजी जाएंगी।

7. वर्ष में न्यूनतम एक बार सभी जिला एवं राज्य स्तरीय अधिकारियों के साथ शिविर व अध्ययन की व्यवस्था की जाएगी ताकि वे अपने स्वयं में गुणात्मक परिवर्तन के साथ ही सहयोगी कर्मचारियों का मार्गदर्शन व उत्साह बनाये रख सकेंगे।

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

8. **चेतना विकास मूल्य शिक्षा पर आधारित विद्यालय**–शिक्षा विभाग, एस.सी.ई.आर.टी. एवं अभ्युदय संस्थान मिलकर ऐसे विकल्प के आधार पर विद्यालय का संचालन करेगें। यह एक प्रायोगिक विद्यालय रहेगा। इसमें भौतिक पक्ष सरकार द्वारा नियोजित रहेगा। संचालन की जिम्मेदारी चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्रकोष्ठ एस.सी.ई.आर.टी. व अभ्युदय संस्थान की होगी।

शिक्षकों के स्वावलम्बन पूर्वक जीने की व्यवस्था जैसे कुछ कुटीर उद्योग, ग्राम शिल्प, खेती,गौशाला, कार्यशाला आदि विद्यालय की होगी ताकि शिक्षक सरकार से वेतन न लेते हुए स्वयं स्वावलंबी रहते हुए शिक्षा देगें।

शिक्षक स्वावलम्बन पूर्वक जीकर अध्ययन करायेंगे तो विद्यार्थी नौकरी मांगने वाले नहीं बल्कि स्वयं समाधान– समृद्धि पूर्वक जीते हुए दूसरों के लिए भी समाधान– समृद्धि पूर्वक जीने का अवसर प्रदान करने वाले होंगे।

9 कक्षा 1 से 10 वीं तक चेतना विकास मूल्य शिक्षा हेतु प्रस्तावित दस पुस्तकें जीवन विद्या शिविरों के बाद वाचन सामग्री (Reading material) के रूप में सभी प्रतिभागियों को दी जाएगी।

10 चेतना विकास मूल्य शिक्षा में पारंगत शिक्षक अपने–अपने क्षेत्र में अपने–अपने विद्यालय को अभिभावक विद्यालय के रूप में विकसित करना चाहें तो उन्हें आवश्यकीय शिक्षण प्रशिक्षण हेतु स्वीकृति चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्रकोष्ठ द्वारा प्रदान की जाएगी।

11 आचरण ही प्रमाण है। समाधान–समृद्धि ही आचरण का आधार है। अतः समाज में समाधान–समृद्धि पूर्वक जीकर प्रमाणित करने के इच्छुक युवाओं को चिन्हित कर उन्हें एक वर्षीय अध्ययन हेतु चयनित करने का कार्य चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्रकोष्ठ करेगा। प्रति वर्ष 10 से 20 युवाओं का चयन किया जाएगा। ऐसे युवा प्रतिफल अपेक्षा विहीन रहकर स्वावलंबी विधि से शिक्षा कार्यक्रम में भागीदारी करेंगे।

12 चेतना विकास मूल्य शिक्षा में पारंगत (न्यूनतम एक वर्षीय पाठ्यक्रम में अध्ययन संपन्न) व्यक्ति हर माह एस.सी.ई.आर.टी.रायपुर में दो दिवसीय कार्यक्रम/अध्ययन गोष्ठी संपन्न करते रहेंगे। इनके सुझावों व मानवीय शिक्षा शोध संस्थान (अभ्युदय संस्थान) अछोटी के मार्गदर्शन के आधार पर भावी रूपरेखा निश्चित होती रहेगी।

छत्तीसगढ़ के राज्यपाल के नाम से
तथा आदेशानुसार

(विलियम कुजूर)
उप सचिव
छत्तीसगढ़ शासन स्कूल शिक्षा विभाग

42Orderall2010

santosh

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

R Baghel PhD - Raipur Univ_c

//6//

पृ. कमांक 13–33/20–दो/2010 रायपुर, दिनांक 31/5/10

प्रतिलिपि :–

1. निज सचिव, माननीय मंत्री, छ0ग0 शासन, स्कूल शिक्षा विभाग, मंत्रालय, रायपुर,
2. संचालक, लोक शिक्षण संचालनालय, छत्तीसगढ़ रायपुर
3. संचालक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् रायपुर

उप सचिव

छत्तीसगढ़ शासन स्कूल शिक्षा विभाग

43Order2010

santosh

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्रकोष्ठ संबंधी जानकारी

मानव स्वयं में समाधान पूर्वक, परिवार में समृद्धि पूर्वक, समाज मे भय मुक्त व प्रकृति के साथ तालमेल पूर्वक जीने की योग्यता से संपन्न हो सकें, इसी उद्देश्य से परिषद द्वारा स्कूली शिक्षा में मानवीय मूल्यों की शिक्षा प्रदान करने हेतु **नवम्बर 2007** से चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्रारंभ किया गया जो अनवरत रूप से जारी है।

चेतना विकास मूल्य शिक्षा के अंतर्गत की जाने वाली प्रमुख गतिविधियों में अब तक निम्नांकित गतिविधियाँ संपन्न की गई है:-

1. चेतना विकास मूल्य शिक्षा आधारित जीवन विद्या पर अधिकारियों, शिक्षको, छात्राध्यापको, छात्रों एवं समाज के विभिन्न वर्गो के लोगों हेतु **परिचय शिविर** (प्रत्यक्ष एवं एडूसेट के माध्यम से)।
2. चेतना विकास मूल्य शिक्षा आधारित 14 वांगमय पर शिक्षकों का **अध्ययन शिविर** (प्रत्यक्ष शिविर)।
3. शालाओं के प्रथम कालखण्ड में **चेतना विकास मूल्य शिक्षा** के भाग 1 से 5 तक के पुस्तको का अध्यापन कराने हेतु इसकी उपलब्धता सुनिश्चित करना।
4. परिषद द्वारा चलाई जाने वाली विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमो में प्रतिभागियों को चेतना विकास मूल्य शिक्षा के विभिन्न मुद्दों के बारे में जानकारी देना।
5. परिषद द्वारा चेतना विकास मूल्य शिक्षा की प्रभावशीलता पर शोध कार्य करना।

उपरोक्त गतिविधियों का विस्तृत विवरण निम्नानुसार है:-

1. **परिचय शिविर** – इसका उद्देश्य ऊपर से लेकर नीचे तक के शैक्षिक अधिकारियों, शिक्षकों, छात्राध्यापको एवं छात्रों में मानवीय मूल्यों का विकास करना है ताकि स्कूली शिक्षा से ही मानवीय मूल्यों को प्रोन्नत किया जा सके और भावी पीढ़ी 20 वर्ष के शिक्षा के बाद उत्सवपूर्वक जी सके। **नवम्बर 2007** से अब तक एडूसेट एवं प्रत्यक्ष शिविर के माध्यम से लगभग 22430 प्रतिभागी प्रशिक्षित हो चुके है। जिसमें सभी प्रतिभागियों ने इसे स्वयं के लिये उपयोगी बताते हुये पाठ्यक्रम में शामिल करने का सुझाव दिया है।

वर्ष 2003 से 2008 एवं 2009 से 2011 तक हुये परिचय शिविर की संख्यात्मक जानकारी तालिका क्र. 01 एवं 02 में दी गई है।

2. **अध्ययन शिविर** – शिक्षको का अध्ययन शिविर मानवीय शिक्षा शोध संस्थान (अभ्युदय संस्थान) अछोटी, जिला – दुर्ग में आयोजित किया गया। इसका उद्देश्य स्कूल शिक्षा विभाग से ही चेतना विकास मूल्य शिक्षा पर प्रबोधक तैयार करना है ताकि मानवीय मूल्यों की शिक्षा का व्यापक प्रसार हो सके। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुये अध्ययन शिविर का पहला बैच फरवरी 2008 में 22 शिक्षकों के साथ 1 माह के लिये आयोजित हुआ। जो कि मानवीय शिक्षा शोध संस्थान एवं शिक्षकों के सुझाव पर जुलाई 2009 से 51 शिक्षकों के साथ 6 माह का तथा अगले वर्ष 13 शिक्षकों के साथ 1 वर्ष का अध्ययन शिविर किया गया। शिविर अवधि में शिक्षकों को प्रतिमाह 15 दिवस संस्थान में एंव शेष 15 दिवस अपने मूल संस्था में रहना सुनिश्चित किया गया। वर्ष 2011 में भी 1 वर्षीय अध्ययन शिविर 45 शिक्षकों के साथ जारी है। यह देखा गया है कि पारंगत शिक्षक (प्रबोधक) अपनी संस्था के साथ ही साथ जिले एवं राज्य में चल रहे विभिन्न प्रशिक्षणों में भी बहुत उपयोगी साबित हुए हैं।

वर्ष 2003 से 2008 एवं 2009 से 2011 तक हुये अध्ययन शिविर की संख्यात्मक जानकारी तालिका क्र. 01 एवं 02 में दी गई है।

3. **चेतना विकास मूल्य शिक्षा पुस्तक (भाग 1 से 5)** – मानवीय मूल्यों की शिक्षा से संबंधित इन पुस्तकों को स्कूलों में व्यापक स्तर पर लाने के पूर्व इसे प्रदेश के 02 जिले दुर्ग एवं महासमुंद के 15–15 विद्यालयों में क्षेत्र परीक्षण किया गया जिसके सकारात्मक फीडबैक व सुझाव के आधार पर इन पुस्तकों का कई चरणों में परिषद में कार्यशाला कर संशोधन किया गया एवं परिषद की अकादमिक समिति से अनुमोदित कराया गया। वर्तमान में इन पुस्तकों को शालाओं के प्रथम कालखण्ड में इसके अध्यापन हेतु संदर्भ सामग्री के रूप में शिक्षकों को उपलब्ध कराने हेतु छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम को मुद्रण आदेश दिया गया है। पुस्तक का **भाग 1** कक्षा 1 से 3 के लिये तथा **भाग 2** कक्षा 4 से 5 के लिये है। इसी प्रकार **भाग 3** कक्षा 6, **भाग 4** कक्षा 7 तथा **भाग 5** कक्षा 8 के लिये है।

4. **विभिन्न प्रशिक्षणों में चर्चा** – शिक्षकों के लिये सर्व शिक्षा अभियान के अंतर्गत चलने वाले 10 दिवसीय प्रत्यक्ष प्रशिक्षण में गत वर्ष कुछ सत्रों में चेतना विकास मूल्य शिक्षा पर चर्चा हुई थी। इस चर्चा को अपर्याप्त मानते हुये शिक्षकों के विशेष सुझाव पर वर्ष 2011 में 2 दिवस

कर दिया गया। जिसे अधिकतर शिक्षकों ने अपने फीडबैक में उपयोगी बताया है। इसी प्रकार राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के अंतर्गत होने वाले प्रशिक्षणों एवं योग प्रशिक्षण में भी कुछ सत्रों में इस पर चर्चा की गई।

5. **शोध कार्य** – चेतना विकास मूल्य शिक्षा को प्रारंभ हुये लगभग 4 वर्ष हो चुके है अतः इसकी प्रभावशीलता का अध्ययन हेतु परिषद द्वारा 2 शोध कार्य वर्ष 2011 में किया जा रहा है।

वर्ष 2003 से 2008 तक की संख्यात्मक जानकारी संबंधी तालिका क्र.1 को देखने से यह स्पष्ट होता है कि अंतिम 1 वर्ष की अवधि में परिषद का मुख्य प्रयास शिक्षकों में अधिक से अधिक परिचय शिविर करवाना था ताकि उनके माध्यम से मानवीय मूल्यों की शिक्षा विद्यार्थियों तक पहुँच सके। अधिकाधिक परिचय शिविर का ही प्रभाव था कि इस अवधि में शिक्षकों में अध्ययन के प्रति उत्सुकता देखी गई। **वर्ष 2009 से 2011** के बीच यही गतिविधियाँ व्यापक रूप से होने लगी है।

संलग्नः– चेतना विकास मूल्य शिक्षा शिविरों की संख्यात्मक जानकारी संबंधी तालिका क्र.1 एवं तालिका क्र. 2.

16.12.11

प्रकोष्ठ प्रभारी
चेतना विकास मूल्य शिक्षा

तालिका क्र. (1)
चेतना विकास मूल्य शिक्षा शिविरों की संख्यात्मक जानकारी
(2003–2008)

विवरण	शिविर के दिवस	शिविरों की संख्या	प्रतिभागियों के पदस्तर	प्रतिभागियों की संख्या	अभ्युक्ति
1. प्रत्यक्ष परिचय शिविर (प्रथम शिविर 29.11.2007 से 05.12.2007 तक)	सात दिवसीय	09	डाइट, आई.ए.एस.ई., सी.टी.ई., एस.सी.ई. आर.टी., साक्षरता मिशन के अधिकारी, शिक्षक एवं छात्राध्यापक	390	सभी प्रतिभगियों में स्वयं के प्रति विश्वास, संबंधो के प्रति समझ व शिकायत मुक्त जीने का विश्वास, अपनी आवश्यकताओं के पहचान के साथ समृद्धि का भाव, शिक्षकों में परम्पर तालमेल तथा छात्र व अभिभावकों के साथ परिवार भाव विकसित होने लगता है।
2. अध्ययन शिविर	1 माह	01	शिक्षक	22	इन सभी में आत्मविश्वास एवं जिम्मेदारी के साथ अपने कार्य स्थल, परिवार एवं समाज में कार्य करने के प्रति समझ बनी है।
योग		10		412	

16.12.11

प्रकोष्ठ प्रभारी
चेतना विकास मूल्य शिक्षा

तालिका क्र. (2)
चेतना विकास मूल्य शिक्षा शिविरों की संख्यात्मक जानकारी
(2009–2011)

विवरण	शिविर के दिवस	शिविरों की संख्या	प्रतिभागियों के पदस्तर	प्रतिभागियों की संख्या	अभ्युक्ति
1. एड्सेट के द्वारा परिचय शिविर	एक दिवसीय	01	शिक्षक	3500	सभी प्रतिभगियों में स्वयं के प्रति विश्वास, संबंधो के प्रति समझ व शिकायत मुक्त जीने का विश्वास, अपनी आवश्यकताओं के पहचान के साथ समृद्धि का भाव, शिक्षकों में परम्पर तालमेल तथा छात्र व अभिभावकों के साथ परिवार भाव विकसित होने लगता है।
	पांच दिवसीय	03	व्याख्याता / शि.क. 1	9800	
	सात दिवसीय	01	संकुल समन्वयक	1200	
	दस दिवसीय	01	प्राचार्य	1025	
	2 घंटा प्रति दिवस	05	9 वी से 11वीं तक के छात्र	1600	
2. प्रत्यक्ष परिचय शिविर	सात दिवसीय	74	डाइट, आई.ए.एस.ई., सी.टी.ई., एस.सी.ई.आर.टी., साक्षरता मिशन के अधिकारी, शिक्षक एवं छात्राध्यापक	4915	तथैव
3. अध्ययन शिविर	6 माह	01	शिक्षक	51	इन सभी में आत्मविश्वास एवं जिम्मेदारी के साथ अपने कार्य स्थल, परिवार एवं समाज में कार्य करने के प्रति समझ बनी है।
	1 ½ माह	01	शिक्षक	39	
	01 वर्ष	02	शिक्षक	58	
योग		89		22188	

16.12.11
प्रकोष्ठ प्रभारी
चेतना विकास मूल्य शिक्षा

चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्रकोष्ठ से संबंधित जानकारी

क्र.	संकेतक	सन् 2000–01	2003–04	2011–12	वृद्धि
1.	चेतना विकास मूल्य शिक्षा	अप्रारंभ	अप्रारंभ	नवम्बर 2007 से यह कार्यकम प्रारंभ हुआ। तब से अब तक लगभग 22470 शिक्षक परिचय शिविर तथा 109 शिक्षक 1 वर्षीय अध्ययन शिविर कर लिये है। साथ ही एस.एस.ए. प्रशिक्षण अंतर्गत सभी प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक शाला के शिक्षकों को 2–2 दिवसीय प्रशिक्षण दिया जा चुका है। शालाओं के प्रथम कालखंड में इसके अध्यापन हेतु भाग 1 से 5 तक बना पुस्तक छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम को मुद्रण हेतु आदेशित किया गया है। इसकी प्रभावशीलता पर परिषद द्वारा शोध कार्य जारी है।	कार्यकम के प्रारंभिक वर्ष 2007 को आधार मानने पर अब तक हुए कार्य में निश्चित रूप से वृद्धि हुई है। जो कि संतोषजनक है।

16.12.11
प्रकोष्ठ प्रभारी
चेतना विकास मूल्य शिक्षा